समकित सार.

भाग १–२.

श्री सिद्धांत अनुसारे संसोधन करी प्रश्नोतर रुपे
वनावनार.

माहान पुरुष श्री जेठमलजी स्वामी.
मु. जालोर.

दोहरो.

दया धर्म देखाडवा ॥ वांचो समकित सार ॥
हिंस्या काढो हेतथी ॥ तो उतरो भवपार ॥ १ ॥

सर्व जैन धर्मना अभीलाषी जीवोने माटे सुधारो वधारो करी
छपावी प्रसिद्ध करनार.
गाम वादणवाडी–जीले जालोरना रहेनार.

मेता. मनरुपचंद सुपुत्र कपुरचंद फुलचंद.

आवृति ३ जी. प्रत १०००.
संवत १९७३. सन १९१७.

अमदावाद पांचकुवे—श्री सत्यविजय प्रीन्टींग प्रेसमां
शा. सांकलचंद हरिलाले छाप्युं.

किम्मत १–४–०.

मंगल—पत्रिका प्रारंभ.

जयई जग जिवजोणि वियाणंऊ जगगुरु जगाणन्दो ।
जगनाहो जगबंधु जयई जगपिया महोभयवं ॥ १ ॥
जयई सुयाणप्य भवो तिथयराणं अवछि मोजयई ।
जयई गुरु लोगाणं जयई महप्पा महाविरो ॥ २ ॥
सिद्धाणं णमोकीचा संजयाणं च भावऊँ ।
शंतितंति करेलेए पतो गई मणुतरं ॥ १ ॥
जिणधम्मो यजिवाणं अपुवोकप्प पाणवो ।
शखपवगा सोपाणं फलाणं दाई गोयमो ॥ २ ॥

ॐ नमः प्रस्तावभूमिका.

अहो सुज्ञ जनो इसी अपारावार कलियुगमे नांम जैनधर्म हेः अवि जैन किसिकुं केते हे जिसी स्थानकमे जीवकीः यत्ना या निरक्षा होते हे शोहि जैन हेः अहो देवांनुप्रीयः अबि इस्मे विशेष वात यह हे कि देवगुरु धर्मकी पेहचांन करनी उनेके पर आस्ता रखनी वोही दृढ श्रद्धा हे अवि वोहि तत्वकी पेहचांनका किंचित वरन करताहुं (श्लोक) वीतरागवरंदेवो महाव्रत धरोगुरुः जीवाना च दयाधर्म त्रीणी तत्व निश्चायते १ अवि अहोभव्यो इसका खुलासा यह हे कि धर्मका सार इतनाही हे कि तत्वका निर्णय करता सो तत्व कोनसाः देव गुरु धर्मः अबी देव कोनसा हे वीतरागदेव वीतराग किसीकुं कहेते हे वी० इती वीशेषकर रागद्वेषका नास हुवा हे उसीका नाम वीतराग हे पुन १८ दोष रहीतः द्वादस गुणसहित चउतीस अतिसे करयुक्त अष्ट महाप्रतिहार्य सहित अनंत शक्ति अप्रतिहत ज्ञान दर्शनके धरने वाले एसे गुणसंयुक्त वो देव हेः अबी दुसरा गुरुतत्व किनकुं कहिनाकि पंच महाव्रतधारी कनक कांमनीके त्यागी निरलोभी निस्वादी निग्रंथ अप्रतिबंध विहारके करनेवाले भारंडपंखी इवं अप्रमादी मांनो अपमांनसमं खमसमदम इत्यादि अनेक गुणेयुक्त आप भवोदधी तिरे अनेराकुं तारे वो गुरु शुद्ध धर्म परुपक वोही गुरु हे अब धर्म नाम किसका हे कि दुरगति गमन जीवांके धारे यानि रक्षा करे जीसी धर्म य कोइका पक्षपातका वचन नही हे सर्व जीवांकों साताकारक यानि रक्षा कारक नव पदार्थका नीरणेय वो धर्म २ प्रकारका ठांणायंग सूत्रमे वरणन किया हे सूत्र धर्म १ अरु चारित्र धर्म का २ भेद हे श्राविक १ ओर साधू २ श्रावक तो नवकारसी आदि द्वादश व्रतके धरनेवाले हे उसका नांम श्रावक हे अरु साधू सो पंच महा व्रतधारी उनका स्वरूप गुरुतत्वमे वरणन कीया हे यह २ प्रकारका धर्म हे सो यहइ तत्वको सम्यक् प्रकारसे सचा कर सरधे परुपे उनका नाम श्रधांन हेः तो देखो एसें अमोल्य जैनधर्म अरुकल्पवृक्ष सद्रश जिनवानी हे सोसवी जीवाकों धर्मका आधार मेघवत देता हे जिनसे संवेग कहेते हे हम सच्चे हें, साधमारगी केतें हे हम सच्चे हे, जती कहते हे हम सच्चे हे, तेरा पंथी कहते हे हम सच्चे हे, तो भाई अज्ञजन कहते हेकि किनके वचन परमान करे, सो भाई निरपक्ष होकर वीतराग देवकी वांणी पर ध्यांन लागाकर अनुभव स्वरूपसें वीचार कर देखो वीतरागका

धर्म स्याद्वाद सप्तनय च्यार नीक्षेपा सें यथा योग्य मांनना उतम हे. अवी कलि-युगमे जो पक्षसहित धर्मके कुठाररूप जो मनुष्य हे वो अपना २ पक्षपात खेंचता हे सो मृपावादी हे अवी देखो आगला जमांना मे पुज्य श्री श्री १००८ श्री श्री वुधरजी महाराजके शिष्य स्वांमीजी श्री श्री १००८ श्री श्री रुपचंदजी महाराजके शिष्य श्री श्री १००८ श्री श्री जेठमलजी महाराज ने वीरवीजेजी जसवींजेजी आदि वहु संवेगी यती लोगांसें सेहेर अहमदावाद मे चरचा करी जीनकी ता वोतसी कथन हे, उन चरचाके रचाकर समकितसार ग्रंथ रचा हुवा हे सो आगे छपाथा सो पुस्तक अव नही मीलती हे उनसे अव पुज्य अमर-सिंगजी महाराज के पाटानुंपाट वाल व्रमचारी पुजजी माहाराज श्री श्री १००८ श्री श्री पुनमचंदजी म्हाराज के शीष्य स्वामीजी म्हाराज श्री श्री १००८ श्री जेठ-मलजी म्हाराज श्री श्री १००८ श्री डालचंदजी म्हाराज श्री हेमराजजी म्हाराजके सदउपदेस सें सेहेर जालोर प्रगने गाम वादणवाडी के नीवासी सुश्रावक उदारचित प्रणामी मुता. मनरुप मलजी उनके पुत्र कपुरचंद फुलचंद श्रधानका निर्णे के लीये प्रथम समकीतसार श्री जेठमलजी स्वामीजी कृत प्रथम भाग हे,समकितसारका खंडन कीया वलभवीजेजी ने उसपर समकीत सलोद्वार वनाया उनका खंडन माणेकलाल दयालजी भावनगरी जिणांने समकितसार दुसरा भाग वनाया. ए .दोनु भाग श्रद्धान के लीये अमुल्य वोत श्रेष्ट हे, श्रोताजनोंके वांचने योग्य हे जिनसे अपनी श्रद्धा वोत पुष्ट रेती हे सो उपीयोग सें निरपक्ष होकर वांचो.

अनुक्रमणीका.

बावत.	पृष्ठ.

छप्पो.

पट पोपट पर दोट, कदापी वली न करशे;
पेखी पथर पर भक्ष, डबलथी हरण न डरशे;
मुक्ता फटक मराळ, लपनमां कदी न लेवे;
कागद कुशळ कराय, आप सटपट नव सेवे;
दंभ नजर सु देखतां, पहीचाने छे पसुपणे;
क. र. ही. कें नरसु समज, प्रतिमा मां प्रभुता भणे.

छप्पो.

पट पोपट पर दोट, कदापी वली न करशे;
पेखी पथर पर भक्ष, डबलथी हरण न डरशे;
मुक्ता फटक मराळ, ल्पनमां कदी न लेवे;
कागद कुशळ कराय, आप सटपट नव सेवे;
दंभ नजर सु देखतां, पहीचाने छे पसुपणे;
क. र. ही. कें नरसु समज, प्रतिमा मां प्रभुता भणे.

समकितसार भाग २ जो.

(उपोद्घात.)

समकित एटले शुं एतो प्रथम बुक वांचतां तेमज ते केवी रीते प्राप्त थाय छे ते आ बुकना प्रारंभ अगाउना पृष्टपरथी स्हेजे मालम पडी आवशे.

जैनधर्म अनादी छे ने तेना धर्म पुस्तको एवी गंभीर्य शैलीथी रचाएलां छे के तेनुं श्रवण करतां माणसोना हृदयमां दयानो अंकुर फुटतां, मन जन्म सार्थक केम थाय तेपर दोडेछे, पण तेनो मोटो जथो गुप्त भंडारोमां भराइ रहैवाथी ने तेना विशेनी आधुनीक जैनोनी थोडी काळजीने लीधे हाल तेनी ख्याती अन्यमतवादी थोडी स्वीकारे छे, पण जेम जेम अज्ञानरुपी अंधकारनो नाश थतो जशे ने आ तेजस्वी धर्मनो लाभ लेवा माणसोना मन आकृषाशे तेम तेनी अंदरनी खुबीओ ते वधारे वधारे देखशेज एतो निःसंदेह दीलगीर छीए के सांभळवा मुजव तेमज नजरे देखवा मुजव आपणा उत्तम धर्म पुस्तक करनारना नामने काजळसम काळो डाघ आपनार केटलाक मात्र कहेवानाज जैनधर्मीओ मुळ पुस्तकोना आधार तथा आ ज्ञान जोतां मतिभ्रमताने लीधे पोताना नवा विचारो तेमां खोशी आवी रीते धर्म शास्त्रकारोनी आज्ञा छे एम भोळा भाविकोने समजावी पापना पुञ्य बांधे छे ने बंधावे छे तो आवा नरोने अमारे क्यां विशेषणो आपवां ए आ वखत लखवा अमारी कलम चालती नथी. पण तेवा ओने बोध देवानेअर्थे अमे आ प्रसंगे हालना एवा एक कल्पीत पुस्तकना कर्त्ताने थोडी सुचना आपीए छीए. केमके अमारो उद्देश तेने लगतो छे. समकित शैल्योद्धारना कर्त्ता–भाइ समकित एटले शुं एतो आ बुक अथथी इतिसुधी वांचतां मालम पडतुंज नथी केमके समकितना राखनारे क्षमा, दया, शांती, कटु भाषण, मृषावाक्य ने बीजा एवा अनेक अवगुणोथी तो विमुख रहेवुं जोइए. पण आ बुकना कर्त्ताए तो तेनी अंदर एटला बीभस्त शब्दो वापरेला छे के चोपडीना उपर नामने जाणे एवज आपी छे ! !

आवुं तमारामां क्यांथी भुत भराइ गयुं के समकित ए नामनी बुक ने तेनी अंदर आवां कटु वाक्यो, दांडाइ लुच्चाइ तथा अविवेकताइनां वेण लख्यां, खरेखर समकितनो शैल्यज तमारामां भरायो के आ शैल्यनो उद्धार तमने आम सुज्यो ? धीक छे आ तमारा कामने अने * * *

सावध आचार्यजी तमोए पण कांइ विचार न कर्यो ? तमोए आ संसारनी

मिथ्या मायानो मोह शा वास्ते छोडेलो ? ते शुं आम निंदीत पुस्तक प्रगट करवाने समजुने शान वस छे. जो तमारे धर्मचर्चा करी मतनुं प्रतिपादन करावबुं हतुं तो अन्यमार्गनी खोट हती ? शुं आम करेथी पीत्तळ सोनामां खपशे ? अरे छोडो तमारो मिथ्यागर्व ने काढो आवा निःस्वार्थी विचारोने.

मोक्ष संपादन करवानो रस्तो वहु विकट छे. तपासो आपणा धर्मशास्त्रो के निंदीत कार्यो करनारना केवा बुरा हालो थएला छे ? तमारा नाम प्रमाणे तमारा सेवको तमने पोताना जीवथी व्हाला गणीने दीपकमां जेम पतंगीया जंपलाइ नाश पामे तेम नाश पामी पोतानी आवरुने नुकशान थएथी पस्तावो करता हशे के करशे. साधुना सर्व लक्षणो आवा निंदीत पुस्तक रचनार मां केवा होय ते तो सौ अन्यमतवादी पण विचारशे ! !

युवान अवस्थाथी थएला अंधकारने सूर्यथी पण भेदी शकाय नहीं, रत्न प्रभावडे छेदी शकाय नहीं, ने प्रदिप्त प्रकाशव दुर करी शकाय नहीं,तो हवे आवा युवान मदमां हींडोळे चडेला मदोन्मत उछरता युवानामां वळी ज्यारे चपळ तेना सेवकोने अति बुरीगतीए पोचाडनार, न जोवरावनार सारु या जोवरावनार नठारुं, चतुराइ, चंचळताइ, ने चपळताइने चलायमान करनार लक्ष्मीदेवी मळ्यां त्यारे तो पछी उदयनो आडो आंकज वळ्योना ! !

युवानीमदमां दीवाना बनेला ने तेमां वळी धनमदथी अंधत्व प्राप्त थएला उछरता युवानो केम करवाथी मारापर विटंवना आवशे ? ने केम करवाथी हुं लोक हितेषीमां खपीश ? या मारी, कुंटुंवनी के मारा सगावहालांनी उन्नतीनो अरुण प्रकाशमान करीसकीश तेनुं भान क्यांथी लावे ! केमके पवन जेम रजो भ्रांती उत्पन करी शुष्कपत्रने स्वइच्छाए अतीदुर घसडी जायछे तेम आवा उन्मती युवानी मदी माणसोनी प्रकृति तो शास्त्रज्ञानथी सारी थइ होय तोपण जडतापात्र थइ जाय

प्रथममां तमोए जे बुरा शब्दो नांखी अमारा तत्वशोध धर्मने खोटो करवाने ए पुस्तकमां वगर विचार्युं दाखल कर्युं छे तो तेम करवाथी शुं * *

पडवाइ थएलाने समाचारीथी दुर करेला द्रव्यवेषी जादूविद्यामां कुशळ तेमज मायाना पासामां बंधाएल छे, तेमज तेओ संसारीने न छाजे तेवां अघटीत काम करेछे; तेना दाखला तमोए आप्या पण अरे शुं तमो नथी विचारता के बधाने पांच आंगळी सरखी होय ? आवी बाबतनो जो अमे शोध करीए तो * *

हवे आ बाबतमां आटलेथी अटकतां अमारे जणाववुं पडेछे के मत प्रतिपादन करवाने अर्थे नितिनो रस्तो नहीं तजशो. केमके मिथ्या डोळघालु पुरुषो कळाया विना रहेता नथीज, आ अमारुं लखाण कदापी तमोने माठु तो लागशे पण ते तमे नितिनो रस्तो मूक्यो तेथीज छे.

हवे आ बाबतमां आटलेथी अटकतां विद्वान गुणज्ञ नरोने नम्रताथी केहेवानुं के आ पुस्तक धर्म संबंधीनुं छे एटलुंज नहीं पण तेमां ठेकाणे ठेकाणे सिद्धांतोना पाठ आवेला छे जेथी वांचनार साहेबोए अकाळ, असझाय, दीवो, वीगेरे जे जे वखते सिद्धांतो न वंचाय ते ते वखत वरजीने मोढे जतना सहीत वांचवा कृपा करशो ए मारी विनती छे, छतां पछी उलटीरीते वर्तशो तो तेनो दोष तेमना शिरपर छे, हुं आ बुक बनावतां जाती विभक्ती, शब्द, चीन्ह (वीराम) ने वाक्यरचना वीगेरे योग्यरीते संभाळवामां यथासक्ति दत्तावधान रहेलोछुं तथापी मनुषजातीनी प्रकृति सिद्ध भुल थइजवाना दोषथी कांइ दुषण के स्खलन माराथी थइ गयुं होय तो ते सुज्ञ वांचनार सुधारीने वांचशे. केमके दशविकालीक सुत्रमां कह्युं छेके,

आयारपन्नत्तिधरंदीट्ठीवाएमहीजगं
वएवीखलीयंनच्चानत्तंउवंहशेमुणी ॥

अर्थ—आचारंग सुत्रना भणनार तेमज विवहापनंतीना धरनारने द्रष्टिवाद सर्वथा जाणनार छदमस्तना कारणथी कोइ वखते वचनथी खलना पामे छे, तो तेनी उपहास न करशो. अहो ! मुनी ! तो हुंतो अल्पज्ञानी ने प्रथमाभ्यासी छुं जेथी भुल्यो बतावी कृतार्थ करशो एटले बीजी आवृतिमां ते सुधारो करवामां चुकीश नहीं एज विनंति.

समकितनुं विवेचन.

आ अनादि अनंत संसारमां अनादिकाळथी कोइएक मिथ्यात्वद्रष्टि जीव मिथ्यात्वनी प्रबळताना उदयथी अनंत पुद्गळ परावर्तक वारंवार जन्म मरण करीने भ्रमण करे छे एम करतां करतां काळांतरे घणा अशुभ कर्मनां दळ घटीजवाथी हळवापणुं थइ जाय छे, द्रष्टांत जेम पथ्थरवाळी जमीन नदीनो प्रवाह चाले छे तेमां केटलाएक पथ्थर पाणीनां मोजांथी सामसामे आपथी घसाइने सरीखा वाटला एटले गोळाकारे थइ जाय छे, तेवीज रीते जीवपण परिणामे विशेपरुप यथा प्रवतिकरणजोग थइने अनंता कर्मना दळने क्षयकर्या अने थोडां कर्म बांधवानो स्वभाव थयो ते वखते संज्ञी पंचेंद्रिपणुं पामीने पुर्वोपार्जित आठ कर्म छे, तेमांथी एक आउखाकर्म वर्जिने वाकीना सात कर्मने एक पलोपमनो असंख्यातमो भाग्यहीन एटले एक कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिए करे छे तेनुं नाम यथाप्रवतिकरण कहेवाय छे. अने ते वखते पुर्वजन्मोनां उपार्जित अशुभ कर्मना जोगथी अत्यंत रागद्वेषना परिणामरुप कठण छुटी न शके तथा तुटी न शके अने परथम कोइपण काळमां जीवे तोडी नहोती एवी ग्रंथी एटले गांठ छे, ते गांठना मुळसुधी यथाप्रवतिकरणथी अनंत कर्मोना दळने क्षयकरीने अनंता अभव जीवो पण पोहोची शके छे, वळी ते ग्रंथीना देशमां पहोंचवाथी भव तथा अभव जीव संख्यातोकाळ अथवा असंख्यातो काळ रहे छे, तेमां जे अभव जीव छे ते तिर्थंकरना अतिशय विगेरे देखीने तथा चक्रवर्ती आदे राजाओए करेली तिर्थंकरनी सेवा विनय आदिक वहु मान भक्ति देखीने देवलोकादिकनां सुख लेवानी इच्छाए दीक्षा ले छे ने ते अभवीद्रव्य साधु थइने पोतानी प्रतिष्टानी अभिलाशथी भाव साधुओनी रीते एवी सख्त आकरी क्रियाथी शरीर क्रस्य एटले निर्बळ करीने जैनना द्रव्यलींग पणामां काळ करीने नवमा ग्रैवेक वैमान सुधी तेनी गति थाय छे. वळी ते अभव द्रव्यलींगी केटलाएक सुत्रपाठ मात्र नवपुर्व सुधी भणे छे वळी केटलाएक देशेंउणां दशपुर्वसुधी भणे छे. हवे आ शब्दना प्रसंगमां समजवानुं के देशेंउणां दश पुर्वना अभ्यास करनारने मिथ्यात्वद्रष्टिपणानी संज्ञा जणाय छे, माटे तेटलो अभ्यास करनार कोइपण जण मिथ्यात्वोदयथी मुळसूत्रथी विपरीत परुपणा करेतो तेमां कांइ नवाइ जेवुं गणाय नहीं अने पुरा दसपुर्वना अभ्यासवाळा जीवने तो अवश्य सम्यकत प्राप्त थाय छे, ने तेथी ओछा पुर्व भणनारने सम्यकतनी भजना छे, वळी कल्पभाषमां पण पुर्वाचार्योए कथन करेलुं छे, " चउदसद सय-

अभिन्नेनियमासम्मंतुससेएभयणा " भावार्थ पुरा चउद तथा पुरा दश पुर्वे भणनारने नियमा सम्यकतनो लाभ थाय छे. हवे ए यथाप्रवृतिकरणने अंते अनंत कर्मना दळक्षय थवाथी अनंत विर्यना पसारथी अपुर्व करण करे एटले सातकर्मोनी कोडाकोडी सागरोपमनी स्थीति रही हती तेमांथी अंतर मुहुर्त भोगवी हिन करीने ते स्थानके पुर्वोकत ग्रंथी भेद पुर्वक अनिवृतिकरणमां प्रवेश करे छे. एटले जे निवड राग द्वेषनी गांठ हती ते भेदाणी त्यां यथा तप कर्मोनुं क्षय करीने पुर्वो पार्जीत पच्छात रहेला मिथ्यात्व दळना त्रण पुंज्य करे छे ते त्रण पुंज्यना नाम शुद्ध, मिश्र ने अशुद्ध ए त्रण पुंज्य कर्या बाद निवृतिकरणनी सामर्थाइपणाथी कइक भव जीवो प्रथमथीज क्षायोप शमीक सम्यकतद्रष्टि थाय छे ने केटलाएक औप शमीक सम्यकत द्रष्टि थाय छे ए सम्यकतनुं विशेषण बीजा सविस्तर सुत्र या ग्रंथोथी विवेकी बुद्धिमान पुरुषोए जोइने माहेतगार थवुं ए त्रण करण जाणवां तेमां अभव पहेलां यथा प्रवृतिकरण सुधी रहे छे ने भव जीवो त्रण करण करीने सम्यकत दशा पामे छे.

सम्यक्तप्रकार नीचे मुजब.

गाथा—एगविहदुविहंतिविहं, चउहापंचविहदसवि
हंसम्मंहोइजिणणायगेहिंइइभणियमणंतनाणीहिं.

भावार्थ—श्रीवितराग देवना शुद्ध उपदेशमां एम कह्युं छे के. जीव, अजीव, विगेरेमां साची श्रधा आणवी ते समकितनुं मुख्य लक्षण छे. ए एकविध १ हवे द्रव्य सम्यक्तने भाव सम्यक्त ए द्वीविध २ तेमां विशुद्धि विगुप करीने मिथ्यात्व पुदगळोने शुद्ध करवा तेनुं नाम द्रव्य सम्यक्त छे अने ते द्रव्य सम्यक्तनी सहायथी उत्पन्न थइ जीनोगत तत्वोपर रुचिरुप परिणाम तेनुं नाम भाव सम्यक्त छे वळी निश्चयनय अने व्यवहार नयथी पण द्वीविध थाय छे तेमां ज्ञान, दर्शन, चारित्र, रुप आत्माना परिणाम अथवा ज्ञानादिक परीणती थकी जुदो आत्मा छे. एम जाणे तेनुं नाम निश्चय सम्यक्त छे. तेज मोक्षनुं मुळ कारण छे. तेमां देव ते अरीहंत छे अने गुरु शुद्ध धर्मोपदेशक छे तेज मोक्ष मार्गना देखाडनार छे. अने केवळ ज्ञानी महाराजनो प्रकाश करेलो दयामुळ तेज सत्य धर्म छे. ए त्रण सम्यक्त तत्वोना सातनय, चार प्रमाण, चारनीक्षेपा, आदिगुणोथी श्रधाने सिद्ध करी ते

निश्चय सम्यकतनुं कारण व्यवहार सम्यक्त छे. तेना नाम कारक, रोचक ने दीपक ए त्रण प्रकार थया तेमां कारक एटले आपणा जीवने घणा उत्साहथी धर्मानुष्टांनमां प्रवर्त्ती करावे ए सम्यकत विशेषे करीने पंच महाव्रतधारी मुनीजनोनेज होय छे. हवे रोचक सम्यकत एटले केवळ अनुष्टांन उपर रुचि करावे ए विशेष करीने अव्रति समदृष्टि जीवनेज होय छे. हवे दीपक सम्यकतनां लक्षण कहे छे. ए कोइ आपमिथ्यात्वदृष्टि अभव्य अथवा कोइ दुरभव्य अंगार मर्दकनी रीते रहे अने ते पोताविना बीजा जीवोने धर्म कथा कहीने वितराग भाषित बोधथी जीवा जीवादिक पदार्थो कही बतावे पण पोते श्रधे नहीं, आ सम्यकतना प्रसंगमां कोइ संशययुक्त थइ प्रश्न करेजे अहो बोधक ! ! जो ते सभव्य पोते मिथ्यात्वदृष्टि छे तो तेने सम्यकत केम कहेवाय ? हवे बोधक कहे छे के अहो सुज्ञ ! निरशंसयपणे श्रवण कर के ए अभव्य मिथ्यात्वदृष्टिने वाचकज्ञाननी वृद्धिथी भाषावर्गणा रुप धर्माधर्म प्रकाश करवानुं परिणाम विशेष करीने छे अने तेनो उपदेश श्रोता जनोने सम्यकत पामवानुं कारण छे. ए हेतु कारणथी कार्यनो उपचार करीने ते मिथ्यात्वीने धर्मोपदेशक थी बोलवा रुप सम्यकित कहेवाय छे ते नाम पाम्यो. परंतु निर्गुण छे ए त्रिविध थया, वळी सम्यकतना त्रण प्रकार छे, ते औपशमीय, क्षायक, क्षायोपशमीक ए त्रण, तेमां औपशमीक सम्यकतनुं लक्षण कहे छे जे उदयमे आवेला मिथ्यात्वनो अनुभव करीने क्षीण एटले क्षय करे अने सत्तामां रहेला अनुदीरण एटले उदयमे न आवे ते मिथ्यात्व दळने शुभ परिणामनी विशेषताए विशुद्ध करीने उपसम करवाथी जे गुण उत्पन्न थाय एने औपशमीक सम्यकत कहीए. ए सम्यकत पुर्वोकत ग्रंथी भेद कर्त्ताने तथा उपसम श्रेणी करनारने होय छे.

हवे क्षायक सम्यकतनुं लक्षण कहे छे. अनुतान बंधी क्रोध, मान, माया, लोभ ने क्षय करीने त्यारबाद मिथ्यात्व मिश्रसम्यकत पुंज्यरुप तथा त्रण प्रकारना दर्शन मोहनीय कर्मनुं सर्वथा क्षय थइ जवाथी जेगुण पेदा थाय तेने क्षायक सम्यकत कहीए. ए सम्यकत क्षपकश्रेणी चडनार जीवने होय छे.

हवे क्षायोपसमीक सम्यकतनुं लक्षण कहे छे, उदयमे आवेला होय मिथ्यात्व तेने मिथ्यात्व विपाकने उदयकरीने भोगववाथी क्षीण थया परंतु जे शेष सत्तामां छे पण उदयमे आव्या नथी ते उपशांत थया, अर्थात मिथ्यात्वने मिश्र पुंज्यने आश्रयण करीने उदयमे आवता रोकया अने शुद्ध पुंज्यने आश्रयणे करीने मिथ्यात्व स्वभावने दुर कर्या. ए प्रकारथी उदीरण मिथ्यात्वने क्षय करवाथी अने अनु-

दीरणनें उपसम करवाथी जे गुण उत्पन्न थाय तेने क्षायोपस्मीक सम्यकत कहीए, ए त्रिविध थया.

हवे चार प्रकार कहेछे, औ पस्मीक, क्षायक, क्षायोपस्मीक ने सास्वादन एम चतुर्विध सम्यक्त छे, हवे सास्वादन एटले पुर्वोक्त उपसम सम्यक्तथी पडिवाइ थवाना अंतमां तेना अंशनो जे अनुभव थायछे तेनुं नाम सास्वादन सम्यक्त कहेवाय छे. ए चारमे एक वेदक सम्यक्त भेळवतां पंचविध सम्यक्त कहेवाय छे, तेमां वेदक सम्यक्तनुं लक्षण ए छे के जे जीव क्षपकश्रेणी पामीने अनुतानवंधीनी चोकडी तथा मिथ्यात्व अने मिश्र ए बे पुंज्यनो क्षय कर्यापछी क्षायोपस्मीकरुप शुद्ध पुंज्य क्षीण थतो जाय ने ते क्षय थतां पच्छात अंतीम पुद्गळने क्षय करवानी उद्यतके अंतीम पुद्गळोनुं जाणपणुं ते वेदक सम्यक्त कहेवायछे ए पंचविध सम्यक्त निसर्ग ने अधिगमथी थाय छे माटे ते कारणथी दसविध थया. ए सम्यक्तोनी प्राप्ति शुद्ध चैत्नदशा प्रगट थवाना समयमां छे.

हवे एवा आत्मगुणज्ञ सम्यक्तनी पुष्टिनी खातर पन्नवणाजी सुत्रगां कह्युं छे के "दसविहे सोएसे" एटले पुर्वोक्त सम्यक्तोनी दस प्रकारे रुचि उपजे छे. ते दस रुचिनुं विवेचन नीचे मुजव.

पोतानाज स्वभावथी जीनोग्त वचन उपर रुचि उपजे ते पहेली निसर्गरुचि. १. गुरुना उपदेशथी जीन वचन उपर रुचि उपजे ते वीजी उपदेशरुचि २. सर्वज्ञ वचनरुप आज्ञामां रुचि उपजे छे त्रीजी आज्ञारुचि ३. सुत्रने अनुसारे रुचि उपजे ते चोथी सुत्ररुचि ४. जीनोग्त एक वस्तु जाणवाथी अनेक वस्तुमां रुचि उपजे ते पांचमी वीजरुचि ५. विशेष जाणवाथी रुचि उपजे ते छट्ठी अभिगमरुचि ६. सकळ द्वादशांगीनी नय जाणवाथी रुचि उपजे ते सातमी विस्तार रुचि ७. संजमादिक शुद्ध अनुष्टान करवामां रुचि उपजे ते आठमी क्रियारुचि ८. घणा ज्ञाननुं जाणपणुं नछतां थोडा जाणपणाथी रुचि उपजे ते नवमी संक्षेपरुचि ९. पांच आस्तिकाय धर्ममां तथा श्रुतधर्मनुं जाणपणुं करवामां रुचि उपजे ते दसमी धर्मरुचि १०. ए दस रुचिनो सविस्तर वोध पन्नवणा सुत्रथी समजवुं. वळी ते पुर्वोक्त सम्यक्तोनो निश्चय करवामाटे सडसठ भेद पण कह्या छे, तेमां सम्यक्तना चार श्रधान तथा सम्यक्तनां त्रणलींग तथा दस विनय तथा त्रण शुधी तथा पांच दुपण तथा आठ प्रभावक तथा पांच भुषण तथा पांच लक्षण तथा छ जत्ना तथा द्रव्यथी छ आगार तथा छ भावना तथा छ स्थानक छे ए सडसठ भेदथी सम्यक्त निर्मळ थायछे, ए

समकितनो विस्तार करतां पार आवे तेम नथी पण विवेकी धर्मात्माओने जाणवानुं के एम जीनआज्ञा प्रमाणे सिद्धांतबोधनुं श्रवण करतां शुद्ध सम्यक्त ज्ञानचारित्र ए रत्नत्रयनो निश्चार्थ थशे ने कर्म बंधनथी पोतानुं भिन्नपणुं मालम पडशे अने ते समकितनि पुष्टिनां कारणो अरिहंतादिक श्रमण निग्रंथ या देशव्रति ने कह्या छे ते दसमा प्रश्नोत्तरथि सारांस समजी स्वपरआत्माना हित्यवंछक थवुं.

समकित सार भाग बीजो

अनुक्रमणिका.

॥ अथ श्री शांतिजीन स्तवन. ॥

सुखकारी रे प्रभु शांतिजी सोळमां जीनराय, समर्या नव नीध थाय; प्रभु-जीना नामथी पातिक दुर पलाय. ॥ १ ॥ विश्वसेन कुल दीनमणी, अचीरा प्रभु-जीरी गांय; कंचनवरणी छे काय, धनुप चालीसरी देखे आवे छे दाय. ॥ २ ॥ हथीणापुरीनो राजीयो, खट खंड केरो रे इस; जीती राग ने रीस, संजम सुधो आदर्यो; पाल्यो विसवा रे विस. ॥ ३ ॥ घनघाति कर्म क्षय करी, हुवा केवल-नाण; लोकालोकरां जाण थया, त्रीभोवन धणी; आगम वचन प्रमाण. ॥ ४ ॥ देव अनेक देख्या घणां, नहीं आवे तुम तोल; कांकरो केम पामे मुल, चिंतामणी आगले; अंतर खोलोने गोल. ॥ ५ ॥ तुमसुं बांधी प्रीतडी, जेम बपीओ रे मेह; वाधे अधिको स्नेह, क्सिार्या न वीसरो; प्रभु मती देजो रे छेह. ॥ ६ ॥ अंतर-जामी वहाला प्रभु, आतमना रे आधार; शुं कहु वारो रे वार, पडयो भवसिंधुमां, तारो तारणहार. ॥ ७ ॥ सरणो लीधो रे साधुनो, तो सरसे मुझ काज; वाधे अधिकी लाज, प्रभुना प्रतापसु; लहीए अवीचल राज. ॥ ८ ॥ शीष्यनां शीष्य देवजी स्वामीनां, पभणे ऋषी कर्मचंद; प्रभुजीने नामे आनंद, निरंतर म्हारे; समर्या शांति जीणंद. ॥ ९ ॥ सवंत ओगणीस एकवीसमां, चैत्र मास उदार; वद सातम शनीवार, गाया गुण प्रभु तणा; श्री भुजनगर मोझार. ॥ १० ॥

समकितसार.

१. श्री दआ धर्म प्रसर्यो भस्म गृह उतर्यो तेनो विस्तार.

केटलाएक हींस्याधरमी कहेछे जे तुमेतो हमणा थयाछो तमने थया त्रणसें वरस थयां छे एहवो कहे छे तेहनो उत्तर कहीए छीए.

जंरयणिंचणं समणे भगवं माहावीरे जाव सव्व दुख प्पही-णे तरंयणींचणं खुदाए भासरासी नाम महग्गहे दोवाससहस्स-ठिइ एइं समणस्स भगवउ माहावीरस्स जम्मण नखत्ते संकंते तप्पभइचणं समणाणं निग्गंथाणं निग्गथीणंय नो उदीए२ पुया सकारे पवत्तइ जयाणं से खुदाए जाव जम्मण नखत्ताउ विइक्क-त्ताउ भविस्सइ तयाणं समाणाणं निग्गथाणंनिग्गथीणय उदीए२ पुया सकारे भविस्सइ.

अर्थ. ज. जेणी रात्री. स. श्रमण. भ. भगवंत. मा. श्रीमहावीर. जा, जावत. स. सर्व. दु. दुखनो. प्प. अंत कीधो. तं. तेणी रात्रीए. खु. क्षुद्र स्वभाव छे. भ. भस्म रासी. न. नामे. म. महाग्रह. दो. बेहजार वरसनी स्थीतीए. स. श्रमण. भ. भग-वंत. मा. श्रीमहावीरने. ज. जन्म, न, नक्षेत्र. सं. सक्रम्यो आव्यो. त. ते दीवसथी स. श्रमण. नी. निर्ग्रंथ. नि. निर्ग्रंथीने. नो. उ. उदय. पु. पुजा. स. सतकारे. प. नहीं प्रवर्ते. ज. जीवारे. से. ते. खु क्षुद्र जा. जावत. ज. जन्म न. नक्षत्र थकी. वी. अतीक्रमशे. भ. थाशे उतरशे. त. तीवारे. स. श्रमण. नि. निर्ग्रंथ. नि. निर्ग्रंथीने. उ. उदय. पु. पुजा. स. सतकार. भ. हुरये.

ए कल्पसुत्रमांही हींस्याधरमी. माने छे ते मध्ये पाठ कह्यो छे जे वेळा श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी मुक्त गया ते वेळाए भस्मग्रह त्रीसमो बेहजार वरसनी स्थीतीनो भगवंतने जन्म नक्षत्रे बेठो तेणे करी बे हजार वरस लगे जीनमारगनी साधु साधवीनी उदय १ पुजा सतकार न थयो ते बेहजार वरस पुरां थीया केडे जी-नमारगनी साधुनी साधवीनी पुजा सतकार थीयो, हवे ते बेहजार वरस क्यारे पुरां

थयां तेनो वीचार–श्रीवर्धमानस्वमी मुक्ते गया तीवार पछी त्रण वरसने साडाआठ मास तो चोथोआरो हतो पछे पांचमाआराना चारसें सीतेर वरस लगे संवत् वीतात चाल्यो पछे वीक्रमादीते नवो संवत कर्यो तेहने पण संवत १८६५ वरस थीयां आजदीन लगे भगवंत मुक्त गयाने त्रेवीससेंहने ओगणचालीश वरश ते थीया तेमांहेथी बे हजार वरस तो संवत पंदरसें एकत्रीश थइ गीया तीणसमें श्रीसीद्धांत देखीने दया मारग प्रवर्तो तीहांथी दया मारग दीपतो थीओ, ए सुत्रनो न्याय जोतां थकां तो श्रीलुंकागच्छः साधुनो मारग सत्य छे.

दोहरो.

जो गुलाम सत पेढीयो ॥ तोही न राखे नाम ॥
पुत्र पछे पण जनमीओ ॥ तोही पीताने ठाम ॥ १ ॥

तथा भस्मग्रह वरततां थका कुमारपाळराजा. विमळशाह. वस्तपाळ. तेजपाळ. इत्यादीक थीया तेणे घणा चैत्य कराव्या. पण जीनमारग दीपतो न कह्यो सांहमा मीथ्यात्व वधार्या ते माटे हमणा थया कहसो दया धरमी प्रते तो पण सत्य छे, सीद्धांत तो अनंतकाळना चाल्या आवे छे. ते अनुसारे ए मारग सत्य छे, जेम ओशवाळ वाणीआ पहीला तो मंस आहारी क्षत्री हता. पछे दयाधरमी महाजन थीया तो तेणे सुं खोटा कार्य कीधो के भलो कार्य कीधो ? तीम हींस्याधरमी मीथ्यात्व मत मुकी दयाधर्म आदर्यो, ते घणुं २ सारुं कर्युं छे ते वीचारी जोजो.

तेवारे हींस्याधरमी कहे तुमे कल्पसुत्र नथी मानता तोए भस्मग्रहनो प्रस्ताव कीम मान्यो ? ते उत्तर तुमने तमारा ग्रंथनी साख देखाडवा माटे कह्यो छे. जेम श्रीमाहावीरे सोमलने तथा थावर्चा पुत्रे सुकदेवने कह्यो जे तुमारा ब्राह्मणना मतने मानो तेथी ते हवे तेहने तेहनाज मतनी साख देखाडी, तीम अमारे पण कल्पसुत्र मानवा न मानवानो तो इहां कथन नथी. ए तुमनेज साख देखाडी छे जे तुमारा मतना सास्त्र मध्ये पण एम कह्यो छे तथा संघपटाना करणहार तुमारे वृद्ध थया छे. जीनवल्लभ खरतर तेणे पण संघपटा मध्ये भस्मग्रहक कह्यो छे. ते संघपटानी काव्य लखी छे.

॥ मालणीः ॥ इह किलि किल कालः व्याल वक्रालराल ॥ स्थिति युखिगत तत्वे प्रीति नीति प्रचारे ॥ प्रसरद नवबोधः प्रस्पुरत्का पथोध ॥ स्थगिति सुगतिसर्गेः संप्रतिप्राणवर्गेः ॥२॥

ए संघपटानी त्रीजी काव्य कही हवे तेनो अर्थ कहे छे. इह कलीकाळ पांचमो आरो व्याप्त हवो जे सर्पना मुखना आंतरा तेहना मुखमांही रहेवुं ते जीवने कीस्यो सुख जाणवो स्थिति पांचमा काळना मानवीने मीती तुच्छ हुस्ये जे भणी तत्व देव गुरुने धर्म्म दयादीक शुद्ध पंथ ते धर्ममार्ग लोपासे गत थाशे, मीती नीती गत थाशे, नवनवा कुमते पंथ प्रगट थाशे छकायजीव हणीने धर्म्म परुपसे एहवाकु पंथना उदय २ हुसे मोक्षामार्ग दयाधर्म्म लोपाशे. ॥ ३ ॥

॥ सगधराः ॥ प्रोशर्प्प भस्मरासीः ग्रह सखदसमाश्चर्य समाज्यपुष्पत् ॥ मिथ्यात्वंध्वांत रुद्देः जगतिविरलतायातिजैनेंद्रमार्गे ॥ संक्लीष्टं द्रष्टि मुढः प्रखल जडज नाम्ना यरक्तै जिनोक्ति ॥ प्रत्यर्थीसाधुवेषेः विषयभिरभितः सोयपार्थित्यपंथाः ॥ ४ ॥

ए संघपटानी चोथी काव्य कही हवे तेनो अर्थ कहे छे. मो. कालकुट समान भस्मरासी ग्रह २९ मो दीपस्ये तथा दसमा अछेरातणो महातम जे मोटो आश्चर्य ते अनंती चोवीसीये प्रगट थयुं जे मीथ्यात्वीना मार्ग थोक उदया अहो आश्चर्य जे कुमार्ग हींस्याधरमीनुं राज सुरमंत्र धारीनी दीपती हवी नवपंचाना प्रबळ हवा जगगुरु करी नवांगे करी पुजाय इम लक्ष्मीना संचय थाये कुसीळीयादर्सण ते जीनमार्गी कहावे शुद्ध दयामारग ते अल्प पतंगवत संकलीष्टधीष्ट मुंढ हींस्यापर दयाधर्म्मना नींदक अज्ञानी कुसीलीआ घणुं खळ दुर्जन जडलोक कहे ए दरसणीक दगेजीन आम्नाय छे कुतीर्थ साधु वेष धारी छे पीण वीखयकरी नारीना संगना करणहार सोहया समार्या चंदनचुए सुगंधे करी अर्चित तेवली मुक्त पंथ वांछेछे पीण अपितु तेहने न होइ. ॥ ४ ॥

॥ सार्दुल ॥ किंदिग्मोहमिताकिमंधबाधिराःकिंयोगचुर्णकृता ॥ किंदैवोपहताकिमंगठगिताकिंवाग्रहीवेशिता ॥ कृत्वामूर्ध्निपदंश्रुतस्पयदमीदृष्टैसदोषामपि ॥ यावृत्तिकुपथाजडानदधतेसूयंतिचैतकृतेः ॥ १७ ॥

ए संघपटानी सतरमी काव्य कही, हवे तेनो अर्थ कहे छे. किं. किंवा दीसीभुल्याछो किंवा आंधळाछो, किंवा बहेराछो, किंवा योगतंत्रादींक वाही चुर्ण सुको वास खेप, माथे घालीने लोक वस्य वर्तिया करो छो. किंवा दैवे हण्याछो जे मंद-

बुधी थकां शुद्रष्टी आवरी दीसे छे किंवा ठगारानी परे ठग्या छो वापडा मुग्ध मुरख कुगुरु कुदेवना वाहया खटकायजीवने हणीने हींस्याए धर्म कहे छे. किंवा ग्रहवासी कीधा छे. एणे वेषधारीए ऋषीना वेप लइने पाराधीनीपरे साधुवेप लेइ मृगवत श्रावकने छेतरे छे, जे सुत्रवाणी ढांकीने कुपंथ प्रकर्ण देखी कारण थापी भस्मग्रह पीडतलोकने भोळवे छे जे चैत्य पोसाळ करावी अधोमार्गे घाले छे कीहांइ सुतमध्ये देहरां कराव्यां नथी कह्यां. ॥ १७ ॥

जिनग्रहं जैनबींब जिनपुजनं जिनयात्रा दिविधिकृतं ॥ दानं तपो व्रतादि गुरुभक्ति श्रुतपठनादि चादतं ॥ स्यादिह कुमत कुगुरुकुग्र.ह कुबोध कुदेशनात ॥ स्फट मनभिमतकारि वर भोजन मिवविषलवनि वेशतः ॥ २० ॥

ए संघपटानी वीसमी काव्य कही, हवे तेनो अर्थ कहे छे. जे दरसणीए जैनना देहेरां जीन बींबपरुपी भराव्यां तेहनी पुजा खटमर्दन करी करावे छकायनो कुटो करावी धर्म्म पोताने अर्थे पांचेंद्री पोखवानेकाजे उपाय गच्छ चोरासी नीपना. पण ए सर्वे भस्मग्रह असंजतीनी पुजानुं अछेराने जोगे चाल्या छे जे ठामर स्वेतांबर वा दिगांबर वा. बोधना प्रासाद देहेरा नीपना छे. ते स्वेतांबर तीहांथी जोइ आवीने लोकने वीप्रतारीने लाभ देखाडीने उत्तराध, मारवाड, गुजरात, प्रमुखे प्रासाद करावी खटमर्दन धर्म परुपी चालतो कीधो छे देहराना द्रव्य तथा गुरु नवांगे पुजावीने द्रव्य भंडार भराव्या ए अवधी मार्ग कीधो जे दान तप, व्रतादी, गुरुभक्ति, सुति, भणवानी पुजा, पोथी, पुंजणा ए आदी देइ कुमति कुगुरु कुग्राह कुबोधी कुदेशना सत प्रकारे परुपी ग्रहीने घरे रहे सोहया समार्यां अगर चंदन चरच्या जीम प्रधान भोजन मध्ये विखता लवा घाल्या तीम वीख कुगुरुना वृंद एहवा सुरीगुरु उदया केवल नर्क गानी नव पांचडा जाणवा. ॥ २० ॥

॥ श्रग्धरा ॥ आकृष्टं मग्ध मीना न्विडशपिशितवः बिंबमादर्श्यजैनं ॥ तंन्नांम्ना रम्य रूपा नपवरकमठा न्सिष्टसिध्योविधाप्य ॥ यात्रास्नात्राद्युपायै र्नमशितक निशाजागरादि स्थलैश्च ॥ श्रधालुर्नामजैनो स्थलितइव शठैर्वच्यतोहाजिनोयं ॥ २१ ॥

ए संघपटानी एकवीशमी काव्य कही हवे तेनो अर्थ कहे छे. आकृष्टं. जीम

आक्रीमने मांछलांने गली नाखी लोढाने अंकुडे मांसनी पेसी वलगाडीने माछलाने पाणीमांथी काढीने मार्या. तीम जती वेषे माछी समान प्रकरणरुप गलीनी दोरी, लोढाना अंकुडा ते आडंबर. मांस पेसी ते जीन प्रतिमानी पुजा देखाडीने जीम माछलां फांदे पाडयां तीम श्रावकने खटमर्दन धर्मबींब पुजा करावीने चतुरगती संसारमां नाख्या. नाम रुषी धरावी धुर्त विद्याए करी कदर्थना मांडी छे. जे जात्रा सेत्रंजा गीरनारादीक स्नात्रा वीधी पुजादीक उपाय वीपे रातीजगो करी. छल मांडया छे. आलोयणी युवतीने एकांते लेइने कुसीलकर्म्म सेवे छे. एहवा सठ धुर्त विद्याए करी वंचे छे हो जैन वेषधारी ह्रांहां एहवां कर्म्म कीम करोछो ते एणे रुषी-वेषे जगत्र सर्व वंच्यो छे लोकमांही जगत्र गुरु धरावे छे. ॥ २१ ॥

॥ श्रग्धरा ॥ सेषा हुंडावसर्प्पिण्यनु समयरुसभव्यभावा नुभावा ॥ त्रिंशश्चो ग्रग्रहोयं खखनखमितिव्रर्षस्थितिर्भस्मरासी ॥ अत्यंचाश्चर्यमेतं जिनमतहतयेत स्स मा दुःखमाच्ये ॥ त्वेवंपुष्टे षुदुष्टेब्दनुकिल मधुना दुल्लभोंजनमार्ग्र ॥ ३० ॥

ए संघपटानी त्रीशमी काव्य कही, हवे तेनो अर्थ कहे छे. सेषाए सुरीना मत चोरासी चाल्या. ते हुंडासर्प्पणीने जोगे पांचमो आरो दुसम समय बीजो भस्मग्रह, त्रीजाने जोगे चोथुं असंजती पुजातुं अछेरुं दसमाने जोगे पांचमुं वांकानेजड ए पांच जोगे करीने भव्य जीवना भाव हीणा पडया चेइए कहीरने पांच आश्रवमांही हींस्यामार्ग देखाडयो ते घणुं ओगणत्रीशमो भस्मग्रह व्याप्यो. श्रीमाहावीर देवने जन्म नखेत्र बेठो तेणे करी उनमार्ग प्रगट चालयो छे शुद्धमार्ग सौधर्म्मसाखा ढंकाणी उपरांटामार्ग चाल्या ए मोटा आश्चर्य दीसे छे. जे श्रीजीनेंद्रनी वाणी केवल एक दयामय चाली आवेछे. आचारंगप्रमुखे साख्य जे. सव्वेजीवा सव्वेभूया सव्वेसत्ता नहंतव्वा. इतीवचनात्: मार्गसुधो नित्य चाल्यो आवे छे. अनंत चोवीसीनी वाणी ते मार्ग हणाणो लोकने दुःखी कीधा जे खटमर्दन करीने ते दुष्टे पांचेद्रीना पोषणे धर्म्म चलाव्यो. अहो ! भाइ जीनमार्ग पामतां दोहीलो कीधो. जे लोकोत्तरमिथ्या-त्वे विस्व आवर्यो यात्यंदनी परे भमाडी मुक्या छे सूतमार्ग लोपाणो परक्रणनी रुची मंडाणी. ॥ ३० ॥

ए संघपटाने करणहारे पण पंचमकाळ हुडासर्पणी असंज्य पुजा नामे दसमो अछेरो मान्योछे, त्रीसमा भस्मग्रहनो वरतन पीण मान्मो तीम पासचंदसूरी

टवाने करणहारे पण हुंडासर्पिणी दसमो अछेरो भस्मग्रह मान्योछे. ते भस्मग्रह उतरे श्रीदयामारग दीपतो थीयो. संवत पंदरसेंएकत्रीसें श्रीगुजरात देशे अहीमदावाद नगरने वीशे ओशवालवंसी साहलंको वशे ते नाणावटनो व्यापार करे, एकदा एक जुवान आव्यो तेणे महुमदी एकना दोकडा लीधा. ते लंकेसाहे दीधा तेणे तेहीज दोकडानी चीडीमार पासेथी चीडीयुं वेचाती लीधी ने हणवाने माटे घेर लइ चाल्यो. एहवो व्यापार अनर्थनो मुल जाणी ए वात प्रतक्ष देखी वैराग उपनो संवेगभाव आणी नाणाना व्यापारनो सम करी पोताने घेर आव्या पछी सीद्धांत लखवानो उद्यम आदर्यो.

चोपाई.

संवत पंदर गंतीसो गयो ॥ एक सुमेत मत तीहां थयो ॥
अहीमदावाद नगर मोझार ॥ लंकोसाह वसे सुविचार ॥ १ ॥
जे जे देखे रुषीआचार ॥ ते गाथानो करे उधार ॥
ग्रंथ अरथ मेले तेह घणो ॥ उद्यम मांडे लखवा तणो ॥ २ ॥
तेवे तेने मळ्यो लखमसी ॥ तेणे बीहु वात विचारी इसी ॥
सुत्रे बोल्यो जे आचार ॥ ते ए पासे नहीं लगार ॥ ३ ॥
भणे ग्रंथने राखे वेस ॥ थापे नीत कुडो उपदेश ॥
लोक प्रवाहे जाणे नहीं ॥ गुरु जागी वांदे छे सही ॥ ४ ॥
सुत्रेतो गुरु जे भांखीया ॥ साची जे पाळे रुषी क्रीया ॥
साधु तणो तो नाम नीग्रंथ ॥ एतो देखीता सग्रंथ ॥ ५ ॥
साधु भांख्याछे निरवद्ध ॥ ऐतो बोलेछे सावद्ध ॥
जोतीष निमीत प्रकाशे घणा ॥ वैद करे पाप कर्मतणा ॥ ६ ॥
नवकल्पी नवी करे विहार ॥ खमासमणे वोहोरे आहार ॥
आधाकर्मि ले अवीचार ॥ पाप थकी नव टले लीगार ॥ ७ ॥
लोक भोळवे लोभे पडया ॥ राग द्वेख अहंकारे चडया ॥
एहने वांदे लागे पाप ॥ एहवो सुमति करे जवाप ॥ ८ ॥

॥ यत. ॥

असंजयं न वंदीजा ॥ मायरं पीयरं गुरू सेणावइ पसथारो ॥ रायाणं देवयाणिय ॥ १ ॥ पासथंवंद माणस्य ॥ नैव किति

न निर्जरा होइ ॥ जायइकाय किलेशो ॥ बंधइ कम्मस्स आणाइ ॥ २ ॥

अर्थ असंजती केतां जेने व्रत पचखाण नथी तेने वांदवा नहीं तेमां संसार वेहेवारमां मात पीता मोटेरा सेनापति, शेठ, राजा, कुलदेव, तेने पगेलागवुं पडे तो ते संसार वहेवार छे. ॥ १ ॥ पण जीन लींगी छे ने पास्था एटले भ्रष्ट थीया तेने वांदतो थको कीरती न पामे. तेम नीर्जरा पण न होई तो सुं थाय के कलेश एटले दुख थाइ करमने बांधे ॥ २ ॥

चोपाइ.

ए लुंको देखाडे लोकने ॥ लोक घणा संकाणा मने ॥
डाह्या तेणे विचार्यो घणो ॥ छोडयो संग मठपतितणो ॥ ९ ॥
पुछे मठपतिरे वाणीया ॥ कांइ करो डोळा माणीआ ॥
कुलना गुरु कां वांदो नहीं ॥ अमे भणाव्या तमने सही ॥ १० ॥
प्रतीबोधीने श्रावक कर्या ॥ वडे तमारे अमने आदर्या ॥
आज तमे सुं समजो धर्म ॥ तेनो अमने भांखो मर्म ॥ ११ ॥
वळतुं उत्तर लुंको कहे ॥ तुम दीठे अम मन नवी रहे ॥
तमे कहावो सदगुरु साध ॥ घणा लगाडो छो अपराध ॥ १२ ॥
गुरु छत्रीश गुण परवर्या ॥ ते गुण तमे नवी अंगी कर्या ॥
तो गुरु जाणी केम वंदीए ॥ तब उत्तर दीधो लींगीए ॥ १३ ॥
गुण अवगुणनी वात मती करो ॥ वेस जोइ मन निश्चल करो ॥
जीनजीए कह्यो वांदवो वेस ॥ गुण होवो महोवो लवलेश ॥ १४ ॥
वेश वांदता समकीत लहे ॥ गुण नहीं पंचमआरे कहे ॥
एह वात लुंके सांभळी ॥ तेहने उत्तर आपे वळी ॥ १५ ॥
वेस तणोछे कुंण वीसेस ॥ जो न करे सुधो उपदेश ॥

॥ गाथा. ॥

वेसोवि अप्पमाणो ॥ असंजय पएसूबट्ट माणंस्स ॥ परतीती अवसेसं ॥ विष न मोरेई पजंतो ॥ १ ॥

चोपाइ.

तब लुंकाने कहे मातमा ॥ कांइ करो ढोळो आतमा ॥
वेसतणोछे महीमा भलो ॥ साखी तेह उपर सांभळो ॥ १६ ॥

॥ गाथा, ॥

धम्म रखइ वेसो ॥ संकइ वेसेण दिखिऊ अहं ॥ ऊम गोण पडंतो ॥ रखइ राय जणवऊव. ॥ १ ॥

अर्थ—वेसे करीने धर्म रहे ने वेसने देखीने माणस बीए ने वेस जो होये तो बीजा मारगमां पडे नहीं कोइएक राजाने द्रष्टांते जाणवुं.

चोपाइ.

लुंको कहे न मनाइ एम ॥ वेस एकलो तारे केम ॥
साधु गुणे वंदाए वेस ॥ अवर नथी जीननो उपदेश ॥१७॥

केवल वेसने वंदनीक जाणे ते उपर द्रष्टांत सांभळो. जीम वस्त्रमांहे साकर बांधीने कोथळी उपर साकरनो नाम लख्यो, पछे तेमांथी साकर काढीने कडु भर्यो बंधण उपर साकरनो नाम छे ते बंधण छोडीने खाय तो स्वाद साकरनो आवे के कडुनो आवे ? तीम बंधन सरखो ते उपरलो वेश अने साकर सरखा ते साधुना गुण जाणवा. वीना संजम वेस ते पण बंधन सरीखो छे. बंधननो गुण एटलो जे वस्तुने राखे तीम वेसनो गुण ए जे संजमना गुणने राखे पीण गुण वीना वेस वंदनीक नहीं.

चोपाई.

लुंको कहे अमे परख्यो धर्म ॥ तुमे न जाणो तेहनो मर्म ॥
गुरु आचारी गुणवंत देव ॥ अमे करीजे तेनी सेव ॥ १८ ॥
तुमे वळी जुओ मन विमास ॥ कीमही न रहीवो कुगुरु पास ॥
भलो सेववो वीखधर साप ॥ कुगुरु सेव्यानो बहु पाप ॥ १९ ॥
वळी जे हीणाचारी होय ॥ लोका पासे वंदावे सोय ॥
तेपण होवे टुंठो पांगलो ॥ दुर्लभ बोधी इम सांभलो ॥ २० ॥

॥ गाथा. ॥

जे बंभचेर भठा ॥ पाय पाडंति बंभयारीणं ॥ ते हुती

डुंट मुढा ॥ बोही पण दुलहा तेसिं. ॥ १ ॥

अर्थः—जे ब्रह्मचर्यथी भ्रष्ट छे अने ब्रह्मचर्यवंतने पग लगाडे ते ठुंठा मुंगा थाइ ने तेहने धर्मनी प्राप्ती पीण भवांतरे दोहेली होइ.

चोपाई.

भण्या गुण्याना गुण तस मांय ॥ लोच करे अलुवाणे पाय ॥
तो पण पासथादीक पंच ॥ संगत तेहनी वरजी रंच ॥ २१ ॥
चंपकमाल असुचीमां पडी ॥ ते उत्तमने शीर नवी चडी ॥
तीम पास्था करणी करे ॥ उत्तम तास न वंदन करे ॥ २२ ॥
ब्राह्मण चौद वीद्यानो जाण ॥ चंडाली संगवी रह्यो आण ॥
ते पामे नींदया अती घणी ॥ कुशील संगनी एहवी गणी ॥ २३ ॥
एहवी रीत वीचारी घणी ॥ कुगुरु संगत माठी घणी ॥
सुधो धर्म अमे आचरुं ॥ कुगुरु कुदेव संगत परीहरुं ॥ २४ ॥
तुमेतो निर्गुण गुणे आदर्यो ॥ देव आपणे हाथे घडया ॥
तेहनी भक्ति छकाया हणो ॥ ए उपदेश कह्यो कीणतणो ॥ २५ ॥
जीहां आरंभनो ठाम न भजे ॥ तीहां समकीतनो गुण उपजे ॥
दयाधर्म भांख्यो वितराग ॥ अमे रह्या इण वचने लाग ॥ २६ ॥
आचारंग चोथे अज्झेण ॥ गणधर तीर्थंकरनो केण ॥
परंपरा कहो सुधर्मतणा ॥ विघटे बोल तुमारे घणा ॥ २७ ॥

केटलाएक कहे छे जे सुधर्म स्वामीना अने केडायत तेनी परंपरा अम पासे छे तेहने नीचे लख्या बोल पुछवा.

बोल.

१. चेला वेचाथा ल्योछो. २. नाना छोकराने आचार भण्या वीना दीक्षा दीयोछो. ३ मुलगा नाम फेरवी नवा नाम आपो छो. ४. कान फडावोछो. ५. खमासमणे वोहोरोछो. ६. घोडा रथ वेल डोलीए बेशोछो. ७. ग्रहस्थने घेरे बेसी वोहोरोछो. ८. घेरे जइने कल्पसुत्र वांचोछो. ९. नीतप्रत्ये तेहीज घेरे वोहोरो छो. १०. अंघोळ करोछो. ११. ज्योतीष नीमत प्रजुंजोछो. १२. कळवाणी करी दीओछो. १३. मंत्रजंत्र झाडो ओखध करो छो. १४. नगर मध्ये आवतां सामेळां करावोछो. १५. लाडु प्रतिष्टावोछो. १६. सात खेत्रे धन कढा-

वोछो. १७. पोथी पुजावोछो. १८. संघ पुजा कढावोछो. १९. देहेरा प्रतिष्ठा करावो छो. २०. पजुण पोथी आपी रात जगावोछो. २१. पुस्तक पात्रा वेचो छो. २२. माळ उगटावोछो. २३. आधाकरमी पोसाळे रहोछो. २४. मांडवी करावोछो. २५ टीपणी लखावी रुपाआ ल्योछो. २६. गोतम पडघो करावोछो. २७. संसार तारण तेलो करावोछो. २८. चंदन बाळाना तप करावोछो. २९. तपस्या करावी पैसा ल्यो छो. ३०. सोना रुपानी नीसरणी ल्योछो. ३१. लाखा-पडवे करावोछो. ३२. उजमणा ढोवरावोछो. ३३ पुज ढोवरावोछो. ३४. श्रावक पाशे मुंडको अपावी डुंगरे चढोछो. ३५. माला रोपण करावोछो. ३६. असोक वृक्ष भरावोछो. ३७. अठोतरीश नात्र करावोछो. ३८. नवा फळ नवा धान प्रतिमाने ढोवरावोछो. ३९. श्रावकने माथे वासखेप घालोछो. नाद मंडावोछो. ४१. पदीक चाक बांधोछो ४२. वंदणा देवरावोछो. ४३. लोकोने माथे ओघो फेरवोछो. ४४. गांठे ग्रंथ राखोछो. ४५. मोरपींछना डंडासण राखोछो. ४६. स्त्रीना संघट करोछो. ४७. पगलगे नीची पछेडी ओढोछो. ४८. सुरमंत्र ल्योछो. ४९. कपडां धोवरावोछो. ५० आंबेलनी ओळी करावो छो. ५१. जती मुवा केडे लाडुआ लाहोछो. ५२ जती मुवा केडे थुभ करावोछो.

एवा अणाचारीना काम करीने वळी भगवंतनी परंपरा परुपोछो ए घणुं अ-जुक्त करोछो. साहलुंके एहवार बोल पुछया तीवारे लींगीया जवाब देवा समर्थ थीया. पछे साहमा क्रोधवंत थीया एहवो जाणी साहलुंके ते द्रव्यलींगी मीथ्यादृष्टी-ओनी संगत मुकी वेगळा रही पोते सीद्धांत वाणी घणा जीव प्रते समकीत पमाडता हुवा. तेहवे समे पाटण मध्ये साह जीवजी तथा सुरत मध्ये साह रुपजीए आदीदे इत्यादी वैरागी पुरुष हता तेणे अनेक लक्षोगमे धननी रासी मुकी सीद्धांत मार्ग प्र-माणे संजम आदर्यां ठामर सीद्धांत साखे धर्म चरचा करी धर्म उपदेश देइ दया मार्ग दीपाव्यो.

हींस्या धरमी कहे छे जे तुमे साधु कहेनी परंपरा मध्ये छो. केहेना केडामांछो ते उत्तर सुगडांग सुत्रे पेहेले सुतखंधे बीजे अध्यने त्रीजे, उदेशे गाथा २०-२१ -२२ मां कह्युं छे जे.

अभवि सूपुरावि भिखुवो ॥ आएसावि
भवंति सुव्वया ॥ एआइं गुणाइं आहुते ॥ काशवस्स अ-

णुधम्म चारीणो ॥ २० ॥ तिविहेणवि पाणमाहणे ॥ आयहिए अणियाण संवुडे ॥ एवं सिद्धा अणंतसो ॥ संपइ जे अणाग यावरे ॥ २१ ॥ एवं से ऊदाहु अणुत्तरनाणी ॥ अणुत्तरदंसी अणुत्तर नाणदंसणधरे अरहा नाय पुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए तिबेमि. ॥ २२ ॥

अर्थ.—अ. हुयाते. भी. हे साधु चारीत्रीया. पु. पुर्वे जे जीन हुयाते. आ. आगमीए काले हुस्ये जे. भ. वर्तमान काले जेछे. सु. तीर्थंकर. ए पुर्वे कह्या ते. गु. उपदेशने कहीता हवा ते सर्व जीन. क. रीखभ देवना परुप्या. अ. धर्म्मंने. चा. पवर्तावणहारा चालणहारा ते गुण उपदेश कहे छे. ति. त्रीवीधर. पा. पाणीने न हणे. आ. आत्माना हेतुओ. आ. नीयाणा रहीत. सं. संवरी साधु. ए. एणीरीते एहवा साधु. सी. सीद्ध थया. अ. घणा अनंता. सं. वर्त्तमान रीझे छे. जे. जेछे. अ. आगले थासे अ. बीजा ते पण सीझशे. ए. एम त्रण उदेशे. शे. ते जेम. उ. कहीता हुवा. अ. प्रधान ज्ञानना धणी. अ. प्रधान दर्शनना धणी. अ. प्रधान. ना. ज्ञान दरसणना धरणहार. अ. इंद्रादीकना पुजनीक. ना. सीधारथ राजाना पुत्र. भ. ज्ञानवंत, वे, प्रधान विस्तीर्ण ज्ञानना धणी. वि. कहीता हुवा. ई. इम हुं कहुं छऊं. २२ एहवे आचारे प्रवर्ते ते श्रीमहावीरना केडायत जाणवा. १

---

२ आर्य खेत्रनी मर्यादा.

केटलाएक हींस्या धरमी कहे छे. जे दक्षीण दीसे तथा उत्तर दीसे तारातंबोळ अस्ततंबोल नामे नगर छे. तीहां राजा जैन मारगीछे लोक सर्वे जैनछे तीहां पण जैनना देहेरां छे नीत्ये पुजा प्रमुख होयछे इम पोतानो मत थापवा माटे साख देखाडे छे. ते वात सुत्र वीरुद्ध करेछे. ते कीमजे श्रीवृत्तिकल्प सुत्र मध्ये कह्यो छे जे.

कप्पई निग्गंथाणं वा निग्गाथीणवा पुरथिमेणं जाव अंग-मगहाउ विसयाउ एतए दाहीणेणं जाव कोसंबीयाऊ विसयाउ एतए पच्चथिमेणं जाव थुणाउ विस्याउ एतए ऊत्तरेणं जाव कुणाला विस्याउ एतए एतावताव आयरिए खित्ते एतावताव

कप्पई नो से कप्पई एतो बाहिं तेणपरं जथ २ नाण दंसण चरीताइं ऊत्रस्सप्पंतिए१ ऊदेसे.

इम कह्यो जे पुर्वदीसे अंगदेस मगध देस लगे आर्यखेत्र ते हजु सुधी राजग्रही चंपानी नीसानी पुर्व दीसे छे. दक्षीणे कोसंबी नगरी लगे तेतो दक्षीणदीसे समुद्र नजीक छे आगे समुद्र जगती लगेछे, तीवारे नगरीनो स्यो कारण रह्यो ? पश्चिम दीशे थुभणा नगरी कही ते पण कच्छ देश लगे आर्यखेत्र छे आगे समुद्र जगती लगेछे. उत्तर दीशे कुणाळादेश सावथीं नगरी ते ठामे आज सालकोट नामे शहेर छे.पहीला तो आर्यखेत्र घणो हतो साडा पचवीश आर्यदेशतो उत्तम पुरुषनी उतपति भूमीका माटे गण्योछे पण धर्ममार्ग तो विद्याधरनी श्रेणीमां पण हतो पछे काळप्रभावे घटतोर श्रीमाहावीरने वारे एटलाज आर्यखेत्रनी मरजादा बंधाणी छे ते मरजादाना खेत्र लगेज हवे च्यार तीर्थ वर्ते छे. तथा केटलाएक नगरना नामठाम फरी गीयाछे ते लोकोत्तर थकी जाणीएछीए जीम पांडलीपुर ते पटणो देसारणपुर ते मंदसोर हथणापुर ते दल्ली सोरीपुर ते आग्रा. अठीगाम ते वढवाण. वली ठाणांग सुत्रे पांचमे ठाणे बीजे उदेशे कह्यो छे जे.

नोकप्पई निग्गांथाण वा निग्गंथीण वा इमाऊ अदीठाउ गणियाऊ वियंजियाऊ पंच महाणवाउ महाणइउ अंतोमास्स दुषोतोवा तिखुतोवा उत्तरीत्तएवा संतरित्तएवा तंजहा. ॥

अर्थ–नो नकल्पे. नि. साधु. वा. अथवा. नि. साधवीने. ई. ए आगल कहीस्ये. ग. गणी पांच संख्याए. वि. प्रगट कीधी. पं. पांच. म. महार्णव घणा पाणी माटे. म. मोटी नदीओ. अं. ते महीनामांही दु. बेवार. ति. तिणवार. उ. उतरवी कही. सं. तरवी. तं. ते कहेछे.

१ गंगा. २ जमना. ३ सरजु. ४ एरावती. ५ मही. जो आर्यखेत्र बीजा होवे तो तीहां साधुनो वीहार करे. तो तीहांनीज नदी कीमन कही ? ए सुत्रनो मेळ जोतां नदी आटलाज खेत्रनी बतावी गंगा जमना दील्ली आगरा पासे छे. सरजु अजोध्या पासे छे ते पुर्व दीसे छे एरावती लाहोर पासे छे. मही गुजरातमां छे ए लेखे पण जोतां आर्य खेत्र एहीज जाणजो तथा इहां आर्यखेत्र न होवे तो चार तीर्थ पण ए नहीं ने चार तीर्थ ए नहीं तो सीद्धांत पण नहीं मीथ्यात्वी लोक अने अ-

नार्यखेत्र ए होवेतो सुत्र इहां कीहांथकी होवे ए लेखे तारा तंबोल प्रमुख आर्य-खेत्र कहे छे ते सुत्र वीरुद्ध कहे छे जो तारा तंबोल आर्यखेत्र होवे तो नदी पण तीहांनीज गणत पण ते तो नथी कह्यो वळी ववहार सुत्रनी चुलका मध्ये चंद्रगुप्त राजाना सोळ स्वप्ना कह्या तेहना अर्थ भद्रबाहुस्वामीए कह्या ते मध्ये पण इम कह्या जे पेहेले श्वप्ने कल्पवृक्षनी डाल भांगी दीठी. तेहनो फल एजे आजपछी राजा संजम नहीं आदरे वळी सातमे श्वप्ने कह्यो जे उकरडा उपर कमळ उग्यो दीठो तेहनो फळजे.

चाउण वणाए मळे वइस हथे धम्म भविस्सई.

जे चारवर्णमां वाणीआने घरे धरम रहेशे ए लेखे तारा तंबोळ ते आर्यखेत्र पण नहीं अने राजा जीनमारगी पण नहीं ए वात सुत्र प्रमाणे जाणवी अने कदा-चीत कोइ देशमां बोधमती जैनी कहाय छे. ते तो मंस आहारीजछे मंसनोज आ-हार करेछे जीवने समये समये नवो उपजतो माने छे एहनी श्रद्धा अने क्रीया बेहु वीपरीत छे ते माटे एहीज आर्य देश अने एहीज सीद्धांत प्रमांणे छे.

जथ जथ जिण कलाण तथ तथ देसे धम्म हाणी भविस्सई.

ए वचन पण चुलीकानो छे तथा हींश्या धरमीना तीर्थ पाहाड आबु गीरनार शेत्रंजो गोडीचो समेतसीखर तथा शीवमतना तीर्थ गंगा, जमना, सरश्वति, चंद्रभागा, जवालामुखी हेमालो. बदरीकेदार, जगन्नाथ द्वारीका, गीरनार, हींगळाज इत्यादीक तीर्थ ते पण हींदुमतना छे पण ते आगळ कोइ नथी कहेता जे अमारा तीर्थ पांच सात हजार गाउ उपरेछे. तो तमारा तीर्थ अनार्यखेत्र मध्ये कीहांथी होस्ये जो कोइ तीरथ ते देस माहीलो सुत्र मध्ये नाम कह्यो होवे तो ते देखाडो.

---

३ प्रतिमानी स्थितिना अधीकार.

हींस्याधरमी कहे छे जे संखेश्वरा पार्श्वनाथनी प्रतिमा आठमा चंद्रप्रभव जीनना वारानी छे एम कहेछे ते एकांत सुत्र वीरुद्ध कहेछे भगवती सतक आठमे उदेसे नवमे पाठ कह्यो छे जे.

सेकिंतंसमुयथबंधे२ जणं अगड तलाग नदी दह वावी पुष्करणी दीहियाणं गुंजालीयाणं सराणं सरपंतियाणं बीलपंति-

याणं देवकुल सभा पव्वाय थुभ षाइयाणं फरीयाणं पागार ट्टालग चरियदार गोपुर तोरणाणं पासाय घर सरण लेण आवणाणं सिंघाडगातिय चउक चचर चउमुह महामापहइणं छुहा चिषिल सिलेश समुचएणं वंधे समुप्पजइ जहणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संषेजकालं.

अर्थ—हवे सुं ते समुचय वंध कहीए. समुचय वंध ते आघात सरोवर. त. पाणी सरोवर. नदी. द्रह. वाव. पुस्पकरणी. दीर्घिका. गुंजालीका. सर. सरपंक्ती. बी. बीलपंकित देवकुल. सभा. पर्वत. थुभ. खाइ, फलीका. प्राकार. गढकोट. अटालक. कांगरा गोपुर. तोरण. प्रासाद. घर. सरण लेण ए घर वीसेख. हदश्रेणी. सींघडाने आकारे. त्रीवरो चोवटो घणीगली. चतुरमुखराज. मार्ग आदीदेइ एहनो अर्थ पुर्वे लख्यो छे. छोह. चुनो. चीखलो. कादी. वजलेप विशेखे उचकरी वंध उपजे वंध जोडे ते जघन्य तो अंतर मुहुरत रहे ने उतकृष्ट यकी संख्या तो काल रहे. एलेखे कृतम (करी) वस्तु संख्यातो काल रहे उपरांत न रहे. वली भरथना कराव्या अष्टापदना देहरां माहावीरना वारा लगे असंख्यातो कालकीम रह्या ? गौतम स्वामीए ए वींब कीहांथी वांदया ? संखेश्वरानी प्रतिमा असंख्यातो काल कीम रही ? जो देव प्रभावे रही ए इम कहे तो पण जुठुं लागे केमके देवता कोइ वस्तुनी स्थीति वधारवा समर्थ नथी पृथ्वीकायनी स्थिती वावीस हजार वरसनी छे. ते उपरांत रहे नहीं तीवारे हींस्याधर्मि कहेशे जे सेत्रंजो गीरनार,आबु,समेतसीखर चीतोड प्रमुखना पाहाड लाखो वरशना आजसुधी कीम रह्या ? ते उतर. ए पहाडो तो पृथ्वी थकी लाग्या रह्या छे. पृथ्वीथकी आहार रस पुगदल पोहोचे छे तेणे करी रह्या छे. पण कटको काढी जुदो कीधो ते बावीस हजार वरश उपरांत रहे नहीं. जीम मनुष्यना शरीर थकी लाग्या थका नख केश वधे पण कापीने जुदा कीधा पछे वधे नहीं. ते रीते जाणजो ते माटे असंख्यता कालनां देहरां प्रतिमा कहे छे ते सुत्र विरुद्ध कहे छे.

४ आधाकरमी लेवावाळाने फळ.

हींस्याधरमी कहेछे जे देवगुरु धर्मने काजे आधाकरमी आहार दीजे तेहनो लाभछे ते सुत्र विरुद्ध कहेछे. श्री ठाणांगने त्रीजे ठाणे कह्यो छे. जे त्रण प्रकारे जीव

अल्प आउखो बांधे. १ प्राणतीपात (जीवनी हंसा) करतो थको २ मृखा (खोटुं) बोलतो थको. ३ श्रमण नीग्रंथने अप्रासुकअण एखणीक (आधाकरमी) असणं (अन) पाणं (पाणी) खाइमं (सुखडी) साइमं (मुखवास) देतो थको. एहीज आलावे भगवती सुत्रमां सतक उदेसे कह्यो छे. तो आधाकरमी आहार औपध्य उपाश्रय देतो लाभ कीहांथकी होस्ये ? वली भगवती सतक पांचमे उदेसे छठे कह्यो छे जे.

अहाकम्मं अणवजेतिमणंपहारेत्ता भवइ सेणंतस्स ठाणस्य अणालोइय अपडीकंते कालंकरेति नथी तस्य आराहणा ॥

अर्थ—अ. आधाकरमी तेह प्रते निर्दोशि एहवो मनमांही श्थापणहार हुइ, से. त. तेह श्थानकने, अ. आलोयावीना. अ. प्रतिक्रमाविना, का. काल मरण प्रतेकरे, न. नहीं तेहने जीन वचने वीखे आराधकः

जे आधाकरमी आहारने निरदोश जाणीने भोगवे तेहने नथी आराधना इम कह्यो. वली भगवती सतक पेहेले ऊदेशे नवमे कह्यो जे श्रमणनिग्रंथ आधाकरमी आहार भोगवे ते सात करमनी गांठ गाढीबांधे लांबी थीती वधारे घणा प्रदेश वधारे तीव्र अनुभागकरे अनंतो काल संसार मध्य रुले तो देणदारने पीण लाभ कीहांथी ? अल्प आऊखो बांधतो कह्यो. मांस भोगीने मांसनो दातार बेहु नरकगामी होवे तेहनी पेरे ए पण जाणवो ए आलावाना पाठ सुत्र थकी जोजो.

---

५ मुहपति बांधे वायुका जिवनि रक्षा ते पाठ.

हींस्याधरमी कहे छे जे मुहडे मुहपति दीजे ते पुस्तकने थुंक न लागे तेहनी जतना माटे दीजे छे पण वायुकायना जीवमाटे देवी नथी कही. मुहपति दीधे वायुकायनी हींस्या टलती नथी. एहवो कहे छे ते एकांत सुत्र विरुद्ध कहे छे भगवती सतक सोलमे उदेसे बीजे कह्यो छे जे.

गायमा जाहेणं सक्केदेविंदे देवराया सूहु मकायं अणिजूहित्ताणं भासंभासई ताहेणं सक्केदेविंदे देवराया सावजं भांस भासई.

अस्यार्थटीकाः यांजदासक्रेंद्र सूक्ष्मकायं वस्त्र बांद्यावृत मुष-स्य भास मानस्यजीव संक्षणंतो निविद्यो भाषा भवाति ॥

अर्थ.—हे गौतम जीवारे सक्रेंद्र देव राजा, सु. हस्तादीक वस्तु एम वृध कहे अनेरा कहे सु. वस्त्र ते प्रते. अणदीआ एटले मुखने वीपे हस्तादीक दीधा वीना भाखा बोले. तीवारे सक्रेंद्र देव राजा. सुहु. हस्त तथा वस्त्रादीक मुखद्वारे दीधा बोले. जीवारे सक्रेंद्र हाथ वस्त्र तेणे करी मुख ढांकीने बोले वायुना जीवनी रक्षा करतो निरवद्ध भाखा बोलतो कहीए. उघाडे मुखे बोलेतो वायुकायना जीव हणतो बोले तीवारे सावद्ध भाखा बोलतो कहीए ए लेखे मुहपति देइ जतना थकी बोल-तां वायुकायना जीवनी हींस्या टाली ए सुत्र साख जाणवी अने नाक ढांकवो कीहांइ कह्यो नथी. अने तुमे कहोछो के पुस्तकनी आसातना टालवा माटे मुखपति देवी ते खोटो कहोछे. केमके पुस्तक तो श्रीमाहावीर नीर्वाण थया पछी लीखाणा छे अने मुहपति तो श्री गौतमस्वामीने ठामर कहीछे तुगीआ नगरीना आलावा-दीकमांही तथा उत्तराध्यन छवीसमे गाथा त्रेवीसमीना पेहेला बे पदमां कह्यो छे जे.

मुहपतिय पडीलेहित्ता पडीलेहिज गुछग ॥

अर्थ—मु. पहिलुं. मोहपतिनुं ५. पडी लेहीने. ९. पछे पडी लेहे. गु. गुच्छाने ते विचारी जोजो.

---

६. जात्रा तीरथ कह्या ते सुत्रसाखना आलावा.

हींश्याधरमी कहे छे जे सेत्रंजो. गीरनार. आबु. अष्टापद. समेतसीखर. इत्या-दीक पर्वतनी जात्रा करवी. संघ काढवा तेहनो मोहोटो लाभ छे एम कहे छे. तेह-नो उत्तर. ए पर्वत उपर जे तीर्थंकर साधु सीध्या ते तो वदनीक कह्या छे. पण पर्वत तो वंदनीक नथी. जीम कोइ व्यवहारीयो कोइ हाटे बेसी नाणावटो करे ती-वारे लोक वीवहारीयाने हाटे आवी थापण मुकी जाय पछे कालांतरे वीवहारीए ते हाट मुकी धणी फारफेर थीयो ते हाटतो तेहीजछे पण लोक वीवहारीयानो हाट जाणीने थापण कां न मुके ? तीम ए पर्वततो हाट समान छे. वीवहारीया समान साधु सीध्या ते छे. हवे ते पाहाड तो सुना हाट समान रह्यां. तीहां हुंडीनो सका-रणहार कोइ नहीं ते माटे अवंदनीक थीया. तथा भगवती सतक अढारमे उदेसे दसमे सोमल ब्राह्मणने श्रीमाहावीर देवे तो ए जात्रा करवा कही छे. ते ए के.

सोमिला जंमे तव नियम संजम सझाय झाणावसगमादि-एसु जएणासेत्तंजता तप १२ नियम अनेक अभिग्रह संयम १७ सझाय ५ ध्यानधर्मशुक्ल ॥

अर्थः–सोमीले पुछयुं तमारे हे भगवंत जात्रा. इतिप्रस्न. त्यारे भगवंत उत्तर देछे. हे सोमील जे माहरे इहां तप असनादी बारे भेदे नीयम ते वीखय अभीग्रह विसेस संजम ते सतर भेदे सझाय स्वाध्याय वैया वृत्यादीमे अवश्ये रात्री दीवसने वीषे करवो इत्यादी रुप ते आवस्यक छए भेदे सामायकादीक जे जोग तेने वीखे जतना प्रवृति ते जात्रा कहीए. एटली करणी करवी ए अमारे जात्रा इम कह्यो. जे जात्रा श्रीमाहावीरे सोमीलने कही. जीम महावीर तीम रुखभदेव सर्व तीर्थंकरनुं ज्ञान दरसन समकीत एक सरखुं छे. तीवारे रीखभदेवने पण एहीज जात्रा जाणवी. पुरवे नवाणुंवार रुखभदेव सेत्रंजे आव्या कहेछे जात्रा करी ए अर्थ सुत्र विरुद्ध कहे छे. जो रुखभदेव ए भावे जात्रा माने छे तो भरथने देहरा करा-व्यानो उपदेश कीम दीए? जे कार्य पोते न करे ते कार्यनी आज्ञा अनेराने कीम दे? ते वीचारीने जोजो.

१. वली भगवती सतक वीसमे उदेसे आठमे कह्यो छे जे.

तिथं भंते तिथंकरे तिथं गोयमा अरहा ताव नियमं तिथं-करे तिथंपुण चाऊवणाइणे श्रमण संघे पनंते तंजहा समणा समणीउं सावय सावियाउं ॥

अर्थः—तिर्थ प्रस्छावथीज कहेछे तीर्थ चतुर विध विषे संघरुप कहीए? अथवा तीर्थंकर ते तीर्थ कहीए? इतिप्रस्न. हवे भगवंत उत्तर कहेछे. हे गौत्तम अरीहंत जावत पहीला तीर्थंकर तीर्थ प्रवरतावणहार छे पण तीर्थ नहीं तो तीर्थ वली च्चार वर्ण जीहां ते चातुरवर्ण कहीए तेह क्षमादी गुणे करी व्याप्त श्रमण संघ ते कहे छे श्रमण (साधु) श्रमणी (साधवी) श्रावक श्रावका.

तीर्थंकर तो तीर्थना नाथ कहीए अने तीर्थ च्यार कहीए साधु. साधवी. श्रावक. श्रावका. तेज पण कीहांइ तीर्थ अने जात्रा पर्वतेर भमवो तथा संघ काढवो तेहना लाभ सिद्धांत मध्ये कह्या नथी.

७ सेत्रंजो सास्वतो कहे छे तेना उत्तर.

ढींस्याधरमी कहे छे जे सेत्रंजो पर्वत सास्वतो छे. ते वात सुत्र वीरुद्ध कहे छे. ते केम जे भगवती सतक सातमे उदेसे छठे कह्यो छे. तथा जंबुद्विप पन्नंती मध्ये कह्यो छे जे छठो आरो वेससे तीवारे भरतखेत्र मध्ये गंगा सींधु बे नदी अने वैत्याढ पर्वत रहेसे. सेख सर्व पर्वत वीछेद जासे ते पाठ इमज छे.

पव्वय गिरि डुगरुं थल भठी माइय वैयट्ट गिरि वजे विशवेहेति ॥

अर्थः–प. क्रीडा पर्यंत वैभारादीक तरी जेह उपर पाणी होइ डुंगर सीलाना वृत रेतना थल पर्वत समीप भूमीए इत्यादीक वैताढय पर्वत वरजीने सर्व क्षय जासे नीझरण. वि. नीझरण वीसेख खाइ.

ए पाठ बे सुत्र मध्ये छे. तीहां सेत्रंजो सास्वतो रहस्ये इम नथी कह्यो. तीवारे ढींस्याधरमी कहेस्ये जे रुखभकुट ए पाठ मध्ये नाव्यो. ते माटे रुखभकुट वीछेद जासे ? ते उत्तर. इम तो रुखभकुट रहस्ये. गंगा सींधु कुट रहस्ये. बोंहोतेर वील रहेस्ये पीण पर्वत मध्ये तो एक वैत्याढयहीज रहेस्ये तुमे सेत्रंजाने कुट मांनो छो के पर्वत मानो छो ? अने जे रुखभकुट रहेस्ये ते तो जेवो छे तेहवोज रहेस्ये ने सेत्रंजो तो तमे कहोछो जे हाथ ऊंचो ने सात हाथ लांबो रहेस्ये. जो सास्वतो होवे तो न्युनाधीक कीम होवे ? तीवारे ढींस्याधरमी कहेस्ये जे गंगा सींधु नदी घटी जासे पण सास्वती गणी छे. तेम सेत्रंजो पण जाणवो. ते उत्तर गंगा सींधुने बेहुपासे पदमवर वेदीका कही छे. ते वीचे साडीबासठ जोजननो विस्तार गंगा सींधुनो खेल कह्यो ते तो सदा सास्वतो कालप्रभावे पाणीनो प्रवाह घटशे पण नदीनो खेत्र घटस्ये इम नथी कह्यो. गंगानो द्रष्टांत सेत्रंजा साथे ना मील्यो. सेत्रंजाने पर्वत कहो छो पण कुट तो नथी कहेता. ते माटे सेत्रंजो असास्वतो वैत्याढय वरजी सर्व पर्वत वीणससे ते मध्ये गणजो. साधु सीध्या माटे तीर्थ सीद्ध मानो तो अढी द्वीपतो सर्व तीर्थ भोम अने सीद्ध खेत्रहीज छे मसाण उकरडानी भूमीका तीहां पण अनंता सीध्या छे. ते साख उववाइ पन्नवणा सुत्रे बे पदे कही छे. तेमां उववाइ सुत्रमां छेवट अधीकारमां गाथा बावीस छे तेमांनी गाथा नवमी लखी छे.

जथय एगोसिद्धो ॥ तथ अणंताभवखय विमुका ॥ अणोण समोगाढा ॥ पुठाव्येयलोगंते ॥ ९ ॥

अर्थः—ज. जेणे स्थानके सीद्ध एकछे. त. तीहां अ. अनंता सिद्धि जाणवा भव-संसारना क्षय. वि. ते मुकाणाछे. अ. मांहोमांहे. स. भली रह्योछे. पु. फरसी रह्योछि. सघळा ए लोकना अंतने वीखे. ९

ए साखी ए लेखेतो सेत्रंजो सास्वतो कहेछे तु सुत्र विरुद्ध कहेछे.

८. कयबलीकम्मा शब्दना अर्थ.

१. हींस्याधरमी कहेछे जे सुत्रमां कय बलीकम्मा शब्दे देवपुजा करवी कहेछे. ते वात सुत्र साथे मळती नथी. ते केमजे ज्ञाता सुत्रे बीजे अध्ययने घन सार्थवाहनी अस्त्री भद्रा सार्थवाही पुत्र वच्छाने अरथे नागभुत जक्षने पुजवा नगर बाहीर गइ तीहां इम कह्योछे जे.

जेणेव पोखरिणी तेणेव उवागछई २त्ता पुखरिणीए तीरेसु बहु पुफ जाव मल्लालंका रकरी ठवेइ२त्ता पुष्करिणी ऊग्गहइ२त्ता जल मझण करेइ२त्ता जल क्रीडं करेइ२त्ता न्हाया कय बलीकम्मा ऊलपडिसाडिगा जाइं त्तथणं ऊप्पलाइं जाव सहस्स पत्ताइं ताइं गिन्हइ२त्ता पुखरिणिऊ पच्चो रुहइ२त्ता तं सुबहु पुफ वथ गंध मल्लालंकारं गिन्हइ२त्ता जेणेव नागघरएयं जाव वेसमण घरएयं तेणेव ऊवागछई२त्ता ॥

अर्थ—जे. जीहां. पो. पोखरणीवाव. ते. तीहां. उ. आवे आवीने पु. पुखरणीवाव तेहने. ती. कांठे. ब. घणा. पु. फुल. जा. जावत. म. माला. अ. अलंकार. ठ. सर्व मुके मुकीने. पु. पुखरणीवाव मध्ये. उ. पइशे पइसीने. ज. पाणीनो. म. मर्दन. क. करे करीने. ज. पाणीनी. की. क्रीडा. क. करे करीने. न्हा. न्हाइ. क. कीधा. ब. बलीकर्म जलकोगरा कर्या सुगंधी वस्तु वीलेपन करी नाइ. उ. ते जे साडी पेहेरी नाही हती तेहनी भीनी. प. साडी सहीत. जा. जे. त. तीहां. उ. कमळछे. जा. जावत. स. सहस. प. फुल कमल. ता. ते. गि. ग्रहेग्रहीने. पु. ते वावीथकी. प. पाछी नीशरे नीशरीने. तं. ते. सु. घणा. पु. फुल. व. व. वस्त्र. ग. गंध. म. माळा. अ. अलंकार. गी. लेइलेइने जे. जीहां. ना. नागधर. जा. जावत. जक्षना. वे. वेसमणना घरछे. ते तीहां उ. आवे आवीने.

इहां वावडी मध्ये बलीकर्म्म कीधो तो वावडी मध्ये केहेनी प्रतिमा पुजी? नागभुत तो वावडीथी नीकल्या केडे पुज्योछे.

२ वली ज्ञाता अध्यन आठमे मल्लीनाथ स्वामी पीताने पगे लागवा आव्या तीहां कह्यो.

न्हाया जाव बहुहिं खुजाहिं परीवुडा जेणेव कुंभएराया तेणेव ऊवागछईश्त्ता ॥

अर्थः—न्हा. न्हाइ. जा. जावत. ब. घणा. खु. खुजादासी. ८. परवरी. जे. जीहां. कु. कुंभराजा. ते. तीहां. उ. आवे आवीने.

इहां जाव शब्द मध्ये नाया कलवलीकम्मा.

कय कोउय मंगल पायछीत्ता सुद्ध प्पवेसाइं मंगलाइं वथाइं पवर परिहियाइं ॥

अर्थः—क. कौतक मंगलीक पाणीनी अंजली भरी कोगरा कीधा. पा. आभ्रण पेहेरी तीलक मस करी. सु. मेल रहीत. प. पवीत्र. मं. मंगलीक भार थोडोने मुल घणो. व. एहवां वस्त्र. प. प्रधान. प. पहीर्या.

एटलो पाठ जाव शब्द मद्धे आव्यो.

३. वली ज्ञाता अध्ययन आठमे मल्लीनाथ स्वामी छ राजाने प्रतिबोधवा मोहनघर मध्ये आव्या तीहां पण कह्यो छे जे.

तएणं सा मल्ली विदेहा न्हाया जाव पायछीत्ता सव्वालंकार विभूसीया बहुहिं खुजाहिं जाव परिखित्ता जेणव जालंधरए जेणेवकणगमइ पडिमातेणेव उवागछईश्त्ता.

अर्थः—त. तीवारे. सा. ते. म. मल्ली. वि. विदेह. न्हा. न्हाई. जा. जावत. पा. आभ्रण पेहेरी तीलक मस करी. स. सर्व सोभता अलंकार युक्त वि. पेहेर्या सर्व विभूषण कीधां. ब. घणी. खु. खुजकादासी. जा. जावत. प. परीवारे परीवरी. जे. जीहां. जा. जालीनुं घर. जे. जीहां. क. कनकसुवर्णनी. प. पडीमा. ते. तीहां. उ. आवे आवीने.

ईहां जाव शब्द मध्ये कयबलीकम्मा.

कयकोउय मंगल पायछीत्ता.

अर्थः—क. कौतुक मंगलीक पाणीनी अंजलीभरी कोगळा कीधा. पा. आभ्रण पेहेरीने तीलक मस करी.

एटलो पाठ छे बलीकम्मा शब्दे देव पुजा छे तो तीर्थंकरे कीया देवने पुज्यो ते कहो.

४. वली ज्ञाता सोलमे अध्ययने कह्यो छे जे.

तएणं सा दोवइ रायवरकंन्या जेणेव मझेणघरं तेणेव उवागछईश्त्ता मंझणघरं अणुप्पविसईश्त्ता न्हाया कय बलीकम्मा कयकोउय मंगल पायछीत्ता सुद्ध प्पावेसाइ मंगलाइं वथाइं पव्वर परिहिया मझणघराउ पडीनिखमइश्त्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागछईश्त्ता.

अर्थः—त. तीवारे. सा. ते. दो. द्रुपदी. रा. राजवर. कन्या. जे. जीहां. मं. मंजणनुं घर. ते. तीहां. उ. आवे आवीने. मं. मंजन घरमां अ. प्रवेश करे प्रवेश करीने. न्हा. नाही. क. कीधां. ब. बलीकर्म पीठी प्रमुख वीलेपन कीधां. क. कौतुक. मं. मंगलीक पाणी अंजली भरी कोगळा कीधा. पा. आभ्रण पेहेरीने तीलक मस करी. सु. सुद्ध निर्मल. पा. उत्तम. मं. मंगलीक. व. वस्त्र. प. प्रधान प. पेहेर्या. म. नाहावाना घरथकी नीकळी नीकळीने. जे. जीहां. जी. जक्षनुं घर. ते. तीहां. उ. आवे आवीने.

एटला पाठ मध्ये पहीला नाह्यो कह्यो पछे बलीकम्मा कह्यो पछे वस्त्र पेहेर्या कह्यो तो जोवो स्त्रीजाती स्वभावे नगन थइ नावा बेठी तीहां कीयां देवने पुज्यो ? नाहवाना घर मध्ये कीयो देव हतो ?

५. वली भगवती शतक नवमे उदेशे तेत्रीसमे देवानंदा ब्राह्मणीए नाहवाना घरमध्ये बलीकर्म कीधो तो नाहवाना घरमां कीयो देव पुज्यो ?

६. भगवती शतक नवमे तेत्रीसमे उदेशे जमालीने अधीकारे कह्यो.

तएणं से जमाली खत्तीयकुमारे जेणेव मझणघरे तेणेव उवागछईश्त्ता न्हायाकयबलीकम्मे जहाउववाईए परिषावन्नउ

तहामाणियव्वं जाव चंदणो खित्तगायसरी रे सव्वालंकारे वि
सिए मझणघराउ पडिनिखमईश्त्ता.

अर्थः—त. तीवारे ते जमाली क्षत्रीय कुमार. जे. जीहां. मंजननो घरछे.
तीहां. उ. आवे आवीने. न्हा. स्नान कीधो कीधां वलीकर्म जेणे. ज. जीम. उ
ऊपांगने वीखे परीखदा वर्णव कर्यो तीम इहां पण कहीवो. जा. जावत. चं
संघाते लीप्योछे गात्र शरीर जेहनो देह इत्यर्थ. स. सर्व अलंकारे विभुषीत थ
म. मंजन घरथकी. नीकले नीकलीने. ।। एणे नाहवाना घर मध्ये कीयो देव पुज

७. वली भगवती सतक सातमे उदेसे नवमे वरणनागनतुयो मंजण घर म
कयबलीकम्मा कीधो. पछे मंजण घर थकी नीकल्यो कह्यो एणे स्नानना घर म
कीयो देव पुज्यो.

८. वली. रायपसेणी मध्ये कठीयारे वनमां स्नान कीधो वलीकर्म पण क
तेणे कीयो देव पुज्यो.

९. वली केसी श्रमणे कह्यो के हे ! प्रदेसी राजा ! तुं मंजन घरमां न
वलीकर्म करी पछे देव पुजवा जाय वीचमां भंगीयो सेतखानामां बोलावे तो
जाय ? तो जोवो एणे नाहवाना घरमां सुं वलीकर्म कीधो ? देव पुजवा तो
चाल्यो ते पाठ तो जुदो छे. ते वीचारी जोजो.

१० वली कोणीक राजा भगवंतनो परम भक्तिवंत नीतर एकलाखने
हजार रुपानाणो भगवंतनी वधाइमां देवे ने जे दीवसे श्रीभगवंतजी चंपाये पध
तीण दीवशे साडीबार क्रोड रुपानाणो वधाइनो देवे तेने प्रतिमा पुजतो केम
कह्यो ? अने श्री भगवंतजी वांदवा गयो तीणदीवसे स्नान विस्तार सहीत वरण
तीहां कयबलीकम्मा शब्द मुलगोज नथी कह्यो ते सुं ते नाहवानो पाठ संमपुर्ण लखे

जेणेव मजण घरे तेणेव उवागछईश्त्ता मझण घरं अणुप्प
वेसईश्त्ता समुत्तजालाउलाभिरामे विचित मणि रयण कुटिमत
रमणिजे न्हाण मंडवंसि नाना मणि रयण भत्ति चित्तंसि न्हा
पीढंसी सुह निसन्ने सुद्धोदएहिं गंधोदएहिं पुफोदएहिं सुभोद
एहिं पुणोश्कल्लोणगा पवर मजंण विहाए मजिए तथ कोऊ
सएहिं बहु विहेहिं कल्लाणग पवर मजणा वसाणे पम्हल सुकु

माल गंध कसाइय लुहियंगे सरस सुरहिं गोसिस चंदणा णुलि-त्तगते अहय सुमहग्ध दुस रयण सुसंवुए सूइ माला वणग विलेवणे आविध माणि सुवणे कप्पिय हारद्हार तिसरय पालंब पलंबमाण कर्डि सुत्तसुकय सोभे पिणद्गेविविजे अंगुलेजग लिलियं गय ललिय कयाभरणा वर कडग तुडीयथंभीयभूये अहिए रुव सस्सिरीये मुदिया पिंगूल गुलीए कुंडल उद्योवियाणणे मऊड दिसिरए हारीछय सुकय रइय वछे पालंब पलंबमाण पंड सुकय उत्तरिजे नाणा मणी कण रयण विमल महरिह निउणोवय मि- शिमिसंत विरइय सूसिलिठ विसिठ लठ आविद्ध वीरवलए किंब- हुणा कप्प रुख एचेव अलंकिय विभुसिये नरइ सकोरंट मल्ल दामेणं छत्तेणं धरिजमाणेणं चाउ चामर वालवीजीयंगे मंगल जय सद्द कया लोए मजण घराउ पडीनिखमई२त्ता.

अर्थ—तीवारे ते कोणीक राजा. जे. जीहां. म. स्नान करवानो. घ. घरछे ते. तीहां. उ. आवे आवीने. म. स्नान करवाना. घ. घरमांहे. अ. पेशे पेशीने. स. मोतीनी जाळीया सहीत. अ. गोसालादीके कीर्ण व्याप्त तेणे. अ. मनोहर छे. वि. नाना प्रकारना. म. मणी. र. रतन तेणे. कु. भूमीकानुं तळुं आंगणुं बांध्युंछे. र. रमणीकछे. न्हा. स्नान करवानो. मं. मंडप चोकछे. ना. नाना प्रकारना. म. मणी. र. रतनने भ. भांती. ची. चीत्राछे एहवा. न्हा. स्नान करवाना. पी. बाजोठने वीखे. सु. सुखे. नि. बेठोछे. सु. सुद्ध स्वभावे उ. पाणीए करी. गं. सुगंधीक. उ. पाणीए करी. पु. फुलवासीत. उ. पाणीए करी. सु. तीर्थनो. उ. पाणीए करी. पु. वारंवार क. कल्याणकारी. प. प्रधान. म. स्नान करवानी. वी. वीधे करी. म. नाह्यो. त. तीहां. को. कोतीक रक्षादीकनो. स. गोतम. ब. घणा. वी. प्रकार तेणे. क. कल्याणकारी. प. प्रधान. म. स्नानना. आ. छेहडाने वीखे. प. पुम. सु. सुंहालाछे जेहना. गं. सुगंध. क. राती साडी तेणे करी. लु. लुहुंछे. अं. अंग शरीर जेहनुं. सु. सुगंध. गो. बावना. चं. चंदन. अ. लीप्युंछे. अ. गात्र शरीर जेहनुं. अ. अखंड ऊंदरादीके करडया नथी. सु. अती. म. मुंहघा बहु मुल्यां. दु. वस्त्र. र. रतन. सु. भलीपरे

स. पहिरीयुं छे. सु. मीत्र. मा. फुलनी मोतीनी मालाछे. व. वर्णे अत्रीशादीक. वि. विलेपन. कीधांछे जेणे. आ. पहीर्याछे. म. मणीना. सु. शोभता आभ्रग. क. पहीर्याछे. अ. अढार सराहार. अ. नवसराहार. ति. त्रीणसराहार. पा. झुमणो. प. लांबो नाभी लगे अडतो. क. कणदोरो तेणे. सु. भली कीधीछे. सो शोभा. पि. पहिर्याछे. गे. कोटने वीखे आभ्रण जेणे. अ. आंगलीने वीखे वेढ वींटी आभ्रण पहीर्याछे. लि. मनोहर. गं. सरीरने वीखे. ल. शोभा लीधा. क. कीधाछे थाप्याछे. आ. आभ्रण अनेरा जेणे. व. मधान. क. कडां तु. वहीरखा तेणे. थं. थंभीतछे भारे. अ. भूजा जेहनी. अ. अधीक. रु. रुपछे. स. शोभायमान दीसेछे. मु. मुंद्रिका पेहेरीछे. पी. पीली थइछे. अ. अंगुली जेहनी. कुं कानना कुंडल तेणे. उ. उद्योत कीधोछे. अ. मुख जेहने. म. मुगट करी. दी. देदीपमानछे. हा. हारे करी. उ. ढांक्याछे. सु. भलुं. क. कीधुं छे. र. रच्योछे. व. हीयुं जेहनुं. पा. झुमणो. प. लांबो. प. एक पटनो वस्त्र तेणे करी. सु. भलुं. क. कीधुं. उ. उत्रासण जेणे. ना. नाना प्रकारना. म. मणी. क. सुवर्ण. र. रतने. वि. निर्मळ. म. मोटाने जोग्य नि. नीपुण विज्ञाननो. ७. घणुं. मि. देदीपमान. वि. नीपजाव्युंछे रच्युछे. सु. रुडी परे. सी. समाधी जोडीछे. वि. प्रधान. ल. मनोहर. आ. पहीर्याछे. रु. वृक्षनीपरे. चे. नीश्चे. अ. अलंकारीऊं मुगटादीके. वि. सीणगार्योछे वस्त्रादीके. न. मनुष्यनो अ. सामी राजा. स. कोरंटनामा वृक्षना. म. फुलनी. दा. माला सहीत. छ. मेघाडंबर. ध. धरावतो थको मस्तके. ज. जय जय. स. सब्द. क. कीधांछे. लो. लोक जेहने. म. नाहवाना. घ. घरथकी. प. नीकळे नीकळीने.

एटलो स्नाननो वर्णव कीधो ते मध्ये कयवलीकम्मा शब्द मुळथीज नथी अने श्रीवीर वांदवा जावानो अवशर छे तो वलीकम्मा शब्द प्रतिमानी पुजा होय तो इहां अवस्यमेव जोइए.

११ वली श्रीजंबुद्विप पन्नंती मध्ये कह्यो श्रीभरथेशरजी नाह्या त्यां नाहवानो वीस्तार कोणीकनी परे छे तो त्यां पण बलीकम्मा शब्द मुळथीज नथी, तमे कहोछो जे अष्टापद उपर बींब कराव्या एवा तो प्रतिमाना रागीछे तो वलीकम्मा शुं नहीं करता होय ? प्रतिमा नहीं पुजता होय ? पण एम जाणजो जे ज्यां विस्तार सहीत स्नान वरणव्या त्यां कोइ ठामे वलीकम्मा शब्द नथी कह्यो. अने एहीज कोणीके तथा भरथेसरने नाहवानो अधीकार संक्षेपे कह्यो त्यां नाया कयवलीकम्मा ठाम २ कह्यो छे. तो एम जाणजो जे ए वलीकम्मा शब्द नाहवानोज वीशेष छे,

इहां देव पुजवानो अरथ ठरतो नथी. नाहतां थकां जळंजली कुरळाकुळकुलाट अर्थ देवाना ठाम लेवा मर्दन जगटणा प्रमुख करवा एहीज विशेष जणाइ छे बळी-कम्मा शब्दे जीनराजनी प्रतिमा पुजी कहेछे. ते एकांत मीथ्यात्व मोहनीने उदये कहेछे.

१२. वळी केटळाएक कहेछे जे तुंगीया नगरीना श्रावक चार थीवरने वांदवा गीया तीहां टीकामां एवो अर्थ कीधो छे जे कय बळीकम्मे ती स्वग्रह देवता अस्यार्थ. पोताना घरना देवनी पुजा कीधी तेनो अरथ ए जे पोताना संसारने अरथे गोत्रज देवादीकछे तेहने पुज्या. तीवारे प्रतिमामती कहे जे श्रावकने घरना देव ते जीन-प्रति छे. बीजा कुळदेवने श्रावक सम्यद्रष्टी वांदे पुजे नहीं. एम जोरावरीथी करी जीनप्रतिमा ठहरावेछे पण मुरख एटलुं नथी जाणता जे तीर्थंकर केहना घरना देव होशे ? एतो त्रीनलोकना देवछे. अने कहेछे जे समद्रष्टी श्रावक बीजा देवने कुळ परंपराए पण माने नहीं ते जुठो कहेछे सुत्र मध्ये जुवो.

१ श्री भरथेशरे समद्रष्टी थइने चक्ररतन कीम पुज्यो ?

२ वळी सान्तिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ ए त्रण जीनचक्री हता तेणे चक्रर-तन पुज्यो के न पुज्यो ? भरतखेत्र साधता तेर अठम लोकीक खाते ते सर्वे चक्री-वर्ति करेछे ते कीधां के न कीधां ?

३ वळी ज्ञाता मध्ये सुठीया देवताने श्रीकृष्ण समद्रष्टी थइने आराध्यो के न आराध्यो ?

४ वळी चक्रवर्ति मागधादीक देवने साधवाने बाण मुके ते बाण मध्ये लखेछे जे सर मर्यादा मांहीला देवता ते माहरा सेवक थाओ.

हंदी सुणं तुभवंतु ॥ बाहिरउेखलुसरस्सजे देवा ॥ नागा सुरा सुवना तेसिं षुनमो पणिवयामि ॥ १ ॥

अर्थः—हं. हंदीतीसत्ये. सु. सांभळ्यो तुम्हो. बा. सर. त. बाहीरळी भागे त्वचाइ अधीष्टायक देवताछे. ख. ते नीश्चे. जे. जे. दे. देवता. ना. नागकुमार. अ. असुर कुमार. सु. सुवर्ण कुमार देवता. ते. ते दवताने काजे. खु. नमस्कार हुओ. प. प्रणाम नमस्कार करुं छऊं. ॥ १ ॥

ए गाथामां कह्यो शर जाए तीहांथी पेहेले पासे देवता होय तेहने माहरो नमस्कार थाओ ए थीती छे. ते साचववा माटे सान्तिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ,

एणे पण खंड साधतां बाण नाखतां देवताने नमस्कार कीधोछे.

५. वळी अभयकुमारे मेहनो डोहलो पुरवा माटे अठम पोसा कीधो तीहां देववाने साहाज्य कीम वांछयो.

६. वळी आणंद श्रावकने अधीकारे उपासग पेहेले अध्ययने आगार छो राख्या जे अन्य तीर्थिने वांदवो तथा देवो पडे तो ते मध्ये १. देवाभी उगेणेवा (देवता कीण थकी) २. गणाभी उगेणवा (न्याती समुदायने आदेशे) ३. रायाभी उगेणवा. (राजाने बळात्कारे) ४. वीती कंतार एणं (दुर्भिक्षने जोगे अटवीने जोगे) ५. गुरूनी गहेणं (गुरुने परवश्यपणे) ६. बलाभी उगेणं. (बळात्कारे) ए छो कारणे संसारनी वीधी साचवुं पण ते मध्ये धरम न जाणुं इम कह्यो.

७ वळी ए साखतो सुत्र मध्ये छे जे कार्य वीशेखे लोकीक पक्षे समद्रष्टीने श्रावकने अन्य देव मानवा पडेछे.

८ अने ते कहेशे जे असइज. श्रावक देवताने साध न वांछे तो तमे कहोछो जे चोवीस तीर्थंकरना चोवीस जक्ष चोवीस जक्षणी रक्षा करेछे वळी सासन देवता साहाय करेछे. तेहनी थुइओ पडीक्रमणामां तमे कहोछो चार तीर्थ साहाय न वांछे तो ए जक्ष जक्षणी केहनी रक्षा करता होसे ? वळी सेत्रंजा उपर चक्केशरी माताने कीम पुजोछो ?

९ तथा जतीथकां गोरा, काळा, खेत्रपाळ, भेरव, तथा माणीभद्रादी जक्षने आराधे छे. पोतानी तथा पक्षनी रक्षा माटे. ए लेखे तो देवता साहायवंछा माटे तमाम गुरु ते पण समद्रष्टी नथी जाणता ते वीचारी जोजो.

१० वळी द्रुपदीए नारदने न वांद्यो समद्रष्टी माटे. तो श्रीकृष्णे समद्रष्टी थइने नारदनी भक्ति कीम करी ? ते साख ज्ञाता. सोलमे अध्ययनेछे ते लखीछे.

तएणं से पंडुराया कच्छुल्ल नारयं एजमाणं पासई२त्ता पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए देवीए सद्धिं आसणाउ अब्भुठेई२त्ताकच्छुल नारयं सत्तठ पयाइं पच्चुगछइ२त्ता तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति२त्ता वंदइ नमंसइ२त्ता महरीहेणं आसणेणं ऊवंनिमंतेइ तएणं से कच्छुलए नारए उदग परिफासियाये दब्भोवरि पच्चुथ

याये भिसियाए निसियइ२त्ता पंडुराय रजेय जाव अंतेउरिय कुसलोदंतं पुछइ.

अर्थः—त. तीवारे. से. ते. पं. पंडुराजा. क. कछुल. ना. नारदने. ए. आवतो थको. पा. देखे देखीने. पं. पांच. पं. पांडव. कुं. कुंतीदेवी. स. साथे. आ. आसनथकी. अ. उठे उठीने. क. कछुल. ना. नारदने. स. सात आठ. प. पग. प. साह्मो जाइ जाइने. ति. त्रीनवार. आ. आत्मा नमाडी. प्र. प्रदीक्षणा. क. करे करीने. वं. वांदी. न. नमस्कार करे करीने. म. मोटाने योग्य. आ. आसन. उ. आमंत्रे. त. तीवारे. से. ते. क. कछुल. ना. नारद. उ. पाणीना. प. छांटा नाखीने. द. डाभ उपरे. प. पाथरीने. भी. पाटली मुकीने. नी. बेसे बेसीने. पं. पंडुराजाने. र. राजने वीखे. जा. जावत. अं अंतःपुरने वीखे. कु. कुशलनो समाचार. पु. पुछे.

एवी रीते नारदनी भक्ती कीधी. द्रोपदीए वांदयो नहीं, ते समये समद्रष्टीणी हती ते माटे, ए काम रुडो कीधो. तेहीज नारद श्रीकृष्ण पासे आव्यो. तीहां श्रीकृष्णे पण जाव शब्द मध्ये पंडुराजानी परेभक्ति कीधी, वांदयो ते पाठ इमज छे.

इमंचणं कछुलानारए जाव समोवयई जाव निसिइ२त्ता कन्हं वासुदेवं कुशलोदंतं पुछई.

अर्थः—इ. एहवे अवशरे. क. कछुल नारद. जा. जावत आकाशथी. स. उतर्यो. जा. जावत. नि. बेसे बेसीने. क. कृष्न. वा. वासुदेव. कु. कुशळ समाचार. पु. पुछे.

ए जाव शब्द मध्ये पंडुराजानी परे भक्ति साचवी कहे. एणे मीथ्यात्वनी भक्ति लोकीक रीते कीधी के न कीधी ?

११ ज्ञाता अध्ययन आठमे मल्लीनाथ स्वामीए.

न्हाया जाव बहुहिं खुजाहिं परिखुडा जेणेव कुंभएराया तेणेव उवागछई२त्ताकुंभयस्स पायग्गहणं करेति.

अर्थः—न्हा. न्हाइ. जा. जावत. ब. घणी. खु खुजादासीए. प. परीवरी. जे. जीहां. कं. कुंभराजा. ते. तीहां. उ. आवे आवीने. कुं. कुंभराजाने. पा. पगेलागवो. क. करे.

जुवो तीर्थंकर देव मीथ्यात्वी अव्रती पीताने पगे लाग्याछे के नहीं ? लोकीक मीथ्यात्व खाते जाणी जे. ने माता पीता तो श्रावकपणो मल्लीनाथ स्वामीए संजम लीधो तेवारे आदर्यो छे. एटली साख कुलदेव लोकीक मीथ्यात्व समद्रष्टीने लागे छे ते उपर कही समद्रष्टी धर्म हेते मीथ्यात्वना देव गुरुने माने नहीं. लोकीक रीतनो नीखेद कह्यो नहीं.

---
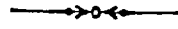
९. सीधायतन सब्दना अर्थ. उत्तर.

हींस्याधरमी कहेछे जे, सुत्र मध्ये देहरानो नाम सीद्धायतन कहेछे. ते सीद्धनो घर जाणवो, अने प्रतिमा ते सीद्ध जाणवी. ते वात सुत्र वीरुद्ध कहेछे. जो सीद्धायतन नाम गुणनीपन मानोछो तो.

१ भगवती नवमे सतके रुखभदत्त ब्राह्मण कह्यो, ते रुखभदेवनो दीघो थयो मानशो ?

२ तथा उत्तराध्ययन अढारमे करम असंजतीना करवा मृग्या मारवा माटे गीयो, तेहनो नाम सजती राजा कह्यों, तो ते सुं संजती थयो ?

३ तथा जीवाभीगम मध्ये कह्यो. सातमी नरके गया तेहने पंच माहा पुरुषा कह्या छे, तो कांइ लोकोत्तरपक्षना ए महा पुरुषा कहेवासे ?

४ वीजय, वीजयंत, जयंत, अपराजीत नामे अनुत्तर विमानना नाम कह्यां अने तेहीज चार नाम असंख्याता द्विप समुद्रना चार चार द्वारना नाम कह्यां. ते माटे अणुत्तर विमान थकी स्यो सबंध थीयो ?

५ अनुजोगद्वार मध्ये नोगुण नामना भेद कह्या. तीहां. अमुदोये. नीर्गुण नाम कह्यो तीम १ रुखभदत्त, २ संजतीराजा, ३ पंचमाहापुरुषा, ४ अणुत्तर विमानना नाम, ए सरवे नोगुण नाम तीम सीद्धायतन ए पीण नोगुण नाम जाणवो.

६ भरथादीक एकसो सीतेर वीजयमां एकर क्षेत्रे त्रणर तीर्थ कह्या. १ मागध, २ वरदाम, ३ प्रभास, ते तीर्थ कह्या. माटे कांइ समद्रष्टीने मानवाना नथी. तीम ए सीद्धायतन शब्द पण जाणवो.

७ जो गुणनीपन नाम सीद्धायतन मानो तो कहो. ए देहरा मध्ये कीयो सीद्धछे ते कहो. तथा ते सीद्धने घर होवे ? प्रथम एकतो एहीज कहो.

८ द्विप, समुद्र, देवलोक चारर जीन पडीमा कहीछे. तेहना चार नाम सरवे ठाम एहीज कहेछे. १ रुखभानना. २ वर्धमाना. ३ चंद्रानना, ४ वारीखेणा, ए तीर्थंकरने नामे नाम कह्या. ते माटे कांइ ए चार जीननी प्रतिमा नथी. ते कीम जे ए चार नाम तो अनंतकाळना चाल्या आवेछे अने रुखभ, वर्धमान, चंद्रानना, वारीखेणा. ए चार जीन तो आ चोवीसी मध्ये थीयाछे ए सांधो केम लागे.

९ प्रतिमा सीद्ध अने प्रतिमानो घर ते सीद्धायतन एहवो अरथ करो छो तो तमारे कहीण तो द्रुपदीनी प्रतिमानो घर तेहने सीद्धायतन कीम न कह्यो ? तीहां तो जीण घरे कह्यो छे. प्रतिमाना वास माटे सीद्धायतन कहीए तो द्रुपदीना देहेरा मध्ये प्रतिमा हती के न हती ? जो प्रतिमा न हती तो पुज्यो सुं ? अने प्रतिमा हती तो सीद्धायतन कीम न कह्यो ? ते कहो. अने सुर्याभादीक देवताना देहेरांछे. तेहने सीद्धायतन कहीने बोलाव्याछे ते सुं इहां प्रतिमाना वास माटे सीद्धायतन नथी कह्यो. परमार्थ तो एछे जे. असास्वता देहरां छे तेहने तो नागघरे, भुतघरे, जक्षघरे, वेसमणघरे, कहीए. ज्ञाता अध्ययन बीजे साखछे. अने जे अनंत काळना देहरांछे तेहने स्थिती आश्रयने सीद्धायतन संज्ञाए बोलाव्याछे अनंतकाळनी स्थितीनी जे वस्तु होवे तेहने सीद्ध कहीए. तेहनी साख श्री अनुजोगद्वार मध्येछे ते लखीछे.

सेकिंतं दसनामे२दसविहे पन्नंते तंजहा गोणे १ नोगुणे २ आयाणपएणं ३ पडिचखपएणं ४ पहाणपएणं ५ आणादीसिद्धे ६ नामेणं ७ अवयवेणं ८ संजोएणं ९ पमाणेणं १०

अर्थः—से. कोण ते. द. दस नामर. द. दस प्रकारे. प. परुप्या. तं. ते कहेछे. गो. गुणनीपन नाम १. नो. अगुणनीपन नाम. २. आ. आदीपद करी नाम नीपजे ते ३. प. प्रतिपक्ष उपरागे कहेछे ४. प. प्रधान वस्तुने नामे संजोगे नाम नीपजे ५ अ. अनादी काळना सीद्ध सास्वता नाम ते अनादी सीद्ध नाम ६. ना. पीतादीक नामेनाम ७. अ. कोइक अव्ययने संजोगे नाम कहेवाय. ८. सं. द्रव्य संजोगे नाम कहेवाय ९. प. नाम थापनादीक चार प्रकार नामना १०.

ते मध्ये अनादी सीद्धे नाम ते सुं ते लखेछे.

सेकिंतं अणादिएसिद्धे२ धम्मथिकाए अधम्मथिकाए आगासथिकाए जीवथिकाए पुग्गलथिकाए अद्धासमए.

अर्थः—से. कोण ते. अ. अनादी सीद्धनां नाम. ध. धर्मस्थिकाय. १. अ. अधर्मास्थिकाय २. आ. आगास्थिकाय. ३. जी. जीव ४. पु. पुदगलास्थिकाय. ५. अ. काल. ६, ए खट (छो) द्रव्य.

ए छो वस्तुने अनादी सीद्धे कहीए, ते तमारे मते तो छ वस्तुने अनादी शीद्ध कही ते माटे वंदनीक थइ. तीहां सीद्ध प्रतिमानो आयतन घर ते शीद्धायतन मानो. तो इहां काल. पुदगल. जीव. धर्मास्थि, अधर्मास्थि. आकाश. परमाणु जीव अनंत प्रदेसीक खध तेहने सीद्ध कह्या. माटे ते पण वंदासे. सीद्धना घरने वांदसो तो सीद्धने कीम नही वांदो ? पण इहां तो सुत्र परमार्थ एहीज अर्थ छे जे, अनंता कालनी स्थिती छे अने स्वयं सीद्ध अणकीधा थया माटे सीद्धायतन कहीए.

तीवारे हींस्याधरमी केहेसे जे वैताढ्यादीक पर्वत छे तेने नव कुटछे. ते नव कुट अनंतकालना छे. तो ते, नवने सीद्धायतन कुट कां न कह्या. सीद्धायतन कुट एकज कीम कह्यो ? प्रतिमावाला एम पुछे तेने उत्तर. अनुजोगद्वारमां कह्युंछे जे. मह्या सेयेती महीख—मही केतां जे पृथ्वी उपर सुवे छे ते माटे भेंसाने महीख कहीए तो पृथ्वी उपर सर्व मनुष्यादीक पशु सुवे छे, एणे लेखे तो सर्व महीख कहीए. पण वीवेखण वीन्या भेंसाने महीख कह्यो. तथा कुंजरे जतीती कुंजर कुंज कहीए. वन तेहने वीषे रती पामेछे ते कुंजर केतां हाथी कहीए. तो वनने वीखे मनुष्य सुं रती नथी पामता ? पण कुंजर नाम ते हाथीनेज कहीए. तीम नवकुट अनंतकाल सीद्धछे, जदपी देव देवी अधीष्टीत छे तेहने देवदेवीने नामे कुट कह्या. अने इहां देव देवीनो वीसेसण नथी तीहां सीद्धायतन कुट कह्यो. अने प्रतिमाना वास माटे सीद्धायतन कहीए नहीं. श्री गणधर देव भुले नहीं ते वीचारी जोजो.

---

१०. गौतम अष्टापद चढया कहेछे तेहनो उत्तर.

१. हींस्याधरमी कहेछे जे भगवंत श्री माहावीरे गौतमने कह्यो. जे तुमे अष्टापद पर्वत जाओ ने भरथना कराव्या बींब जुहारो, जीम तुमने केवल ज्ञान उपजे. ए वात सुत्र वीरुद्ध कहेछे. जंबु द्वीप पन्नंती मध्ये कह्यो. श्री रुखभदेवने केवल ज्ञान उपजयो, तीवारे प्रथम देसना देवता मनुष्यने दीधी तीहां कह्यो.

धम्मोदेसमाणे विहरई तंजहा पुढवीकाईए भायणागमेणं पंचमहव्वयाइं सभावगाइं.

अर्थः—ध. एहवो धर्म देखाडता परुपता थका. वि. वीचरेछे. तं. कहे छे. पु. पृथ्विकाय. भा. इम भावनाने गमे करीने आचारंग सुत्रना बीजा सुत स्कंधनुं भावना अध्ययन थकी. प. पांच माहाव्रत. स. पचवीश भावना सहीत जाणवो.

पंच माहाव्रतं, बारव्रत, छकायनी दया, सलेखणा, ए धर्म परुप्यो इम श्रीमाहावीरे आचारंग बीजे सुतस्कंधे भावना अध्ययनमांहे प्रथम उपदेश एमज दीधो.

२ वली उववाइ सुत्रे कोणीक राजा आगळे पांचमाहाव्रत, बारव्रत, सलेखणा, छकायनी दया, ए धर्म पुरुप्यो पण कीयांय सीद्धांत मध्ये जात्रा, पुजा, संघ काढवा, पाहाड पर्वत भमवो, प्रतिमा घडाववी, देहरां कराववां. ए उपदेश तीर्थंकरे गणधरे, कीहांइ दीधो नथी. तो गौतमने अष्टापद जावो कीहांथी कह्यो.

३ वली कथा मध्ये कहेछे जे श्रेणीकराजाने नरके जावुं टाळवाने चार बोल बताव्या. १ काळीकसुरियो भेंसा न मारे २ कपीळा दासी साधुने दान देवे. ३ पुणीयो श्रावक सामायक आपे ४ तुं नोकारसी मात्र पचखाण करे तो नरके न जाइ एम कह्युं पण अष्टापद, सेत्रंजानी जात्रा करवी न बतावी.

४ तथा साळीभद्रे संजम लीधो पण केटलां धनना देहरां कराववां. संघ कढाववा ए उपदेश न बताव्यो.

५ प्रदेशी राजाए दानशाळा मंडावी (पोताने छांदे) पण केसीकुमारे देहरा प्रतिमा कराववां संघ काढवानो उपदेश न दीधो.

६ कोणीकराजाने पण ए उपदेश श्रीमाहावीरे न दीधो.

७ द्वारका बळवानो प्रस्ताव जाणीने नेमनाथे कृष्णने देहरा प्रतिमा पुजवानो उपदेश दीधो नथी; तो गौतमने जात्रा जावानो कीम कहेस्ये ?

८ उत्राध्ययन दशमे गाथा अठावीसमां कह्युं छे जे.

वोछिंद सिणेह मप्पणो ॥ कुमुयं सारइयंच पांणीयं ॥ से सव सिणेहवजिए ॥ समयं गोयम मा पमायाए. ॥ २८ ॥

अर्थः—वो. छेदे टाले. सी. स्नेह रागने. अ. आत्माने. कु. कमळ जे ते जेम. सा. सरद रुतुनो. पा. पाणीने छांडीने कमल ऊंचो रहे तेम तुं पण. से. तेह. स. सर्व. सी. स्नेहे करी रहीत थको. स. समयमात्र पण. गो. हे गौतम. मा. म था प्रमादी (प्रमाद न कर.) २८

एमां कह्युं जे आपणे स्नेह घणा कालनो छे. ते तुं निवार. म केवल उपजे इम कह्यो, पण जात्रा जावो नथी कह्यो.

८ वली भगवती सतक चउदमे उदेते सातमे कह्यो. जे.

रायगिहे जाव परीसा पडीगया गोयमादि श्रमणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं यवं वयासी चिरसं सिठासि मे गोयमा चिरसंमु औसि मे गोयमा चिरपरी चयौसी मे गोयमा चिरजूसि तौसि मे गोयमा चिशणु गत्तोसि मे गोयमा अणंत्तरं देवलोए अणंतरं माणुसे भवे किंपरं मरणकायस्स भेद्धाइत्तौ चुयादो वितुला एगठा अविसेस मणाणत्ता भविसामो.

अर्थः—रा. राजगृह नगरने वीखे तीहां भगवंत श्रीमाहावीर स्वामी गौत्तमने केवल ज्ञाननी अमासीए करी स्वदया जाणी गौतमने आस्वासन नीमीते आमंत्री तेडीने आपने अने गौतमने हुणहार तुलयता मते केवाने अरथे ए कहेछे. हे गौतम आमंत्रणे श्रमण भगवंत श्री महावीर गौतम मते आमंत्री एम कहे अतीतकाल लगी स्नेह थकी मुजसुं संबंध छे इसंचीष्टछे. हे गौत्तम घणा काल लगी मुझमते प्रसंसा छे हे गौतम घणा काल लगी चली चली देखवे मुझने सों परीचय छे. हे गौत्तम घणुं चीरंकाल लगी सेव्या मतीतीत पात्र छे. हे गौतम चीरंकालनो मारे पुंठे चाल्योछे. हे गौतम घणेकाले अनुकुलवृति भावथकी अनुगामी छे. हे गौतम अंतर रहीत देवभावने वीखे तीहांथकी पण अनंतरो मनुष्य भवने वीखे एटले त्रीपृद वासुदेवने भवे गौतमनो जीव सारथी हतो. घणुं सुं कहीए मरण थकी पछे कायकायना भेद हेतुथकी एह प्रत्यक्ष मनुष्यना भवथकी बहु चवीने दोवीती आप दोन्युनुतुल्य सरीखा हुशे. तीयेग तीहां तुल्य सामान्य जीव द्रव्य वेहुना एकहीज अर्थ कहेतां प्रयोजनछे. वेहुने अनंत सुख प्रयोजनपणाथकी अथवा नाठा कहीतां एक क्षेत्र आश्रीत वेहु सीद्धक्षेत्रनी अपेक्षाए वीसेख रहीत जीम हवे तीम आनानात्य० नानापणा रहीत वेहुना तुल्य ज्ञानादी पर्याय हुस्ये इत्यर्थ.

इम कीधो के हे गौतम ताहरे मुझथकी घणा भवनो स्नेह छे. इहांथी चव्यां वेहु मुक्ति जासुं तीहांथी वेहुतुल्य थासुं पण सुत्र पाठे अष्टापद जावो इम नथी कह्यो. एहनी टीका मध्ये अष्टापद जावो कह्यो छे. तीवारे कहीए जे टीका तो मुळ

सुत्र पाठनो अरथ छे. ए जात्रा जावो बताव्यो ते कया मुळ पाठ उपर ते पाठ देखाडो. जो पाठमां जात्रा जावानो नाम नथी तो टीकामां कीहांथी आव्यो ?

९. हींस्याधरमी कहेछे जे, सुर्यनी कीरण पकडी अवीलंबीने चडया ते वात खोटी छे. कीरणना पुदगल तो वीससा कह्या छे उत्राध्ययन अठावीसमे गाथा बारमी कहीछे ते लखेछे.

सदंधयार उजोउ ॥ पहा छायातहेइवा ॥ वन्न गंध रस फासा ॥ पुग्गलाणंतु लखंण ॥ १२ ॥

अर्थः—स. सूभ सूभ शब्द अहंकार. उ. उद्योत रतनादीकनो. प. प्रभाकांती चंद्रादीकनी. छा. छाया सीतली. आ. आतप सुर्यादीकनो प्रसततावड. ए. ए कह्युं ते समुचे. व. वर्ण. १२ गं. गंध ८. र. रस ३. फा. फरस १७. पु. पुदगलास्थिकायनो वली. ल. ए २७ प्रवोलरुप लक्षण जाणशो ए छ द्रव्यना गुण, लक्षण कह्या १२.

कीरण तापना पुदगलने कोइ देवता सरखोपण पकडवाने समर्थ नहीं, जीम पाणीनी धारा पकडीने कोइ चडी न सके तीम.

१०. वली समवायंग सुत्रे कह्यो जेः जंघाचारण साधु रतन प्रभाथीं.

सतस्स जोयण सहस्साइं उढं गता तउ पछा तिरियं गइ पव्वतइ.

अर्थ.—सतर हजार जोजन ऊंचा उतपतिने पछे तीरछी गती करे पण जंघाचारण सरखा पण सुर्यनी कीरण पकडवा समर्थ नहीं तो कीरण पकडीने चडया कहेछे ते एकांत जुठुं बोलेछे.

११. वली अठावीस लबधीना नाम कहेछे.

१. आमोसही. २. विपोसही. ३. खेलोसही. ४. जल्लोसही. ५. सव्वोसही. ६. संभिन्न सोतीया. ७. अव्वधीनाणी. ८. रुजुमति. ९. विपुलमति. १०. चारण ११. आसीविष. १२. केवल. १३. गणधर. १४. पुर्वधर. १५. अरीहंत. १६. चक्रवर्त्ति. १७. वलदेव. १८. वासुदेव. १९. खीरासवा महुयासवा सपीयासवा अमीयासवा. २० बीजबुधी. २१. कोठबुधी २२. पादानुंसारणी. २३. तेजोलेस्या. २४. सीतल लेस्या. २५ आहारक. २६, वैक्रीय. २७. अखीणमाणशी. २८. पुलाक.

ए अठावीस लबधी कही, ते मध्ये सुर्यकीरण पकडे ते कही लबधी थकी ?

१२. भगवती मध्ये कह्यो, सकखाइ असवड अणगार लबधी फोरवे तेहने

प्रायश्चित कह्यो छे. प्रायश्चित लीधा वीन्या काळ करे तो वीराद्धक कह्यो. वळी सतक वीसमे उदेसे तथा वीजा पण घणे ठामे लवधी फोरवतां प्रायश्चित कह्यो छे. जे वाते विराद्धिक थाय ते उपदेश भगवंतजी गौतमने कीम देवे ? वळी कहे कीरण पकडया विना चढाइ नहीं तो, पनरसें तापस बेसी कीम रह्या हता. तथा गौतमना साधु शी रीते चढया ? सर्व तो लवधीधारी हुता नहीं.

१३. वळी हींस्याधरमी कहेछे जेः पंनरसे तापस केवळी थया, ए पण सुत्र विरुद्ध कहेछे. सीद्धांत श्रीभगवती सतक पांचमे उदेसे चोथे कह्यो जेः सातमा देवलोकना देवताये भगवतनी पासे आवीने पुछयो जे भगवंत तमारा केटला साधु केवळ पामीने मुक्ति जाशे. तीवारे भगवंते कह्या.

मम सत्तंतेवासी सयाइं सीझीस्संति.

मारा सातसे केवळी मुक्ति जाशे; पण अधिका नथी कह्या. वळी कल्पसुत्रमां पण भगवतने सातसें केवळीनी संपदा कही.

१४. कदाचीत हींस्याधरमी कहे जेः ए पंदरशें केवळी तो गौतमनी संपदामां हता ते माटे सातसेंमां न गण्या, ए पण जुठुं. गौतमने शिष्य तो ठाम ठाम सीद्धांत मध्ये पांचसेंह कह्याछे अने कल्पसुत्रमां पण पांचसें साधु गौतमने अने सुधर्मा स्वामीने कह्या छे.

१५. तथा कृतम वस्तुनी स्थिति संख्याता कालनी सुत्रपाठे भगवती मध्ये कहीछे, तो भरथना कराव्यां वींव श्रीमाहावीरना वारा लगे कीम रहे ? अने गौतम कीम वांदे ? ते वीचारी जोजो.

---

११. नमोथुणंनो पाठ सुत्रनी साखे.

हींस्याधरमी नमोथुणं कहेछे तेहने छेडे.

जियभयाणं ॥ जेअअईआसिद्धा ॥ जेअभविस्संतणागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सव्वेतिविहेणंवंदामी ॥ १ ॥

अर्थ—जी. सात प्रकारना भय रहीत. जे. जे अतीतकाले तीर्थंकर थइ सीद्ध पर्यायपणुं पाम्या. जे. जे अनागत काले तीर्थंकर पर्याय पामी सीद्धपणुं पामशे. स. संप्रतीते हमणां वर्त्तमानकाले जे सीद्ध थायछे, एटले वर्त्तमाने जे महावीदेहमां छद्मस्थपणे वीचरेछे ते. स. सर्व तीर्थंकरप्रते. ति. मन वचनने कायाए त्रीवीधे करी. वं. हुं वांदुछुं. १.

एटलो अधीको पाठ कहेछे. ते वात सुत्र वीरुद्धछे. आवता कालना तीर्थंकर हजुसुधी अवीरती अपचखाणी च्यारे गती मध्ये होवे ते कीम वंदाए ? पण एम जाणे जे गुण रहीत आवता कालना तीर्थंकर द्रव्य नीखेपेछे, ते वांदवा मानीए तो गुण रहीत थापना नीखेपो वांदता शेहेल थाइ, पण इम नथी. ठाम ठाम सीद्धांत मध्ये नमोथुणं इंद्रे कीधां, तथा उववाइ मध्ये राजा कुणीके कीधां. अवंडने सीष्ये कीधां. रायपसेणी मध्ये सुरीयाभे कीधां. राइपसेणी मध्ये राजा परदेशीये कीधां. भगवती मध्ये खंधक मुनीए कीधां. ज्ञाता मध्ये अरणक श्रावके कीधां, इम अनेक ठामे नमोथुणं कह्यांछे, तीहां सीद्धने नमोथुणं कह्यो तीहां छेलो पद ठाणंसपत्ताणं कह्यो अने अरीहंतने नमोथुणं कह्यो तीहां छेडे ठाणं संपावीओ काभमस एटला लगे कह्यो, सेखपद कोइ सुत्रमां नथी कह्यां, ते माटे प्रखेपीने वधार्यां छे.

वली हींस्याधरमी कहे छे जे: नमोथुणं तो इंद्रनो कह्यों थीयो छे. सीद्धांततो गणधरना मुख वीना छोडाय नहीं. रुखभदेव गर्भमां उपना तीवारे इंद्रे पोताना मनथकी जोडयो नथी. पुर्व भुवना समदृष्टी साधु हता ते पंडीत मरण करी इंद्रपणे उपना ते सुं नमोथुणादीक घणा पदार्थ जाणता न हुता ? तथा माहावीदेह खेत्रे सास्वता नमोथुणा छे के नथी ते जोवो. जीहां वीद्यमान जीन छे तीहांकणे कांमस्स ए अंतपद छे सेखपद नथी. एटलां पद नवां केम जोडया छे ?

---

११. च्यार निंखेपानो जाणपणो.

हींस्याधरमी कहेते जे: च्यार नीखेपा सुत्र मध्ये कह्या छे. १ नाम नीखेपो. २ स्थापना नीखेपो. ३ ध्रव्य नीखेपो. ४ भाव नीखेपो. ते माटे स्थापना नीखेपो मांनीए छीए एम कहे छे, ते वात सुत्र वीरुद्ध कहे छे. श्री अनुजोगद्वार मध्ये सुत्रे च्यार नीखेपा कह्या छे ते सत्य छे, पण च्यार नीखेपा वंदनीक तो कह्या नथी. एक भाव नीखेपो वंदनीक कह्यो छे.

नामजिणाजिण नामा ॥ ठवणानिक्षेपोजिणंदपडीमाउ ॥
दव्वजिणाजिणसरीर ॥ भावजिणाजिणअरिहंता. ॥ १ ॥

ए च्यार नीखापानो स्वरुप कह्यो, हवे च्यार नीखेपानो अर्थ वीस्तारीने सुत्र अर्थरुप कहे छे. अनुजोगद्वार मध्ये प्रथम च्यार नीखेपा आवस्यक उपर देखाडया छे. पछे सुत्र शब्द उपर देखाडया छे. पछे खंध शब्द उपर देखाडया छे.

पछे जे जे वस्तु जगत मध्ये वरते छे ते ते वस्तु उपर उतारवा. ए कही मुक्यो छेः ते अनुसारे.

१. अरीहंत शब्दना चार नीखेपा कहे छे.

१ नामअरीहंत. २ थापनाअरीहंत. ३ द्रव्यअरीहंत. भावअरीहंत.

१. तीहां नाम अरीहंत ते माता पीताये पुत्रनो नाम रुखभो, सांतो, नेमो, वीरो, वर्धमान, जीनदत्त, जीनरक्षक, जीनपालक, एहवा अरीहंतने नामे नाम दीधां जीम अरहणए समणोवासए इत्यादीक नाम. अरीहंतनाम शरीखपणा माटे नाम अरीहंत, पण अरीहंतना गुण रहीतपणा माटे (अवंदनीक) वांदवा जोग नथी.

२. थापना अरीहंत ते अरीहंतना शरीर सरखो आकार कीधो. काष्ट, पाखाण, माटी चीत्राम, चुंथरा, पीतल, धातु, प्रमुखनो तेहने वीशे अरीहंतनो भाव आरोप्यो, पीण अरीहंतना गुण नथी ते माटे अवंदनीक जीम मल्लीनाथ स्वामीये पोतानी मुरती करावी. तथा १ रुखभानना. २. वर्धमाना. ३. चंद्रानना. ४. वारीखेणा. पर्वते, देवलोके, सास्वती कही छे. पीण गुण रहीतपणा माटे वांदवा जोग्य नथी.

३. ध्रव्यअरीहंतना पांच भेद. १ जाणगसरीर. ध्रव्यअरीहंत. २ भवीयसरीर ध्रव्यअरीहंत. ३ लोकीक ध्रव्यअरीहंत. ४ कुप्रावचनीक ध्रव्य अरीहंत. ५ लोकोत्तर ध्रव्यअरीहंत. नाम, स्थापना अरीहंतनो अर्थ सुगम्य.

१. श्री अरीहंतदेव मुक्ति गया तेहनुं शरीर पडयुं छे. ते शरीर जाणगसरीर ध्रव्यअरीहंत कहीए. जीम ए घृतनो घडो हतो तीम.

२. तथा ग्रहवासे वसता अरीहंत हजुसुधी अरीहंतना गुण आगमीकाळे आवशे. हजुसुधी आव्या नथी, ते भवीयसरीर ध्रव्यअरीहंत जीम ए घृतनो घडो होस्ये, पण हजी थीयो नथी तीम.

३. तथा लोकीक ध्रव्यअरीहंत ते सत्रुमे वासीने जीतो ते चक्री, वासुदेव, राजादीक.

४. तथा कुप्रावचनीक ध्रव्यथकी अरीहंत ते चोत्रीश अतीसय वीना देव कहावे, हरी, हर, ब्रह्मादीक ते,

५. तथा लोकोत्तर ध्रव्यअरीहंत, ते गोसाळा प्रमुख; जीनसासनमांही केव·

लज्ञान वीना अरीहंत कहेवाणा, ते लोकोत्तर द्रव्यअरीहंत ए पांच भेद द्रव्य-अरीहंत नीक्षेपाना कह्या.

४. भावअरीहंत ते लोकोत्तरपक्षे केवलज्ञानादी सर्व गुण सहीत वरतेछे वंद-नीक वांदवा जोग्य छे. ए अरीहंतपदना चार नीक्षेपा कह्या.

२. हवे गुरु आचार्य पदना च्यार नीखेपा कहेछे.

१ नामआचार्य. २ थापनाआचार्य. ३ द्रव्यआचार्य, ४ भावआचार्य.

१. नामआचार्य ते कोइ जीव तथा अजीवनो नाम आचार्य दीधुं ते नामआचार्य.

२. थापनाचार्य ते काष्ट, पाखाण, पीतळ, चीत्राम, चुंथरानो करी आचार्यपणे मान्यो, ते थापनाचार्य. ए नामने थापनाआचार्य गुण रहीतपणा माटे अवंदनीक.

३. द्रव्यआचार्यना पांच भेद. १ जाणगशरीर द्रव्यआचार्य. २ भवीयशरीर द्रव्यआचार्य. ३ लोकीक द्रव्यआचार्य ४ कुप्रावचनीक द्रव्यआचार्य. ५. लोकोत्तर द्रव्यआचार्य ए पांच भेद. हवे तेनी समजण कहेछे.

१. तीहां गुणवंत गुरुये काळ कीधो, तेहनो शरीर पडयोछे. ते शरीर नाम जाणगशरीर द्रव्यआचार्य, जेम ए घृतनो घडो पुर्वे हतो तेम.

२. शरीरनो धणी कालांतरे आचार्यपणो पामशे, पण हजी पाम्यो नथी. ते भवीयशरीर द्रव्यआचार्य. जेम ए घृतनो घडो थासे तेम.

३. लोकने बोंहोतेर कळा शीखावे ते लोकीक द्रव्यआचार्य.

४. त्रणसें त्रेंसठ पाखंडीना गुरु, ते कुप्रावचनीक द्रव्यआचार्य.

५. जीनमारग मध्ये हीणाचारी, छकायनी दया रहीत, पांच माहाव्रत रहीत, आधाकरमी आदी दश दोष आहार उपध्य, उपाश्रय शेवे; ते लोकोत्तर द्रव्यआ-चार्य ए पांच द्रव्याचार कह्या, पीण गुण वीना अवंदनीक.

४. भावआचार्य ते लोकोत्तरपक्षना साधु सतावीश गुण सहीतः केसी, गौतम, सुधर्म, जंबु, प्रमुख ते भावआचार्य गुणवंत वंदनीक. ए गुरु आचार्यना चार नीखेपा कह्या.

३ हवे धर्म शब्दना चार नीखेपा कहेछे.

१ नामधर्म. २ थापनाधर्म. ३ द्रव्यधर्म. ४ भावधर्म. तेनो वीस्तार.

१. नामधर्म ते कोइक जीव अजीवनो नाम धर्म, धर्मदास, धर्मचंद, धर्मसी, नाम दीधो ते नामधर्म अवंदनीक.

थापनाधर्म ते धर्मवंतनो. आकार आलेख्यो, काष्ट, पाखाण, धातु, चीत्राम, चुंथरादीकनो ते थापनाधर्म. गुण वीना अवंदनीक.

३. द्रव्यधर्मना पांच भेद, १ जाणगशरीर, द्रव्यधर्म २ भवीयशरीर द्रव्यधर्म. ३. लोकीक द्रव्यधर्म. ४ कुप्रावचनीक द्रव्यधर्म. ५ लोकोत्तर द्रव्यधर्म.

१. धर्मवंतनो शरीर जीव वीना पडयो होय ते जाणगशरीर द्रव्यधर्म. जेम ए घृतनो घडो हतो तेम.

२. एणे सरीरे आगळी काळे एहने धर्मना गुण आवशे, पण हजु आव्या नथी. ते भवीय शरीर द्रव्यधर्म, जेम ए घृतनो घडो थाशे पण हजी ळगे थीयो नथी तेम.

३. लोकीक द्रव्यधर्म ते गाम, नगर, देश, न्यात, जात, कूळनो, जीत आचार पाळे ते लोकीक द्रव्यधर्म.

४. कुप्रावचनीक द्रव्यधर्म ते त्रणशें त्रेसद पाखंडीना मत दानधर्म, सुचीधर्म, जात्रा, स्नान, श्राद्ध, जाग, होम, देव देवीना देहरां इत्यादीक कुप्रावचनीक द्रव्यधर्म.

५. लोकोत्तर द्रव्यधर्म ते गोसालामत, जमालीमत तेहनो ज्ञानदर्शन, चारीत्र, पर्व प्रमुख ने छकायनो वधकरी धर्म माने ते.

४ भावधर्मना बे भेद. १ सुतधर्म ज्ञान दर्शनरुप. २ चारीत्र धर्म वीरती तपरुप साधु ने श्रावकनो आचार, आरंभ परीग्रह रहीत वीखय कखाय रहीत ए भावधर्म लोकोत्तर ते वंदनीक.

ए देव, गुरु धर्मना चार नीक्षेपा कह्याछे, इमज जाव आवस्यक प्रमुख घणा पदार्थना चार नीक्षेपा अनुजोगद्वार सुत्रमां कह्याछे, ते मध्ये एक भाव नीक्षेपो लोकोत्तर पक्षनो वंदनीक सेखभेद अवंदनीक जाणवा.

१. हवे कोइ हींस्याधरमी कहेशे जे तीर्थंकरना चार नीखेपा वंदनीक छे. ते अमे वांदीएछीए. तेनो उत्तर. जो तीर्थंकरनो नामनीक्षेपो वांदवो तो तीर्थंकरने नामे अनेक पुरुषछे. रुखभो, सांतो, नेमो, वीरो, वर्धमान, एहने तीर्थंकरना नामना शरीखपणा माटे वांदता केम नथी ? तेवारे हींस्याधरमी कहेशे जे, लोगश मध्ये चोवीश तीर्थंकरना नाम लीजेछे. ते नाम नीखेपो वांदीए छीएजतो. ते उत्तर. लोगश मध्ये चोवीश तीर्थंकरना नाम लीजे तेतो नाम संज्ञाछे ते नाम नीखेपो नथी अनुजोगद्वार मध्ये कह्योछे जे.

नामाणी जाणि काणिय ॥ दव्वाणय पजवा गंवा ॥ तेसिं आगम निहस ॥ नामतिपरुवियासन्ना. ॥ १ ॥

अर्थ–ना. नाम. जा. जे कोइक. द. जीव अजीव द्रव्यना. गुज्ञानादीका अनेक रुपादीका गुणना. प. नारकादीकना अनेक, कृष्णपणादीक नाम जीवना नाम जीवजतुं आत्मा प्राणी इत्यादीक आकाश नाम आकासभं तारा पथव्योम अंबर इत्यादी गुण नाम ज्ञान बुद्धि बोध तथा रुप, रस, गंध, स्पर्श, इत्यादीक तथा पर्याय नाम नारकी त्रीयंच नरदेव तथा एक गुण कृस्न इत्यादीक. आ. आगम ज्ञानरुपणी जे कसोटीने वीखे नाम पदवी संज्ञारुपणी जीम सोनुं, रुपुं, कसोटीए परखे तीम सोना रुपा सरखा जीव पदार्थ परखीने कीजे, नामादीकनुं ज्ञान ते कसोटी छे.

लोगस मध्ये नाम छे, ते तो मुक्ति गया भाव सीद्ध नीखेपा मध्ये वरतेछे. ए नाम नीखेपो नहीं. तीर्थंकरना नाम अनेरी वस्तु मध्ये पामीए, ते वस्तु नाम द्वारे तीर्थंकर नाम थकी मीले ते वस्तुने नाम नीखेपो कहीए. ते माटे तुमारे मते जीन नामे जे पुरुष होय ते सर्व तुमारे वंदनीक जोइए. तेहने कीम नथी वांदता? जीवारे चोवीश जीनवर वरतता हता तीवारे नाम तो एहीज हता. पीण नाम नीखेपो न कहीए साक्षात भाव नीखेपो हतो. रुखभादीकनो नाम रुखभादीक तो ते नाम नीखेपो नहीं, ते नामसंज्ञा कहीए, जे अनेरानुं नाम रुखभादीक कहेवाय तेह वस्तुनुं नाम नीखेपो कहीए, ते तमे कां वांदता नथी ?

२. तेथी नजीक थापना नीखेपो तेतो तमे मानोछो. तेहनी चरचा आगळे कहेवाशे, पेहेला द्रव्य नीखेपानी लखे छे.

१. तमे कहोछो जे, भरथेशरे त्रीडंडीआने चरम तीर्थंकर थातो जाणीने वांदयो. ए द्रव्य जीन वंदनीक थीयो, पण ए वात तो सीद्धांत मध्ये कीहांय कही नथी. सीद्धांत मध्ये अंतगड सुत्रे पांचमे वर्गे श्री कृष्णने नेमनाथ स्वामीए कह्यो जे.

एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया तच्चाउ पुढव्वीउ उजलीयाउ नरगाउ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्वीवे२ भारहेवासे पुडेसु जणवएसु सतदुवार नयरे बारसमो अमम्मो नाम अर्हा भवि-

स्सइ तथ तुम्मं बहुरं वासाइं केवली परियागं पाउणित्ता सिझि- हिति तएणं से कन्हे वासुदेवे अरहउं अरिठनेमी अंतिए एय- मठं सोचा निग्रम्म हठ तुठे अफोडेईश्त्ता तिवइछेदिइश्त्ता सींह- नायं करेईश्त्ता.

अर्थः—ए. एम. ख. नीश्चे. तु. तमे. दे. हे देवानुंमीय. त. त्रीजी. पु. मथत्री. उ. उजली, मुष. न. नरकथकी. अ. आंतरा रहीत. उ. नीकलीने. इ. एहीज. जं. जंबु- द्विपे-२. भा. भरथ खेत्रे. पु. खुड. ज. देशने वीखे. स. सयद्वार. न. नगरने वीखे. वा. बारमो. अ. अमम. ना. नामे. अ. तीर्थंकर. भ. थाइश. त. तीहां. तु. तमे. ब. घणा. वा. वरशनी. के. केवलीनी. प. पर्याय. पा. पालीने. सि. सर्वे कार्य सीद्ध थाशे मुक्ति जाशे. त. तीवारे. से. ते. क. कृष्ण. वा. वासुदेव. अ. अरीहंत. अ. अरी- ष्टनेमीने. अं. समीपे. ए. ए अर्थ. सो. सांभलीने. नि. विमाशी. ह. हर्ख. तु. संतोष पामे. अ. अस्फोट कर्यो, हर्ख करीने. ति. त्रीहुफाले उदक्यो उदकीने. सीं. सींह- नाद करे करीने.

हे कृष्ण तुं बारमो जीन थाइश एम कह्यो. ते सांभलीने श्रीकृष्ण हरख्या, नाच्या, कुद्या, त्रीपदी छेदी, सींघनाद कीधो, पोताना मन थकी आनंद पाम्या, पण जीन ध्रव्य जाणीने कोइ गणधरे, साधुए, श्रावके, देवताए, वांदया नहीं. प्रसं- स्या नहीं. तो ध्रव्य नीखेपो केम वंदनीक होवे ? २ वली ठांणांग सुत्र नवमेठाणे श्रीमाहावीरे सभा मध्ये कह्यो जे, श्रेणीक राजा मुज शरीखो जीन प्रथम थकी थाशे आउखो, औगाहणा, परीवार, परुंपणा, मुज सरखो करशे एम कह्यो. पण ते समये साधु, श्रावके, गणधरे, देवताए, कोइए वांदया नहीं. तो ध्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

३. वली ज्ञाता अध्ययन आठमे अरणक श्रावक मीथुलानगरीए गया. कुंभ- राजाने कुंडलनो जोडो आप्यो, पीण अंतेउर मध्ये मल्लीनाथ स्वामी त्रण ज्ञान खायक समकीत सहीत चोसठ इंद्रना पुजनीक हता, तेहने जाणे छे. तो ध्रव्य नीखेपाने वांदवा कीम न गया ? तथा कोइ साथे वंदणा पोहोचाडी पीण कीम नहीं ? तथा कुंडल जीन जाणीने भेट केम कीधो नहीं ? तो ध्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

४. वळी छ राजा मोहनघरमां आव्यां, त्यां मल्लीनाथ स्वामीने साक्षात जीन जाण्या, पोताने जाती समरण पाम्याना, उपजवाना, कारणीक जाण्या, पण वंदना कीधी नहीं, तो भ्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

५. वळी मल्लीनाथ स्वामीनी प्रतिमाने स्थापना नीखेपो जाणीने पोताने जातीस्मरण तथा चारीत्रनुं कारणीक जाणीने वांदीए नहीं. तो स्थापना नीखेपो पण वंदनीक कीम होवे ?

६. समवायंग मध्ये वर्त्तमान चोवीश जीनना भाव नीखेपाना धणी जीनना नाम गणधरे कीधा तीहां कह्यो.

उसभ मजीयं च वंदे जिणं च चंदपहं वंदे धम्मो संतं च वंदामी वंदे मुनीसुवयं नेमिजिणं च वंदामी.

अर्थ—उ. रीखभदेव स्वामी. म. अजीतनाथ स्वामी. वं. वांदुछुं. जी. राग द्वेषना जीतनार. च. वळी. चं. चंद्रप्रभु स्वामी. वं वांदुछुं. ध. धर्मना स्वामी. स. सांतीनाथ स्वामी. च. वळी. वं. वांदुछुं. वं वांदुछुं. मु. मुनीसुव्रत स्वामी. न. नमीनाथ स्वामी. च. वळी. वं. वांदुछुं.

ए वंदे शब्द कह्यो. अने आवती चोवीशीना जीन थाणहार छे. श्रेणीक, कृष्णादीकना जीव तेहना नामहीज कह्या, पीण वंदे शब्द न कह्यो. हजुसुधी अव्रती अपचखाणी वरते छे ते माटे तो भ्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

७. वळी भगवती शतक नवमे उदेशे बत्रीशमे गंगेय अणगारे श्री माहावीरने भ्रव्य जीन जाण्या, तीहां लगे वांदया नहीं. पछे भंगजाळ पुछी निःसंदेह थयो, साक्षात भाव नीखेपे केवळी जाण्या, पछे वांदया ते पाठ लखे छे.

तुप्पभिइंचणं से गंगेय अणगारे समणं भगवं माहावीरं पच्चभि जाणइ सव्वनुण सव्वंदरसी.

अर्थ—त. जे समयने वीखे भगवंत अनंत रोक्त वरुक्त कह्युं तेहीज समय प्रभति कहेतां आदे देइने ते गंगेय अणगार भगवंत श्री माहावीर प्रते जाणे. इ. सर्व वस्तुना जाण, सर्व वस्तुना देखणहार.

तो भ्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

८. वळी श्री तीर्थंकर देव घरवासे होवे, छकायने आरंभे वरते तीहांलगे साधु, श्रावक, वांदे नहीं अवरती माटे, तो भ्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

९. जुवो जेः भ्रव्यनिखेपा मध्ये त्रण ज्ञान खायक समकित, केटलाएक अतिशय छे. तेहने साधु, श्रावक, वांदे नहीं. तो थापनानिखेपा मध्ये ज्ञान, दरशन, चारीत्रनो एकही गुण नहीं, ते वंदनिक कीम होवे ? तथा भ्रव्यगुरु भ्रव्यनिखेपे वरते छे, ते पण सिद्धांत मध्ये अवंदानिक कह्या छे.

१ उपासगदसांग मध्ये सातमे अध्ययने सकदाल कुंभार समकित पाम्या पछी साधुना वेश सहीत गोसालाने पोताने घेर आव्यो देख्यो, तोपण वांद्यो नहीं. लींग साधुनो छे. पण गुण नहीं ते माटे.

२. तथा सीलंगराज रुषीना शीष्य चारसें नवाणुं गुरुनो आचार सीथल जाणीने मुकी गया, पण भ्रव्यगुरु जाणीने पासे न रह्या.

३. तथा जमालीना साधु जमालीने मीथ्यात्वी जाणी भ्रव्यगुरुने मुकी भावगुरु श्री महावीर पासे आव्या.

४. तथा गोसाले भगवंतने तेजुलेस्या मुकी, ते देखीने गोसालाना शीष्य भ्रव्यनिखेपानो गुरु गोसालो तेहने मुकी भगवंत पाशे आव्या, तो भ्रव्यनिखेपाना गुरु वंदनिक कीम होवे ?

५. तथा साधु चारीत्रीयो साधुने वेसे होय अने आरंभ, परीग्रह, विषय, कषाय, सेवे तेहने साधु, श्रावक, वांदे नहीं, तो भ्रव्यनिखेपो वंदनिक कीम होवे? एम अनेक सुत्र साख जाणवी. भावनिखेपा विना वंदनिद न होवे. जो भ्रव्यनीखेपो गुण विना वंदानिक नहीं तो थापना नीखेपो निर्गुण वंदनीक कीम होवे ?

१० जीम पाषाणना लाडु कर्या, थापना लाडुनी ठेरावी, पीण भुख न भांगे, स्वाद न आवेः इमज पथ्थरना घोडा, नर, नारी, वनस्पति, जेटली वस्तुनी थापना थापे तेणे ते वस्तुनी गरज न सरे. माताने अभावे मातानी थापना, भरथारने अभावे भरथारनी थापना कीधी; बालकने दुधनी गरज न सरे, स्रीने भोगनी गरज न सरे. एक पथ्थरना त्रण खंड (कटका) कीधा; एकनी गाय करी, एकनो वाघ कर्यो, एकनो देवता कर्यो; गाय दुध न देवे, वाघ मारे नहीं, देव तारे नहीं. तो थापना निखेपो कथन मात्रहीज छे, पण गुण रहीत, माटे गरज न सरे ते वीचारजो.

११. तथा हींस्याधरमी कहेछे जेः भ्रव्यनिखेपो अवंदानिक कहोछो, पण सुत्र मध्ये जुओ, गर्भमां रह्या तीर्थंकरने तथा तीर्थंकरना मृतक शरीरने इंद्रे वांद्या छे,

तो अवंदनिक कीम होवे ? तेनो उत्तरः—जंबुद्वीप पन्नंती मध्ये छपन दीसाकुमारी जन्म महोच्छव करवा आवी. तीहां जीत आचार कह्यो छे. ते पाठ लखेछे.

उपन्ने खलु भो जंबुद्दीवे २ भगवं तिथयरे तं जीयमेयं तीत पच्चुपन्न मणागयाणं अहोलोग वथवाणं अठन्हंदिशाकुमारिणं महातारीयाणं भगवउ तिथयरस्स जम्ममहिमा करित्तए.

अर्थ—उ. उपना. ख. निस्चे. भो. भोइति, आमंत्रणे. जं. जंबुद्वीपनामा द्वीपने विषे. भ. भगवंत. ति. तीर्थंकर. तं. ते भणी. जी. जीत आचार छे. ए. एह. अ. अतीतकाळ थया. प. हवणां वर्तमान काळे छे. अ. अनागत काळे थाशे. अ. अधालोकनी. व. वसनारी. अ. आठ दिसा कुमारीका. म. मोटी रुधीनी धणीआणी, भगवंत तीर्थंकरनो. ज. जन्म महोच्छव महीमा. क. करवानो आचार छे.

इम सर्वे इंद्रे पण वीचार्यो. वळी एहीज सुत्र मध्ये रुखभदेव स्वामीना निर्वाण समये इंद्रे इम वीचार्यो जे.

परिनिव्वुए खलु जंबुद्दीवे२ भरहेवासे उसमे अरहा कोसलीए तंजीयमेयं तीयच्चुप्पन्न मणागयाणं सक्कणंदेविंदाणं देवरायातीणं तिथयराणं परिनिवाणं महिमं करित्तए.

अर्थ.—प. परिनीवृत मोक्ष पोहोता. ख. निस्चे. जं. जंबुद्वीपनामा द्वीपने विखे. भ. भरतखेत्रे. उ. रुखभदेव स्वामी. अ. अरीहंत. को. कोसलीक. तं. ते माटे जीत आचार छे. अ. एह अतीत. प. वर्तमान. अ. अनागत काळना. स. सौधर्मेंद्र. दे. देवतानो इंद्र. दे. देवतानो राजा हुइ. ती. तीर्थंकरनो. प. परी निर्वाण. म. महीमा करे.

इम सर्वे इंद्रे विचार्यो, तो ए पण व्यवहार मध्ये गण्यो. पण द्रव्यनिखेपानी भक्ति निर्जरा हेतु न गणी. जो निर्जरा हेतु होवे तो, जीतव्यवहार मध्ये कीम कहे ? जीम अनार्य पुरुष मंश भक्षण धरम जाणीने मुके तेहने धरम होवे. अने वाणीया पोताना कुळआचारना लीधा मांश भक्षण नथी करता. पण ते कांइ धरमखाते नथी. कुळआचारनी रीते मुक्यो छे. पण व्रतनो लाभ नहीं. तथा मनुष्य कुसीलनो त्याग करे. धरम जाणीने तो तेहने धरम थाय. अन मुक्ये, अपवास

पचख्ये, लाभ थाय, पण अणुत्तरवासी देवता तेत्रीश हजार वरशे आहार करेछे. पण ते माटे नोकारसीनो पण लाभ नथी. एहनो एहवोज जीतआचार छे. ते माटे जीतव्यवहार धरम मध्ये न गणाय. तथा राजा, श्रावक, समदृष्टीए श्री भगवंतने तथा साधुने वंदणा कीधी, तीहां जीतव्यवहार नथी कह्यो. तथा एहीज भगवंतने भावे वांदवा आव्या. तीहां जीतव्यवहार नथी कह्यो. अने देवता नमोथुंणं कहेछे ते पण जीतव्यवहार मध्येज छे. जे देवलोकनी प्रतिमा आगळे तथा गर्भमां रह्या तीर्थंकरने नमोथुंणं कहेछे, पण साक्षात भगवंतने वांदवा आव्या, तीहां भगवंत हजुर कोइए नमोथुंणं कह्ये थके सुं पाप लागत ? पण कोइ देवताने इ चाल जीत-व्यवहार एवोज जणाय छे. तथा तीर्थंकर मुक्ति गया पछे इंद्र त्रण थुभ करावे. ते पण इंद्रनो जीतव्यवहार छे. जो थुभ कराव्ये धर्म होवे तो कोइ राजाए तथा श्रावके कीम न कराव्यां ? पीण इम जाणजो जे देवतानी करणी जीतव्यवहार मध्ये छे. पण मनुष्य श्रावके क्यांइ ध्रव्यनिखेपो वांद्यो नथी कह्यो. ते वीचारी जोजो.

१२. वळी हींस्याधरमी कहेछे जे, थापना निखेपा मध्ये तो श्री वित्तरागनो गुण नथी. पण आपणे ध्यानतुं कारण छे. ते माटे वांदीए छीए. तेनो उतर. जो प्रतिमा देखेज शुभ ध्यान आवे तो मल्लीनाथ स्वामीनो रुप देखी छराजा कामव्याप्त केम थया ? उपसमभाव तो मल्लीनाथ स्वामीना उपदेश थकी उपनो छे. जो प्रतिमा देखे तो सुभध्यान आवे, तो एटला अनार्थ मनुष्य प्रतिमाने खंडीत करेछे, तेहने सुभध्यान कां न उपजे ? माटे दयाथी द्वेश मुकी विचार करो.

---

१३. नमुनो देखीने नाम सांभले कहेछे. ते उत्तर.

वळी हींस्याधरमी कहेछे जे, नमुनो देखीने भगवंतनो नाम सांभळेछे, ते माटे थापना वांदीए छीए. तेनो उत्तरः सुत्र उत्राध्ययन, अढारमे छेतालीशमी गाथामां कह्यो छे जेः—

करकंडु कालिंगेसु ॥ पंचालेसुय दुम्महे नमीराया विदिहेसुं ॥ गंधारेसुय नग्गई ४६

अर्थ—क. करकंडुक राजा. क. कलींग देशने वीखे. पं. पंचाळ देशने वीखे. दु. दुम्मह राजा बुझ्यो. न. नमीराजा विदेह देशने विषे बुझ्यो, गंधार देशने वीखे. न. निगइ राजा बुझ्यो. ४६.

१. करकंडुराजाए कलींग देशनो राज मुक्यो. वृखभ देखी बुझ्यो.
२. दुमुख राजाए पंचाल देशनो राज मुक्यो. थंभो देखीने बुझ्यो.
३. नेमी राजाए विदेह देशनो राज मुक्यो. चुडी देखीने बुझ्यो.
४. निगइ राजा गंधार देशनो राज मुक्यो. आंबानो वृक्ष देखी बुझ्यो.
५. वळी एकवीसमे अध्ययने समुद्रपाल चोर देखीने बुझ्यो.

ए पांच जण पांच वस्तु देखीने बुझ्या, पण १ वृखभ, २ थंभ, ३ चुडी, ४ आंबो, ५ चोर, ए पांचने पोताना जातीसमरण उपजवाना तथा संजम लेवाना उपगारी कारण जाणीने कोइए १ वृखभ २ थंभ, ३ चुडी, ४ आंबो, ५ चोर ए पांचने वांदया नहीं, तो कीम बीजा वांदशे ? वैराग्य उपजवानो निश्चे कारण तो पोतानो खयोपसमछे, अने बाह्य कारण तो अनेकछे. भरथेश्वर आरीसा भवनमां केवळज्ञान पाम्या, ते माटे कांइ आरीसा भवनने वांदयो, पुज्यो, नहीं, ते माटे बाह्य कारण वंदनीक नहीं, जीम छ राजा मोहनघर मध्ये मल्लीनाथनी प्रतिमा, देखी, तथा मल्लीनाथने देख्या, पोताना संजमना, जातीसमरणना, कारणीक जाणीने प्रतिनाथने तथा मल्लीनाथने वांद्या कह्या नथी. ए सुत्रसाख जाणवी. तथा प्रतिमाने ध्याननें कारण जाणीने जीनमारगी वांदे, तो राजग्रही, चंपा, आलंबीया, तुंगीया, हथीणापुर, द्वारकां वनीता, इत्यादीक नगरीना कोट, खाइ, चौहटा राजभवन, वैस्याना वर्ग, लइ वखाण्या वर्णव्या, तो ते नगरी मध्ये घणा श्रावकना वर्ग, रहीता हुता, राजा पण भगवंतना परम भक्तिवंत हुता. तो ते नगरीमां देहरां कीम न वरणव्यां ? जक्षना देहरां ठाम ठाम कह्यां ? तो जीननां देहरां कीम न कह्यां ? तथा भगवंतने वीरहे आनंद, संख, पोखळी, प्रमुखश्रावके चीत्रामनी प्रतिमा पण पुजी नथी कही. आज प्रतिमा वांदवा माटे संघ काढोछो. तो साक्षात भगवंत वित्तरागने वांदवा माटे कोइए श्रावके संघ कीम न काढया ? तेहने धननी सी खोट हती ? तथा सुबाहु कुमार विपाक सुत्रमां तथा उदाइ राजा भगवतीमां एम भावना भावी के, जो भगवंत इहां आवे तो हुं वांदुं, पण इम केणेइ चींतव्यो नहीं जे, संघ काढीने वांदवा जाइए तो प्रतिमा वांदवी कीहां रही ?

केटळाएक दयाना द्वेशी कहेछे जे, प्रतिमा भगवंतनो नमुनोछे. ते वात कीम मीळे ? उववाइ सुत्र मध्ये कह्योछे जे, थीवर भगवंत केहवाछे.

अजिणा जिण संकासा जिणाइव अवित्तहं वागरेमाणाः

अर्थ—अ. परम. अ. राग द्वेश जीत्या नथी, पण जी. जीत्या एहवा जिन वित्तराग. स. सरीखाछे. जी. जीन वित्तरागनीपरे. अ. साचाछे. वा. उत्तर पडुत्तर कहेतां थकां.

इम साधुने बीरद कह्यो, पीण प्रतिमाने आजिणा जिण सकासा कहेता परम रागद्वेश जीत्या नथी, पण जीत्या एहवा जीन वित्तराग सरखाछे, एहवो नथी कह्यो.

भगवंते देवानंदा ब्राह्मणीने कह्यो जे, मग अम्मगा पीण कीहांइ इम नथी कह्यो जे, मम पडीमा तो नमुनो केहेनो हुस्ये ?

वळी नमुनो तो केहेनो नामछे जे, घणी वस्तु पडी होवे, ते मांहीथी थोडीसी देखाडे ते नमुनो कहीए, पण वस्तु फेर होय तो नमुनो नहीं, जेम सोनानो नमुनो ते सोनो, पण पीतळ, तो नहीं. आंबानो नमुनो ते आंबो, पण आकडो तो नहीं. हाथीनो, नमुनो ते हाथी पण गर्दभ (गधेडो) तो नहीं. अस्त्रीनो नमुनो ते अस्त्री पण पुतळी तो नहीं. रतननो नमुनो ते रतन, पण कांकरो तो नहीं. एम घणां द्रष्टांतछे. तीम ज्ञान, दर्शन, चारीत्र गुण सहीत साक्षात वित्तरागदेव तेहनो नमुनो ते साधु, ज्ञान, दर्शन, चारीत्रवंत ते, पण ज्ञानादीक गुणहीण प्रतिमा ते नमुनो नहीं. साधुनो नमुनो ते साधुज, पण गोसळा, जमालीमती, पासथा, वेषधारी निःनव ते नमुनो नहीं, गुणरहीत माटे. अने वेष सरखा तेथी समद्रष्टी, श्रावक, तेहने वंदणा करे नहीं. तो श्रीवित्तरागना गुण वीन्या वितरागनी प्रतिमा कीम वंदनीक थाय ?

१४. नमो बंभीए लीवीए कहेछे. तेनो उत्तर.

हींस्याधरमी कहेछे जे, भगवतीने धुरे नमो बंभीए लीवीए एहवो पाठ छे. तेहनो अर्थ नमस्कार होवे. ते उत्तर. ब्राह्मीलीपीकने तीहां इम कहेछे जे, अढार लीपी अक्षरनी स्थापना ते रुखभदेवस्वामीए पोतानी पुत्री ब्राह्मीमते शीखावे ते रुखभदेवनेज नमस्कार थयो. एटले लीपीकर्मनो सीखावणहार तेहीज लीपी कहीए. जीम अनुजोगद्वारे पाथानो जाण पुरुष तेहीज पाथो, तीम लीपीनो जाणहार, सीखावणहार, तेहीज लीपीक तेहने नमस्कार थयो. एणे भाव नय प्रमाणे रुखभदेवनेज नमस्कार शुधर्म स्वामीए कीधो. मुळ अर्थ तो एहछे. अने केटलाएक इम कहे छे जे, लीपी विद्यान अढार भेदे स्थापना अक्षर तेहने नमस्कार कीधो. थापना नीखेपो ठराववा माटे इम अर्थ कहेछे. पण ए वात सुत्र वीरुद्धछे. ते कीम जे, जीनागम सीद्धांतवाणी सुधर्म स्वामी छतां सीद्धांत अक्षररुप थापनाइ कीहां हता ?

वीर नीर्वाण पछे नवसेंह ऐंसी वरसे पुस्तकारुढ ज्ञान थयोछे, तो अक्षर स्थापना शुधर्म स्वामीए कीहांथी वांदया ? वली भाखारुपे, लीखत थापनारुपे, अक्षर आकार वंदनीक मानो, तो अढार लीपीमां जेटलां पुस्तक, लखाणा ते सर्व अक्षर संज्ञा तमारे वंदनीक थाशे. कुराण, कीताब, पुराण, वेद, जोतीष, वैदक, विकथा वार्ता, मंत्र, जंत्र, तंत्र, लोंकसामुद्रीक, ओगणत्रीश पापसुत्र, ए अक्षर, स्थापना माटे सर्व वंदनीक थास्ये, पण तेहने तो श्रीवित्तरागे ओगणत्रीस पापसुत्र कहीया, पण तुमारे तो वंदनीक थासे. तेहने वांदता कीम नथी ? पापसुत्र इम कहेछो ते वीचारी जोजो. वंदनीक तो एक भावसुत जीन वचन द्वादसांगी सीद्धांतछे. सेखमतना ग्रंथ अवंदनीकछे.

---

१५. जंघाचारण विद्याचारणनो उत्तर.

हींस्याधरमी कहेछे जे, भगवती सतक वीसमे उदेसे नवमे जंघाचारण, विद्याचारण, साधुए प्रतिमा वांदीछे एम कहेछे. ते पण एकांत जुठुं बोलेछे. सीद्धांत मध्ये कह्योछे जे, जंघाचारण, विद्याचारण, साधु लवधी फोरवीने प्रथम मानुखोत्तर पर्वते जाय. पछे नंदीशर आठमे द्विपे जाय. पछे रुचकद्विप पंदरमे जाय, ए वात साचीछे, पण ठाणांग सुत्रे चोथे ठाणे मानुखोत्तर पर्वते चार दीशे चार कुट कह्याछे. ते भवनपातिना इंद्रना आवास कह्याछे, पण प्रतिमाने काजे सीद्धायतन कुट मुलगोज नथी कह्यो, तो प्रतिमा मानुखोत्तर पर्वते कीयांथी ? अने वांदसे कीयांथी ? ते पाठ ठाणांग सुत्रना चोथा ठाणाना बीजा उदेसा थकी लख्योछे.

माणुसुत्तरसणं पव्वयस्स चउदिसिं चत्तारिकुडा पन्नत्ता तं- जहा रयणे १ रयणुच्चय २ सव्वरयणे ३ रयणसंचए ४.

अर्थ—मा. मानुष्योत्तर पर्वतने. च. चार दीसे. च. चार. कु. कुट सीखर. प. कह्या. तं. ते कहेछे. र. रतन कुट १. र. रतननो चय कुट २. स. सर्व रतन कुट ३. र. रतन संचय ४.

१. एहना अर्थ मध्ये पण इम कह्यो जे, १ अग्नीखुणने वीखे रतन कुट गुरुलवेणु देवनो आवास भुत. २. अने नैरुत्यखुणाने वीखे रतननोचयकुट. (ग्रंथातरे एहनो नाम वेलंवसुखर नाम बीजो) तीहां वायुकुमारना वासछे. ३ तथा इसानखुणाने वीखे. सर्व रतनकुट ते वेणुदाली नामे सुवर्णकुमारना इंद्रनुं आवास भुत-

कुट छे. तथा वाव्यखुणने वीखे रतनसंचय कुट एहनो वीजो नाम प्रभंजनकुट; वायुकुमारना इंद्रनो आवास भुत छे. ए भाव द्विपसागर पन्नति मध्ये संग्रहणी गाथानी अनुसारे कह्यो छे इहां चार कुट चार दीसी माटे कह्या छे, पण कोइए ग्रंथे पुर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षीणे प्रत्येक प्रत्येक त्रीण त्रीण कुट कह्या छे ते एक एक देवता अधीष्टीत छे.

पुव्वेण तिन्नि कुडा ॥ दाहिणउ तिन्नि२ अवरेणं ॥ उतरउं तिन्नि भवे ॥ चउदिशि माणुस्स नग्गस्स. ॥ १ ॥

सुत्रपाठे चार कुट कह्या, तीहां पण सीद्धायतन कुट न कह्यो. वली द्विपसागर पन्नति मध्ये संग्रहणानुं.

दक्षीण पुव्वेणं रयणकुडं गुरुलस्सवेणु देवस्स सव्व रयणंच पूव तरेणं तेवेणुदालीस्स रयणस्स अवर पासे तिन्नि विसमछिउणं कुडाइं वेलंब सुहयं सया होई सव्व रयणस्स अवरेणं तिन्नि समय छिउण कुडाइ कुडं पभंजणस्सउ पभंजण आढियं होइ वृत्तौइहवंतु स्छानकानुरोधेन चतारियुक्ता तथा अन्यान्यथिद्वादससंति पुर्व दाक्षिणा परोतरासुत्रिणी द्वादशांपिचैकैकदेवाद्धिष्टतानिति इतिस्छानगंवृत्तौ.

मुलसुत्रे चार कुट कह्या, वृति मध्ये बार कुट कह्या. ते मध्ये चार दीसीना चार कुट मध्ये भवनपतिनी दाढा बार कुट वीदीशना कह्या, तीहां पण एक एक देवतानो वास कह्यो, पण सीद्धायतन मानुखोत्तर पर्वते न कह्यो, तो सीद्धायतन कुटमध्ये न होवे एणे सुत्रे मानुखोत्तर पर्वते प्रतिमा मुलथीज नथी तो प्रतिमा वांदी कीहांथकी ?

२. वली रुचक पर्वत पण चालीश कुट दीशाकुमारीना कह्या छे. सीद्धांत जंबुद्विप पन्नंती मांहे पीण सीद्धायतन कुट रुचकद्विपे सीद्धांत मांहे कह्यो नथी, तो रुचकद्विपे प्रतिमा कीहांथी वांदी ?

३ वली नंदीशर द्विपे प्रतिमा कही छे, ते पण नंदीशर द्विपने समभुतळाने वीषे तो नथी कही. अंजनगीरी पर्वत चोरासी हजार जोजन उंचो छे. ते उपर चार सीद्धायतन छे तीहां तो जंघाचारण, विद्याचारण, गया नथी कह्या.

ने तुमे एम जाणोछो जे, प्रतिमा वांदीछे तहीं. चइयाइ वंदीतए ए पाठ उपर कह्योछे, पण जो प्रतिमा वांदी पुजी होत तो प्रत्यक्षपणे वंदइ नमंसइ पाठ जोइ ए वंदे शद्धे तो गुणग्राम करवा अने नमंसइ शब्दे नमस्कार करवो ते तो नम्मंसइ शब्द तो छेज नहीं. वळी वंदमाण जाइजा दसवीकालीक पांचमे अध्ययने बीजे उदेसे कह्योछे जे, गुणग्राम करतोथको साधु गृहस्थ पासे जाचे नहीं. ए साखे वंदइ शब्दे गुणग्राम करवानो अर्थछे. जो प्रतिमाने प्रत्यक्ष देखी होवे तो नमंसइ शब्द कीम न कह्यो ? तथा चैइत्य वंदणा नमोथुणं कीम न कह्युं ? अने तमे इम कहोछो जे, चेइ शब्दे प्रतिमा नथी तो चेइ शब्दे शुं वांद्यो ? ते उत्तर. साधुनी ए रीतीछे जे,आहार, निहार, विहार कार्य करी आवे ठेकाणे आवी बेसे तेहने समोसरण समोसर्या कहीए. अने इरीयावही पडीकमे ते इरीयावही पडीकमतां लोगस्स कहे, ते लोगस्स मध्ये श्रीमावीत्तरागना गुणछेहीज तेहींज चैत्य शब्दे अरीहंतने वांदे ए परमार्थ. घणा जेवंता जीन केवली वांद्या ते माटे बहु वचने चेइयाइ बहु वचने वांद्या कहीए, इहां लोगस्स कहीतां प्रतिमा विना घणा अरीहंतरुप चैत्यवंदणा ए मध्ये स्यो संदेह रह्यो ? वळी मानुखोत्तर पर्वते सीद्धायतन कुट नथी, प्रतिमा पण नथी, तीहां पण चेइया वंदइ ए पाठ छे. तीहां चेइ शब्दे शुं वांद्यो ? तो इम जाणजो, जे प्रतिमा वीन्या चैत्य श्री वित्तराग केवलीछे तेहज वांद्याछे. तीम नंदीशरद्विपे, अने रुचक-द्विपे पण अरीहंतनेज वांद्याछे मानुखोत्तर, नंदीशर, रुचकाद्विपे, वंदणाना शब्दमां कांइ फेर नथी. जीहां प्रतिमाछे तीहां पण चेइया वंदइ ए पाठ छे. अने प्रतिमा ज्यां नथी त्यां पण चेइया वंदइ ए पाठछे. कांइ फेर नथी, तो इम जाणजो जे, त्रणे ठामे चैत्य वंद्या ए ते चैत्य वांद्याछे. श्री वित्तराग तो जीहां रहीने वांदीए. तीहां रह्या वंदाए तो जाणजो सर्वत्र वित्तराग चैत्यहीज वांद्याछे. जो प्रतिमा माटे चैत्य कहेसो तो नंदीशर द्विपे. आ पाठ मीलसे जे तीहां प्रतिमाछे ते माटे. पण मानुखोत्तर पर्वते अत्रे मुळथीज प्रतिमा ने शीद्धायतन नथी तीहां. चेइयाइ वंदइ पाठ कीम मलसे ? अने चैत्य शब्दे वित्तराग वांद्या ए अर्थ तो सर्वे ठामे मळस्ये. तो इम जणजो जे, चैत्य शब्दे श्रीवित्तरागहीज वांद्याछे. जीहां साधु आवे, तीहां समोसर्या कहीएछीए अने चोवीसं स्तवन करे ते चैत्य वांद्या कहीए. वळी ए जंघाचारण, विद्याचारण, प्रतिमा वांदवा, जात्रा करवा गया, एम कहे छे ते एकांत जुठुं कहेछे. ते केम जे, जो जात्रा करवा गया होवे तो जंघाचारण रुचकाद्विपथकी पाछा वल्या, तीवारे नंदीशरद्विपे आव्या, तीहांथी पोताने ठाम आव्या कह्या, पण मानुखो-

१ वांदु नहीं. २. बोलाव्या पेहेलां बोलुं नहीं. ३. अणसादीक दान आपुं नहीं, कोइ देवाभि उगेणवा(देवताने परवस पडये)इत्यादीक कारणे वांदवा पडे, बोलाववा पडे, अणसादीक देवो पडे, तो आगार पण नीर्जराहेतु जाणुं नहीं, तेणे करी सम्यक्त सुद्ध, एहवो अभीग्रह लीधो हवे मुझने कल्पेसुं.

कप्पई मे समणा निग्गंथाफासुयं एसणिजेणं असणं पाणं खाइमं साइमं वथ पडिग्गहं कंबलपायपुछणेणं पाडीहारियपीढ फलग सिजा संथारएण उसहभेसजेणं पाडिलाभेमाणे विहरीत्तण.

अर्थः—क. कल्पे, मे. मुझने. स. श्रमण. नि. निग्रंथ. फा. फासुक. ए. एखणीक लेवा जोग्य. अ. अन. पा. पाणी. खा. सुखडी मेवादीक. सा. मुखवास. व. वस्त्र. प. पात्रा. कं. कंबल. पा. आगले मांडवानुं. तथा रजोहरणनो पुंछणो. पी. बाजोठ. फ. पाटीयुं. सी. स्थानक. सं. दर्भादीक संथारो. उ. ओखध कीरीयातादीक. भे. वर्णादीक गोली. प. तेहने विहरावबुं नित्यमेव एहवा मनना अभीग्रह.

कलप्यामध्ये तो देव अरीहंत ते तो श्रीमाहावीर, अने गुरु साधु, ए बेहुने वांदवा बोलाववा,ने प्रतिलाभवा. कल्पे ते कह्या.हवे स्वयमत ग्रहीत प्रतिमा वांदवी कल्पे तो इहां प्रतिमा कहेत. पण ते तो सुत्र मध्ये छेज नहीं. राख्या बोलमध्ये तो प्रतिमा न कही, अने वोसव्यामध्ये पण प्रतिमा नथी कही, जीनमतना देव, ने गुरु, वांदवा राख्या अने अन्यमतना देव, गुरु, वोसराव्या. जीनमतना वीटलसाधु ते पण वोसराव्या ए अर्थ छे.

हवे हींस्याधरमी कहेछे जे, वोसराव्या मध्ये अन्यतिर्थिए ग्रह्या चैत्य वांदु नहीं, प्रतिमा आश्री कह्योछे एम कहेछे, ए वात सुत्र वीरुद्ध कहेछे, ते केम जे, जीननी प्रतिमा बेठी पदमासणे, ए वली आयुद्ध, अस्वारी, अस्त्री रहीतछे. अने अन्यमतीनी प्रतिमा संजोगी, आयुद्ध, अस्त्री, अस्वारी, सहीतछे. ते रीत आज मुर्खलोकछे, ते लोग जाणेछे जुदी जुदी ओलखेछे. तो अन्यतिर्थिनी प्रतिमाने ठामे जीनमतनी प्रतिमाने कीम मांडशे ? तथा ब्रह्मा, विस्तु, महेश, गणेश, माता, हनुमान, खेत्रपाल, इत्यादीक शुं जाणशे जीनप्रतिमा आवी जुदी पडे. ते तो वीचारता नथी, ते माटे प्रतिमाने अर्थ न मीले. वली जो प्रतिमानो अर्थ करशो तो तीहां इम कह्यो छे जे,

चारना चैत्य कीम न वांद्या ? तथा जंघा चारन आइने पाछा वल्या, तेणे नंदनवने आव्या तीहांथी पोताने ठामे आव्या, तो सोमनसवनने अने भद्रसालवननी प्रतिमा वांदवा कीम न गया ? पीण इमज जाणजो जे, प्रतिमा वांदवा नथी गीया, पण चारीत्रमोहेनीने उदे असंवुड अणगार थइ लबधी फोरवी सकलाइपणे ए प्रमादनो थानक सेव्यो. वळी पोताने ठामे आव्या तीहां पण कह्यो जे, इहां चेइयाइं वंदीते जो मुनी गाम, नगर, वन, पर्वतने वीसे जीहां हता तीहां पाछा आव्या पोताने ठामे तीहां कीया चैत्य हता ते वांद्या ? पीण एम जाणजो जे पोताने ठामे आवी तीहां इर्यापंथीक पडीकमी ते मध्ये चोवीसंस्तव कह्या जे तेहीज श्रीवित्तरागना चैत्य वांद्या वित्तराग चैत्य तो जे ठामथकी रहीने वांदीए तीहांथी वंदाय, अने प्रतिमा ते मुनीराजना स्थानक मध्ये कीहांथी ? ते वीचारी जोजो. वळी एहीज उपदेशने छेडे कह्यो जे.

तस्स ठाणास्स अणलोइय अप्पडीकंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा.

ए स्थानक लबधी फोरवीने गया ते कार्य आलोया वीना नींद्या वीन्या काल करे तो वीराधक कह्या, पण श्री जीनप्रतिमा जीनशरीखी तेहने वांदवा जातां काल करे तो वीराधक कीम होवे ? अने मोहनीने उदे असंवडपणाना कार्यकरी द्विप समुद्र, जोवा गीया, चक्षुइंद्रीना वीखयना प्रेर्याथका. तेणे कारणे वीराधक सुखे होवे.

वळी हींस्याधरमी कहे, ए प्रायश्चितनो ठाम कह्यो, ते प्रतिमा वांदवा गया माटे नथी कह्यो. जातां आवतां अजतना थइ होवे ते माटे, आलोयणा कहेछे. उत्तरः तुमे कहोछो जे, संघादीकने कारणे चक्रवर्तिना सैन्यचुरे, तोपण माहा लाभ छे. धरम कारज करतां हींस्या छे ते पाप नहीं लागे तो ए साधु गगनचारी छकाय मध्ये केही कायनी हींस्या लागी ? अने माहाफळ उपराज्यो ते मध्ये हींस्यानो, प्रमादनो, दुखण स्यानो गणाय ? ए वार्ता तुमे असत्य कही. जो प्रतिमा वांदवा गया होवे तमारे मते विराद्धक कह्या न जोइए. वळी भगवत मध्ये कह्युं छे जे; आलोयण लेवा मुनी चाल्यो, ते वचमां काल करे तो आलोयणना भावथकी आराधीकहीज कहीए. तीम जीनप्रतिमा वांदवाने भावे चाल्यो ते विराधक आराधीकज कहीए. प्रमाद, अज्यणानो फळ इहां स्या माटे गणाय ?

वळी हींस्याधरमी कहे; प्रतिमाने तो चैत्य कहीए, पण अरीहंतने चैत्य कीहां छे ? तेनो उत्तर. भगवती, उववाइ, रायपसेणी, ठाणांग, प्रमुख घणे ठामे । चैत्य कह्या छे ते पाठ लखे छे.

तिखुत्तो आयाहीणं पयाहीणं वंदामी नमंसामी सक्कारेमि ाणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामी.

अर्थ—ती. त्रणवार. आ. आदान एटले बे हाथ जोडीने जमणा कानथी डावा सुधी. प. प्रदक्षीणा करीने. वं. वांदुछुं एटले पगे लागुंछुं. न. नमस्कार करुंछुं मस्त- ाडीने. स. सत्कार दउंछुं. स. सन्मान दउंछुं. क. कल्याणकारी. मं. मंगलकारी. र्मदेव समान. चे. ज्ञानवंतनी. प. सेवा करुंछुं मन, वचन, कायाए करी.

ए पाठ मध्ये कल्याणं कहेतां कल्याणकारी प्रत्ये मंगलं कहेतां मंगळीक चत्तारी मंगलं, सुत्रमध्ये साहु मंगलं कह्या छेज, देवयं कहेतां धर्मदेव प्रत्ये, कहेतां ज्ञानवंत प्रत्ये ए द्वीतीव्या विभक्तिना वचन जाणवा.

वळी समवायंग सुत्र मध्ये, चोवीस जीनने केवळज्ञान उपनो, जे वृक्ष हेठे ते पण चैत्यवृक्ष कह्या. ज्ञान चैत्यनी नेश्राये. ते हवे समवायंग सुत्रनो पाठ चो- े समवायेथी लखे छे.—

एणस्सिणं चउविसाए तिथकराणं चोवीसं चेइय रुखा प- ा तंजहा निग्गोह तिवन्नेय साले पीयए पीयं गुछतो हंसरी- नागरुखे सालेपीलख रुखेय १ तिंदुयं पाडलं जंबु आसीथे ु तहेव दहिवन्ने उदीरुखे तिलएय अंबगडरुखे असोगेय २ ग बहुलेय तहा वडसिरुखे तहेव धवरुखे सालेय वद्धमाणे यरुखाजिणवराणं ३

अर्थः—चोवीस चैत्यवृक्ष हुवा जे वृक्ष हेठे केवळज्ञान उपनो ते वृक्षने चैत्य- कहीए. इत्यर्थः ते केहा श्री आदीनाथने न्यग्रोध ते वटवृक्ष हेठे केवळ ज्ञान ा. इमज अनुक्रमे चोवीशे जाणवा. निग्रोध १. सत्तवन २. मीया ३. पीयंगु छत्र ५. सरसडो ६. नाग ७. मालती ८. पीलु ९. टींवरु १०. पाडल ११. १२. पीपलो. १३. नीश्चे तेमज, दधीवर्ण १४. नंदी १५. तीलक १६. ो १७. अशोक १८. चांपो १९. वकुल. २०. तीमज वेतस २१. तीमज

धावणी २२. साल २३. वर्धमान २४. ए चैत्यवृक्ष चोवीस जीनवरना जाणवा. ए हेठे केवळज्ञान उपना माटे.

ए ज्ञाननी नेश्राये वृक्षने चैत्य कह्या. तो ज्ञानवंत अरीहंतने तथा साधुने चैत्य कहीए ते मध्ये स्यो संदेह ? ते माटे जंघाचारणे पण चैत्य शब्दे वित्तराग, तीर्थंकर, अरीहंत, केवळज्ञानी, प्रत्ये वांद्या छे. प्रतिमा वांदी कहेस्यो तो मांनुखोत्तर पर्वते प्रतिमा नथी त्यां शुं कहेशो ? अने पाठ तो त्रणे ठामे सरखा छे, अधिको ओछो नथी. जीहां प्रतिमा छे ने जीहां प्रतिमा नथी तीहां पाठ फेर नथी, ते माटे प्रतिमा वांदी छे सुत्र विरुद्ध कहे छे.

---

१६. आणंद श्रावकना आलावानो अर्थ.

हींस्याधरमी कहे छे जे, आणंद श्रावके प्रतिमा पुजी, वांदी छे, ते एकांत जुट्ठुं कहे छे उपासगदसांगे अध्ययन पेहेले पाठछे ते कहे छे.

नो खलु मे भंते कप्पई अजपभिईय अणउछियाणियावा अणउछियादेवयाणवा अणउछियापरीगहियाणिवा अरीहंतचेइयाइं वंदीतएवा नमंसित्तएवा पुव्विआणालवंते आलवित्तएवा संलवित्तएवा तेसिं असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउवा अणुपदाउवा.

अर्थः—नो. नहीं. ख. निस्चे. मे. मुझने. भं. भगवंत. नो. क. न कल्पे. अ. आज पछी. अ. अन्यतिर्थि. अ. अन्यातिर्थिना देव. अ. अन्यातिर्थिना ग्रह्या आचर्या. अ. अरीहंतना चैत्यभृष्टाचारी साधु. वं. वांदवा. न. नमस्कार करवो. आ. बोलाववो. सा. वारंवार बोलाववो. ते. तेहने. अ. असन. पा. पाणी. खा. खादीम सुखडी. सा. सादीम मुखवास. दा. गुरुहेते धर्मनी बुद्धिए देवा. अ. आज्ञाकरी देवरावत्रो.

इम भगवंतना मुख आगले आणंद श्रावके अभीग्रह कीधो, जे आज पछी मुजने न कल्पे. १ अन्यतीर्थि साक्यादीकने. २. अन्यतिर्थिना देव अनेक प्रकारना इश्वरादीकने. ३ अन्यतिर्थिये ग्रह्या अरीहंतना चैत्य. अन्यतिर्थिथकी मीलता श्रधाये करी पासथा, वेषधारी, गोसलामती, जमालीमती, जेहनो लींग तो साधुनोछे, पण जीनमारगथकी. श्रधा भृष्ट जीनआज्ञा बाहीर एहवा साधुरुप चैत्य ए त्रण जणने

१ वांदु नहीं. २. बोलाव्या पेहेलां बोलुं नहीं. ३. अणसादीक दान आपुं नहीं, कोइ देवाभि उगेणवा(देवताने परवस पडये)इत्यादीक कारणे वांदवा पडे, बोलाववा पडे, अणसादीक देवो पडे, तो आगार पण नीर्जराहेतु जाणुं नहीं, तेणे करी सम्यक्त सुद्ध, एहवो अभीग्रह लीधो हवे मुझने कल्पेसुं.

कप्पई मे समणा निग्गंथाफासुयं एसणिजेणं असणं पाणं खाइमं साइमं वथ पडिग्गहं कंवलपायपुछणेणं पाडीहारियपीढ फलग सिजा संथारएण उसहभेसजेणं पाडिलाभेमाणे विहरीत्तण.

अर्थः—क. कल्पे, मे. मुझने. स. श्रमण. नि. निग्रंथ. फा. फासुक. ए. एखणीक लेवा जोग्य. अ. अन. पा. पाणी. खा. सुखडी मेवादीक. सा. मुखवास. व. वस्त्र. प. पात्रा. कं. कंवल. पा. आगले मांडवानुं. तथा रजोहरणनो पुंछणो. पी. बाजोठ. फ. पाटीयुं. सी. स्थानक. सं. दर्भादीक संथारो. उ. ओखध कीरीयातादीक. भे. वर्णादीक गोली. प. तेहने विहरावतुं नित्यमेव एहवा मनना अभीग्रह.

कल्प्यामध्ये तो देव अरीहंत ते तो श्रीमाहावीर, अने गुरु साधु, ए बेहुने वांदवा बोलाववा,ने प्रतिलाभवा. कळपे ते कह्या.हवे स्वयमत ग्रहीत प्रतिमा वांदवी कल्पे तो इहां प्रतिमा कहेत. पण ते तो सुत्र मध्ये छेज नहीं. राख्या बोलमध्ये तो प्रतिमा न कही, अने वोसव्यामध्ये पण प्रतिमा नथी कही, जीनमतना देव, ने गुरु, वांदवा राख्या अने अन्यमतना देव, गुरु, वोसराव्या. जीनमतना वीटलसाधु ते पण वोसराव्या ए अर्थ छे.

हवे हींस्याधरमी कहेछे जे, वोसराव्या मध्ये अन्यतिर्थिए ग्रह्या चैत्य वांदु नहीं, ते प्रतिमा आश्री कह्योछे एम कहेछे, ए वात सुत्र वीरुद्ध कहेछे, ते केम जे, जीननी प्रतिमा वेठी पद्मासणे, ए वळी आयुद्ध, अस्वारी, अस्त्री रहीतछे. अने अन्यमतीनी प्रतिमा संजोगी, आयुद्ध, अस्त्री, अस्वारी, सहीतछे. ते रीत आज मुर्खलोकछे, ते पग जाणेछे जुदी जुदी ओळखेछे. तो अन्यतिर्थिनी प्रतिमाने ठामे जीनमतनी प्रतिमाने कीम मांडशे ? तथा ब्रह्मा, विस्नु, महेश, गणेश, माता, हनुमान, खेत्रपाळ, इत्यादीक शुं जाणशे जीनप्रतिमा आवी जुदी पडे. ते तो वीचारता नथी, ते माटे प्रतिमाने अर्थ न मीले. वळी जो प्रतिमानो अर्थ करशो तो तीहां इम कह्यो छे जे,

१ अन्यतिर्थिने. २ अन्यातिर्थिना देवने. ३ अन्यातिर्थिए ग्रह्या चैत्यने १ वांदु नहीं २ बोलवुं नहीं ३ दान दीयुं नहीं ए त्रण बोल नीखेध्या, तो जुवो चैत्य शब्दे पासथा, वेषधारी, नीःनव, उपर तो ए त्रण बोल मीले, जे बोलाव्या बोले, दान दीधुं ल्ये, पण चैत्य शब्दे प्रतिमा होवे तो, बोलावी केम बोले, तथा दान कीम ले ते कहो ? पण हींस्याधरमीना मनमां ए वात जे अन्यमत ग्रहीत प्रतिमा नीखेधीए तो पोतानी ग्रही प्रतिमा मानवा ठहीरे. पण ए वात सुत्र न्याये ठहरी नहीं ते वीचारी जोजो.

वली हींस्याधरमी कहेशे जे, जीनप्रतिमा बोले नहीं. दान लेवे नहीं, ते माटे प्रतिमा अर्थने वीषे नीखेधोछो, तो अन्यातिर्थिना. देव कीहां बोलाव्या बोले, दान दीधां ल्ये, ते उत्तर. जीनना देव बोलेछे, दान ल्येछे, तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, माता, हनुमान, नारद, आहार लेता के न लेता ? स्वयमेव जीवता हता तीवारे आहार लेता, ते वीचारी जोजो. अन्यातिर्थिना देव उपर तो सुखे ए त्रण बोल ठहरेछे, पण प्रतिमा उपर न ठहरे तथा जे प्रतिमाने पोताना देव करी अन्यतिर्थिए मान्या तेहने तुमे देव करी न मानो तथा अन्यातिर्थिना देहरामां रही जीन प्रतिमा ते तमे न मानो ठामफेर माटे, तो तुमारो बाप कार्य विशेखे चंडालने घेरे बेठो होय ते वेलाए तमारो बाप खरो के नहीं ? जो ए तमारो बाप तो ते तमारो देव. वली अन्यातिर्थिने देहेरे गइ प्रतिमा ते अवंदनीक थइ, तो साधु अन्यातिर्थिना आश्रममां उतर्या ते वेला गुरु करीने मानो के नहीं ? जो चंडालने घेरे बेठाने बाप मानो, मठमां उतर्या साधुने गुरु करी मानो, तो अन्यतिर्थिने देहेरे गइ प्रतिमाने देव करी कीम न मानो ?

वली अन्यातिर्थिये ग्रह्या चैत्य शब्दे प्रतिमा मानसो, तो द्रव्यलींगी, पासथा, निःनव वेषधारी, वीटलसाधु, क्या बोलमध्ये वोसराव्या ठहरावशो ए पण अवंदनीकछे, जो कहेसे अन्यातिर्थिमां गणीए तो खोटा पडे भगवती शतक पेहेले पन्नवणा पद वीसमे से लेगी दंसण वावनग समकीतना वमनहार पीण सयलींगी कह्या, पण अन्यातिर्थिमां नथी कह्या, अने अन्यातिर्थिना देवमांतो नथीज, पछे अन्यातिर्थि ग्रह्या चैत्यमांज पण गणासे तो नहीं, तो चोथो बोल सुत्रपाठे देखाडो ? वली स्वयमतना ग्रह्या चैत्य, देहरा, प्रतिमा, आणंद श्रावक, वांदे ते पाठ देखाडो, ते वीचारजो.

१६. अंबड श्रावकना आलावानो अर्थ.

जेम समकीतनी वीध आणंद श्रावके कही छे, तेहीज रीत सर्व श्रावक संख, पोखली, प्रमुख छे कोइ वातनो फेर नथी ते उपरांत उववाइ सुत्रमां अंबड श्रावकने अधीकारे एहवो पाठ छे जे.

अमंडस्सणं परीवायस्स नोकप्पई अउछिएवा अणउछिया-देवयाणिवा अणउछिय परीग्गहियाणिवा अरीतंहचेइयाइं वांदि-त्तएवा नमंसित्तएवा जावपज्जुवासिएवा णणथअरीहंतेवा अरीहंत चेइयाणिवा.

अर्थ:—अ. अमड संन्यासीने. नो. न कल्पे. अ. अन्यतिर्थि सक्यादीक. अ. अन्यतिर्थिना देव हरी, हरादीक. अ. अन्यतिर्थिये ग्रह्या अरीहंतना चैत्य भ्रष्टसाधु. वं. वांदवा. न. नमस्कार करवा. जा. जावत पुजा करवा जावत शब्दमध्ये उपरना बोल लेवा.

एटलो पाठ छे जे, न कल्पे. १ अन्यतिर्थि. २ अन्यतिर्थिना देवने. ३, अन्यतिर्थिये ग्रह्या चैत्यने. १ वांदवा. २ बोलाववा. ३ दान देवा ए त्रण बोलतो आणंदनी पेरेज छे. अने कल्पे ते मध्ये अरीहंत ते तो देव अने अरीहंतना चैत्य ते साधु गुरु ए बे वांदवा अरीहंत ते देव अने चैत्य ते ज्ञानवंत अरीहंतना साधु ए बे कल्पे. एटले कल्प्यामां पण आणंदनी परेज ठहर्यो, तीहां श्रमण नीग्रंथ कहीने गुरु राख्या इहां अरीहंत चैत्य कहीने गुरु राख्या. एटले देव, गुरु, ने वांदवा राख्या. इहां हींसयाधरमी कहे छे जे, प्रतिमा राखी चैत्य शब्दे ते न मीले. केमजे अरीहंत ते पण देव अने प्रतिमा ते पण देव, तो गुरु वांदवानो त्रीजो पाठ कीहां छे? ते तो नथी. ए लेखे अंबडने साधु गुरु छे के नथी? जो चैत्य शब्दे प्रतिमा तो गुरु वांदवानो त्रीजो पाठ देखाडो? अने अंबड साधुने वांदे छे. असनादीक आपेछे वारव्रत सुत्र पाठे कह्यां छे. तुमे तो प्रतिमाने देव करी मानो छो तो गुरु साधुनो पाठ कीहां? पण मीथ्यात्व मोहनीकर्मने उदये खोटो अर्थ सुझे छे, जे वस्तु, श्रावकने कल्पे ते आणंदनी पेरे जाणवी ते वीचारी जोजो.

---

१८ सात क्षेत्रे धन कढावे, ववरावे. तेहनो उत्तर.

वली हींस्याधरमी कहे छे जे, सात खेत्रे धन वावरवो. ते एकांत सुत्र वीरुद्ध कहे छे. सात खेत्र धन वावरवो ते कीया सुत्रमां कह्यो छे एम पुछवो. तथा आणंदादीक श्रावके व्रत आराध्या, पडीमा आदरी, संथारा कीधा, ते सर्व सुत्रमां कहे छे, पण धन केटलो वावर्यो तथा केटले क्षेत्रे वावर्यो ते सुत्रथी कहो तो प्रमाण. तथा संघ काढया, तीर्थजात्रा कीधी, देहरा कराव्या, प्रतिमा प्रतिष्टि, इत्यादीक आणंद, संख, पोखलीने, अधीकारे कह्यो होवे तो सुत्र मध्ये देखाडो. श्री माहावीर स्वामीये गौतमस्वामी आगले केटला खेत्र कह्यां ते कहो. तुमे सात खेत्र कहो छो. ते १ देहरो, २ प्रतिमा, ३ पुस्तक, ४ साधु, ५ साधवी, ६ श्रावक, ७ श्रावीका, ए सात क्षेत्र कहोछो, ते श्रीवित्तरागना परुप्या नथी. स्या माटे जे, पुस्तकनो लखवो तो श्री माहावीर स्वामी निर्वाण केडे नवसेंएसी वरशे.थयो छे, तो आगले पुस्तक नीमीत्ते धन काढवानो स्यो प्रयोजन हतो ! ए वीरुद्ध.

वली साधु, साधवीने, काजे धन खरची आहार उपध्य, उपाश्रय, करावे तो ते साधु, साधवीने. कामे न आवे तो साधु, साधवीने, काजे धन स्याने काढे ? दसवीकालीक सुत्रे छठे अध्ययने अडतालीशमी गाथामां कह्यो जे,

पिंड सिजं च वथंच ॥ चउथं पाय मे व य ॥ अकप्पियं न इछेजा ॥ पडिगाहिंज कपियं. ॥ ४८ ॥

अर्थः—पेहेले बोले. पी. आहार. बीजे बोले. सी. थानक, पाट, पाटला, संथारो, वली त्रीजे बोले. व. वस्त्र, पछेडी, चलोटा, मुहपतिः च. वली. प्रते प्रमुख. च. वली चोथे बोले. पा. पात्रा, पडीग्रह उडग, प्रमुख. ए. ए. य. वली. अ. वली कल्पनीक दांडो प्रमुख संजम निर्वाह. अ. अकल्पनीक. न. न वांछे तथा नवाचे नहीं. प. लीये. क. कल्पनीक.

एम आचारंग, निसिथ, कल्प, घणे सुत्रे मुलनो आण्यो आहारादीक नीखेध्यो छे, तो साधु, साधवी, ते धनने स्युं करे ? ए पण खेत्र वीरुद्ध कहोछो.

श्रावक, श्राविका, जे पुन्यवंत होवे ते पण खेरातनो दान ल्ये नहीं, रांक, कंगाल, दीन, अनाथने, अंतराय पाडे नहीं. देहरां प्रतिमा आगले हतां नहीं, तो तेहने काजे धन काढीने स्युं करे ? तुमारे मते आगले देहेरां प्रतिमा हतां एम मानो छो, तो कहो आणंदादीक श्रावके न्यात जमाडी, परदेसी राजाये दानसाळा मांडी,

श्रीकृष्णे संजमनी दलाली कीधी, सेणीक राजाये अमरपडो फेर्यो, कोणीक राजाये वधामणी दीधी, पीण केटलो धन काढी देहेरां प्रतिमा कराव्यां ते पाठ सुत्र मध्ये देखाडो. नहीं तो ए सात खेत्र नवां कलपीने मुरख लोकोना धन लुटोछे. ते चौहटीना चोर थाओछो. ए सात खेत्रना नाम लइ देखाडेछे ते एकांत सुत्र विरुद्ध कहेछे.

१९ ध्रुपदीए प्रतिमा पुजी कहेछे. ते उत्तर.

हींस्याधरमी कहेछे जे, ध्रुपदीए प्रतिमा पुजीछे, तेहनो उत्तर सुत्र प्रमाणे कहेछे. सर्व सुत्र मध्ये जोतां, साधु, साधवी, श्रावक, श्रावीका, समद्रष्टीए, कीहांइ वित्तरागनी, प्रतिमा करी पुजी कही नथी. राजग्रही, चंपा, मथुरा, वाणीअग्राम, तुंगीया, आलंवीया, सावर्थि, द्वारका वनीता, हर्थीणापुर, इत्यादीक नगरीयुंने वाहीरे जक्षना देहरां कह्याछे, पण श्रीवित्तरागना देहेरां कह्यां नथी. एक ध्रुपदीए परणवाने अवशरे प्रतिमाने पुजी कही, तो पण वाधाभव मध्ये एकवार पुजी कही छे. पदमोत्तर राजाने घेरे सा हरण थयो तीहां आंवील सहीत छठ छठ पारणाए तप कीधो, पण तीहां प्रतिमा पुजी कही नथी.

१. ते ध्रुपदीये पुर्वभवे धर्मरुचीने कडुओ तुंवडो आप्यो ए अयुक्त.

२. पछे सुकमालकाने भवे भीक्षुकने भरतार कीधो ए अयुक्त.

३. पछे संजम लेइने अवनीत पासथी थइ ए अयुक्त.

४. पछी नगरी वाहार, आज्ञा लोपीने आतापना लीधी ए अयुक्त.

५. पछे पांच भरतारनो नीयाणो कीधो ए अयुक्त.

६. पछे संजम वीराधी वेस्या देवांगना पणे उपनी ए अयुक्त.

७. पछे पांच भरतार वर्या जगत नींदनीक कार्या कीधो ते अयुक्त.

एहवा अयुक्तनी करणहारी, मीथ्याद्रष्टी नीयाणा सहीत तेणे प्रतिमा पुजी. ते पुजाने भलामण पीण अद्रती सुरीयाभ देवतानी दीधी, पण आणंद, कामदेव, संख, पोखली, श्रावकनी भलामण स्यामाटे न दीधी ? आणंदादीकनी भलामण स्याने देवे ?

१ ध्रुपदीये प्रतिमा पुजी ते वेला समद्रष्टी नहीं. २ श्रावका पण नहीं.

३ ध्रुपदीना माता पीता पण समद्रष्टी नही ४ ध्रुपदीए प्रतिमा पुजी ते प्रतिमा

तीर्थंकरनी पण नहीं. घरमां देहराशर पण नहीं ए चार बोल सीद्धांतनी साखे वीचारवा ते कहेछे.

१. प्रथम तो द्रुपदी श्रावका नहीं, जो श्रावीका होय तो पांच भरतार कीम वरे ? सर्व संसारनी रीते अस्त्रीने एक एक भरतार होयछे. तीम द्रुपदी पण एक भरतार जाणती हती, पण एम जाणती न हती जे माहरे पांच भरतार थासे. तीवारे पुरवभवना नीयाणानी प्रेरणाये करी पांच भरतार वर्या तो वीचारी जोजो, द्रौपदीए श्रावकना व्रत लीधां त्यारे भरतार दस वीस मोकला राख्या हता ? अने ज्यारे भरतारनी मर्यादा नथी त्यारे श्रावका केम कहीए. एणे न्याये द्रौपदी श्रावका नहीं. तथा बालपणामां श्रावकना व्रत लीधां पण कह्यां नथी.

२. वली द्रुपदी समद्रष्टी पण नहीं. दसासुतखंध सुत्रने दसमे अध्ययने नीयाणाना भाव कह्या, ते मध्ये मनुष्यना कामभोगनो नीयाणो करे उत्तकृष्टा रसना नीयाणानो फल ए जे, नीयाणाना करणहार केवली परुप्यो धर्म काने सांभलवो [illegible]ण न पामे, अने मजीमरस जघन्यरसनो नीयाणो होवे तो वंछीत भोग मल्या. [illegible]छी समकीत व्रत पामे, पण जीहां लगे नीयाणानो फल उदय न आवे त्यां लगे [illegible]मकीत व्रत कांइ न पामे. वली नीयाणा बे प्रकारनाछे. १ एक भ्रव्य प्रत्यय, [illegible]जो भव प्रत्यय, ते वासुदेव चक्रवर्तिनो, नीयाणाना उद्ये जाव जीव लगे व्रत उद्य [illegible] आवे ते भव प्रत्यय नीयाणो, कहीए अने बीजो भ्रव्यप्रत्यय नीयाणो ते जेणे [illegible]व्य वांछयो ते मील्यो तीवारे ते भ्रव्य प्रत्यय नीयाणे पुरोथीयो, पछे देसव्रती सर्व [illegible]ती सुखे आवे ते भ्रव्यप्रत्यय नीयाणो कहीए, ते भणी ए द्रुपदीने भ्रव्यप्रत्यय [illegible]ीयाणोछे, जे पांच भरताररुप भ्रव्य मीलया तीवारे भ्रव्यनीयाणो पुरो थीयो. पण [illegible]रणी नहीं त्यां लगे नीयाणानो उद्ये हतो. सयंबरा मंडप मध्ये सर्व राजाने मुकीने [illegible]ांच पांडव वर्या तीहां पाठ मध्ये कह्योछे जे—

पुव्वकय नियाणेणं चोइजमाणी.

अर्थः—पु. पुर्वकृत पाछला भवना कीधां. नी. नीदांनने. चो. प्रेरी हुती, पुर्वकृत नीदाननी प्रेरीथकी पांच पांडव पासे आवी ए पाठ छे, तो इम जाण जो जे नीयाणाना उद्यसहीत जीव वरते, तीहां लगे समकीत तथा व्रत कीहांथकी होस्ये ? ए लेखे द्रुपदी परण्या पहेलां एकांत मीथ्याद्रष्टी जाणवी.

३. वली द्रौपदीना माता. पीता, पण मीथ्यात्वी छे. घेरे देहरां छे, प्रतिमा पुजी छे, एम जे कहे छे ते वात सुत्र वीरुद्ध कहे छे. ते कीम जे द्रुपदीने पीताए

श्रीकृष्ण प्रमुख सयंवरा मंडपमध्ये अनेक राजा तेडाव्या. तेहने काजे छ आहार नीपजाव्या. ते मध्ये मद्य, मांस, घणो नीपजाव्यो. जो जीनमारगी होवे तो, अने घरमां देवघरो होवे तो तथा पुजा जीननीपरे होवे तो, क्रोडागमे त्रसजीव मारीने मद्य, मांस कीम नीपजावे? जीनमारगी होवे तो मद्य, मांस, खावे नहीं त्रसजीवने हणे नहीं हणावे पण नहीं ए जीनमारगनो लक्षण छे. अने ध्रुपद राजाए मांस भोजन नीपजाव्यो सुत्र कह्यो छे ते पाठ लखे छे.

विउल असणं पाणं खाईमं साइमं सुरंच मजंच महुयंच मसंच सिंधंच पशन्नंच सु बहु पुप्फ वथ गंध मलालंकारं च वासुदेव पामोखाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह तेवि साहरंति.

अर्थः—वी. विस्तर्ण. अ. असन. पा. पाणी. खा. सुखडी मेवादीक. सा. मुखवास. सु. सुरा. म. मदीरा. म. महुडानो दारु. मं. मांस. सीं. सींधु. प. प्रसन ए मदीरानी जाती. सु. अति. व. घणा. पु. फुल. व. वस्त्र. गं. गंध. म. माला. अ. अलंकार. व. वासुदेव. पा. प्रमुख. रा. राजाना सहस्त्र. आ. आवासनेवीखे. सा. मुको. ते. ते पण. सा. तीम मुके.

एम सेवकने कह्यो अने ए काम सेवके कीधो. जीहां समद्रष्टीना घर होवे तीहां मद, मांसना, गौरव कीम होवे? सुत्रमध्ये मद, मांस, घणे ठांमे नीखेध्या छे समद्रष्टीने घरे च्यार आहार होवे, पण छ आहार होवे नहीं. एणे मेले ध्रुपद राजानो शर्व घर मीथ्याद्रष्टी जाणवो.

४ वली हींस्याधरमी कहे छे जे, प्रतिमा तो श्रीवितरागनी हती खरी, जीन पडीमा कही बोलावी छे ते माटे. ते उत्तर कहे छे.

तएणं सा दोवइ रायवरकन्ना जेणेव मजणघरे तेणेव उवागछईरत्ता न्हाया कयबलीकम्मा कयकोउयमंगल पायछित्ता सुध प्पावेसाइ मंगल्लाइ वथाइं पवर परिहिया मजणघराउ पडीनिखमईरत्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागछईरत्ता.

अर्थः—त. तिवारे. सा ते. दो. ध्रुपदी. रा. राजवरकन्या. जे. जीहां. म. स्नानगृघर. ते. तीहां. उ. आवे आवीने. न्हा. न्हाइ. क. कीधा बलीकर्म पीठी प्रमुख

वीलेपन कर्या. क. कौतक मंगलीक पाणीनी अंजली भरी कोगळा कर्या. पा. आभ्रण पेहेरी तीलक मस करी. सु. सुद्ध निर्मल. पा. उत्तम. मं. मंगलीक. व. वस्त्र. प. प्रधान प. पेहेर्या. म. मंजन जे नहावानां घरथकी. प. नीकळे नीकलीने. जे. जीहां. जी. जक्षतुं घर. ते. तीहां. उ. आवे आवीने.

इहां तीथयर घर नथी कह्यो, जीण शब्दे तो सर्व चार जातना देवता आव्या, अने तीथयरे मध्ये तो एक तीर्थं करहीज आव्या, ते तीर्थंकरने घर न होवे तो तीथयरे घरे स्याने कहे.

जिणघरं अणुप्पेवेसईश्त्ता जिणपडीमाणं आलोयं पणामं करेईश्त्तालोमहथंपम्हजता एवं जहा सुरियाभो जिणपडीमाऊं अचेइ तहेव भाणियव्व जाव धुवंडहईश्त्ता वामजाणु अचेईश्त्ता दाहिणंजाणुं धरणितल सिनियईश्त्ता तिखुत्तो मुधाणंधरणितलं नियमेईश्त्ता इसि पचुणमइश्त्ता करयल जाव तिकट्टु एवंवयासी नमोथुणं अरीहंताणं भगवंताणं जाव समत्ताणं वंदइ नमंसईश्त्ता.

अर्थः—जी. जीनना घरमांही प्रवेश करे करीने. ते प्रतिमाने जोइने प्रणाम करे वांदे नमस्कार करे नमस्कार करीने मोर पींछनी पुंजणीसुं पुंजे पुंजीने इम जीम सुरीयाभ देवे जीम जीनप्रतिमाने पुजी तीम पुजे तीम सर्व कहेवुं. जावत धुप उखेवे उखेवीने डाबा पगनो ढींचण ऊंचो राखे राखीने जमणा पगनो ढींचण धरणी तले नमाडे भूइ नमाडीने. ता. त्रणवेळा. मु. मुस्तक. ध. भूमीतले. नी. लगाडे लगाडीने. इषत लगारेक माथुं भूइ नमाडे नमाडीने करयल हाथ जोडी जावत इम करी इम कहे. चैत्यवंदन करे नमस्कार उंकार वचनालंकारे अरीहंतप्रते भगवंत ज्ञानमय आत्मा छे जेहनी जावत प्राप्त मुक्ति पोता सीमवांदे नमस्कार करे नमस्कार करीने.

एटलो पाठ ज्ञाता मध्ये छे अने जीहां सुरीयाभो.

जिणपडीमाऊं अचेइ तहेव भाणियव्वं जाव धुवंडहई.

अर्थः—जी. जीनप्रतिमाने जावत धुप उखेवे एटला लगे सुरीयाभनी भलामणमां पाठ छे ते लखे छे.

जिणपडीमाणं लोमहथं पमजइ२त्ता जिणपडीमाऊं सुरही गंधोदएणं न्हाणेई सरस गोसिस चंदणेणं गायाइंअणुलिप्प ई२त्ता जिणपडीमाणं अहियाइं देवदुसा जुयलाइं नियसेई२त्ता अग्गोहिंविरोहि गंथेहिं अचेइ पुफारुहणं मलारुहणं चुतारुहणंवयारुहणं आभरणारुहणं करेई२त्ता आसत्तोसत्त विपुलवट्ट वग्धारिय मल्लदांम कलांव करेई२त्ता जिणपडीमाणं पुरतो अछेहिं सएहंहि रययामयएहिं अछरसेहिं तंदुलेहिं अठठ मंगलए आलिहई२त्ता तंजहा सोथीय जाव दप्पण तवाणं तरंचणं चंदप्पह रयण विमल मणीरयण भत्ति चित्ता कालागुरु पवर कुंदरुक तुरुक धुव मघमघंत गंधु धु अमाणचिठंति.

अर्थः—जी. जीनप्रतिमाने. लो. मोरपींछना पुंजणीए करी. प. पुंजे पुंजीने जीनप्रतिमा. सुं. सुगंधे. गं. गंधोदक. न्हा. स्नान करावे. स. आर्द्र. गो. गोसीर्ख. च. चंदने करी. गा. गात्रप्रते अ. लेप करे. जी. जीनप्रतिमाने. अ. मुहघां. दे. देवदुष. जु. जुगल वस्त्र. नी. पेहेरावे पेहेरावीने. ५ पु. फुल चढावे. ६. म. माला चढावे, ७. चु. चुर्ण वास खेप चढावे. व. वस्त्र चडावे धजा बांधे ११ आ. आभरण चढावे. क. करीने. आ. उपर चंद्रवा बांधे हेठे भूमीका लगे. वी. वीसतीर्ण वाटला लंबायमान. म. फुलनी. द. दाम. क. ठरे करीने. जीनप्रतिमाने. पु. आगले अ. निर्मल. से. धन लइ. २ रुपामय. अ. दुकडी वस्तु ते मांहे प्रतिबींब पडवे. तं. तंदुले करी. सा. साथीयो. जा. जावत सर्वे आठ कहेवा. द. आरीसो. त. तीवार पछी. रं. चंद्रप्रभा. २. वैदुर्यरतनमय. वि. निर्मल छे. म. मणीरतननी. भ. भांति. ची. चीत्रीत छे. का. कृस्नागुरु. प. प्रधान. कुं. चीडगुंद. तु. सीलारस. धु. धुप. म. मघमघायमान. ग. उत्तम गंध तेणे करी.

एटलो पाठ राइपसेणीमां सुरीयाभे प्रतिमा पुजी ते रीतने भलाव्यो. एटले सुरीयाभनी प्रतिमा अने द्रुपदीनी प्रतिमा एकसरखी अने पुजा पण एक सरखी जाणवी. सुरीयाभे पण प्रतिमाने वस्त्र पेहेराव्या अने द्रुपदीए पण प्रतिमाने वस्त्र

पेहेराव्यां अने आज हींस्याधरमी प्रतिमाने वस्त्र न नथी पेहेरावतां, ने कहेछे जे तीर्थंकरनी प्रतिमाने वस्त्र होवे नहीं ए लेखे सुरीयाभनी, द्रुपदीनी प्रतिमाने वस्त्र होवे नहीं. ए लेखे सुरीयाभनी, द्रुपदीनी, प्रतिमा ते केहेनी ठहरी, एणे तो वस्त्र पहीराव्यां सुत्र पाठे कह्योछे.

वली ज्ञाता अध्ययन बीजे भद्रासार्थवाहीए नाग, भुत, वेसमणने पुजवा चाली ते पुजा वीधी लखी छे.

जेणामेव नागघरएय जाव वेसमणघरणय तेणेव उवागछइत्ता तथणं नाग पडीमाणंय जाव वेसमण पडिमाणंय आलोए पणामं करेइत्ता पचुणणईत्ता लोमहथगं परामुसईत्ता नागपडीमाऊ जाव वेसमण पडीमाउय लोमहथेणं पमजईत्ता उदगधाराए अझुखईत्ता पम्हल सुकमालाए गंधकासाईए गायाइ लुहेईत्ता महरिहंच पुफारुहणंच वथारुहणंच मलारुहणंच गंधारुहणं चुन्नारुहणं आभरणारुहणं करेईत्ता जाव धुवडहईत्ता.

अर्थः—जे. जीहां. ना. नागना घर छे. जा. जावत जक्षना. वे. वेसमणना घर छे. ते. तीहां. उ. आवे आवीने. त. तीहां. ना. नागनी. प. प्रतिमाने. जा. जावत. वे. वेसमणनी. प. प्रतिमाने. आ. दर्सनादीके. प. नमस्कार करे करीने. प. थोडोस्यो कोट नमाडी नमाडीने. लो. मोरपींछनी पुंजणीए. प. लेइ लेइने. ना. नागप्रतिमाने. जा. जावत. वे. वेसमणनी. प. प्रतिमाने. लो मोरनी पुंजणीए. प. पुंजी पुंजीने. उ. उदकनी धाराए. अ. अभीषेक करे पखाले पखालीने. प. पछे. उ. उदकनी धाराए. अ. अभीषके करे पखाले पखालीने. प. पछे निर्मल. सु. सुहाळां वस्त्रने. गं. राती सुगंध साडी तेणे. गा. गात्र. लु. लुहे लुहीने. म. पछे महुवां. पु. फुल पहीरावे. व. वस्त्र पहीरावे. मं. माला पहीरावे. गं. सुगंध चडावे. चु. चुर्ण चडावे अबीरादीक छांटे. आ. आभ्रण पहीरावे. क. करे करीने. जा. जावत. धु. धुप उखेवे उखेवीने ए सर्व पुजानो पाठ नमोथुणं वीना द्रुपदी सुरीयाभ जेहवो जाणवो.

हवे जंबुद्वीप पन्नंती मध्ये भरतेसरे चक्रीए चक्रने पुज्यो. ते विधि लखीछे.

भरहेराया जेणेव आउधघरसाला तेणेव उवागछई२त्ता चक्करयणंस्स आलोए पणामंकरेइ२त्ता जेणेव चक्करयणे तेणेव उवागछइ२त्ता लोमहथयं परामुसई२त्ता चक्करयणं पमजई२त्ता दिव्वाए उदगधाराए अझुखेई२त्ता सरसेणं गोसीस चंदणेणं अणुलिप्पइ२त्ता अग्गेहिं वरेहिं मल्लेहिं गंधेहिं अचणिइ२त्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं गंधारुहणं वणारुहणं चुनारुहणं वथारुहणं आभरणारुहणं करेइ२त्ता अथेहि सुन्हेहिं सेएहिं रययामएहिं अथरस तंदुलेहिं चक्कर यणंस्स पुरऊ अठठ मंगलाइं आलिहई२त्ता तं सोथियं सिरिवथ नादियावत वद्दमाणग भद्दासण मछ कलस दप्पण अठ मंगलाइं आलिहित्ता काउणकरेई उवयारं किंतं पाडल तिलिय चंपक असोगपनाग चुयमंजरी नवंमालिया वउल तिलय कणवीर कुंद कुंजय कोरंटे पत्तटमणगवर सुरहि सुगंध गंधियस्स कयगाहथगहियलप्पझठ विप्पमुक्कस्स दसदवणस्स कुसुम निगरस्स तथाचित्तं जाणुस्सेहपमाणमित्तं उहिं नियर करेत्ता चंदप्पभंहवइर वेरुलिय विमल दंडं कंचण मणि रयण भतिचित्तं कालागुरु कुदरुक्क धुव गंधु तमणुविरुधंच धुमवट्टि वेरुलिय मइ कडुछुयं गहय पयत्ते धुवं दहई२त्ता सत्तठपयाई पच्चोसकई२त्ता वामंजाणुं अचेई जाव पणामं करेई२त्ता आउध घरसालाउ पडीनिखमई२त्ता.

अर्थ—भ. भरथ राजा. जे. जीहां. आ. आऊध घर. सा. साला छे. ते तीहां उ. आवे आवीने. च. चक्ररतनने. आ. दीठाथका. प. प्रणाम करे करीने. जे. जीहां. च. चक्ररतन छे ते. तीहां. उ. आवे आवीने. लो. मोरपींछनी पुंजणी. प. लइ लइने. च. चक्ररतन. प. पुंजे पुंजीने. दी. दीव्य. उ. पाणीनी धाराए करी. अ. सींचे सींचीने. स. सरस रस सहीत. गो. गोसीर्ष. च. चंदने. अ. लीपे लीपीने. अ. अग्र उत्तम. व. प्रधान. गं. सुगंध वस्तुए करी. म. फुलनी माळाए करी. अ.

अर्चा पुजा करे. पु. फुलना आरोपण चढाववी. वो. म. फुलनी मालानो आरोपण. ग. गंधद्रव्ये आरोपण. व. वाना आरोपण. चु. चुर्ण, गंध, पुडी आरोपण. व. वस्त्र लुगडां तेहनुं आरोपण. आ. आभरण घरेणानुं आरोपण. क. करे करीने. अ. निर्मळ. सु. सुलक्षण सकोमल. से. स्वेत उजलां. र. रजत रुपामय. अ. अत्यंत स्वच्छछे फटीकनी परे एहवा. तं. तंदुले करीने. च. चक्ररतनने. पु. आगले. अ. आठ. आठ. मं. मंगलीक. आ. आलीखे करे. तं. ते कीहां. सो. साथीओ. १. सी. श्रीवछ २. न. नंदावर्त्त. ३ व. वर्धमान सरावसंपुट ४. भ. भद्रासन. ५ म. मछ ६. क. कलस ७. द. दर्पण ८. अ. आठ. मं. मंगलीक. आ. करे करीने. का. करे. उ. उपचार. कीं. ते. स्यो उपचार. पा. पाटण वृक्षना फुल. ती. तीलक वृक्षना फुल. चं. चंपाना फुल. अ. अशोक वृक्षना फुल. पु. पुणाग वृक्षना फुल. चु. आंबानी मांजरी. न. नवमालतीना फुल. व. वउरसीरीना फुल. ती. तीलक वृक्षना फुल. क. कणयरना फूल. कुं. कुंद वृक्षना फूल. कुं. कुजयकुंवाना फूल. को. कोरट वृक्षना फूल. प. दमणाना फूल. व. प्रधान. सुं. सुरभी. सु. सुगंध. गं गंधीत एहवो. क. हाथे करी ग्रहवा मांडया अने ग्रह्या नहीं अथवा करतलमांहीथी पडया एहवा तेणे करी. वी. कग्यल थकी मुक्या थकां वीसतार्यां. तथ. तीहां चक्ररतनने चोख फेरे जे प्रथवी प्रदेश तेहने वीखे. ची. चीत्रसंयुक्त जाणस्ये. ढींचण समान ढग कीधा. द. पांच वर्णना. फू. फूलना. नी. समोहना. त. तीहां आश्चर्यकारी. जा. ढींचण सुधी एतले प्रमाण मात्रे. उ. अवधी मर्यादाइ फूलनो विस्तार करीने. चं. चंद्रकांत रतन. व. वज्रहीरा. वे. वैदुर्य रतननो. वि. निर्मल. दं. दंड छे जेहनो एहवो कं. सुवर्ण. म. मणी. र. रतने करी. भ. भातीस्युं चीतर्यो एहवो. का. कृस्नागुरु. कु. कुदंड तेहनो. धु. धुप. गं. महा गंधे करी उत्तम तेणे करी. अ. अनुविधव्या. प. एहवी. वे. वैदुर्यरतनमय एहवो. क. घुपनो कडुछो. ग. लइने. प. उद्यमवंत थको. धु. धुपप्रजे. द. दहेघुप करीने. स. सात आठ पगलां. प. पाछो उसरे पाछो उसरीने. वा. डाबुं ढींचण. अ. ऊंचु करे. जा. जावंत. प. प्रणाम करे करीने. आ. आउधघर. सा. सालीमांहीथी. प. नीकले नीकलीने.

इहां पण चक्र पुजवानी वीधी पण नमोथुणं वीन्या धुपदी, सुरीयाभनी पुजा जेहवी पुजा जाणवी.

हवे वीस्तार सहीत कुणीक राजाए श्रीमहावीरने कीम रीते वांद्या, पुज्या ते वीधी उववाइ सुत्रथकी लखी छे.

चंपाए नयरीए मझंमझेणं निग्गछई२ त्ता जेणेव पुणभद्दे चे-ईए तेणेव उवागछई२ त्ता समणस्स भगवउ महाविरस्स अदुर-सामंते छत्ताझिए तिथयराइ सेसेपासाई२ त्ता अभिसेकं हथि रएणाउ पच्चोरुहई२त्ता अवहदु पंचराइ कुकुहाइं तंजहा खगं१ छत्तं२ उप्फेसं ३ वाहणाउं४ वालवीयणं ५ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागछइ२त्ता श्रमणं भगवं माहावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगछंति तंजहा सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाइं अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाइं एगसाडियं उतरासंग करणेणं चखुफासे अंजलिपग्गाहणं मणसोएगत भाव करणेणं श्रमणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेई२त्ता वंदइ नमंसई२त्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति तंजहा काइयाए वाइयाए माणसीयाए तावसं कुइयं ग्गाहथपाए सुस्सुसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडा चज्जुवासंति वाइयाए जंजंभगवं वागरइ एवमेयं भंते अवितहमेयं भंते असंदिठमेयं भंते पडीछी-मेयं भंते इथीयपडीछीमेयं भंते सेजहाय तुझेवयह अपडीकुल-मांणे पजुवासंई माणसीयाए महयांसंवेगं जणईरत्ता तीव्वधम्माणु रागरत्ते पजुवासई ॥ इति ॥

अर्थ—कोणीक राजा. चं. चंपा. न. नगरीने. म. मध्य भागे (वीचाळे) नी. नीकळे नीकळीने. जे. जीहां. पु पुर्ण भद्र चैत्य छे. ते. तीहां उ. आवे आवीने. स. श्रमण. भ. भगवंत. म. माहावीरना. अ. अती वेगळा नहीं अती ढुकडा नहीं. छ. छत्र आद देइ. ती. तीर्थंकरना से. अतीसय. पा. देखे देखीने. अ. पाटनो. ह. हाथी र. रतनने. प. हेठो उतरे उतरीने. अ. अळगा मुके पं. पांच राजना. कु. चीन्ह. तं. ते कहेछे. ख. खडग १. छ. छत्र २. उ. मुगट. ३. वा. मोजडी ४. वा. चामर. ५. जे. जीहां. स. श्रमण. भ. भगवंत. म. माहावीर. ते. तीहां उ. आवे आवीने. स. श्रमण. भ. भगवंत. म. माहावीर देवने. पं. पांच प्रकारे. अ.

साहमा अ. जावानी वीधी साचवीने साहमा जाये तं. ते कहेछे. स. सचीत फुल तंबोलादीक द. द्रव्य. वी. अलगा मुके मेले. अ. अचीत. द. द्रव्य आभरणादीक. अ. अनित्य जे पाशे राखे. ए. एक पनानुं वस्त्र तेणे. उ, उत्तर दीसने डावे खंधे ऊंचा करे. च. भगवंतने द्रष्टी गोचर देखे. अं. बे हाथ जोडीने. म. मनने ए काग्र. भा. भाव. क. करवे करी. स. श्रमण. भ. भगवंत. म. श्रीमहावीरने ती. त्रणवार. आ.. जीमणा. पासाथी मांडीने. प. प्रदक्षणा करे करीने व. स्तुती करीने नमस्कार करीने. ती. त्रण प्रकारे. प. सेवाइ प. सेवा करेछे. तं. ते कहेछे. का. काइयानी १. वा. वचननी २. मा. मननी ३. ता. प्रथम तो संकोचाछे. अ. अग्र हाथ पगना. सु. भली सेवा करतो थको. अ. सनमुख साहमो. वी. वीनय करे. पं. बे हाथ जोडीने. ९. शेवा करेछे. वा. वचननी. जं. जेजे भगवंन. वा. उचरे कहे. ए. एमज तुमारो वचन. भं. हे पुज्य. अ. जुठो नहोइ तुमारो वचन. भं. हे पुज्य. अ. संदेह रहीत. ए. ए तुमारो वचन. भं. हे पुज्य. प. हे पुज्य वीसेस वांछुंछुं ए तुमारुं वचन. भं. हे पुज्य. इ. इछुंछुं वीसेख वांछुंछुं. ए तमारुं वचन. भं. हे पुज्य. से. तीमज तु. तुमे कहोछो तेम. अ. अणउथापतो. प. सेवा करतो. मा. मनने. म. मोटा वैराग्य. ज. उपजवे उपजावीने. ती. तीव्र आकरो धर्मना रा. रागभाव तेणे रातो प. सेवा करेछे.

इहां श्रीवित्तराग वांदवानी वीधी कोणीक राजाए साचवी. पण सावज पुजा कांइ करी नहीं. सुरीयाभ, द्रोपदी, भद्रासार्थवाही, भरतेसरनी, पुजा प्रतिमा संबंधी सरीखी स्पाप थाई. प्रथम १ मोरपींछयकी पुंजी, २ न्हवरावी, ३ चंदन लीप्यो, ४ वस्त्र पहीराव्या, सुगंध द्रव्ये अरची, ५ फुल, ६ फुलमाला, ७ चुर्ण, ८ वस्त्र आभ्रण, ए पांच वस्तु मुख आगल चडावी. ९ फुल माळा वीखेरीये, १० चोखाना आठ मंगलीक आलेख्या, ११ धुप उखेव्यो, एटला बोल सुरीयाभनीपरे प्रतिमा आगले द्रुपतीए कीधां, भद्राए जक्ष आगले कीधां, भरतेशरे चक्र आगल कीधां. हवे तेहनी रीते प्रतिमा आगल तमे पण करोछो. जीनप्रतिमा जीन सरखी पण कहोछो. तो तुमथकी तो राजा कुणिक भक्तीवंत घणो हतो, अने प्रतिमाथकी अधीक श्रीभगवंत हता तो तेणे तमारी परे सावद्य पुजा केम कीधां नहीं? पण तुम जाणजो जे, भगवंत अने भगवंतनी प्रतिमानी पुजा एक सरखां कही होत तो जाणत जे, द्रुपतीए भगवंतनी प्रतिमा भगवंतनी रीते पुजा ते माटे ए प्रतिमा भगवंतनीज छे, पण पुजा वीधी तो नाग, भुत, जक्ष, वेसमण, चक्ररतननी पेरे

करी. तो इम जाणजो जे ए प्रतिमा भगवंतनी न होये, जे आरंभ परीग्रह सहीत वीखय, कखाय सहीत जीनछे अवीधनाणी तथा वीभंगअनाणी देवता जीन कहीए ते जीननी प्रतिमा जाणजो.

तीवारे हींस्याधरमी कहेशे जे, पुजानी वीधी भगवंत कोणीक थकी जुदी पडी, पण जीणपडीमा कहीछे, पण नाग, भुत, जक्ष, वेसमणपडीमा, नथी कही. तेहनो उत्तर. श्रीठाणांगजी सुत्रने त्रीजे ठाणे कह्योछे जे.—

तउ जिणा पन्नंता तंजहा उहिनाणजिणा मणपजवनाणजिणा केवणनाणजिणा तउ केवली पन्नत्ता तंजहा उहिनाण केवली मणपजवनाण केवली केवलनाण केवली तउ अरहा पन्नता तंजहा उहिनाण अरहा मणपजवनाण अरहा केवलनाणअरहा.

अर्थः—त. त्रण. जी. जीन. प. कह्या. तं. ते कहे छे. उ. अवधीज्ञान सहीत ते अवधी जीन कहीए. म. मनपर्जवज्ञानी जीन. के. केवलज्ञानी जीन. त. त्रीण. के. केवली. प. कह्या. तं. ते कहे छे. उ. अवधीज्ञानी केवली. म. मनपर्जव ज्ञानी केवली. के. केवल ज्ञानी केवली. त. त्रण. अ. अरीहंत. प. कह्या. तं. ते कहे छे. उ. अवधी ज्ञानी अरीहंत. म. मनपर्जव ज्ञानी अरीहंत. के. केवल ज्ञानी अरीहंत.

इहां अवधनाणीने पण जीन केवली अरीहंत कह्या छे,पण केवलनाणी केवली, केवलनाणी अरीहंत, केवलनाणी जीन त्रणेने तो सचीत वस्तु पुष्प, चंदन वीलेपन, धुप, दीप इत्यादीक पांच इंद्रीना भोग कल्पे नहीं. जे दीवसथकी अणगार थीया ते दीवसथकी वोसराव्या छे तेहनी भक्ती कोणीक राजाए कीधी तेज रीते थाय पण भुपतीनी रीते न थाय, अने मनपर्जव नाणी केवली, मनपर्जवनाणी अरीहंत, मनपर्जवनाणी जीन ए त्रण तो सर्व वीरती साधु होवे. तेहने पण सचीत वस्तु आरंभ सहीत भक्ति न कल्पे. जे दीन थकी अणगार थीया ते दीनथकी वोसराव्या छे. हवे तीर्थंकर, साधु, केवलीनी भक्ति सावद्य करणी करी कोइए कीधी होवे तो सुत्र मध्ये देखाडो. जेहवा पुरुष होवे तेहवी भक्ति पण होवे.

राइपसेणी सुत्र मध्ये त्रण आचार्य कह्या, १ कलाचार्य, २ सील्पाचार्य, ३ धर्माचार्य, ते मध्ये कलाचार्य, सील्पाचार्यनी भक्तिपणे होवे कही, तीहां स्नान कराववो,भोजन

साहमा अ. जावानी वीधी साचवीने साहमा जाये तं. ते कहेछे. स. सचीत फुल तंबोलादीक द. द्रव्य. वी. अलगा मुके भंजे. अ. अचीत. द. द्रव्य आभरणादीक. अ. अनित्य जे पाशे राखे. ए. एक पनानुं वस्त्र तेणे. उ. उत्तर दीसने डावे खंभे ऊंचा करे. च. भगवंतने द्रष्टी गोचर देखे. अं. बे हाथ जोडीने. म. मननो एकाग्र. भा. भाव. क. करवे करी. स. श्रमण. भ. भगवंत. म. श्रीमहावीरने ती. त्रणवार. आ. जीमणा. पासाथी मांडीने. प. प्रदक्षणा करे करीने व. स्तुती करीने नमस्कार करीने. ती. त्रण प्रकारे. प. सेवाइ प. सेवा करेछे. तं. ते कहेछे. का. काइयानी १. वा. वचननी २. मा. मननी ३. ता. प्रथम तो संकोचाछे. अ. अग्र हाथ पगना. सु. भली सेवा करतो थको. अ. सनमुख साहमो. वी. वीनय करे. पं. बे हाथ जोडीने. ९. शेवा करेछे. वा. वचननी. जं. जेजे भगवंत. वा. उचरे कहे. ए. एमज तुमारो वचन. भं. हे पुज्य. अ. जुठो नहोइ तुमारो वचन. भं. हे पुज्य. अ. संदेह रहीत. ए. ए तुमारो वचन. भं. हे पुज्य. प. हे पुज्य वीसेस वांछुंछुं ए तुमारुं वचन. भं. हे पुज्य. इ. इछुंछुं वीसेख वांछुंछुं. ए तमारुं वचन. भं. हे पुज्य. से. तीमज तु. तुमे कहोछो तेम. अ. अणउथापतो. प. सेवा करतो. मा. मनने. म. मोटा वैराग्य. ज. उपजवे उपजावीने. ती. तीव्र आकरो धर्मना रा. रागभाव तेणे रातो प. सेवा करेछे.

इहां श्रीवित्तराग वांदवानी वीधी कोणीक राजाए साचवी. पण सावज पुजा कांइ करी नहीं. सुरीयाभ, द्रोपदी, भद्रासार्थवाही, भरतेसरनी, पुजा प्रतिमा संबंधी सरीखी स्थाप थाई. प्रथम १ मोरपींछथकी पुंजी, २ न्हवरावी, ३ चंदन लींप्यो, ४ वस्त्र पहीराव्या, सुगंध द्रव्ये अरची, ५ फुल, ६ फुलमाला, ७ चुर्ण, ८ वस्त्र आभ्रण, ए पांच वस्तु मुख आगल चडावी. ९ फुल माळा वीखेरीये, १० चोखाना आठ मंगलीक आलेख्या, ११ धुप उखेव्यो, एटला बोल सुरीयाभनीपरे प्रतिमा आगले द्रुपतीए कीधां, भद्राए जक्ष आगले कीधां, भरतेशरे चक्र आगल कीधां. हवे तेहनी रीते प्रतिमा आगल तमे पण करोछो. जीनप्रतिमा जीन सरखी पण कहोछो. तो तुमथकी तो राजा कुणिक भक्तीवंत घणो हतो, अने प्रतिमाथकी अधीक श्रीभगवंत हता तो तेणे तमारी परे सावद्ध पुजा केम कीधी नहीं? पण इम जाणजो जे, भगवंत अने भगवंतनी प्रतिमानी पुजा एक सरखी कही होत तो जाणत जे, द्रुपतीए भगवंतनी प्रतिमा भगवंतनी रीते पुजा ते माटे ए प्रतिमा भगवंतनीज छे, पण पुजा वीधी तो नाग, भुत, जक्ष, वेसमण, चक्ररतननी पेरे

तीहां इम कह्यो जे, चालो हे देवाणुंप्रीया गुणसील, पुर्णभद्र बाग मध्ये भगवंत तथा साधु आव्या छे तेहने वांदवा जायछे; पण इम कोइए न कह्यो जे, चालो जीनघरे जाइए. तो एम जाणजो जे भगवंत केवळीने घर न होवे, जे कहे छे ते एकांत जुठुं कहे छे.

वळी सुत्रमध्ये ठाम ठाम आचारंग, ठाणांगजी, वृहतकल्प मध्ये जीहां साधु रहे ते ठामने "उवसयं" कहेतां अल्पकाळना आश्रयमाटे उपाश्रय कह्यो छे. पण क्यांइ जीनघरे, मुनीघरे एम नथी कह्यो. दसासुतस्कंध मध्ये पडिमाधारी साधुने पण त्रण जातना उपाश्रयमां रहेवु कह्युं. पण घर नथी कह्युं. एम अनेक साख जाणवी. ते माटे द्रुपदीने अधीकारे जीन घरे कह्युं. ए पाठ साचो छे. पण केवळनाणी जीन न जाणवा. जे जीनने घर होवे ते जीन जाणवा. घरवासी जीन केवळनाणी, मनपर्जवनाणी जीन न होवे. जीनघर ते अवधनाणीजीन चार गतना जीव, चार जातना देवता तेहने घर होवे. अवधनाणीजीनने सुत्र मध्ये घणा ठामे घर कह्यां छे ते कहेछे. ज्ञाता अध्ययन बीजे कह्युं जे वीजय चोर राजग्रही नगरीमां जेटलां ठाम जाणे छे तेमांथी कहेछे.

रायगिहस्स नगरस्स बहुणि अइभिगमणाणिय निगमणाणिय पाणीगाराणिय वेस्यागाराणिय तक्करठांणाणिय संघाडगाणिय तियाणिय चउक्काणिय चच्चराणिय नागघराणिय भूतघराणिय जखदेउलाणिय.

अर्थ.—रा. राजग्रही, न. नगरमां. ब. घणा, अ. पेसवाना मर्म जाणे. नी. नीशरवाना मर्म जाणे. पा. मद्यपानना घर तेणे ठामे. वे. वेस्याने घरे. त. चोरने ठामे (चोर रहेवाना घर.) सं. बे वाट पडे. ती. तीन वाट लागे. च. चार वाट एकठी मीले. च. चाचरना ठाम. ना. नाग देवना घर. भु. भुतना घर. ज. जक्षना देहेरां.

ए अवधनाणी जीन, जक्ष, भुतना घर कह्या. वीजय चोर जक्षादीकना घर जाणेछे. इत्यादीक ज्ञाता सुत्रमां घणा ठामनो वीस्तार छे जे वीजय चोर आटलां ठाम जाणेछे. तो तीर्थंकरना देहेरां नहीं जाणतो होवे? पण एम जाणजो जे ते काले राजग्रहीमां तीर्थंकरना देहेरां नथीज.

कराववो, घणो धन आपवो कह्यो, अने धर्माचार्यनी भक्ति करवी कही त्यां स्नान, भोजन, धन आपवो न कह्यो,जे वीरतवंतने न कल्पे ते माटे तेहने तो वंदइ नमंसइ ने सुझतो असणादीक चउद प्रकारनो दान देवो कह्यो, तीम जेहवो पुरुष होवे तीम तेहनी प्रतिमा पण तेहवीज होवे, अने तेहनी भक्ति पण तेहवीज होवे, ध्रुपतीए पुजा कीधी ते श्रीवित्तरागनी प्रतिमा न होवे वित्तरागने साक्षात पणे कोइ श्रावके ध्रुपतीनी परे पुज्या नहीं कह्या. तो भगवंतथकी प्रतिमा मोटी कीम जाणी ? ए प्रतिमा भगवंतनी नहीं.

वळी तमे हमणां प्रतिमा पुजोछो, तेहने वस्त्र नथी पहीरावता ग्रहेणा, पहीरावो छो, अधुरी भक्ति करोछो, दीगंबर वस्त्र ने आभुषण एकेही न पहीरावे. बोधनी प्रतिमाने गळे जनोइज होयछे. माथे सीखा राखे छे. तेमां साची रीत ते कही ? देवताने ध्रुपतीए तो घरेणांने कपडां बेहु पहीराव्यां, ते प्रमाणे तो तमारी प्रतिमा नथी दीसती. प्रतिमा जे रीते करवी, पुजवी, ते रीत सुत्र पाठे होवे तो बतावो. १. तीवारे हींस्या धरमी कहेस्ये जे जीणघर कीम कह्यो ते उत्तर.

१. जंबुद्विप पन्नती मध्ये श्रीरुखभदेवस्वामीये संजम लीधो तीहां आगारीए अणगारिए पव्वइये कह्यो जे, आगार कहीतां घर मुकीने अणगार थीया.

२. ज्ञाता मध्ये मल्लीनाथ स्वामीए संजम लीधो तीहां आगाराउ अणगारीयं पव्वइए आ गृहवास मुकीने अणगारपणुं अंगीकार करे कह्यो.

३. आचारंगमध्ये श्रीमाहावीरे संजम लीधो तीहां आगाराउ अणगारीयं पव्वइए केहतां घरवास मुकीने अणगारपणुं अंगीकार करे एम कह्यो एम सुत्रमध्ये ठाम ठाम जेणे दीक्षा लीधी; श्रीवित्तरागे, गणधरे, राजाए, शेठे, सेनापतिए,गाथापतिए, माहाबळ कुमारे, सुदर्शन शेठे रुखभदत्त, देवानंदाए, जेवंती, मृगावंती, उदाइराजा, कार्तिकशेठ, मेघकुमार, थावर्चापुत्र, सेलकराजा, सुखदेव इत्यादीक जेणे संजम लीधा तीहां कह्यो. आगाराउ अणगारीयं पव्वइए कहेतां जे घरवास मुकीने अणगार पणुं अंगीकार करे. घर मुकीने नीकळया ए लेखे केवळनाणी जीन अने मनपर्जवनाणी जीन ए बे जीनने तो घर न होवे, जे केवळी जीनने घर कहेछे ते माहा मुर्ख, मंदबुद्धि, भारे कर्मि जीव दुर्लभबोधी जाणवा.

वळी राजग्रही, चंपा, तुंगीया, आलंभीया, सावथि प्रमुख घणे ठामे श्री वित्तराग तथा मुनीराज पधार्या तीहां राजा, शेठ, सेनापति प्रमुख वांदवा गया

तीहां इम कह्यो जे, चालो हे देवाणुंप्रीया गुणसील, पुर्णभद्र बाग मध्ये भगवंत तथा साधु आव्या छे तेहने वांदवा जायछे; पण इम कोइए न कह्यो जे, चालो जीनघरे जाइए. तो एम जाणजो जे भगवंत केवळीने घर न होवे, जे कहे छे ते एकांत जुठुं कहे छे.

वळी सुत्रमध्ये ठाम ठाम आचारंग, ठाणांगजी, वृहतकल्प मध्ये जीहां साधु रहे ते ठामने "उवसयं" कहेतां अल्पकाळना आश्रयमाटे उपाश्रय कह्यो छे. पण क्यांइ जीनघरे, मुनीघरे एम नथी कह्यो. दसाश्रुतस्कंध मध्ये पडिमाधारी साधुने पण त्रण जातना उपाश्रयमां रहेवु कहुं. पण घर नथी कहुं. एम अनेक साख जाणवी. ते माटे द्रुपदीने अधीकारे जीन घरे कहुं. ए पाठ साचो छे. पण केवळनाणी जीन न जाणवा. जे जीनने घर होवे ते जीन जाणवा. घरवासी जीन केवळनाणी, मनपर्जवनाणी जीन न होवे. जीनघर ते अवधनाणीजीन चार गतना जीव, चार जातना देवता तेहने घर होवे. अवधनाणीजीनने सुत्र मध्ये घणा ठामे घर कह्यां छे ते कहेछे. ज्ञाता अध्ययन बीजे कहुं जे वीजय चोर राजग्रही नगरीमां जेटलां ठाम जाणे छे तेमांथी कहेछे.

रायगिहस्स नगरस्स बहुणि अइभिगमणाणिय निगमणाणिय पाणीगाराणिय वेस्यागाराणिय तक्करठांणाणिय संघाडगाणिय तियाणिय चउक्काणिय चच्चराणिय नागघराणिय भूतघराणिय जखदेउलाणिय.

अर्थ.—रा. राजग्रही, न. नगरमां. ब. घणा, अ. पेसवाना मर्म जाणे. नी. नीशरवाना मर्म जाणे. पा. मद्यपानना घर तेणे ठामे. वे. वेस्याने घरे. त. चोरने ठामे (चोर रहेवाना घर.) सं. बे वाट पडे. ती. तीन वाट लागे. च. चार वाट एकठी मीले. च. चाचरना ठाम. ना. नाग देवना घर. भु. भुतना घर. ज. जक्षना देहेरां.

ए अवधनाणी जीन, जक्ष, भुतना घर कह्या. वीजय चोर जक्षादीकना घर जाणेछे. इत्यादीक ज्ञाता सुत्रमां घणा ठामनो वीस्तार छे जे वीजय चोर आटलां ठाम जाणेछे. तो तीर्थंकरना देहेरां नहीं जाणतो होवे ? पण एम जाणजो जे ते काले राजग्रहीमां तीर्थंकरना देहेरां नथीज.

वळी ज्ञाता बीजे अध्ययने भद्रासार्थवाही पुत्र वंछा माटे पुजा चीतवे छे तीहां पण कह्यो छे जे. जेणेव नाग घरे जाव वेसमण घरे नागना घर छे, जक्षना, वेसमण-ना घर छे जाव शब्दमध्ये एटला द्वार कह्या. नागघर, भुनघर, जक्षघर, इंद्रघर, खंधघर, रुद्रघर, सीवघर, वेसमणघर, तो इम जाणजो जे अवधनाणी जीनने घर कह्या छे. जे देवताने घर तेहनी प्रतिमाने पण घर. अने वित्तरागने घर नथी तो तेनी प्रति-माने घर स्याने होस्ये ?

वळी कोइ कहे तीर्थंकर वीना बीजाने जीन कीहां कह्या छे. ते उत्तर.

१ तीर्थंकरने जीन कहीये. २ सामान्यकेवळीने जीन कहीए. ३ अवधनाणीने जीन कहीए. ४ मनपर्जवनाणीने जीन कहीए. ५ बारमा गुणठाणावाळाने जीन कहीए. ६ चउद पुर्विने जीन कहीए. ७ जावत दशपुर्विलगे जीन कहीए. ८ अ-ग्यारमा गुणठाणावाळाने जीन कहीए. ९ आवती चोवीसीने जीन कहीए. १० जीन नामे द्वीपने जीन कहीए. ११ जीन नामे समुद्रने जीन कहीए. १२ कंदर्पने जीन कहीए १३ नारायण, कृष्णने जीन कहीए. १४ वहु धनवंतने जीन कहीए.

कंदर्पने जीन कह्यो ते कीसा ग्रंथनी साखे ? हेमाचार्य कृत्य हेमी नाम माळा अनेकार्थि मध्ये श्लोक कह्यो.

वीतरागोजिनोचैव ॥ जिनसामान्यकेवली ॥
कंदर्प्पोजिनोस्यात ॥ जिननारायणो ॥ १ ॥

अर्थः—१ अरीहंत घातीकर्म जीत्या ते माटे जीन. २ इम सामान्यकेवळी पण चार धातीकर्म जीत्या ते माटे जीन. ३ कंदर्प्प सर्व जीवने व्याप्यो ते माटे जीन वासुदेव भुजाबले त्रण खंड जीत्या ते माटे जीन. पछे जेहवो अवसर प्रस्ताव तेहवो अर्थ जाणवो.

वळी ध्रुपदी परणवाने अवसरे नियाणाना तीव्र उदय मध्ये भरतारनी वांच्छा विषयर्थिथकी पुजीछे. ते वेळा चारित्र मोहनीनो उदय तिव्र छे. मीथ्यात्व दृष्टी छे ते मीथ्यातने उदये श्री वित्तराग निरागी उपर भावभक्ति नथी. ते माटे एने अव-धनाणी जीननी प्रतिमा जाणवी. तीवारे हींस्या धरमी कहे अवधनाणी जीननी प्रतिमा होवे तो नमोथुणं कीम कहे अवधनाणी मध्ये तो नमोथुणंना गुण कीहांथकी तेनो उत्तर अवधनाणी मध्ये तो नमोथुणंना गुण कीहांथकी ए वात साची छे पण अणआरिहंतने मुर्खलोकोए अरिहंत करी जाण्या छे, तीर्थंकर करी मान्या छे, अने नमोथुणं पण कह्या छे ते साख सुत्रमध्येथी लखी छे.

१. भगवती सतक आठमे उदेसे पांचमे गोसाळाना श्रावक वखाण्या तीहां कह्यो छे जेः—

इचेतेदुवालस्स आजीविय उवसग्गा अरिहं देवतागा अम्मा पीउसु सुसागा.

अर्थः—एम ए बारे आजीवीक गोसालाना मुख्य श्रावक कह्या. आ. गोसालाने अरीहंतनी कल्पनाए करी अर्हपणाथकी माता पीतानी सुसुखाना करणहार.

अरीहंतनी भक्तिना करणहार कह्या. आणंदवत तेहने मने गोसाळो अरीहंत छे. ए श्रावक गोसाळाने नमोथुणं कहेछे के नथी कहेता? अरिहंत जाण्या तीहां नमोथुणं नियमा थयो.

२. वळी सतक पंदरमे कह्युं गोसालो मंखलीपुत्र सावराथि नगरीये

अणिणा जिणप्पलावी अणअरहा अरहप्पलावी अकेवली केवलीप्पलावी असवन्नु सव्वनु प्पलावी आजिणे जिणसद्धं प्पगा समाणे विहरई.

अर्थः—जीन नथी तेहवोथकी जीन छुं एहवो प्रलाप करे, अरिहंत नहीं अने अरिहंत छुं इसो प्रलाप करी कहे, केवळज्ञान नहीं अने मुखसो कहे के केवळी छुं, सर्व पदार्थनो जाण नहीं अने कहे हुं सर्व पदार्थनो जाणछुं. अजीन थको जीन छुं इसो शब्द कहेतोथको विचरे.

अजीन, अणअरिहंत, अकेवळी, असर्वज्ञथको जीन, अरीहंत, केवळी. सर्वज्ञ कहेवाय छे तेना मानणहार तिर्थंकर करी मानेछे नमोथुणं कहेछे.

३. वळी पंदरमे सतके गोसालानो अयंपुल श्रावक चीतवे छे जेः—

एवं खलु मम धम्मायरिय धम्मोवएसए गोसाले मंखलीपुत्ते उपन्न नाण दंसणधरे जाव सव्वनु सव्वदरसी इहेव सावथीए नयरीए हालाह लीइं कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघस परिवुडेआजीविएसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ.

अर्थः—ए. एम निश्चे मारो धर्माचार्य, धर्म उपदेश दातार गोसाल मंखलीपुत्र उ. उपना ज्ञान, दर्शणना धरणहार. जा. इत्यादी सर्वज्ञ. स. सर्वना देखणहार. इ.

इहांज. सा. सावराथि नगरीने विषे. हा. हालाहल. कुंभकारीनो. कुं. कुंभार आपणने विषे. आ. आजीवक संघाते परवर्यो. आ. आजीव समयं शास्त्रेकरी आपणा आतमाने भावतोथको विचरेछे.

तेहने काले सुर्य उगतां हुं जइने वांदीश. ए तो गोसाळाने अरिहंत जाणेछे अने नमोथुणं पण कहेछे.

४. वळी उपासग सातमे अध्ययने सकदाल कुंभारने देवता कही गयो.

एहितेणं देवाणुंपीया कल्ले इहं महामाहणे उप्पन नाण दंसण धरे तीय पडुप्पन्नामणागयजाणये अरहा जिणे केवली सव्वन्नु सव्वदरसी तिलोगं पेहिय महियए पुईए सदेव मणुस्सा सुरस्स लोगस्स अचाणिजे वंदणीजे पुयणीजे सक्कारणीजे सम्माणणिजे कल्लाणं मंगलं देवीयं चेइयं जाव पजुवासणिजे सचकम्म संपया संपउत्ते तेणं तुभवं वंदिजाहि जाव पजुवासेजाहिं पाडिहारियेणं पीढ फलग सिजा संथारएणं उवानिमंते जाहि.

अर्थः—ए. इहां आवशे. दे. हे देवानुंप्रीया. क. काले. इ. इहां. म. मोहेटो माहानुंभाव. उ. उपना. ना. ज्ञान. दं. दर्सण चारींत्रनो. ध. धरणहार ती. अतितकाळ. प. वर्तमानकाळ. अ. अनागतकाळनो. अ. अरिहंत. जी. जीन. के. केवळी. स. सर्वज्ञ जाण. सं. सर्व दर्सी. ती. त्रीलोक. पे. दीठो. म. महित. पु. पुजनिक. स. देवता सहीत. म. मनुष्य. अ. असुर कुमारने. लो. लोकने. अ. अर्चनिक, पुजनिक. वं. वंदानिक. पु. पुजनिक. स. सत्कार करवा जोग्य. स. सन्मान करवा जोग्य. क. कल्याणकारी. मं. मंगळीक. दे. देवसमान. चे. ज्ञानवंत. जा. जावत. प. सेवा करवा जोग्य रुडा कर्मना. स. सत्य कर्तव्यरुप. सं. संपदा. सं. संयुक्त. ते. तेहने. तु. तुम्हे. वं. वांदजो. जा. जावत. प. सेवा जोग्य सेवा करजो. पा. पाढीआरुं. पी. बाजोट. फ. पाटीयुं. सी. सीज्या, पाट अथवा स्थान. स. संथारोतृणादी. उ. समीप आवी आमंत्रजे.

इत्यादीक एवी रीते देवताए सकदाल कुंभारने कह्युं तीवारे सकदाले जाण्युं, माहारा धर्माचार्य गोसाळो मंखलीपुत्र एहवा गुणवंत छे. ते काळे आवशे एम जाण्युं.

अने देवताए तो श्री महावीरस्वामी आश्रे कह्युं हतुं. ए लेखे गोसाळाना श्रावक नमोथुणं अणअरिहंतने अरिहंत जाणीने कहेछे ए चार सुत्रनी.

५. तथा छ दीसाचर आदि देइ गोसाळामति साधु पडीकमणुं करे तीवारे अरिहंत केहेने जाणीने नमोथुणं कहेछे ? गोसाळानेज अरिहंत जाणीने कहे छे तथा गोशाळाना श्रावक नमोथुणं गोसाळाने अरिहंत जाणीने कहेछे.

६. तथा जमालीना श्रावक, साधु भगवंतना प्रतिनिक आवश्यक करतां नमोथुणं कहेछे, ते केहेने कहेछे ? जमालीनेज केवळी जाणीने कहेछे.

७ तथा अनुजोगद्वार मध्ये लोकोत्तर द्रव्यासकना करणहार वखाण्या, ते भगवंतनी आज्ञा बारे छे अने बे टंकना आवश्यक करे छे, ने भगवंते तेहने मीथ्या-द्रष्टी वह्या छे. ते नमोथुणं केहेने करेछे ते पाठ.

जेइमे श्रमणगुण मुक्क योगी छकायनिरणुंकंपा हयाइंव उद्दामा गयाइव निरकुंसा घठामठा तुप्पोठा पंडुरपड पाउवणा जिणाणं अणाणाए सछंद विहरिउणं उभनकाल आवस्सयं उवटंति.

अर्थ.—जे. जेए प्रत्यक्ष. स. साधुना गुणथकी. मु. मुकयाछे. जो. व्यापार जेणे. छ. छकायने वीसे गइछे अनुकंपा जेहनी हं. घोडानी परे. उ. चोकडा रहीत. ग. हस्तीनी परे. नी. गुरुनी आज्ञारुप अंकुस रहीत. घ. घसींछे मांखणे जंघ जेणे म मठाडुंछे सरीर मसतके तेलादीक जेणे तु. चोपडया होठ मदनार्थे. पं. पंडुर उजळा. पा. धोया वस्त्र. जी. पेहेर्याछे जेणे. अ. तीर्थंकरनी अण आज्ञाये. स. पोताने छांदे. वी. वीचरीने उ. प्रभाते सांजे. आ. आवश्यकने अर्थे उ. उठे.

८. तथा अभव्य साधुना वेसमां रह्यो नमोथुणं कहे. ते केहने कहेछे ? श्री-वित्तरागने तो देव करी जाणतो नथी, तो नमोथुणंनो स्वामी कोण ? एम अनेक सुत्र साखछे. जे अज्ञान, मुर्ख, मीथ्यात्वनिा लीधा अजीनने जीन जाणे, ने नमोथु-णं कहे पण वित्तरागपणे ओलख्या वीना नमोथुणं कह्यानो लाभ नथी.

तथा कोइए पोताना कुळदेवनी पुजा सावद्य आरंभ करी कीधी, अने नमो-थुणं ते आगळे कह्यां, ते कांइ नमोथुणं कह्या माटे ते कुळदेवनी पुजा समकित खाते न थइ, तीम द्रुपतीये नमोथुंण कामदेवादीक अवधनाणी जीन आगळे कह्यो.

तो कोइ ए सावद्य पुजाना वंछकने तीर्थंकर केवळनाणी जीन जाणवा नहीं.

वळी एहीज द्रुपदी परण्या पछी समकित पामी, संजम पामी, तीवार पछी क्यांइ प्रतिमा पुजी कही नथी. वळी प्रतिमा तीर्थंकरनी होवे तो लोभ हस्ते करी पुंजती प्रतिमाने रुंघटो कीम करे? जो तीर्थंकरनी प्रतिमा होवे तो स्त्री कीम फरसे?

वळी तमे कहोछो जे, जीनप्रतिमा जीन सरखी. तो श्री वित्तरागे तो श्री उत्तराध्ययन सोळमे अध्ययने तथा समवायांग नवमे समवाये, तथा प्रस्नव्याकरण चोथे संवरद्वारे, एम वीजे पण घणे सुत्रे ब्रह्मचारीने एटला बोल वरज्या छे.

१ स्त्री सहीत स्थानक, २ स्त्रीनी कथा, ३ स्त्री थकी एक आसने वेसवो. ४ स्त्रीनो अंग निरखवो. ५ स्त्रीनो शब्द सांभळवो. ६ स्त्रीनो भोग संभळाववो. ७ स्त्रीनो फरसवो. एटला बोल वरज्या छे. वळी आचारंग, प्रश्नव्याकरण, समवायंगे पचवीस भावना मध्ये पण स्त्रीनो फरस वरज्यो छे. साधु, साववी, ब्रह्मचारी, श्रावक श्राविकाने पण एहीज रीत पाळवी कही छे. तो श्री वित्तराग त्रीलोकना स्वामी, जगत चींतामणी विश्वभूषण, तेहने स्त्री केम फरसे? ए वात नीपट अयुक्त छे.

१. श्री वीरवर्धमानस्वामीने देवानंदाये पुत्रने स्नेहे सामो जोयो स्तने दुध आव्यो, पण पुत्रनीज बुद्धे भगवंतने फरस्या नहीं.

२. वळी देवकी राणी छ अणगारने पुत्रने जाणी घणो स्नेह आव्यो, स्तनमां दुध आव्यो; पण मुनीने फरस्या नहीं.

३. वळी उववाइ सुत्रे कह्यो. कोणीक प्रमुख पुरुषे तो भगवंतनी आगळे वेसीने धर्म कथा सांभळी. अने सुभद्रा प्रमुख राणीए "ठायाचेव पज्जुवासंति" उभीथकी धर्म कथा सांभळी. स्त्री जात भगवंतने आगळ वेसवो पण न पामे, तो फरसवो कीहांथी?

४. भगवती सतक नवमे देवानंदा ब्राह्मणी भगवतनी माताये उभां रही धर्म सांभळ्यो; पण वेसवा पाम्यां नहीं.

५. इम बारमे सतके जेवंती, मृगावंती पण एमज.

६. वळी गणधर गौतमादिक " नाइदुरमणासन्ने अति नजीक नहीं " अति वेगळा नहीं अति दुकडा नहीं इम वेठा.

७. इम इंद्र, देवता, कोणीक राजा, श्रीकृष्ण, आणद, कामदेव, संख, पोखळी प्रमुख श्रावक ते पण अदुरसामंते (मर्यादाये) वेठा. पण फरस कीधो नहीं.

८. तथा जेवंती मृगावंती, चेलणा, सीवानंदा प्रमुख श्राविका दुर रही, पण तीलक करवाने अडी नहीं. इम कोणीकनी राणी पण, ए लेखे जोतां श्री वित्तरागना मारगमध्ये स्त्रीनो संग योग्य नहीं तो श्री जीन प्रतिमां जीन सरखी तेहने स्त्रीनो संघटो कीम जोइए ? एणे मेळे जोतां ए प्रतिमा तीर्थंकरनी नहीं.

वळी श्री वित्तरागने तथा साधुने वांदवा गया छे. श्री भरथेसर, श्रीकृष्ण, कोणीक, उदाइ राजा, रायप्रदेसी चीतसारथी, आणद प्रमुख श्रावक तेणे पांच अभीगम साचव्यां तीहां सचिताणं दवाणं विउसरणयाई.

स. सचीत. फूल, तंबोळादीक द. द्रव्य. वि. अळगा मुके. मंजे.

सचीत द्रव्य दुरे कह्यां. जे रीत तीर्थंकरनी ते रीत साधु वांदवानी; तो तीर्थंकरनी प्रतिमानी रीत जुदी कीम पडी ? जीनप्रतिमा जीन सरखी तुमे कहो छो. ए वात कीम मळी ? ते माटे द्रुपदीने अधीकारे एटला बोलनो निर्णय करजो.

१ द्रुपदीनो पीता मीथ्यादृष्टी २ द्रुपदी श्राविका नहीं. ३ द्रुपदी समदृष्टी नहीं. ४ अने प्रतिमा पण तीर्थंकरनी नहीं. ते केम जे १ प्रथमथी तो मोरपींछथकी पुंजी. २ बीजो पुजा भोगी देवतानी परे अभोगीं देवनी कीधी. ३ वळी जीन घरे कह्यो. ते जीनराजने घर होवे नहीं ४ ए लेखे अवधनाणी जीननी प्रतिमा काम देवादीकनी जाणवी. जे जीनने घर होवे, जे जीनने स्त्री फरसे. जे जीनने पुष्प, चंदन, धुप, दीप, स्नान खपे ते जीननी प्रतिमा जाणवी. अने अवधनाणी जीन; नाग, भुत, जक्ष, वेसमणने तो स्त्री सुखे फरस करे. ते साख नंदी सुत्रे रोहाने अधिकारे छे. राजाने पांच पीता कह्या, ते मध्ये राणी वेसमण देवतानी प्रतिमाने फरसी. काम सौभाग्यनी अभीलाखथकी, ते माटे हे राजा ! तुं वेसमण देवनो पुत्र छे. ए अवधनाणी जीनने स्त्री फरसी, ते माटे द्रुपदीनी पण वेसमण देवतानी प्रतिमा जाणीए. नमोथुणं कह्या माटे कोइ तीर्थंकरनी प्रतिमा जाणे ते उपर तो अनेक साख सुत्रनी छे.

वळी हींसा धरमी कहेसे द्रुपदी नारद आव्यो उठी नहीं.ते माटे समदृष्टी कहीये तेनो उत्तरः द्रुपदीने परण्या पछी नियाणो पुरो थयो छे. पछे तो समाकितव्रत सुखे पामे एहनो अटकाव नथी परण्यापछी नियाणो पुरो थयो छे, तीवारे पछे धरम सुखे पामे पण परण्या पेहेलां समकित व्रत हतां नहीं.कोइ कहेस्ये परण्या केडे द्रुपदी समकित व्रत पामी ते कीसे ठामे,कीसा गुरु पाशे ते कहो;समकीत तो कुंवारापणानोज हतो. परण्या केडे पामी होय तो गुरुना नाम ठाम कहो. ते उत्तरः जो द्रुपदीना गुरुना

नाम ठामनो निर्णय करोछो तो प्रतिमानो तो निर्णय करो. के द्रुपदीये प्रतिमा पुजी ते कीया तीर्थंकरनी, कोणे करावी, केहेने वारे थइ एटलो निर्णय कहो. अने समकितनो द्रुपदीनो गुरु पुछोछो तो श्रीकृष्ण, वळभद्र, समुद्रविजय, उग्रसेन, आदी शब्द जादव कीया गुरु पाशे समकीत पाम्या ते गुरुनो नाम बतावो ? तथा राजेमती माहासती सीयळवंता बहुसुया उतराध्ययन बावीसमे अध्ययने कही छे ते संसारमां थकी कीया गुरु पाशे बहु सुत थइ ? ते गुरुनो नाम तुमेज कहो. अने द्रुपदीए नारद विनय न कीधो असंजती जाणीने ते माटे समकीती कहोछो ते तो भलुं कर्युं छे, श्रीकृष्ण समदृष्टी हता तेणे पंडु राजानी परे नारदनो विनय कर्यो छे. "वंदइ नमंसइ" पाठ छे. तेणे नारदनो विनय कीम कीधो ? ए पाठ ज्ञाता मध्ये सोळमे अध्ययने छे. जो लोकीक मीथ्यात्व समदृष्टी कार्य विशेखे सेवे तोपण धर्म न जाणे.

वळी जीनमारगनी रीते पादोगमन संथारो तामली तापशे तथा पुरण तापशे कीधो, पीण कांइ जीनमारगी न थया. तथा भरथेसरे भरथखेत्र साधतां तेर अठम पोसह कीधा. पदमोत्तर राजाए पदीने काजे अठम कीधो पण कांइ अगीयारमां व्रतमांही न गणाय. सर्व रीत जीन सरखी होत तो जीन तीर्थंकरनी प्रतिमा जाणत. पीताने भुख लाग्येयके पुत्रनो भक्षण करे ए अयुक्त कर्म छे, तेम तीर्थंकरना छोरु पुत्र समान छकायना जीव ते तीर्थंकरनी भक्ति करवाने हणे, ते पण अयुक्त, ए भक्ति वितराग माने नहीं.

वळी हींसाधरमी कहेछे मानेछे. ओघानिर्युक्तिनी टीका गंधहस्ती आचार्यनी कीधी ते मध्ये कह्यो छे जे, द्रुपदीने एक पुत्र थयो तीवार पछी समकीत पामी. ए पाठ लखेछे.

उंघनिर्युक्ताइ युक्तं इथीजणसंघट्ट तिविहं तिविहेणं वजए· सादु इतिवचनात् स्त्रिविधि स्त्रिविधि नसाधुनां वर्जनीय साधो श्चाकल्प नीयं कर्मचरत सम्यक्ता भावात् द्रोपद्या आगमेखु श्रोयते लोम हथे परामुसई लोम हस्ते नपरामीश्रति परमाजय तीत्यर्थः तत्पर्माजिनन जिनस्पस्पर्सोजात जिनस्य अस्त्रीजन सपर्संत आसातना स्यात आसातना सम्यक्ता भावात् एतए

द्रौपदी न सम्यक्त धारणी संभाव्यते पुनःउंघनिर्युक्त चिरंत नटी कार्या गंधहस्ता चार्येण युक्तं द्रौपद्या नृप पूत्रीका निदान क्ति भि भसार पंचस्या छत निदान भोजात वाजाएक पुत्रः पुनः पश्चात साधु सका समाप्प द्रव्यरं समक्त मारगो धरंतो.

ए ओघनिर्युक्तिनो पाठ अने गंधहस्ती आचार्यकृत तीहांथी उत्तर जोजो.

---

२०. सुरियाभे तथा वजेपोळीये प्रतिमा पुजी कहेछे तेनो उत्तर.

केटलाक हींसाधर्मि कहेछे जे:—सुरियाभ देवताये अने वीजय पोळीये प्रतिमां पुजी छे. माटे अमे पण पुजीयेछीये. तेहनो उत्तर कहेछे. सुरियाभ अने वीजयपोळीयानो अधीकार एक सरखो छे. ते माटे सुरियाभनो अधीकार रायपशेणी सुत्रमध्येथी कहेछे.

१. प्रथम सुरियाभ देवताये श्री माहावीरदेवने अमलकंपा नगरिये अंबसाल वनमां दीठा तींहां साहमो जइ नमोथुणं कह्यो. ते ठाणं संपत्ताणं लगे कह्यो. सेख पद कल्पीत छे. २. पछे इम कह्यो जे.

तं महाफलं खलु देवाणु प्पिया तहारुवाणं अरीहंताणं भगवंताणं नामगोयस्सवि सचणयाए किमंग पुण अभिगमण वंदण नमंसण पडीपुछण पज्जुवासणयाए एगसवि आयरीयस्स धम्मीयस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण विउलस्सअठस्स गहणयाए.

अर्थ—तं. ते म. मोटो फळ. ख. निश्चे. दे देवताने वालो त. तीर्थंकरने गुणेकरी सहीत तेहनो. अ. अरीहंतनो. भ. भगवंतनो. ना. नाम गोत्रनुं ते रुडां गोत्र ने गुणनीपन तेहनुं पण. स. सांभळवे करी. की. तेहनुं सुं कहीवुं. पु. वळी. अ. साहमु जावुं. वं. वांदवुं स्तुती. न. प्रणामनुं करवुं. प. प्रस्नादीकनुं वळी पुछवुं. ध. धर्म संबंधी ने. सु. सुं वचननो. स. सांभळवो. की. तेहनुं सु कहीवुं. पु. वळी. वि. वीसतीर्ण. अ. अर्थने. ग. ग्रहीने.

इहां वांदवानो, उपदेश सांभळवानो मोटो लाभ कह्यो. पीण सुरियाभे ना-

टीकनो मोटो लाभ चींतव्यो नहीं. वांदवो ने उपदेस सांभळवो ते खयोपसम भाव छे. भगवंतनी आज्ञानो करतव्य छे, अने नाटीक उदय भाव छे. भगवतनी आज्ञा बाहारनो करतव्य छे.

३ वळी सुरीयाभे देवलोकमां रही वंदणा करी ने इम कह्यो.

एवं मे पच्चा हियाए सुहाए खमाए निसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सई.

अर्थ—ए. एह भगवंतनु पदनादीक. मे. मुजने. ९. परभव जन्मांतरे. हि. हीत भणी पथ्यनी परे. सु. सुख भणी. ख. जोगता भणी रोगनो विनाश करवा ओषधनीपरे. नि. मोक्ष भणी. आ. भवनी परंपरा लगे एह सुखनुं कारण केडे. भ. हुस्ये एम कही.

पेचा कहेतां परलोकने वीशे हीतकारी तथा अनुगामीक फळ कह्युं. पेचा शब्दे परलोक ए अर्थ घणे सुत्रे कह्यो छे. उतराध्ययन नवमे अध्ययने अठावनमी गाथामां पेहेला बे पदमां कह्यु छे.

इहंसि उत्तमो भंते ॥ पेच्चाहोहिसिउत्तमो ॥

अर्थ.—इ. ए भवने वीषे उ. प्रधान छो. भं. हे पुज. पे. परभवने विषे. हो. होइस. उ. उत्तम.

तथा प्रस्नव्याकरणे संवरद्वारे पेहेले अध्ययने पेचा भावियं आगमेसि भेद कहेतां प. परभवने विषे. भा. सुख उपजावे. आ. आगमी काळे. भ. कल्याणनो करणहार एहवो पाठ छे. तीम भगवंतने वंदणा कीधी, ते परलोकनो अर्थ सीद्ध पणो गण्यो.

४. तीवारे पछी सुरियाभे सेवक देवने तेडीने इम कह्युं तुमे भगवंत पासे जाओ. वंदणा करी जोयण प्रमाणे पुजो, पाणी छांटो, पुष्प वृष्टी करो. दिव्वं सूरवराभिगगमणजोग करेह कहेतां दि. प्रधान वीक्रीय. सु. देवताने आववा जोग भोमिका करो; पण इम न कह्युं जे, भगवंतने रहेवा जोग करो. स्यामाटे जे भगवंत तो फूल, पाणी, धुपदीपना भोगी नथी. ए आवरणहारनी शोभाछे. पछे शेवक देवताये तीमज कीधो. फुलने अधीकारे हींस्याधर्मी कहेछे जे "जलया थलया भासूर" जळजा ते (कमळना) फुल थळजा ते (जाइ, जुइना) फुल, ते सचीत फुलनी वृष्टी मानेछे. वळी समवायं चोत्रीसमे समवाये कह्यो. "" जलथलय " ते

सचीत फुल मानेछे. तेहनो उत्तरःजेवारे सुरियाभने सेवके पुष्पनी वृष्टी कीधी तीहां अने पाणीनी वृष्टी कीधी तीहां कह्युं छे.

अभं वद्दलं विउवईश्त्ता. पुप्फवद्दलं विउवईश्त्ता.

अर्थः—अ. सेवक देवता. पु. फुलनुं वादळ. वि. विकुर्वे. विक्रे कीधानो पाठ छे. जीम जन्ममहोच्छव करतां घणा द्वीप, समुद्रना फुल, माटी, पाणी आण्या कह्यां. अने जीहां आण्यां छे तीहां सचीतहीज जाणवा. तीहां. अभवद्दलं पुप्फवद्दलं विउव्वइ. कहेता अ. सेवक देवता. पु. फुल नुं वादळ. वि. विकुर्वे. एहवो पाठ नथी कह्यो अने जीहां अभवद्दलं पुप्फवद्दलं विउव्वई. कहेतां अ. सेवकदेवता पु. पुलनुं वादळ. वि. वीकुर्वे. कह्युं त्यां अचीतहीज छे, ते माटे अचीतफुल, पाणी, वीक्रे वादळ करी वरसाव्यां. अने चोत्रीसमे अतीशय मध्ये "जलथलज" कह्युं ते पण अतीशय मनुष्य देवताना कीधां नथी थातां; भगवंतना पुन्य प्रभावथकी स्वभावे प्रगट थायछे. स्वभावी वीस्सा पुदगळना परिणाम जाणवो जीम जुगळीयानां कल्पवृक्षनी परे. तथा कोइ बोल देवताकृत होवे तो पण अचीत होवे. जो समोसरणमध्ये, सचीत फुल, पाणी, होवे तो राजा, शेठ, सेनापती, वांदवा गया हता. तीहां पांच अभीग्रह साचव्यां ते मध्ये सचीत द्रव्य दुरे कीम मुक्यां! जो सचीतनो संघटो अयुक्त छे तो वर्जवा कह्यां. वळी भगवंतने १. चवन, २ जनम, ३ दीक्षा, ४ केवळ, ५ निर्वाण कल्याण कहीए. ते मध्ये जे कल्याण भगवंतने अवीरती मध्ये थयो छे तीहां सचीत अचीत बेहु द्रव्य होवे कोइनो अटकाव नहीं. त्या माटे जे तदा भगवंत पांच आश्रव सहीत छे. अने केवळ महोच्छवने समे भगवंत वीरती छे तेथ जुवो स्नान, वीलेपन, वस्त्र, आभुषण, पुष्प, इत्यादीक कांइ वस्तु भगवंतने संघटावी नहीं "वद्दलंविउवइ" कह्युं ते संसार अवस्थाना महोच्छव मध्ये नथी कह्युं एटलो फेर छे. वळी देवकृत वस्तु तो अचीत होवे. जो सचीत होवे तो बीजा साधुने सचीत सहीत थानक कीम कल्पे? वृतिकल्प पेहेले उदेसे कह्युं धान, पाणी, अग्नी, आहार, ओषध, आभ्रण, सहीत थानके, रहेवा ना कही छे ते माटे ए फुल, पाणी सचीत नहीं तथा कोणीक प्रमुख वांदवा गया तीहां पाणी, फुलनो आरंभ कीधो मार्ग छंटाव्या, पण समोसरण मध्ये छंटकाव्या नथी कह्या. अने नगर सीणगार्या, आरंभ कीधो ते पोताने छांदे; पण भगवंतनी आज्ञा नथी. वळी कोणीक राज मार्गमां जळ छांटी फुल वीखर्या ते मांहीथी भगवंतने काम शुं आव्युं ते कहो. ए वस्तु भगवंतने भोग आवी नथी. ए मांही भगवंतनी भक्ति

टीकनो मोटो लाभ चींतव्यो नहीं. वांदवो ने उपदेस सांभळवो ते खयोपसम भाव छे. भगवंतनी आज्ञानो करतव्य छे, अने नाटीक उदय भाव छे. भगवतनी आज्ञा बाहारनो करतव्य छे.

३ वळी सुरीयाभे देवलोकमां रही वंदणा करी ने इम कह्यो.

एवं मे पच्चा हियाए सुहाए खमाए निसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सई.

अर्थ—ए. एह भगवंतनु पदनादीक. मे. मुजने. प. परभव जन्मांतरे. हि. हीत भणी पथ्यनी परे. सु. सुख भणी. ख. जोगता भणी रोगनो विनाश करवा ओषधनीपरे. नि. मोक्ष भणी. आ. भवनी परंपरा लगे एह सुखनुं कारण केडे. भ. हुस्ये एम कही.

पेचा कहेतां परलोकने वीशे हीतकारी तथा अनुगामीक फळ कह्युं. पेचा शब्दे परलोक ए अर्थ घणे सुत्रे कह्यो छे. उतराध्ययन नवमे अध्ययने अठावनमी गाथामां पेहेला बे पदमां कह्युं छे.

इहंसि उत्तमो भंते ॥ पेच्चाहोहिसिउत्तमो ॥

अर्थ.—इ. ए भवने वीषे उ. प्रधान छो. भं. हे पुज. पे. परभवने विषे. हो. होइस. उ. उत्तम.

तथा प्रस्नव्याकरणे संवरद्वारे पेहेले अध्ययने पेचा भाविय आगमेसि भेद कहेतां प. परभवने विषे. भा. सुख उपजावे. आ. आगमी काळे. भ. कल्याणनो करणहार एहवो पाठ छे. तीम भगवंतने वंदणा कीधी, ते परलोकनो अर्थ सीद्ध पणो गण्यो.

४. तीवारे पछी सुरियाभे सेवक देवने तेडीने इम कह्युं तुमे भगवंत पासे जाओ. वंदणा करी जोयण प्रमाणे पुजो, पाणी छांटो, पुष्प वृष्टी करो. दिव्वं सूरवराभिगगमणजोग करेह कहेतां दि. प्रधान वीक्रीय. सु. देवताने आववा जोग भोमिका करो; पण इम न कह्युं जे, भगवंतने रहेवा जोग करो. स्यामाटे जे भगवंत तो फूल, पाणी, धुपदीपना भोगी नथी. ए आवरणहारनी शोभाछे. पछे शेवक देवताये तीमज कीधो. फुलने अधीकारे हींस्याधर्मि कहेछे जे " जलया थलया भासूर " जळजा ते (कमळना) फुल थळजा ते (जाइ, जुइना)फुल, ते सचीत फुलनी वृष्टी मानेछे. वळी समवायं चोत्रीसमे समवाये कह्यो. " " जलथलय " ते

सचीत फुल मानेछे. तेहनो उत्तर:जेवारे सुरियाभने सेवके पुष्पनी वृष्टी कीधी तीहां अने पाणीनी वृष्टी कीधी तीहां कह्युं छे.

अभं वद्दलं विउवईत्ता. पुप्फवद्दलं विउवईत्ता.

अर्थः—अ. सेवक देवता. पु. फुलनुं वादळ. वि. विक्रुवे. विके कीधानो पाठ छे. जीम जन्ममहोच्छव करतां घणा द्वीप, समुद्रना फुल, माटी, पाणी आण्या कह्यां. अने जीहां आण्यां छे तीहां सचीतहीज जाणवा. तीहां. अभवद्दलं पुष्फवद्दलं विउव्वई. कहेता अ. सेवक देवता. पु. फुल नुं वादळ. वि. विक्रुवे. एहवो पाठ नथी कह्यो अने जीहां अभवद्दलं पुष्फवद्दलं विउव्वई. कहेता अ. सेवकदेवता पु. फुलनुं वादळ. वि. वीक्रुवे. कह्युं त्यां अचीतहीज छे, ते माटे अचीतफुल, पाणी, वीक्रे वादळ करी वरसाव्यां. अने चोत्रीसमे अतीशय मध्ये "जळथलज" कह्युं ते पण अतीशय मनुष्य देवताना कीधां नथी थातां; भगवंतना पुन्य प्रभावथकी स्वभावे प्रगट थायछे. स्वभावी वीस्सा पुदगळना परिणाम जाणवो जीम जुगळीयानां कल्पवृक्षनी पेरे. तथा कोइ बोल देवताकृत होवे तो पण अचीत होवे. जो समोसरणमध्ये, सचीत फुल, पाणी, होवे तो राजा, शेठ, सेनापती, वांदवा गया हता. तीहां पांच अभीग्रह साचव्यां ते मध्ये सचीत द्रव्य दुरे कीम मुक्यां! जो सचीतनो संघटो अयुक्त छे तो वर्जवा कह्यां. वळी भगवंतने १. चवन, २ जनम, ३ दीक्षा, ४ केवळ, ५ निर्वाण कल्याण कहीए. ते मध्ये जे कल्याण भगवंतने अवीरती मध्ये थयो छे तीहां सचीत अचीत बेहु द्रव्य होवे कोइनो अटकाव नहीं. स्या माटे जे तदा भगवंत पांच आश्रव सहीत छे. अने केवळ महोच्छवने समे भगवंत वीरती छे तो जुवो स्नान, वीलेपन, वस्त्र, आभुषण, पुष्प, इत्यादीक कांइ वस्तु भगवंतने संघटावी नहीं "वद्दलंविउवइ" कह्युं ते संसार अवस्थाना महोच्छव मध्ये नथी कह्युं एटलो फेर छे. वळी देवकृत वस्तु तो अचीत होवे. जो सचीत होवे तो बीजा साधुने सचीत सहीत थानक कीम कल्पे? वृतिकल्प पेहेले उदेसे कह्युं धान, पाणी, अग्नी, आहार, ओषध, आभ्रण, सहीत थानके, रहेवा ना कही छे ते माटे ए फुल, पाणी सचीत नहीं तथा कोणीक प्रमुख वांदवा गया तीहां पाणी, फुलनो आरंभ कीधो मार्ग छंटाव्या, पण समोसरण मध्ये छंटकाव्या नथी कह्या. अने नगर सीणगार्या, आरंभ कीधो ते पोताने छांदे; पण भगवंतनी आज्ञा नथी. वळी कोणीक राज मार्गमां जळ छांटी फुल वीखर्यां ते मांहीथी भगवंतने काम शुं आव्युं ते कहो. ए वस्तु भगवंतने भोग आवी नथी. ए मांही भगवंतनी भक्ति

काँहि नथी. पोतानी रुद्धी वीस्तारी ए पोतानी शोभा, पोतानी मोटाइ छे. वळी जळज थळज शब्द तो उपमा वाचक छे जे जलज थलजना सरखा फुल तेवारे हींसाधर्मि कहेशे; जो जलज थळजने उपमावाचक शब्द जाणो तो जळजाइव एहवो शब्द जोइए ते इ शब्द तो नथी तुमे उपमावाचक शब्द कीम जाण्यो ते उत्तरः उतराध्ययन त्रेवीसमे अध्ययने कह्यु. "पासंडा कोड गा मीय।" पा. पापंडी अन्य. दर्शनी. को. कौतुकी. मी. मृग पशु सरखा अजीणी परपापंडी,

इहां पापंडी कौतुकी मृग जेवा ए उपमा दीधी ने "मीयाइंवाइम" नथी कह्युं पीण मृगइवमृगा जाणवा तथा दशाविकालीक नवमे अध्ययने वीजे उदेशे सातमी गाथाना चोथा पदमां अवनित शीष्यने कह्युं. छागा ते विगलेंदीया छागा बोकडा सरखा तथा ढंकाणी छे शरीरनी सोभा एहवा अवनीत वि. खोडीला इंद्रीय जेहनी.

छागाइव नथी कह्युं छागा शब्दे बोकडा सरखाज जाणवा. तीम जलजा ते जळज सरखा पण न जलजा इमज जाणजो, पण सचीत नहीं वळी उत्राध्ययन बारमे छत्रीसमी गाथामां हरकेसीमुनीने दान दीधा पछी कह्युं.

तहियं गंधोदये पुप्फवासं ॥ देवा तहिं वसुधारायवुठा ॥
पहियउ दुदुंभिउ सुरेहिं ॥ आगासे अहोदाणंचगुठं ॥ ३६ ॥

१ पोरणामेयदेवा २ जीयमेयंदेवा ३ कियमेयंदेवा ४ करणीजमेयंदेवा ५ आचिन्नमेयंदेवा ६ अभणुन्नायमेयंदेवा

अर्थ—पो. जुठो नहीं ए कार्य चीरंत देवताये पण ए कार्य कीधो १. जी. तुम्हारो ए आचरण २. की. तुमारुं एह कर्तव्य करवा जोग्य कार्य कीधो. ३. क. तुमारी एह करणी छे ४. आ. आचरवा जोग्य छे. ५. अ. में अने अनेरे तीर्थंकर पण अनुआज्ञा दीधी ६.

ए छ बोल वंदणा करवा आश्री कह्या छे, पण नाटकनी आज्ञा माटे नथी कह्या स्या माटे जे, आगळे सुरियाभ कहेस्ये जे गौतमादी श्रमणने बत्रीशवीध नाटीक देखाडुं ?

एयमठं नो आढाई नो परिआणाई तुसंएणं संचीठइ.

अर्थः—ए. एहवा वचन प्रत्ये. नो. आदर नो देइ. नो. अनुआज्ञा पण न देइ. तु. अणबोल्याथका. सं. रहे.

अणबोल्या रह्या, पण आज्ञा नथी दीधी. नाटकनी करणी सावद्य माटे. तीवारे कहेस्ये नाटकमां आरंभ जाणेछे, तो भगवंते नाटकमां ना कही ? ते उत्तर सुरियाभ साथे देवता घणा छे तेहने पोतपोताने ठामे नाटीक जुदां जुदां थाय छे. जीहां लगे सुरियाभ नाटक बांधे छे, अने भगवंत सुरियाभनो नाटक नीखेधे छे. तीवारे सर्व पोताने ठामे जाय जुदां जुदां नाटक थाय, हींसा घणी वधे, ते माटे सुरियाभनो नाटक नीखेध्यो नहीं. ए अर्थ राइपसेणीनी टीका मध्ये छे. ते जोजो. अने नाटीकमध्ये कर्म निर्जरा होवे तो आणंद, कामदेव, कोणीक राजा, कृष्ण प्रमुखे साक्षात भगवंत आगळ कां न कीधां ? वळी तुमे कहोछो जे, रावण अष्टापद उपर प्रतिमा आगळ नाटीक करतां तीर्थंकर गोत्र बांध्यो. अने ज्ञाता आठमे अध्ययने वीस स्थानके जीव तीर्थंकरपद उपराजे, ते मध्ये तो नाटीक करतां तीर्थंकरगोत्र बांधे इम न कह्युं.

६. वळी सुरियाभ देवताये भगवंतने पुछयुं.

अहणं भंते सुरीयाभेदेवे किं भवसिधिए किं अभवसिधिए समदीठीए मिछदीठीए परीतसंसारीए अणंतसंसारीए सुलभबोहीए दुलभबोहीए आराहए विराहए चरीमे अचरीमे.

अर्थः—अ. हुं. भं. हे भगवंत. सु. सुरियाभ देव. कि. सुं. भ. भव्य. कि. के. अ. अभव्य. स. समदृष्टी. मी. के मीथ्यादृष्टी. प. तुच्छ (थोडो) संसारी. अ. के अनंत संसारी. सु. सुर्लभबोधी (जीन धर्मनी प्राप्ति सोहली छे. दु. के दुर्लभबोधी. आ. जीनधर्मनो आराधीक वी. के वीराधीक. च. देवनो छेलो भव एज ते चरीमे. अ. घणा भव हुइ ते अचरीमे.

तीवारे भगवंते छ बोल भला कह्या ए लेखे सुरियाभविमाने वार जातना जीव सुरियाभपणे उपजता जाणजो. वळी भगवती सतक बारमे उदेसे सातमे छालीना वाडानुं दृष्टांत कह्युं छे; सो बकरीनो वाडो ते मध्ये "अया सहस्स परिवयेजा" एक हजार बकरी भरी छ मास लगे वाडामां राखी ते बकरीने उचार, पासवण, खेळ, जल, संघाण, वीत्त, पीत्त, शुक्र, श्रोणीत, सींग, मुख, हाथ, पग, पुंछ, वाळ, खुरीये करी सर्व वाडानी भुमी फरसाणी ? हंता गोयमां, कोइक आ काश प्रदेशमात्र भोमका अणफरसी पण रही, पण,

एयंसिए महालयंसि लोगंसि लोगस्सय सासयं भावं संसारस अणादियं भावं जीवस्स नीचभावं कम्मबहुत्तं जम्मणं मरणं बहुलं पडुच नथीकेइ परमाणु पोग्गले मेते विपएसे जथणं अयं जीवेणं जाएणवा मएवा ए जीवे.

अर्थ—ए एहने विषे एवडा महालय लोकने वीषे छे को परमाणुं पोगळामे ते वीपएसे इत्यादिक पुर्वोक्ति अभीलाखे कर्या संबंध महात्वपणाथकी लोकने कीम रह्यो इसी आसंका टाळवाने कहेछे. लो. लोकना सास्वता भाव प्रत्ये आश्रइने वळी संसारना अनादी भाव प्रत्ये आश्रीने जीवना नित्यभावप्रत्ये आश्रीने कर्मना बहुलपणाथकी कर्मने बहुलपणे जन्मादिकने अल्पपणे उकतार्थ न हुए एटला माटे कह्युं. जन्म वळी जनम, मरण, बाहुल्य आश्रीने. न. नहीं केइ परमाणु पुदगळ मात्र पण प्रदेश जे प्रदेशने विषे एह जीव जन्मो नहीं मुवो पण नथी.

सर्व लोक उपजी, मरीने फरसीने मुक्यो छे; प्रदेशमात्र भोमका पण वीण फरसे रही नहीं—चोरासी लाख नरकावासा, सात क्रोड बोहोतेर लाख भवन, पांच थावर, त्रण विगलेंद्रि, तीर्यंच, मनुष्यना असंख्याता आवास, चोरासी लाख सताणुं हजार त्रेवीस वेमान, एटले ठामे (पांच अनुत्तर वेमान वरजी सेख सर्व

ठामे) सर्व जीव भव्य, अभव्य सर्व उपजी चुकया छे. " असई अदुवा अणंत खुत्तो " एकेके ठामे एकेक जीव अनंतीवार उपनो. ए लेखे सुरियाभ विमाने पण सर्व जीव भव्य, अभव्य प्रमुख बार बोलवाळा जीव अनंतीवार उपजी चुक्या छे. तीवारे सुरियाभ देवताये पण जाण्यु, जे माहारे विमाने बार बोलना जीव सुरिया-भपणे उपजे छे, ते मध्ये हुं केवो छुं, एम निश्चय करवाने पुछयुं छे. वळी त्रीछे-लोके असंख्यता द्वीप, समुद्र छे. पचवीस क्रोडाक्रोड कुवाना खंड जेटला छे, तेथी चोगणा पोळीया छे. ते सर्व विजयपोळीया जेवा छे. तीहां पण सर्व जीव विजय पोळीयापणे अनंती वार उपजी चुक्या छे. तीवारे वीजय पोळीयानीपरे सर्वे जीवे प्रतिमा पुजी छे. पण प्रतिमा पुज्याथकी सर्व जीव भव्य, अभव्य समदृष्टी थया नहीं. ते विचारी जुओ.

वळी जीवाभीगममध्ये पडीवती कह्यो छे जे,

सोधमीसाणे सुणंभंते कप्पेसु सव्वेपाणा सव्वभूया सव्वेजीवा सव्वेसत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइत्ताए देवत्ताए देवीत्ताए आसण सयण जाव भंड मत्त वगरणत्ताए उवन्न पुव्वा हंता गोयमा असए अदुवा अणंतखुत्तो सेवेसुकप्पेसु एवं चेवणवरी नोचेवण देवीत्ताए जाव गेविजवा अणुतरोववातिए सुविएघं नोचेवणं देवत्ताए देवीत्ताए सेत्तंदेवा.

अर्थ—सुधर्मा, इसान देवलोके अहो भगवंत सर्व प्राणी, सर्व भुत, सर्व जीव, सर्व सत्व पृथ्वीकायपणे, जावत वनस्पतिकायपणे, देवतापणे, देवांगनापणे, सिंहासन, सज्या ज्यान भांड, उपगरणपणे, उपना छे. अतीतकाळे. इति प्रश्नः त्यारे भगवंत कहे छे. हा गौतम वारंवार निश्चे अनंती अनंती वार इम सर्व देवलोके उपना छे. पण देवांगनापणे तीहां नथी उपना. जे कारणे त्यां देवांगना नथी. पांच अणुत्तर वेमाने पण पृथव्यादिकपणे अनंतीवार उपना छे, पण देवता अने देवांगनापणे, तीहां नथी उपना. जे कारणे तीहां देवांगना नथी. अने देवता पण तीहांना एकावतारी प्रमुख छे. ते भणी देवतापणे पण सर्व जीव संसारी नथी उपना. एटले देवता पुरा थया. इहां पण सर्व जीव वीमानीक देवतापणे उपजी चुकया कह्या. कांइ भव्य, अभव्य वार वोळमध्ये टाल्यो नहीं. वळी भगवती सतक बारमे उदेसे सातमे कह्यो.

अयणंभंते जीवे चोसठीए असुरकुमारावास सयसहस्से-सुएगमेगंसी असुरकुमारा वासंसिपुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्स-इकायत्ताएदेवत्ताए देवीत्ताए आसण सयणभंडमत्तोवगरणताए उववन्नपुछाहंतागोयमाजाव अणंतखुत्तो सव्व जीवाविणंभंते एवं चेव.

अर्थ.—एह हे भगवंत चोसठ असुरकुमार आवास सत सहश्रने विषे एक एक असुरकुमारना आवासने विषे पृथ्विकायपणे, इम जावत वनस्पतिकायपणे, देवपणे, देवीपणे, आसन, सयन, भंड. मात्र, उपगरणपणे उपनो पुर्वे. इति प्रस्नः उत्तर. हा गौतम अनेकवार, अथवा अनंतवार सर्व जीवपणे. हे भगवान इत्यादीक प्रस्नः उत्तर. इमहीज अनंतवार कहेवो.

एवं जाव थणीयकुमार सुं पछे पृथव्यादीक जावत मनुष्योने सुत्र पण इमज पुछयो.

वाणव्यंतर जोइसीय सोहम्मीसाणेय जहा असुरकुमाराणं.

अर्थ.—वाणव्यंतर, ज्योतषी, वैमानीकमांहे सुधर्मा, इशान, लगे एहने विषे असुरकुमारने कह्युं तेम कहेवुं.

पछे इमज त्रीजा देवलोकथकी जावत बार देवलोक, नव ग्रीवेकलगे पण अनंतीवार उपनो, पण नो चेवण देवीताए नहीं नीस्चे देवीपणे उपनो इ शा माटे जे इशान देवलोकलगेज देवी उपजे ते माटे.

इम अणुत्तर विमानने विषे प्रथव्यादीकपणे उपनो. नो चेवणं देवताए देवीताए नहीं अणुत्तर विमानने विषे देवतापणे अनंतीवार उपजे अने देवीपणे तो सर्वथाज न उपजे, इसानलगेज देवीना उपपात माटे.

एम लोकांतिकपणे छकायपणे उपनो. असइ अदुवा अणंतखुत्तोः ॥ अनेकवार इत्यर्थः अथवा अनंतीवार. इत्यर्थ.

इहां भव्य, अभव्यादिक बार बोलना सर्व जीव उपना कह्या. ए अलावो मोटो छे, ते सुत्रथकी जोजो. इम इहां परमार्थ मात्रहीज थोडो लख्यो छे.

७. वली हींसाधरमी कहे छे जे, सुरियाभ देवता नवो उपज्यो तीवारे सामानीक देवताये आवीने कह्युं, तुम्हे सीद्धायतनमध्ये जइने एकसो आठ जीनपडी-

माने अने सुधर्मि सभामां जीनदाढाने पुजो. ए तुमने पहेलां करवा जोग्य. ए तुमने पछे करवा जोग्य ए तमने.

पुव्वि पछा हियाए सुहाए खमाए निसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ. ॥

अर्थ.—पु. पुर्वे प. तथा पछे पण. ही. हीत्तकारी. सु. सेखताभणी. ख. जोगताभणी. नि. श्रेयकल्याणकारी. आ. परंपराए सुखभणी. भ. हुस्ये.

इम कह्युं ते जुओ ए देवताये पण प्रतिमा पुजवी बतावी छे ते उत्तर. सुरियाभादीक बत्रीस लाख विमान प्रथम देवलोके छे, ते सर्व विमाननी एक रीत छे. विमान बे प्रत्ये पांच पांच सभा छे, एक एक सीद्धायतन छे, एवं छ छ वस्तु सर्व विमान मध्ये छे. जीवारे देवता नवो उपज्यो, तीवारे एकेकवार राजअभिषेक करतां सर्व प्रतिमा पुजे छे. ते समदष्टी, मीथ्यादष्टी, भव्य, अभव्य सर्व उपजे ते सर्व पुजेछे सर्व उपजती वेळाए सर्व देवताने पोत पोताना सामानीक देवता इमज कहेछे जे, प्रतिमा अने दाढा पुजो. इहां कांइ एम नथी जे, समद्रष्टी होवे तेहीज पुजे ने मीथ्याती न पुजे. जीतव्यवहार माटे सर्व पुजेछे. जीम मनुष्यलोकमध्ये समदष्टी होवे ते तो तीर्थंकर अने साधुने वांदे छे. अने मीथ्याती होवे ते, घोर, मसीत, मीरां, पीर, ठाकोरद्वारा, विष्णु, महेश, गणेश, माता, हनुमान, खेत्रपालादीकने पुजे. अन्यमती मनुष्य होवे तो जीनमतना देवना गुरुने वांदे, पुजे नहीं. एम मनुष्यलोकनी रीत. जैन, सीव, मुसलमाननां देहरां पण जुदां जुदां छे. तेम देवलोकमध्ये मत मतनां देहरां जुदां जुदां छे नहीं. समद्रष्टी अने मीथ्यादष्टीने पुजवाने पुजवानो सीद्धायतन एकहीज छे. तेहनां देहरां जुदां कह्यां होवे तो सुत्रसाख देखाडो. समदष्टी मीथ्यादष्टीना धर्म व्यवहार तो जुदा छे, अने लोकव्यवहार एक छे. जीम मनुष्यलोकमां स्नान, दातण, भोजन, वस्त्र; भूक्षण, वाहन, सयन, भोग, विलाश, समदष्टी मीथ्याद्रष्टीना एकछे, अने धर्मव्यवहार जुदा जुदा छे, तीम देवतामध्ये लोकव्यहवार जीत आचार समदष्टी, मीथ्यादष्टीनो एकज छे, अने जीन वंदन प्रमुख धर्मव्यहवार जुदा जुदा छे, अने समदष्टी देवताथकी मीथ्यादष्टी देवता असंख्यता गुणा अधीका छे. समदष्टी मीथ्यादष्टीना वीमान मध्ये सीद्धायतन एक सरखा छे. मीथ्यातीना वीमानमां घोर, मसीत, ठाकरद्वारा तो नथी कह्या. जे, ते वीमान बे प्रते सीद्धायतन अने प्रतिमा तो सुरीयाभना जेहवी छे, तेहने भव्य,

अभव्य, समदष्टी, मीथ्यादष्टी, सर्वे एकरीते पुजे छे. एमां धर्मकरतव्य स्यानो थयो? अने प्रतिमा पुजे एटला समदष्टीज थाय तो वीज्यपोळीयादीक असंख्याता पोळीया सर्व वीज्यपोळीयानीपरे प्रतिमा पुजे छे, ते तमारे मते सर्व जीव वीज्यपोळीयापणे अनंतीवार उपज्या छे, तो प्रतिमा पुज्या माटे अनंतभव केम करवा पडया ? समकीतवंतने अनंता भव होय नहीं. ए सुत्रसाख छे. अरणक श्रावक, कामदेव श्रावकने परीसह दीधा ते देवता. तथा गौशाळामती, जमालीमती, नास्तीकमती एहवा मीथ्याती देवता जीनमारगना श्रेखी; ते पण उपजती वेळाए जीतआचारमाटे सीद्धायतननी प्रतिमा पुजेछे. मसीत, ठाकरद्वारा पुजता नथी, ने ते छे पण नहीं. ए सीद्धायतननी प्रतिमा तीर्थंकरनी होवे तो मीथ्याती कीम पुजे ? ए कुळाचार जीतव्यवहारमध्ये प्रतिमानी पुजा जाणवी. पण समकीतखाते नही. एकळा समद्रष्टी देवता पुजता होवे तो धरमखाते थाय, पण सर्व समकीती, मीथ्याती, भेळी पुजे तीवार धर्माचार स्यानो ?

८. वळी ए प्रतिमा तीर्थंकरनी नहीं, ते कीम जाणीये ते सीद्धांतनी साख लखी छे. प्रथम सुरीयाभ देवताने राज्यभीषेक थयो तीवारे पछे व्यवसाय सभा मध्ये आव्यो तीहां " धर्मीये सथे वाएति " एहवो पाठ छे जे, धर्मशास्त्र वांच्या, ए धर्मशास्त्र छे, पण कुळधर्मनी रीत समंधीया छे पण आचारंगादीक द्वादशांग प्रवचन नथी. ते कीम जो आचारंगादीक द्वादशांगी होवे तो मीथ्यात्वी, अभव्य कीम वांचे ? कीम सदहे ? अने जीन वचन साचां केम जाणे ? अने वांचवा तो सर्व पढेछे. अने मीथ्यात्वीना ओगणत्रीस पापश्रुत कीहांइ जुदां पण कह्यां नथी, जे समदष्टी आचारंगादीक वांचे अने मीथ्यात्वी कुरान, पुरान वांचे तेम तो नथी. जेटला बार बोळवाळा उपजे ते सर्व एहीज धर्मशास्त्र वांचे छे, ते माटे ए धर्मशास्त्र ते पण लोकीक कुळरीतना जाणवां. वळी हींसाधरमी कहे छे जे, श्रावक, समदष्टी सीद्धांत वांचे तो अनंत संसारी थाय. हवे एहना कह्या लेखे जुओ. जो आचारंगादीक धर्मशास्त्र होवे तो समदष्टी देवता सीद्धांत वांचीने अनंत संसारी स्याने थाय ? ते माटे ए धर्मशास्त्र ते कुळरीतना छे. जीम मनुष्यमध्ये बोहोंतेर कळाना शास्त्र तथा अर्थ, धर्म, काम, साम, दंड, भेद इत्यादीक ग्रंथ ते सरखा जाणवा, समदष्टी, मीथ्यादष्टीने सर्वेने काम आवे मनाय तेहवा छे. ए प्रतिमा अने ए शास्त्र एक खाते छे. अनंता जीव अनंतीवार देवता थइने ए प्रतिमा पुजी, ए पुस्त वांच्या

पण समकीत कोइ पाम्यो नहीं.

९. पछे ए पुस्तक वांचीने "धम्मीयं ववसाइयं गिन्हिजा" ध. कुळधर्म सबंध. व. व्यापार. गि. ग्रहे. एहवो पाठ छे.

ए धर्मनो व्यापार कह्यो ए पद पण समुचय छे. इम नथी जे प्रतिमा पुजा ते धर्मव्यवसाय. समुचय पदमध्ये प्रतिमा, पुतळी, थांभा, हथीयार, तोरण, पोळी, खडग, पुस्तक बत्रीशवानां पुज्यां; ते सर्व धर्मव्यवसाय ग्रह्या केडे पुज्या छे, ते माटे धर्मव्यवसाय पद ते पण साधारण पाठ छे. उठीने इशानखुण सीद्धायतनमध्ये गीयो. जाहां एक सो आठ जीणपडीमा छे तीहां आव्यो, ते प्रतिमाने शरीर चरच्यो ते सुत्रथकी कहेछे.

१. वीज्यदेवतानी प्रतिमा जीवाभीगममध्ये वरणवी तीहां रीठमयामंसु रीष्ट· रतनमे दाढी कहे छे. रायपसेणीमां सुरीयाभे पुजी तेने दाढी न कही ते फेर.

२. कणगामया चुचुआ ते कमकमय स्तनछे. ए स्तन जुगल केहने होवे. श्री उववाइमध्ये श्री वित्तरागनो शरीर वखाण्यो तीहां स्तन जुगल मुगलथीज कह्यो नथी. तीर्थंकर, चक्रवर्ति, बळदेव, वासुदेव, उत्तम पुरुष, सामंत, घोडो, एटलाने स्तन होवे नहीं ते माटे जीन तीर्थंकरनी प्रतिमां होवे तो स्तन होवे नहीं.

३. वळी ए प्रतिमाने पाशे बे बे चामरधारनी पडीमा, एक एक छत्रधारनी पडीमा, अने मुख आगळे बे वे नागपडीमा. वे वे जक्षपडीमा, हाथजोडीने वीनय करती कहेछे ए नाग, भुत, जक्षनी, पडीमा कहेना परीवारमध्ये होवे? तीर्थंकरने पासे तो सुत्रंमध्ये ठाम ठाम कह्यो छे जे, इसीपरीसाए जइपरीसाए कह्यो छे जो ए प्रतिमा पासे गणधर, साधुनी प्रतिमा होत तो जाणत जे प्रतिमा तीर्थंकरनी खरी पण ते तो नथी तो इम जाणजो जे, कोइ भोगीदेव कामदेवादीकनी छे. वळी पण आज हींस्याधरमी प्रतिमा करावेछे तेहने पासे काउसगीया साधुनी प्रतिमा करावे छे, पण नाग, भुत, जक्षनी, प्रतिमा नथी करावता. ए बे प्रतिमा मध्ये कही साची ने कही जुठी? माटे ए प्रतिमा नाग, भुत, जक्ष, ठाकुर, वेसमण, खेत्रपाळ, महेश, कामदेवादीकनी जाणवी ए वीशेष.

४. वळी सुरीयाभे पुजतां पहीलाथकी "लोमहथेणं पमजइ" कह्यो छे जे, मोरपींछनी पुंजणीथकी पुंजी कही. जीम द्रुपदीये, भद्रासार्थवाहीये, जक्षनी प्रतिमा मोरपींछ थकी पुंजी ते रीते, अने ठाणांगसुत्र पांचमे ठाणे त्रीजे उदेशे कह्यो छे जे.

कप्पई निगांथाणवा निगाथणिवा पंच रयहरणाइं धारित्त-एवा परिहरित्तएवा तंजहा उन्नए १ उट्टीए २ सांणए ३ पच्चा-पिचिए ४ मुंजापिचिए ५.

अर्थः—क. कल्पे. नि. निग्रंथ. नि. निग्रंथीने. पं. पांच. र. रजोहणा. धा. धारवा, प. राखवा. तं. ते कहे छे. उ. कंबल उननो १. उ. ऊंटना रोमनो. २ सा. सरणनो. ३. प. तृण वीशेखे कुटीत्त तेहनो. ४ मु. मुंजनो कुटीतनो.

ए मध्ये भींडी तथा मुंजना रजोहरणा अपवादे राखवा कह्या, पीण मोरपींछ राखवानी ना कही तो जीनमारगमध्ये मोरपींछ नीखेध्यो छे. अती सुकमाल छे, तो पण अन्यतिर्थिथकी मळतो वेष थाय ते माटे नीखेध्यो छे. जुओ साधुने मोर-पींछ राखवानी ना कही, तो साधुना स्वामी भगवंतने शरीरे मोरपींछनो पुंजवो कीहां थकी ? अने भगवंतने तो मुळथीज रजोहरणो नथी, तो भगवंतनी प्रतिमाने मोरपींछ कीम कल्पे ? ए लेखे पण श्री वित्तरागनी ए प्रतिमा नहीं.

९. वळी सुरीयाभे प्रतिमा पुजी तीवारे प्रथमथकी प्रतिमाने नवरावी पछे “ अहयाइं देवदुस जुइयलाइं नियसेइ २ त्ता कहेतां अ. महुधां दे. देवदुषण. जु. जुगल वस्त्र. नि. पहीरावे पहीरावीने.

ए पाठ छे, जे जीनप्रतिमाने चीगटरहीत ऊंदहनी चांचरहीत एटले अखंड वस्त्रनो जोडो पहीराव्यो इम पाठ बोल्यो, अने तीर्थंकर तो अचेल छे. वस्त्र पहीरे नहीं, तो तीर्थंकरनी प्रतिमाने धोतीजोडो कीम पहीराव्यो ? ए लेखे तो प्रतिमा कया जीननी ठहरी आभ्रण ने वस्त्र तो एक रीते छे. जो कल्पे तो बेहुने ने न कल्पे तो एकुहीने न कल्पे. अने हींस्याधरमी आज प्रतिमाने पुजे छे, ते पण वस्त्र नथी पहीरावता; तो देवता भगवंतने अचेल जाणीने वस्त्र कीम पहीरावे ? पीण इम जा-णजो जे, ए प्रतिमा वस्त्रना पहीरणहार देवतानी छे, पण भगवंतनी नहीं. वळी हींस्याधरमी कहेसे जे, ए तो वस्त्र भगवंतने मुख आगळे मुकया छे. ते खोटुं कहे छे. मुख आगळ वस्त्र मुकया ते तो “ वथारुहणं ” पाठ जुदो छे. “ वन्नारुहणं चुन्नारुहणं पुफारूहणं वथारुहणं आभरणारुहणं ” कहेतां व. वाना आरोपण चु. चुर्ण वासखेप चढावे. पु. फुळ चढावे. व. वस्त्र चढावे. आ. आभ्रण चढावे तेमां आव्यो पण इहां तो “ देवदुसा जुयळीयं नियंसेइ २ त्ता कहेतां दे. देवदुपण जु. जुगळ वस्त्र. नी पहीरावे पहीरावीने.

कह्यो निर्यस्या पहीराव्या कह्या छे. एम आभ्रण चढाव्या ते जुदां अने पहीराव्यां ते पण जुदां. ए वस्त्र आभ्रण बे वस्तु भगवंतने अजोग्य तीम भगवंतनी प्रतिमाने पण अजोग्य. वळी हींस्याधरमी कहेशे जे, भगवंतने तो ए बे वस्तु अजोग्य छे, पण भगवंतनी भक्ति छे, जे सार वस्तु होवे ते प्रतिमाने भगवतने नीमीते करेज. ते उत्तरः जो त्यागी पुरुषनी भक्ति भोगवडे थाय तो स्त्री केम न चढाव्यो ? सर्व भोगमां स्त्री प्रधान छे. जेम वस्त्र, आभुषण, तेम स्त्री. ए पण तमारे भक्तिने खाते गणजो, पण एहवी भक्ति जीनमार्गमध्ये नथी कही ते जाणजो.

६. वळी प्रस्नव्याकरण पांचमे अध्ययने आश्रवद्वारे देवताना चैत्य, देवकुल, परीग्रह मध्ये कह्या छे, ते पाठ लख्यो छे.

एवंचते चउविहा सपरिसावि देवा ममायंति भवण वाहण जाण विमाण सयणा सणाणिय नाणा विह वथ भुसणाणी पवर पहरणाणिय णाणामणी पंचवण दिवंच भायणविहं णाणाविहं कामरुवे वेउव्विय अथर गणसंघा तेदिव समुद्दे दिसाउ विदिसाउ चेइयाणिय वणषंडे णीयवणसंडे पवते गाम नगराणीए आरामुं जांण कांणणाणीय कुव सर तलाग वाविदिहिया देवकुल सभ पव्वा वसहीमा इयाइं बहुकाइं कित्तणाणिय परिगेन्हवा परिग्रहं विपुलं दव्व सारं देवावि सइंदगा नव्विात्ति उतुव्विउवलभंति.

अर्थ.–ए. एणीपरे. ते. ते देवता. च. भवनपत्यादीक चार प्रकारना. स. परीखदा सहीत ए पूर्वे कह्या ते. दे. देव ते. म. माहारा एहवी ममता करे एटला बोल उपरे ते कया ते कहेछे भ. घर १. वा. अश्वादीक. २ जा. सटकादीक. ३ वि. विमान. ४ स. पल्यंकादीक. ५ स. सींघासनादीकप्रते ममताकरे. ६ ना. नानाप्रकारना. व. वस्त्र. ७ भु. भुषणप्रते. ८ प. प्रधान. प. हथीयारप्रते ममताकरे ९. णा नानाप्रकारना मणी १०. प. पांचवर्णे. दि. प्रधान. भा. भाजन. ११ ना. नानाप्रकारना. का. कंदर्पावताररुप, १२ वे. वेक्रीयकीधा एहवा. अ. अपच्छराना १३ ग. समोह तेहनाद्धतप्रते. दी. द्वीप, १४ स. समुद्रप्रते. १५ दी. चार दीसा-

कप्पइ निगांथाणवा निगाथीणवा पंच रयहरणाइं धारित्त-एवा परिहरित्तएवा तंजहा उन्नए १ उट्टीए २ सांणए ३ पच्चा-पिच्चिए ४ मुंजापिच्चिए ५.

अर्थः—क. कल्पे. नि. निग्रंथ. नि. निग्रंथीने. पं. पांच. र. रजोहरणा. धा. धारवा, प. राखवा. तं. ते कहे छे. उ. ऊंनना उननो १. उ. ऊंटना रोमनो. २ सा. सरणनो. ३. प. त्रुण वीडेले कुटीच नेहनो. ४ मु. मुंजनो कुटीतनो.

ए मध्ये भींडी तथा मुंजना रजोहरणा अपवादे राखवा कह्या, पीण मोरपींछ राखवानी ना कही तो जीनमारगमध्ये मोरपींछ नाखेल्यो छे. अनी मृकमाळ छे, तो पण अन्यतिर्थिथकी मळनो वेष थाय ते माटे नाखेल्यो छे. जुओ साधुने मोर-पींछ राखवानी ना कही, तो साधुना स्वामी भगवंतने शरीरे मोरपींछनो पुंजवो कीहां थकी ? अने भगवंतने तो मुख्यीज रजोहरणो नथी, तो भगवंतनी प्रतिमाने मोरपींछ कीम कल्पे ? ए लेखे पण श्री वित्तरागनी ए प्रतिमा नहीं.

५. वळी सुरीयाभे प्रतिमा पुजी तीवारे प्रथमथकी प्रतिमाने नवरावी पछे " अहयाइं देवदुस जुइयलाइं नियसेइ " त्ता कहेतां अ. महुयां दे. देवदुषण. जु. जुगळ वस्त्र. नि. पहीरावे पहीरावीने.

ए पाठ छे, जे जीनप्रतिमाने चीगटरहीत ऊंदइनी चांचरहीत एहवे अखंड वस्त्रनो जोडो पहीराव्यो इम पाठ बोल्यो, अने तीर्थंकर तो अचेल छे. वस्त्र पहीरे नहीं, तो तीर्थंकरनी प्रतिमाने धोतीजोडो कीम पहीराव्यो ? ए लेखे नो प्रतिमा कया जीननी ठहरी आभ्रण ने वस्त्र तो एक रीते छे. जो कल्पे तो वेहुने ने न कल्पे तो एकुहीने न कल्पे. अने ढींख्याधरमी आज प्रतिमाने पुजे छे, ते पण वस्त्र नथी पहीरावता; तो देवता भगवंतने अचेल जाणीने वस्त्र कीम पहीरावे ? पीन इम जा-णजो जे, ए प्रतिमा वस्त्रना पहीरणहार देवतानी छे, पण भगवंतनी नहीं. वळी ढींख्याधरमी कहेसे जे, ए तो वस्त्र भगवंतने मुख आगळे मुकया छे. ते खोटुं कहे छे. मुख आगळ वस्त्र मुकया ते तो " वथारुहणं " पाठ जुदो छे. " वन्नारुहणं चुन्नारुहणं पुफारुहणं वथारुहणं आभरणारुहणं " कहेतां व. वाना आरोपण चु. चुर्ण वासखेप चडावे. पु. फुल चडावे. व. वस्त्र चडावे. आ. आभ्रण चडावे तेमां आव्यो पण इहां तो " देवदुसा जुयलीयं नियंसेइ " त्ता कहेतां दे. देवदुषण जु. जुगळ वस्त्र. नी पहीरावे पहीरावीने.

तेणे करी जाण्युं जे, ए प्रतिमा भगवंतनी नहीं. ए छो बोल वीरुद्ध. अने द्रुपदीनी प्रतिमाने पछे सातमो अस्त्रीनो संघटो ए सात वीरुद्ध. वळी हींसाधरमी कहेस्ये, जीनप्रतिमा वित्तरागनी नथी तो " धुवदाउणजीणवराणं " कीम कह्यं. ते उत्तर. जो जीनवर धुप, सुगंध लेवे तो सुरियाभे प्रत्यक्ष भगवंतने धुप कीम न कीधो ? ते कहो. जे धुप सुगंधना भोगी देव ते जीनवरनी प्रतिमा जाणवी. एवं प्रश्न आठ थयां. तीवारे हींसाधरमी कहेशे जे, तीर्थंकरनी प्रतिमा नथी तो सुरीयाभे नमोथुणं कीम कहुं ? ते उत्तर सुरीयाभनमोथुणं धर्मखाते नथी. कुळाचार व्यवहार साथे छे. नमोथुणं त्रण प्रकारे कहेछे. १ लोकीकरीते. २ कुप्रावचनीकरीते. ३ लोकोत्तर रीते.

१ लोकीक ते लोकीक देव गुरु देव गुणरहीतने आगळे नमोथुणं कहे. जीम द्रुपदी पोते मीथ्यात्वी अने नीयाणासहीतथकी भोगीदेवनी प्रतिमा आगळे, नमोथुणं कहुं, ते. जेम ओशवाळ महाजन आगे पोकरणा भोजक चोवीस जीनना नाम सुणावे. पण पोते सद्हे नहीं. आजीवका अरथे कहे. तेम जाणवुं एमां धर्म नथी.

२. कुप्रावचनीक ते गोसाळा, जमाळीनो शीष्य, श्रावक गोसाळा, जमालीने नमोथुणं कहे ते कुप्रावचनीक. तथा अनुजोगद्वारे द्रव्यासकना करणहार भेखधारा तथा दीगंबर नमोथुणं कहे ते सर्व कुप्रावचनीक.

३. लोकोत्तर नमोथुणं ते साधु, श्रावक, श्री वित्तरागने ओळखी गुण जाणीने कहुं ते एकांत मुक्ति हेतु जाणवुं.

जीम सुरीयाभे प्रतिमा आगे नमोथुणं कह्युं तीम असंख्याता वीजयदेवता, असंख्याता वीजयंतदेवता, असंख्याता जयंतदेवता, असंख्याता अपराजीतदेवता, एकेकने ठामे अनंता थया. अने अनंता थासे. समकीती, मीथ्यात्वी, भव्य, अभव्य, ते सर्व नमोथुणं करे असंख्याता भवनपती, असंख्याता व्यंतर, असंख्याता ज्योतषी, असंख्याता विमानीक, ते सर्व सुरियाभनी रीते प्रतिमा पुजे, डाढा पुजे, धर्मशास्त्र वांचे, भव्य, अभव्य सर्व देवतानी ए करणी छे. ते माटे लोकीकरीतमां नमोथुणं गीणाय. जो एकला समदृष्टीज पुजा करे तो समकितखाते होवे तो, वळी प्रतिमानी पुजा धर्मखाते होवे तो, मनुष्यलोके राजा, सेठ, सेनापति, श्रावक प्रतिमापुजी धरमांमांडी, देहरां कराव्यां, संघ काढया कीम न कह्या ? देवताये प्रतिमा आगळे नमोथुणं कहुं. गर्भमां रह्या अविरती तेहने नमोथुणं कहुं. पण साक्षात केवळी

प्रते १९. वी. चार विदीसप्रते. २३ चे. चैत्य प्रतिमाप्रते अन्यतिर्थिनी प्रतिमा पण परीग्रहमध्ये. २४ व. वनखडे २५. प. पर्वत. २६ गा. गाम. २७ न. नगरप्रते. २८ आ. आराम. २९ उ. उध्यायन. ३० का. काननवनप्रते ३१ कु. कुप. ३२ स. सरोवर ३३. त. तळाव. ३४ वा. वाव. ३५ दीदीर्घिका ३६ दे सीखरबंध देहरा ३७ स. सभा. ३८ प. पर्व. ३९ व. तापसना आराम. ४० आ. ए आद देइ. ब. घणा पदार्थप्रते. की. एम कहे जे ए माहारा माहरा एम ममता करे. प ग्रहीने एवा प. परीग्रहने परीग्रह कहेवा छे. वी, वीसतीर्ण. द. द्रव्ये करी. सा. प्रधान एहवा परीग्रहने आदरीने. दे. देवपण स. इंद्रसहीत देव. न. नृपति न पामे. उ. कीं देवा.

ए पाठ मध्ये जे जे वस्तु कही ते ते वस्तुने देवताने परीग्रहमध्ये कही तेमध्ये देवकुळ, प्रतिमा ते पण परीग्रहमध्ये गण्या छे. ते परीग्रह पुज्ये धर्म न होवे. हींसाधरमी कहेस्ये, पुर्णभद्रादीक जक्ष छे. तेहनी प्रतिमा ते जक्षना परीग्रह खाते छे, सेख प्रतिमा परीग्रहमां नहीं ते उत्तरः जो त्रीछालोके व्यंतरनी प्रतिमा छे, ते प्रतिमा परीग्रहमध्ये कहेस्यो तो इहांतो " चउवीहावीदेवा " कह्या छे. इंद्र सहीत तेहनी प्रतिमा त्रीछा लोकमाही कीयां छे ? अनेकुण पुजे छे. अने "दीवसमुदेचेइयाणीयं" कह्युं. ते क्या व्यंतरनी प्रतिमा छे. तुमे तो सर्व द्वीप, समुद्रनी प्रतिमा तीर्थंकरनी मानोछो. इहां तो ते पण भेळी आवी छे, अने देवलोकमध्ये विमानदीठ प्रतिमा छे, ते पण विमानवासीने परीग्रहखाते छे. ते कीम. पोतपोताना विमाननी सर्व पुजेछे कोइ बीजानी नथी पुजता. अने सुरीयाभने सामानीके पुज्यानो कह्यो छे, तेणे पण सुरीयाभविमानना सीद्धायतननी प्रतिमा सुरीयाभदेवने पुजती कही देखाडी. अने तेणे पण तेहीज पुजी. अन्य थानकनी—मेरुनी, नंदीशरद्वीपनी पुजवी बतावी नथी. पहीला जीतआचारमां पुजवानी छे ते बतावी एटले पोतानी करी बतावे छे ते माटे परीग्रहखातेज कहीं अन्यतीर्थंकरने जन्मादीक महोच्छत्र करतां सर्व इंद्र भेळा थया छे ते कीम भगवंत तो भरथ, इरवत, महावीदेहना जेटला छे ते कांइ देवताना परीग्रहमांही नथी. अने प्रतिमातो जेहनी हद मर्यादा विमानमांही आवी ते पुजे. ते माटे परीग्रहखाते कही अने तीर्थंकर, साधु कोइनी हदमध्ये कह्या पण नथी. वळी हींसाधरमी कहे, सुरियाभनी प्रतिमा तीर्थंकरनी नहीं एहवुं तुम्हे साथकी. जाण्युं. ते उत्तर. ए प्रतिमाना लक्षण छो भगवंतथकी जुदां पडयां. १ प्रथम डाढी २ स्तन. ३ मोरपींछ. ४ नाग, भुतनो परिवार. ५ कपडां पहीराव्यां.

भनो भगवंतने नमोथुणं परलोकखाते, अने धन काढवो अने प्रतिमा पुजवी इहलोक खाते थीयो ए परमार्थ.

११. वळी हींसाधरमी कहे, प्रतिमा पुजी तीहां " निसेसाए " कह्योछे ते नीसेष शब्दनो अर्थ मोक्षनुं हेतु इम कह्यो छे. ते माटे ते प्रतिमानी पुजा मोक्ष हेते थइ. ते उत्तर. भगवती सतक पंदरमे चोथा राफडाने फोडतां एक पुरुषे वरज्या ते पुरुष राफडाना फोडणहार पुरुषनो.

हियकामए सुहकामए पछकामए निसेसियाए ॥

अस्यार्थटीकायां हितकामए हिंइहहित मपायाभावं सुहकामए तिसुखमादनंरुपं पथकामए त्तिपथामिवपथ्यं आनंद कारणं वस्तु अणुकंपएत्ति अनुंकंपाया वरतित्यानुकंपीकः निसेयसिएतिनिः श्रेयंसयंन्मोक्षमिछाति तिनिश्रेयिकः ॥

हीतनो वांछक आनंदरुप तेहनो वांछक पथ्यनीपरे पथ्य तेहनो वांछक मोक्षने वांछक. इहां नीश्रेस सब्दे मोक्ष अर्थ कीधो इहां मोक्षनो अर्थ कारण सुं हतो ? खंधकने अधीकारे निश्रेय कह्यो, धन काढतां तीहां. धन काढवामां मोक्षनो अर्थ स्यो हतो ? प्रत्यक्ष धन तो इहलोकनो अर्थ छे. तीम शब्द सरखो पण भावार्थ वीचारवो. जो प्रतिमानी पुजा मोक्षनो अर्थ होवे तो भव्य, अभव्य, पुजणहारा सर्व मुक्ति जाय ते तो नथी. वळी कोइ कहेशे, अभव्य देवताये प्रतिमा पुजी तेहनी साख कीहां छे. ते उत्तरः सीद्धांतमध्ये तो अभव्यजीव सर्व देवलोक उपना. तीहांनी स्थीती राखवामाटे सर्वजणे प्रतिमा पुजी छे, ए सुत्रसाख. इम करतां प्रत्यक्ष पाठ जोवो होय तो ओघनिर्युक्तिनी टीकामध्ये तमे मानो तो ते मध्येज कह्यो छे जे.

हव्वंमि जिणहराइ तिवाख्या द्रव्यलिंगि परिग्रहिता निचैत्यानिसम्यक्तदृष्टी नसंभाविता निइतिकस्मातजस्मात द्रव्यलिंगी मिथ्यादृष्टी त्वातंयद्येवंत हिंदिगंवरसंमंधी निचैत्यानि अथैतत्सत्यंतर्हि स्वर्गलोके षुसाश्वितानि चैत्यानि सुर्याभाद्यादेवा सम्यगदृष्ठय प्रपूज्यंते तत्चैत्यानिसंगमकवत् अभव्यदेवा मदीयंमदीयं मितिवहुमानात् प्रपूज्यंते पुर्वापरं विरुद्धं नस्यात नतुसुर्याद्या

भगवंतने वंदणा करवा आव्यो. तीहां नमोथुणं न कह्युं. तो सुं प्रतिमाथकी भगवंत उतरता हता ? पण देवतानी जेहवी रीते कुळाचार जीतव्यवहार छे तीम करेछे. इहां धर्म कर्मनो वीचार कांइ न रह्यो.

१० वळी सुरीयाभे प्रतिमाने नमोथुणं कह्युं तो इहलोक खाते छे, पण परलोक खाते नथी. तेहनी साख भगवती सतक बीजे उदसे पेहेले छे ते खंधक सन्यासीये श्री माहावीरस्वामीप्रत्ये कह्युं जीम कोइ गाथापती घर बळतो देखी धनकाढे ते इम जाणे ए समे.

निछारीएसंमाणे पुव्व पछा हियाए सुहाए खमाए निसेसाए अणुगामीयत्ताए भविसई ॥

अर्थः—नि. नीस्तार पाम्या ए माहारो आत्मा अने केडेसुं नीकळ्याथकां. पु. पहीला. प. अने पछे. हि. हीतने काजे. सु. सुखने काजे. ख. क्षमाने काजे. नी. मुक्ति हेतु. अ. अनुगामीकपणे. भ. हुस्ये.

ए धन काढयोथको मुजने पहीलां अने पछी हीतकारी प्रमुख थाशे. एणे दृष्टांते खंधक कहेछे, लोकमध्ये आदीप प्रदीप्त, जरा, मरणरुप अग्नी लागी छे, ते मांहीथी सार भंड हुं माहारो आत्मा काढुंछुं ए आत्मा संसारथकी काढेथके मुजने.

पचो हियाए सुहाए खमाए निमेसाए अणुगामीयत्ताए भविस्सइ. ॥

अर्थः—प. परभव जन्मांतरे. हि. हीतभणी पथ्यनीपरे. सु. सुखभणी. ख. जोगताभणी रोगनो विनासकरवा ओषधनीपरे. नि. मोक्षभणी. अ. भवनी परंपरा लगे. एह सुखनुं करण केडे. भ. हुसे.

पेचा कहेतां परलोके हीताये प्रमुख थाशे. इहां हीयाये प्रमुख पांच बोल तो सरखा छे, पण धन काढयो तीहां "पुवी पछा" कह्युं जे, ए लोकमध्ये ए धन काढयोथको पहीलां अने पछी धन "हीयाये" प्रमुख पांच बोल थाशे अने संजम लेतां पांच बोले तो तेहीज पहीण पेचा कहेतां परलोकने विषे "हीयाये" प्रमुख थाशे इम कह्यो. एहवा शब्दनो फेर छे. तीम सुरियाभे भगवंतने नमोथुणं कह्यो तीहां "पेचाहीयाए" प्रमुख पांच बोल कह्या. संजम लेतां खंधके कह्या तीम. अने प्रतिमा पुजवी, सामानीक देवताये वतावी तीहां "पुवी पछा हीयाए" प्रमुख पांच बोल, कह्या. धन काढवाना आलावानीपरे. एणे लेखे खंधकनो संजम अने सुरिया-

छिने दरसणे भविस्सई ” ए मोहनीकर्मनो उद्ये तीम ए पण मोहनी ए कर्मजनीत जीतआचार माटे ल्ये. ए डाढानो लेवो तथा पुज्वो धर्मखाते नथी. जो धर्मखाते होवे तो, देवता डाढा लइ जाय तीवारे मनुष्य, श्रावक, समदृष्टी रख्या तो लीये ? पण एमां कांइ धर्मखाते नथी, देवतानो जीतव्यवहार छे ते लीये छे.. जो डाढा-पुज्ये केवळी परुप्यो धर्म होवे तो भव्य, अभव्य, समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी सर्व कीम पुजे ? अभव्य मीथ्यादृष्टीने जीनमार्गनी रुची न होवे अने मनुष्य लोकनीपरे देवलोकमां देवता पण समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी वे जुदां जुदां छे पीण जीनमार्गिना पुस्तक जुदा जुदा नथी. अने जीनमार्गी सीद्धांत वांचे छे, अने अन्यमार्गिना कुरान, पुरान वांचे छे तीम तो नथी. सर्वने “ धम्मीसये ” एक छे. ते लोकीक-मार्गे सर्वने मानवा जोग सरखो छे.

१ प्रतिमा पण मनुष्यलोकमां सीव ने मुसलमान जुदा जुदा छे. पण देव-लोकमां समदृष्टी, मीथ्यादृष्टीना देहेरां जुदां जुदां नथी. वीमान वे प्रते एक एक सीद्धायतन. जीनपडीमा छे तेहीज छे तेहने सर्व पुजे छे.

२ वळी मनुष्यलोके पोतपोतना गुरुना अंग पुजवा योग्य जाणे छे. जीनमति तथा अन्यमती, तीम देवलोकमां जीनमती जीनडाढा पुजेछे, अने अन्यमती अन्य-देवनी डाढा पुजेछे एम तो नथी. सर्व एहीज जीनडाढा पुजे छे.

१ ते माटे जे काम समदृष्टीज करे ते काम तो लोकोत्तर खाते.

२ अने जे काम एकला मीथ्यातीज करे ते कुप्रावचनीक मीथ्यात खाते.

३ अने जे काम समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी, वेहु करे ते लोकीक जीतव्यवहार तथा पोताना स्वार्थहेते जाणे पाप पण करवो पडे ते लोकीक रीत. तीम ए डाढा सम-कीती, मींथ्याती सर्व पुजे तीवारे लोकीककरणी ठहरी. ए त्रण वस्तु अनंतेजीवे, अनंतीवार पुजी पण समकीती थयो नहीं.

वळी सुधर्मिसभामांही देवता भोग नथी भोगवता ते डाढानो महीमा छे, एह कहे छे. तेनो उत्तर. ज्ञाता सोळमे अध्ययने कृष्ण वासुदेवने पण मुधर्मीसभा कही छे. तीहां जीनडाढा छे नहीं. ते माटे सुं सुधर्मिसभा मध्ये भोग करता हुस्ये ? कदापी न ठरे, इहां डाढानो मुरतव देखाडयो ते भलुं, पण जीनपडीमां, राजसभा, दरवार, वाजर, हाट प्रमुख ठामे जीनडाढा नथी ते माटे सुं भोग करे छे ? भोग तो भोगने ठामे होवे पण तेहीज सुधर्मिसभामां डाढा छे. तीहां वेठा देवता चारे

देवा स्वर्गलोके धुसास्वतानि चैत्यानि प्रज्युते तत्कल्प स्थिति-वशानुरोधात् अतएव विरुध नसंभवंति.

इम कह्युं इहां अभव्य संगमक देवतानी पुजा प्रतिमा सुर्याभादीक देवता कीम पुजे. तीवारे कह्यो देवतानी स्थीतीमाटे पुजे स्थीतीनो कल्प एहवोज छे ए तत्व. ए लेखे अभव्यसरखा ते पण प्रतिमा पुजे धर्मबुद्धिं रहीत छे, तो पण जीतव्यवहार माटे पुजे तो हवे लोकीक रीत ठरही के धर्मरीत ठहरी ते वीचारी जोजो.

२१. डाढा पुजी कहे छे. तेहनो उत्तर.

१२. वली हींस्याधरमी कहे छे, सुरीयाभे, वीजयपोलीये जीनडाढा पुजी छे. डाढाने लीधे सुधर्मिसभामध्ये भोग भोगवता नथी, ते माटे डाढानी पुजा मुक्ति हेते छे. ते उतरः डाढानो पुजवो समकीत खाते नथी. " धम्मीयसथे १ जिणपडीमा २ जिणदाढा ३ ए त्रण एक खाते छे. डाढाने पण भव्य, अभव्य, समदृष्टी मीथ्यादृष्टी, सर्व पुजे छे सर्वने भवनमध्ये, विमानमध्यें; चार जातना देवताने सरवेने छे अनंता तीर्थंकर मुक्त गया तेहने चार चार डाढा हती अने तेहना लेणहार पण चार जणां छे. १ सक्रेंद्र २ इसान. ३ चमरेंद्र, ४ बलेंद्र एहीज ल्ये छे. तेहने दाबडामां घाली पुजे छे, ए डाढा धरम जाणीने ल्ये ते धर्म, पण कुलधर्म जीतववहार ९ जाणीने ल्ये इहां श्रुत, चारीत्ररुप धर्म जाणीने लेता नथी. जो धर्म जाणीने लेता होवे तो अच्चयु इंद्र ते इंद्रादीक सर्वथकी मोटा छे ते कां लेता नथी? एहने कोण वरजी शके ? पण जेहने लेवानो जीतववहार छे तेहीज लेवे छे अने तेहीज रीते ल्ये छे. उपरनी जमणीडाढा सक्रेंद्र ल्ये हेठली डावीडाढा इसानेंद्र ल्ये, हेठली जमणीडाढा चमरेंद्र ल्ये, हेठली डावीडाढा बलेंद्र ल्ये. ए रीते ल्ये छे. ए चार डाढा उदारीक परीणाम छे. असंख्यात काल उपरांत रहे नहीं, अने होवे पण चार इंद्रने वीमाने छे अने डाढानी पुजा तो सक्रादी इंद्र तथा सुरीयाभादीक सामानीक तथा वीजयादीक पोलीया तथा असंख्याता भवनपत्यादीक सर्व पुजे छे ते सर्वने जीनडाढा कीहांथी आवी ? पण इम जाणजो जे सास्वता पुदगल डाढाने आकारे परीणामे छे डाढाने आकारे तेहने पुजे छे ऐहनो नाम ते जीनडाढा छे पण कांइ लेइ जाय ते सदाकाल रहे तथा सर्व ठामे होवे इम नथी, जीम जमाली, मेघकुमारे दीक्षा लीधी तेवारे माताये मस्तकना केस लीधा. ए समे " अप-

साए भगवं तवोकम्मं करेति एसो आगतो.

इहां संगामो देवता सामानीकइंद्र सक्रेंद्रनो कह्यो. अने अभव्य कह्यो.

३. वळी संदेहदोलावली ग्रंथ छे तेहनी वृतिमध्ये कह्यो.

मन्वेवंतर्हि संगमकःप्राय माहा मीथ्यादिष्टी देवे विमान स्छंसिद्धायतनं प्रतिमा अपीनातनमिति चेतन्नन्येत्पज्येषुदि संगमं वत् अभव्य अपीदेवा पदियमिति बहुमानात्कल्प स्थिति- वसानुरोधात् तदभूत प्रभावाद्वांन कदाचीत असमंजसक्रिया आरभ्यते ॥

ए संगामो देवता अभव्य कह्यो छे. इंद्रनो सामानीक कह्यो. सामानीक देवता इंद्रसरखा विमाननो धणी उपजतीवेळा सुरीयाभनी परे प्रतिमाडाढा पुजे. पोतानी कल्पस्थिती माटे. ए साख.

४. वळी सीद्धांतसाख जुओ. अभव्य अने मीथ्यादृष्टी सामानीक देवतापणे न उपजे तो श्री महावीरप्रत्ये सुरियाभे कीम पुछयुं जे, स्वामी हुं भव्य, अभव्य, समदृष्टी मीथ्यादृष्टी इत्यादीक वार बोल कीम पुछया ? जो सुरियाभ विमाने मीथ्यादृष्टी, अभव्य न उपजे तो, संदेह श्यानो उपनो ? जीम अनुत्तरविमाने अभव्य. मीथ्यादृष्टी, न होवे. तेनो उत्तर. जो प्रतिमा पुजतां समदृष्टी होवे तो सुरियाभे उपजती वेळाज प्रतिमा पुजी छे. पछे भगवंत पासे वांदवा तो आव्यो छे. प्रतिमा पुजतांज समदृष्टी ने भव्य तो थइ चुकयो, संदेह न रह्यो. तो वळी भगवंतने पुछवानुं सुं कारण होवे ? तीवारे हींसाधरमी कहेस्ये जे, एणे जाणतांथकां पण निःसंदेह थावामाटे पुछयुं, एम कहे. तेनो उत्तर: जो जाणतो निःसंदेह थावामाटे पुछे तो मनुष्यलोकमां गणधर, साधु, श्रावक, समदृष्टी, राजा, सेठ, सेनापति पोताना जीवआश्री तथा बीजा मनुष्यआश्री ए वार बोल क्यांइ पुछया कह्या नथी. जीहां तीहां वार बोलनी पुछा देवता आश्रीयज छे. सक्रेंद्रना वार बोल गौतमे पुछया भगवती सतक सोळमे उदेसे बीजे इसानेंद्रना वार बोल गौतमे पुछया. सनतकुमारना वार बोल गौतमे पुछया भगवती सतक त्रीजे उदेसे पेहेले. सुरियाभे पोते पुछया रायपसेणीमध्ये. इम जाव शक्रमध्ये वार बोलनी पुछा घणे ठामे कही छे, पण गणधर, साधु, श्रावक, मनुष्यना पुछया नथी एटलामाटे इम जाणजो जे वि-

भाषा बोले छे. तथा सावद्यभाषा जीव वीराद्धनारुप भाषा बोले छे. तथा सर्व इंद्र, सुधर्मद्र सभामां बेठाथकां हास्य, विनोद, विलास. तृकटाक्ष, कामचेष्टा, नाटीक, नारीक्षण, गीत, श्रवण इत्यादीक तो करेछे, ते संसारी जीवनो छांदो छे. एमां भव्य, अभव्य, समदृष्टी सरखो आचार छे. एमां मुक्तिनो कारण कोइ नथी.

१३ तथा सर्वजीव देवतापणे उपना तेणे वीधीपुर्वक पुस्तक प्रतिमा, डाढा पुजी छे. भव्य, अभव्य, समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी जुदा न पडया. जीतआचार माटे. तीवारे हींसाधरमी कहे छे जे, विमानना अधिपतिये प्रतिमा पुजी छे ते तो एकांत समदृष्टी होवे. मीथ्यत्वी विमानना अधिपतिपणे उपजे नहीं. ते वात सुत्रविरुद्ध कहे छे. सुत्रमध्ये तामळीतापस बाळतपसी पुरण बाळतपसी मीथ्यात्वी; काळकरी इसानेंद्र, चमरेंद्रपणे उपना कह्या. तेणे पोतानी स्थीती जीतीआचार माटे प्रतिमा पुजी होसे के नहीं पुजी होवे? अने समकीत तो पछे पाम्या छे ने प्रतिमा तो उत्पातसीजामांहीथी उठतोथको पुजेछे. ते माटे इम नथी जे समदृष्टीज पुजे. वळी हरीभद्रसुरीनो कीधो अभव्यकुळक छे. ते मध्ये इम कह्युं छे, जे इंद्रपणे, सामानीकइंद्रपणे, त्रायत्रीसकपणे, लोकपाळपणे, परमाधामीपणे, तथा प्रतिमा थाय ते पाषाणपणे, प्रतिमाना भोगना फळ, पाणीपणे एटला मध्ये अभव्य जीव उपजे नहीं एहवुं कह्युं छे. तेनो उत्तर.

१ इंद्रपणे न उपजे, वीमाननाधणीपणे न उपजे, तो बारमा देव लोकना इंद्रथकी पण नवग्रीवेकना देवता आधिका छे. अहीमींद्र छे ते मध्ये अधीकी ज्योती, कान्ति, पुनाइ चोसठ इंद्रथकी पण अधीकी छे; ते मध्ये अभव्य अने मीथ्यादृष्टी उपजता सुत्रमध्ये कह्या छे. भगवती सतकमध्ये सर्व जीव नवग्रीवेकपणे अनंतीवार उपना कह्या छे, ते माटे इहां नवग्रीवेकसुधी अभव्यनो उपजवो इम कह्यो ते

२. तथा तमारेज मते आवस्यकनीवृति बावीस हजारी हरीभद्रसुरीनी कीधी ते मध्ये सामायके नाम अध्ययनी टीका मध्ये अभव्य, संगामादेवतानो अधीकार छे जे, श्री माहावीरने उपसर्ग करवा आव्यो तीहां पहेलां सक्रेंद्र बोल्यो, माहावीरने कोइ चळावी न सके, तेवारे संगामो अभव्य देवता सक्रनो सामानीक छे ते बोल्यो.

अहं संगामो नाम सोहम्म कप्पवासी देवो सक्कसामाणीउ सोभणीइ देवराया अहोरागे नउक्कवई कोमाणुसो देवा न चालीसई अहं चालेमि नाहे सक्कोतं भवारेती माजाणिहिति परनि-

जन्ममहोच्छव, दीक्षामहोच्छव, निर्वाणमहोच्छवे अनेक क्रोड देवता आवे ते सर्व जीतव्यवहार मध्ये गण्या. जीतव्यवहार जीहां कह्यो तीहां समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी, भव्य, अभव्यनुं शुं कारण कह्युं. अने सक्रसुरीयाभ ददुरदेवता प्रमुख सहीत जे भगवंतने वांदवा आव्या तीहां जीतव्यवहार न कह्यो, तो इम जाणजो जे देवता जे जे कर्तव्य करे नमो थुणं, पुजा, जनममहोच्छव, दीक्षामहोच्छव, निर्वाणमहोच्छव, डाढा लेवी. थुभ कराववां, ए सर्व काम जीतव्यवहार नाछे. जो धर्मववसायना होवे तो मनुष्य, श्रावक, समदृष्टी, राजा, शेठ, सार्थवाहादीक कीम न करे ?

हींस्याधरमी कहे छे रुषभदेव स्वामी तथा नवाणुभाइ मुक्ति गया तेहना चैत्य थुभ भरथेशरे कराव्या इम कहे छे. ते वात खोटी छे. जंबुद्वीपपन्नंतीमध्ये रुखभ देवनो थुभ एक देवताये कीधो भरथेसरनो नाम पण नथी. अने त्रेवीस तीर्थंकरना थुभ इंद्रे कीधां. पोताना जीतआचार माटे पीण कोइ मनुष्य श्रावक कीधां नथी. कह्यां पोताना जीतआचार माटे पीण कोइ मनुष्य श्रावक कीधां नथी. कह्यां. इंद्र सरखे गर्भमां रह्या तीर्थंकरने नमोथुणं कीधां, प्रतिमा आगळ कीधां पण श्री वित्त-रागने वांदवा आव्या वीहां साक्षात भगवंतने नमोथुणं कोइ देवताये न कीधो तो शुं प्रतिमाथकी भगवंत उतरता हता ? पण देवतानो जीतव्यववाहार एहवोज जणाय छे तथा भगवती सतक सतरमे उदेसे वीजे कह्युं जे,

जीवाणंभंत्ते किधम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया पुछा गोयमा जीवाधम्मे विठिया अधम्मेविठिया धम्माधम्मोविठीया नेरइयाणपुछा गोयमा नेरइया नो धम्मेठिया अधम्मेठिया नो धम्माधम्मेठिया एवं जाव चउरिंदियाणं पंचदिय तिरिखजोणी याणं पुछा गोयमा नो धम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया मणुसाजहाजीवा वाणमतरं जोइसिय वेमाणीया जहा नेरइया.

अर्थः—जीव हे भगवंत सुं धर्मनेविषे रह्या कहीये, अथवा अधर्मने विषे रह्या अथवा धर्माधर्मनेविषे रह्या कहीये ? इति प्रश्नः उत्तरः हे गोतम जीव धर्मनेविषे रह्या कहीये. अधर्मनेविषे पण रह्या कहीये धर्मधर्मनेविषे पण रह्या कहीये. नारकी हे भगवंत इत्यादी प्रश्नः उत्तरः हे गोतम नारकीने सर्ववीरतीना अभावथकी धर्मास्तिक नहीं, अधर्मास्तिक कहीये. देसवीरतीना अभावथकी धर्माधर्मास्तिक पण नहीं एम

ाननी धणीपणे पण वार बोलवाळा उपजे छे ते सर्वे प्रतिमाने, डाढाने पुजे छे.
माटे प्रतिमा, डाढानी पुजा संसारहेते जीतआचारमां जाणवी, पण सूत्र, चारीत्र
र्म मध्ये नहीं.

१४. वळी हींसाधरमी कहेछे जे, प्रतिमानी पुजा देवताने धर्मखाते छे. तेनो
उत्तर. प्रतिमा तो भगवंतना शरीरथकी जुदी छे, पण साक्षात भगवंतनो शरीर
हेनो महोच्छव देवताना जीतआचारमध्ये कह्यो छे, तो प्रतिमानी पुजा धरमव्य-
हारमध्ये क्यांथकी थाशे ? तेहनी साख जंबुद्वीपपन्नंतीमध्ये छपन दिसाकुमारी
आवी तीहां जीतआचार कह्यो ते पाठ.

उपन्ने खलु भो जंबुद्दीवे२ भगवं तिथयरे तं जीयं मेयं तीय पच्चुपन्न मणागयाणं अहोलोगं वथवाणं अठन्हं दिसाकुमारिणं भगवउ तिथयरस्स जम्मण महिमं करित्तए॰

अर्थ—उ. उपनो. ख. नीश्चे भो. भो ! इत आमंत्रणे. जं. जम्बुद्वीप नामा
द्वीपने विषे. भ. भगवत. ति तिर्थंकर. तं. ते भणी. जी. जीतआचार छे. ए. एह.
.. अतीतकाळ थयो. ५ हवणा वर्त्तमानकाळ छे. अ. अनागतकाळे थाशे. अ.
अधोलोकनी वसनारी. अ. आठ दिशाकुमारी भ. भगवंत. ती. तीर्थंकरनो. ज.
जन्ममहोच्छव (महीमा). क. करवानो आचार छे.

वळी रुषभदेवस्वामी नीरवाण समयने अधीकारे कह्युं जेः जंबुद्वीपपनंती मध्ये
शक्रेंद्रे एम वीचार्युं जे.

परिनिवुए खलु जंबुद्दीवे२ भरहेवासे उसभे अरहा कोस-लीये तंजीयमेयं तीयपच्चुप्पन्न मणागयाणंसक्काणंदेविंदाणं देवरा यातीणंतिथगराणंपरिनिव्वाणं महिमं करीत्तए ॥

अर्थः—प. परीनीवृत मोक्ष पुहोता. ख, नीश्चे जं. जंबुद्वीप नामा द्वीपने विषे.
भ. भरतखेत्रे. उ. रुषभदेव. अ. अरीहंत. को. कोसलीक. तं. ते माटे जीतआचार
छे. अ. एह अतीत. प. वर्त्तमान. अ. अनागत काळना. सु. सुधर्मेंद्र. दे. देवतानो
राजा होय ते. तीर्थंकरनो. प. परीनीर्वाण. म. महीमा. क. करे.

एम सर्व इंद्रने वीचारणा सक्रनीपरे. जो साक्षात जीनना सरीरनो महोच्छव
जीतव्यवहारमध्ये कह्यो छे, तो प्रतिमानी पुजा धर्मव्यवहारमध्ये कीहांथी थाशे ?

जन्ममहोच्छव, दीक्षामहोच्छव, निर्वाणमहोच्छवे अनेक क्रोड देवता आवे ते सर्वे जीतव्यवहार मध्ये गण्या.जीतव्यवहार जीहां कह्यो तीहां समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी, भव्य, अभव्यनुं शुं कारण कह्युं. अने सक्रसुरीयाभ दुरदेवता प्रमुख सहीत जे भगवंतने वांदवा आव्या तीहां जीतव्यवहार न कह्यो, तो इम जाणजो जे देवता जे जे कर्तव्य करे नमो थुणं, पुजा, जनममहोच्छव, दीक्षामहोच्छव, निर्वाणमहोच्छव, डाढा लेवी. थुभ करावर्वा, ए सर्वे काम जीतव्यवहार नाछे. जो धर्मव्रवसायना होवे तो मनुष्य, श्रावक, समदृष्टी, राजा, शेठ, सार्थवाहादीक कीम न करे ?

हींस्याधरमी कहे छे रुषभदेव स्वामी तथा नवाणुभाइ मुक्ति गया तेहना चैत्य थुभ भरथेशरे कराव्या इम कहे छे. ते वात खोटी छे. जंबुद्वीपपन्नतीमध्ये रुखभ देवनो थुभ एक देवताये कीधो भरथेसरनो नाम पण नथी. अने त्रेवीस तीर्थंकरना थुभ इंद्रे कीधां. पोताना जीतआचार माटे पीण कोइ मनुष्य श्रावक कीधां नथी. कह्यां पोताना जीतआचार माटे पीण कोइ मनुष्य श्रावक कीधां नथी. कह्यां. इंद्र सरखे गर्भमां रह्या तीर्थंकरने नमोथुणं कीधां, प्रतिमा आगळ कीधां पण श्री वित्त-रागने वांदवा आव्या वीहां साक्षात भगवंतने नमोथुणं कोइ देवताये न कीधो तो शुं प्रतिमाथकी भगवंत उतरता हता ? पण देवतानो जीतव्यववाहार एहवोज जणाय छे तथा भगवती सतक सतरमे उदेसे बीजे कह्युं जे,

जीवाणंभंत्ते किधम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया पुछा गोयमा जीवाधम्मे विठिया अधम्मेविठिया धम्माधम्मोविठीया नेरइयाणपुछा गोयमा नेरइया नो धम्मोठिया अधम्मेठिया नो धम्माधम्मेठिया एवं जाव चउरिंदियाणं पंचदिय तिरिखजोणी याणं पुछा गोयमा नो धम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया मणुसाजहाजीवा वाणमतरं जोइसिय वेमाणीया जहा नेरइया.

अर्थः—जीव हे भगवंत सुं धर्मनेविषे रह्या कहीये, अथवा अधर्मने विषे रह्या अथवा धर्माधर्मनेविषे रह्या कहीये ? इति प्रश्नः उत्तरः हे गोतम जीव धर्मनेविषे रह्या कहीये. अधर्मनेविषे पण रह्या कहीये धर्मधर्मनेविषे पण रह्या कहीये. नारकी हे भगवंत इत्यादी प्रश्नः उत्तरः हे गोतम नारकीने सर्ववीरतीना अभावथकी धर्मास्तिक नहीं, अधर्मास्तिक कहीये. देसवीरतीना अभावथकी धर्माधर्मास्तिक पण नहीं एम

जावत चउरेंद्रिलगे केहेवो. पचेंद्रि त्रीर्यंचजोनीकनो प्रश्न कीधो. उत्तर हे गौतम धर्मनेवीषे रह्या न कहीये अधर्मस्थीत कहीए धर्माधर्मनेवीषे पण देसवीरतीना सभाव थकी मनुष्य जीव जीम कह्या तीम कहेवा. वाणव्यंतर, ज्योतीषी, वेमानीक, जीम नारकी कह्या तीम कहेवा.

ए लेखे देवताने भगवंते अधर्मस्थिति कह्या ने कर्तव्यरुप धर्म नथी. सम्यक्त आश्रीत सुभजोग आश्री देवता धरमी कहीये. अने रायपसेणी मध्ये पुस्तक वांचीने देवता उठया तीवारे "धम्मीयं ववसाइ गीन्हीजा" कह्युं ए पाठ उपर हींस्याधरमी कहेछे जे, प्रतिमा पुजी ते धर्मवीवसाय मध्ये छे. ते उत्तर. ए धर्मव्यवसाय ग्रह्यो कह्युं ते प्रतिमा पुजवा आश्रीज नथी कह्युं. ए धर्मव्यवसाय ग्रह्यो तीवार पछे जे जे वस्तु पुजी ते पोताना जीतआचारनी विध ते सर्व धर्मव्ययसायमध्ये आवी तोरण, खडग, प्रमुख पुज्या ते धर्मव्यवसाय ग्रह्या केडे तथा पुस्तक वांच्या केडे पुजी ते वस्तु तो धर्मव्यवसायमध्ये गणसो तो पुस्तक पुजवो वांचवो ए स्यामां गणवो ? धर्मव्यवसाय कह्यो ते मध्ये तो श्री ठाणांग दसमे ठाणे दस प्रकारे धर्म कह्यो छे.

दसविहे धम्मे पन्नंत्ते तंजहा गामधम्मे नगरधम्मे रठधम्मे पासंडधम्मे कुलधम्मे गणधम्मे संघधम्मे श्रुयधम्मे चरीत्तधम्मे अथिकायधम्मे ॥

अर्थ—द. दस. प्रकारे. ध. धर्म. पं. कह्या. तं. ते कहे छे. गा. ग्राम ते कोकोनुं स्थानक तेहनो धर्मआचार ते स्थिति ग्राम ग्राम प्रति जुजुइ अथवा गाम इंद्रिय ग्राम तेहनो. १ नं. नगरधर्म ते नगराचार ते नगर प्रति जुजुइ २ र. राषद्र-धर्म ते देसाचार. ३ पा. पाखंडधर्म ते पाखंडीनो आचार. ४ कु. कुलधर्म ते उग्रादीक कुलनो आचार. ५. ग. गणधर्म ते गच्छधर्म गच्छाचार. ६ सं. संघधर्म ते चतुरविधि संघ तेहनो धर्म. ७ सु. सुतुधर्म ते आचारांगादीक द्वादसांगीनो धर्म दुरगति पडतां जाणी प्राणीने धरे ते भणी धर्म. ८ च. चारीत्रधर्म ते पांच माहाव्रत ९ आ. अस्तिकायधर्म ते धर्मास्तिकायादीकनो स्वभावधर्म.

एह वावी, हथीयार, प्रतिमा डाढा, प्रमुख पुज्या, ते सर्व कुलधर्म रीत मध्ये ते माटे धम्मीयं ववसाय कह्यो. पण कांइ श्रुतधर्म श्रधारुप धरम नहीं. ए चारीत्रनी करणीरुप पण धर्म नहीं. चारीत्रे धर्म अनुष्टान पालवा वीरतीरुप, ते तो देवताने छे नहीं, अने श्रुतधर्म तो श्रधारुप, छे, कर्तव्यरुप नहीं, अने श्रुतधर्ममध्ये

इह वावी, हथीयार, प्रतिमा, डाढा, वृक्ष, वावडी, पुजवा कह्या नथी, जो सुतधर्म-मध्ये एहवा बोल पुजवा कह्या होवे तो, मनुष्य, राजादीक श्रावके केम न पूज्या ? श्रुत, चारीत्र, धर्मना. स्वामी तो मनुष्य छे, ते तो पुजता नथी. तथा सुरीयाभ श्री माहावीर स्वामी पाशे आव्यो तीहां फुल, पाणी, वस्त्र, आभ्रणथकी प्रतिमा पुजी तीम महावीरने पुज्या कीम नहीं ? प्रतिमा आगल कह्युं छे जे, धुबंदाउण जीण-वराणं तीवारे साक्षात जीनवरने धुप कीम दीधो नहीं ? ते कहो तीवारे कहीस्ये जे, पहीलांथी सेवक देवता आव्या तेणे मांडलो पुज्यो, छांटयो, वरसाव्यो, धुप्यो एटला काम कीधा छे. ते उत्तरः तीहां तो इम कह्युं छे जे मांडलो सोध्यो, वरसात कर्यो, धुप घटीजोओ दीवंसुराभी गमनजोगं करेह कहेतां देवताने आववा जोग्य करो. इम कह्यो, पण इम नथी कह्युं जे, भगवंतने रहीवा जोग्य करो. ए चउद प्रस्नोत्तरे करी एक सुरीयाभनो प्रश्न कह्यो.

---

२२. चीत्रामणनी पुत्तळी न जोवी कहेछे. तेनो उतर.

हींस्याधरमी कहे छे जे, दसविकाळीक आठमे अध्ययने कह्यो छे जे.

चित्तभित्तिं ननिझाए ॥ नारी वा सु अलंकियं भखरंपिव दठुणं ॥ दिठिपडीसमाहेरे ॥ ५५ ॥

अर्थ—ची. भिते आलेखी स्त्रीना रुपने. न. जोइये नहीं तो. ना. सचेत-नी स्त्रीने. वा. अवधारणे. सु. अलंकार पहीरी वेसे करी सहीत स्त्रीने कीम जोइ सहीजे नजरे द्रष्टे. भ. सुर्यने अ. जीम. द. देखीने. दी. आंखीने. प. पाछी वाले तीम स्त्रीथी द्रष्टी पाछी वाले.

ए गाथामां एम कह्युं जे, भीते चीत्री अस्त्री ते जोवे नहीं काम राग उपजे ते माटे. हवे जीम पुत्तळी दीठे राग उपजे तीम प्रतिमा दीठे वैराग उपजे ते माटे प्रतिमा वांदी नीकळी छे. तेनो उत्तरः प्रस्नव्याकरण मध्ये पांचमे संवरद्वारे तों प्रतिमा अने पुत्रीबेहु जोवी नीखेधी ते पाठ.

बितियं चखुइदिएणं पासिय रुवाणि मणुन्न भद्धकाइं सच्चित्ताचित्त मीसगाइं कठे पोथय चित्तकम्मे लेपकम्मे सेलय दंतकमेय पंचहिंवणेहिं अणेग संठाण संठियाइंचीए गंथिम वेढिम

पूरिम संघाइ मणि मल्लाइं बहु विहाणिय अहियं नयण मण सुहकाराइं वणखंडे पव्वएय गामागर नगराणिय खुडीय पुक्करिणी वावी दीहीय गुंजालिय सर सरपंतिय सागर बिलखिंतिय खाइय नदी सर तलाग वप्पिण फुल्लुप्पल पउम परिमंडियाभिरामे अणेग सउण गण मिहुण विचरिंते मंडव विविह भवण तोरण चेइयः विभूसिये पुव्व कय तव प्पभाव सोहंगा संपउत्ते नड नट्टग जल्ल मल्ल मुठिय वेलंबग कहक पावक लासग आइख लंख मंख तुणइल्ल तुंबवीणिय तालायर पगरणाणि य बहुणि सुकरणाणि अणेसुय एवमाइएसुय रुवेसु मणुन्नभद्दएसु नतेसु समणेण सजियव्वं नरजियव्वं नगज्झियव्वं नमुज्झियव्वं एविणिग्घाय मावजियव्वं नलुभियव्वं नतुसियव्वं नहासियव्वं नसइंच मइंच त्तथ कुज्जा ॥

अर्थ—बी. बीजी भावनानुं स्वरुप. च. चखु इंद्रीये करी. पा. देखीने. रु. रुप कहेवा छे रुप. म. मनोज्ञ. भ. कल्याणकारी. स. सचीत. अ. अचीत. मी. मीश्र ते कया रुप. क. पोठीयाने वीखे रुप तथा काष्टना १. पो. वस्त्रने वीखे रुप वस्त्रना रुप २. ची. चीत्राम रुप. ३. ले. माटीनो रुप. ४. से. पाखाणना रुप ५. दं. दांतना रुप. ६. पं. पांच वर्ण करी. अ. अनेक सहीत. सं. संस्ठाणे आकारे. ६ सं. सहीत. ७. गं. माळाने गुंथीने नीपाया. ८. वे. वीटी दडावत. ९. पु. भरी नीपजाव्यो पीतळनी प्रतिमा. १० सं. अनेक वर्ण एकठे नीपजाव्या पंचवर्णि फुल माळावत. ११. इ. ए. म. माला. ब. घणा प्रकारना. अ. अत्यंत. न. नयणने. म. मनने. सु. सुखना उपजावणहारा रुप. व. वनखंड वनखंडाटपद्रा. १२. प. पर्वत. १३. गा. गाम. १४. आ. आगर. १५ न. नगर. १५ १६. खु. जलाश्रय १७. पु. कमळ सहीत वाटली वाव. १८. वा. चोखुणी वाव. १९ दी. लांबी वाव. २०. गु. वांकी नीकी. २१. स. सरोवर. २२. ने. एक सरोवरमांहीथी बीजे सरोवरे पाणी जाय एहवी पंक्ति. २३. सा. समुद्र. २४. बी. धातु खणवानी पदयाति. २५. खा. खाइ. २६. न. नदी. २७. स. जणखण्या तळाव. २८, त. खण्या

तळाव. २९. व. कयारा. कु. विकस्या. उ. नीळोत्पळं. प. बीजा पदरकमळ तेणे करी. प. मंडीत. अ. सोहामणा जळना आश्रय छे. अ. अनेक. ३०. स. पंखीना. ग. समुह तेहना. मी. स्त्री, पुरुषना जोडलां तेणे करी, वी. व्याप्या छे तेणे. मं. मांडवा. ३१. वी. नाना प्रकारना. भ. भवन घर. ३२. तो. तारण. ३३. चे. प्रतिमा. ३४. वी. वस्त्रादीकना विभूषादीक सहीत. पु. पुर्वभवे. क. कीधां. त. तप. प्प. तेहना जे प्रभावे करी. सो. सोभागे. सं. सहीत. न. नटवा. न. नचावणहार. ज. जल, म. मल. मु. मुठीक. वे. वेळंबक. क. कथक. प. प्लवग. ला. लासक. आ. आख्यातक. लं. लंख. मं. मंख. तु. तृणइल्ल. तुं. तुंबनी विणा. ता. ताळाचर. एटलानी. प. करवां. य. वळी. ब. घणा. सु. रुडांकर्म. अ. एथी अनेरा, ए. ए आदी देइने. रु. रुपने वीखे. म. मनोज्ञ. भ. कल्याणकारी. न. ते रुपने वीखे. म. मनोज्ञ. भ. कल्याणकारी. न. ते रुपने वीखे. स. साधुये. न. स. संबंध न करवो. १ न. राग न धरवो. न. गृद्ध थावुं नहीं. ३. न. मोह धरवो नहीं. ४. न. व्याघात अंतराय. न. आ. न करवो. ५. न. लोभ न करवो. न. संतोष न पामवो. न. हसवुं नहीं. न. संभारवो. म. वीचारवो. त. क्रु, न करे.

ए पाठ मध्ये इम कह्यो, एटला पदार्थ जोवां नहीं. पुर्वे जोया होवे ते संभारवा पीण नहीं, ते मध्ये चैत्य ते प्रतिमा अने देवकुल ते देहरां ते पण भेळां कह्यां, तो प्रतिमाने वांदवा कीहां रही ? एटली वस्तु जोतां करम बंधनो कारण कह्यो, अने स्त्रीनी पुत्तळी दीठे राग उपजे ते तो सुत्रमां पाठ छे,पण प्रतिमा दीठे वैराग उपनो तथा उपजे एवो सुत्र पाठ देखाडो. अने पुत्तळीनो ओठो लइ प्रतिमा ठेरावो ते तो ठहीरे नहीं, स्या माटे जे पुत्तली दीठे रोग उपजे एतो अंतकाळनो चाल जीवनो छे. मोहनी कर्मवाळाने राग उपजे ए उद्य भाव छे, अने वैराग उपजवो ते तो अपुर्व वात छे. खयोपसम भाव होवे धर्मबुद्धि उपजे कांइ वस्तु दीठे वैराग उपजे ? एम करतां प्रत्येक बुधीं थया तेहने वाह्य कारण देखी ज्ञान उपज्यो. संजम लीधो, ते माटे कांइ बाह्य कारणने वांद्यो नथी, भरथेशरे अरीसाभवने वांद्यो नहीं. करकंडुये वृखभने वांद्यो नहीं, दुमुह राजाये थंभने वांद्यो नहीं, नमीराजाए चुडीने वांदी नहीं, नीगाइ राजाए आंबाने वांद्यो नहीं खयोपसम जोग बाह्य कारण देखी ज्ञान उपजे पीण बाह्य कारण वंदनीक नहीं. ते माटे प्रतिमा देखी कोइ बुझयो,ज्ञान पाम्यो, संजम लीधो, ते वात सुत्रमां क्यांय कही नथी.

२३, देहेरां, प्रतिमा करे मंदबुधीया दक्षीणदसना नारकी थाय.

हींस्याधरमी कहे, देहेरा, प्रतिमा करावे, भरावे पुज्ये, बारमे देवलोके जाय ते वात सुत्र वीरुद्ध कहे छे भगवंते राजा श्रेणीकने कह्युं चार बोलमध्ये एक कार्य करे तो तुमे नरके न जाय, कालीकशोकरीक भेंसा न मारे, कपीला साधुने दान देवे, पुणीयो श्रावक सामायक तुमने आपे, तुं नोकारसी मात्र पचखाण करे, तो नारकी न जाय एम कथा मध्ये कहे छे, पीण देहेरां प्रतिमा कराव्ये प्रतिमा पुज्ये, देवलोकमध्ये जाय, नारकी टले ए कीम न कह्युं ? एमतो कोणीक, कृष्णादीकने पण नारकी टाळवी सहील हती, पण ए मध्ये लाभ दीठा नहीं.

वळी प्रस्नव्याकरण प्रथम आश्रवद्वारे कह्युं, एटले काजे प्रथवीनो आरंभ करतो मंदबुधी कहीये ने फल काळे दक्षीणदीसीनी नारकीए जाय ते पाठ.

इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं किंते करिसण १ पोखरिणी २ वावि ३ वप्पिण ४ कुव ५ सर ६ तलाग ७ चिनि ८ वेति ९ खोइ १० आराम ११ विहार १२ थुभ १३ पागार १४ दारं १५ गोपुर १६ अट्टालग १७ चरिय १८ सेतु १९ संकम्म २० पासाय २१ विकप्प २२ भवण २३ घर २४ सरण २५ लेण २६ आवण २७ चेइय २८ देवकुल २९ चित्तसभा ३० पव्वा ३१ आयतणा ३२ वसह ३३ भूमिघर ३४ मंडवाणयकए ३५ भायण ३६ भंडो ३७ वकरणस्स ३८ विविहस्सय अठाण पुढविं हिंसंति मंदबुधिया.

अर्थ—इ. ए कहीसुं ते वी. नाना प्रकारने का. कारणे करीने इंद्रीने हणे छे. की. कोण ते कारणे कहे छे. क. खेत्र खेडवाने अर्थे करसणादीक सर्व पदार्थ ४ बोल मध्ये आवे ते ए हळनो खेडणहारो १ खेत्र खेडावणहारो धणी. २ हणाइ पृथव्यादीक त्रस जीव ३ भोजनादीकने अर्थे ४. ए मध्ये आर्य, अनार्य, जातीना सर्व आव्या एमसघळे ठामे ४ बोल वीचारवा करणहार १, करावणहार २. अनुमोदनार ३. मंदबुधीया ३ अर्थे करवा, कोइ बोल अर्थे कामे, कोइ धर्मे ३ ए त्रण अर्थना धणी मंदबुधीया [माठोबुधीनां धणी] कह्या. अंतरंग रलीयायत थाय. घणुं जे भलुं जाणे छे ते माटे. एम सर्व ठामे ए ४ वीचार करवा १. पो. चे. खुणी

कमळसहीत २. वा. वाटली कमळ सहीत ३. व. खेत्रादिकना क्यारा ४. कु. कुवा ५. स. अणखण्या सरोवर ६. त. खण्या तळाव ७. ची. वृतकनी धरती खणवी ८. वे. वेदीका कोरडी ९. खो. नरगनी खाइ १०. य. वळी. आ. वाडी ११. वि. क्रीडाना थानक तथा बोधादीकना थानक १२. थु. मृतकना पगलां १३. पा. गढ १४. दा. बारणा १५. गो. गोळकखाट १६. अ. गढ उपला कोठा १७. च. गढ नगर चल्यो ८ हाथनो मार्ग. १८. से.पाज १९. सं.उतरवानो मार्ग तथा पगथीयां. २०. पा. राजाना मंदीर. २१ वी. घरना भेद. २२ भ. चोसाला घर २३ घ. सामान्य घर. २४ स. तृणाना घर. २५ ले. पर्वत उपर घर. २६ आ. हाट. २७ छोधादया. चे. श्रय वृतो. चे. प्रतिमा. २८ दे. सीखरबंध प्रासाद देहरां. २९ ची. चीत्रामणनी सभा. ३० प. पर्व. ३१ आ. देवना थानक. ३२ त्र. तापासादीकना थानक. ३३ भू. भूंइरां. ३४ मं. गृह आगळ मांडवो ए पुर्वोक्त सर्व वस्तुने अर्थे. ३५ तथा वली भा. धातुना भाजन. ३६ भं. माटीना पात्र. उ. घरवखरा उखल मुसलादीकने अर्थे ए ३ बोलने अर्थे. ३८ तथा वि. एम वीवीध प्रकारने. य. वली अ. अनेक प्रकारने अर्थे. पु. पृथवीकायने. ही. हणे. मं. माठी बुधीना धणी.

ए पाठे मध्ये देहेरा, प्रतिमा, करावे ते पण भेला मंदबुद्धिया कह्या. जो समदीष्टी पण एटला माहीला केटलाएक काम करे छे स्वारथना लीधा पण ते आरंभने अनुमोदता नथी. संसारहेतु जाणे छे, तेणे करीने मंदबुद्धिया नथी. निर्मळ बुद्धि छे, अने धर्मने अरथे तो समदृष्टी आरंभज नज करे. जो आरंभमां धर्म जाणे तो समद्रष्टीपणोज जाय. तथा आरंभमां धर्म जाणे तो साधुने आधाकरमी आहार कां न आपे ? मोल्ये (वेचाती) आणी पण नथी आपता ते माटे मंदबुद्धि नथी, अने देहेरां, श्रुतिमा, तो पहीलां आणंदादीक श्रावकेज कराव्यां नहीं, तो बीजा साने करावे.

वळी हींस्याधरमी कहेस्ये, मंदबुद्धियामां चेइ, देवकुल कह्या ते, तथा पांचमे आश्रवद्वारे देवताना चैत्य परीग्रहमध्ये कह्या छे ते तथा पांचमे संवरद्वारे चेइ,देवकुल, जोवा नीखेध्या ते, ए त्रणे ठामे देहरां प्रतिमा, अन्यदेवना जाणवा पण जीनप्रातिमाने देहेरां नहीं, स्यामाटे जे त्रण ठामे देवकुल कह्यां छे, ते माटे अने जीनना देहेरांने तो सीद्धायतन कह्या छे.ए बोलीमां फेर घणो छे.ते उत्तराध्ज्ञाता अध्ययन बीजे नागघरे जक्षघरे, भुतघरे, वेसमणघरे, ए देवताना घर तेहने घर कह्यां छे तीम द्रुपदीना देहरांने पण जीणघरेज कह्यो छे, सीद्धायतन नथी कह्यो, तीर्थंकरना देहेराने सीद्धा-

यतन कहेस्यो ते नहीं त्यारे सीद्धायतन, देवकुल, देवालय ए सर्व रहीवानाज घर कहीए. इहां देवकुल अने सीद्धायतननो चोज करे ते मुर्ख, पण परमार्थ एकज छे. जीनना देहेरां ते सीद्धायतन अने अन्यदेवना देहरां ते देवकुळ कहीस्यो, तो द्रुपदीने अधीकारे जीनघरहीज कह्योछे, सीद्धायतन नथी कह्यो, ए लेखे द्रुपदीये प्रतिमा पुजी ते अन्यदेवनी ठरसे, ते वीचारी जोजो.

---

२४. साधु प्रतिमानी वयावंच करे कहे छे. तेनो उत्तर.

हींसाधरमी कहे ते प्रस्नव्याकरण त्रीजा संवरद्वारमां कह्युं जे, साधु प्रतिमानो वयावंच करे. ए वात सुत्र विरुद्ध करे छे. त्रीजा संवरद्वारनो पाठ.

अहे केरीसए पुणाइ आराहए वय मींणं जे से उवही भत्त पाण संगहणदाण कुशले अच्चंतबाल १ दुब्ल २ गालांन ३ वुद्ध ४ खमगे ५ पवत्ति ६ आयरिय ७ उवझाय ८ सेहे ९ साहम्मीए १० तवस्सी ११ कुल १२ गण १३ संघ १४ चेइयठेय निजरठी वेयावच्चं अणिसियं दसविहं बहुविहं करेति.

अर्थः—अ. हवे प्रस्नः अदत्त न लागे अने व्रत आराधे ते कहेछेः के. केहवो साधु. पु. वळी अलंकारे. आ. आराधे. व. व्रत. इ. ए त्रीजाने. जे. जे. से. ते साधु. उ. वस्त्रादीक. भ. भात अने. पा. पाणी देवाने परने. स. निर्दोषी लेवाने. दा. गुर्वादीकने देवाने विषे. कु. डाह्यो ते आराधे. अ. आठ वरश उपलो बाळ १. दीले दुबळो २. गा. देखखीण पडया ३. वु. गरढा ४. ख. मासखमणादीकनो कारक ५. सीखने प्रवरतावे ६. आ. गणाधी ७. उ. उपाध्याय सुत्रपाठी ८. से. नवदीक्षित ९. सा. एकसरखी समाचारी साधर्मि १०. त. चोथ छठीओ ११. कु. संघाडो १२. ग. गणो संघाडो १३. सं. संघ समुदाय ने चार तीर्थ सर्व साधुनो १४. चे. ज्ञाननो अर्थि साधु. नी. निर्जरानो अर्थि साधु वे वेयावचने करे. अ. नेश्रा रहित होय तीम. द. दश प्रकारे आचार्यादी सबंधनी. ब, असन, पाणी जाव ओषधरुप वेयावच. क. करे.

ए पाठ मध्ये तो इम कह्युं जे, केवो साधु त्रीजो व्रत आराधे ते कहेछेः प्रतितकारी ग्रहस्थना घरथकी उपध्य, भात, पाणी ए त्रण वस्तु आणीने बाळ दुर्वळा-

दीक चउद जातना साधुने आपे, ते साधु त्रीजाव्रतने आराधे ए दस प्रकारनी वयावंच स्याने काजे करे ? " चेइयठे " [ज्ञानने अर्थे;] " निजरठे " [निर्जराने अरथे.] ए बे जातना कुळने अरथे चउदने दशनी वयावच करे. ए शुद्ध अरथ जाणवो. दसवीह कही ते ठाणांग दशमे टाणे ते पाठ.

दस विहे वेयावचे पनंते तंजहा आयरिय वे० १ उवझाय वे० २ थेर वे० ३ तपसीय वे० ४ गीलान वे० ५ सेह० ६ साहम्मी वे० ७ कुलवे० ८ गण वे० ९ संघ वे० १०

अर्थ.—द. दस. वि. प्रकारे. वे. वेयावच ते. प. कह्यो छे. तं. ते कहे छे. आ. आचार्यनो वेयावच आहारादीके करे १. उ उपाध्यायनो वेयावच भात पाणी आपे २. थे. थीवरनो. ३ त. तपसीनो. ४ गी. मंदवाडीयानो. ५ से. नवा शीष्यनो ६. सा. साधर्मिकनो ७. कु. कुल ते एक गुरुनो परिवार. एक गण ते घणा गुणनो तथा संघाडाना सर्व साधुनो ८. ग. गण, गच्छनो ९. सं, चतुरविध संघनो १०. ए दसनो वयावच करे.

इहां प्रतिमानी वेयावच करवानो नाम नथी. वळी भगवती सतक बारमे उदेसे बीजे एहीज दश भेदे वेयावच कही, तीहां प्रतिमानो नाम पण नथी. वळी उववाइ सुत्रे दश प्रकारनी एहीज वेयावच कही, पण प्रतिमानी वेयावचनुं ठामहीज नथी. वळी व्यवहार सुत्रमां दस प्रकारनी वयावच कही. ते पण एहीज दस भेद. तीहां पण प्रतिमानी वेयावचनुं नाम नथी. सुत्रमां प्रतिमानो नाम नथी, तो प्रश्नव्याकरणमां प्रतिमानी वेयावंच कीहांथी आवी ? अने बहुवीहं शब्द कह्या, ते एटला माटे जे चार सुत्रे दश दश भेद वेयावंच कही. अने इहां चउद भेद कह्या ते माटे बहुवीहं कही. तथा सीहे अणगारे रेवतीना घरथकी बीजोरापाक आणी आप्यो, श्री भगवंतने तथा गणी गणावछेदकनी व्यवहारसुत्रमां वेयावंच कही ते आचार्य शब्दथकी जुदा शब्द छे, ते माटे चउद नाममां ए नाम न आव्यां. तीवारे बहुवीहं कह्यो. तेमां सर्व आव्या. हवे चउदनी वेयावंच स्याथकी करे ते पुर्वे त्रण बोल कह्या छे जे सेउवहीं भत्त पाण संगहणदाण कुसले ओपध्य, भात, पाणीथकी चउदनी वेयावंच करे. ते हवे जुओ के ए उपध्य, भात, पाणी प्रतिमाने स्ये कामे आवे ? अने खाती नथी, पाणी पीती नथी. उपध्य ओढती, पेहेरती, बीछावती नथी. इहां प्रतिमानी सी वयावंच करे ते वीचारी जोजो.

---

२९. नंदीसुत्रमां सर्व सुत्रनो नोंध तथा प्रकरणना वीरुद्ध.

हींसाधरमी कहे छे तुमे तो सुत्र थोडां मानोछो जे मध्ये प्रतिमा घडाववी, भराववी, पुजवी, प्रतीष्टवी, संघ काढवो वीगेरे एहवां कार्य कीधे लाभ थाय ते अधीकारना ग्रंथ छे ते तुमे नथी मानता, प्रतिमाना अधीकार माटे, एम कहे छे ते उत्तर. जंघाचारण, वीद्याचारण १ सुरीयाभ २, वीजे पोळीयो ३, द्रुपदी ४. चेयनी वेयावंच करे ५, चोत्रीश अतीश ६, आणंद ७, अंबड ८, चमरेंद्र ९, कयबलीकम्या १०. एटले ठामे तमे प्रतिमा ठरावोछो, ते सुत्र भगवती, राइपसेणी, जीवाभीगम, ज्ञाता, प्रस्नव्याकरण, समम्वायंग, उपासगदशा, उववाइ, ए सुत्र तो अमे मानीए छीए. प्रतिमानी बीके मुक्या तो नथी. ए वात तमे खोटी कही जे प्रतिमा माटे सुत्र थोडां माने छे. पण एम छे जे नंदी सुत्रमां जे जे सीद्धांतना नाम कह्या ते कहे छे. तेमां प्रथम उत्कालीक सुत्रना २९ नाम. दसवीकालीक, कप्पायकप्पीयं, चुलकप्पसुयं, महाकप्पसुयं उववाइ, रायप्रसेणी, जीवाभीगम, पन्नवणा, महापन्नवणा, पमायपमायं, नंदी, अनुजोगद्वार, देवेंदस्तव, तंदुलवैयालीया, चंद्रविजय, सुरपन्नंति पोरसीमंडल, मंडलप्रवेस, विजाचारणविणीछीय, गणीवीजा, ज्ञाणविभत्ति, मरणविभत्ती, आयविसाही, वैरागसुय, संलेखण, व्यवहारकप्प, चरणविही, आउरपचखाण, महापचखाण, हवे कालीक सुत्रना ३१ नाम. उत्राध्ययन. दसासुतखंध, वृतिकल्प, व्यवहार, निसीथ, माहानिसीथ, रुखीभाखीत, जंबुद्वीपपन्नंती, द्वीपसागरपन्नंती, चंदपन्नंती, खुडीयाविमाणपाविभंत्ति, महलीयाविमाणपाविभत्ति, अंगचुलीया, वंगचुलीया, विवाहचुलीया, अरुणोववाइ, वरुणोववाइ, गुरुलोववाइ, धरणोववाइ, वेसमणोववाइ, वेलंधरोववाइ, देवींदोववाइ, उठाणसुयं, समुठाणसुयं, नागमरीयावणाया, निरयावलीया, कप्पीया, कप्पवेडसहया, पुप्फीया, पुप्फचुलीया, वन्हीदसा. एवं साठ. एक आवस्यक एकसठ ने बारे अंग एवं बोहोंतेर तेथीं तोहोंतर सुत्रना नाम नंदीसुत्रमां कह्या छे. ते मांहेथी वीछेद गया ते तो गया हमणाने समये सुत्र बत्रीस छे; ते तो अमे मानीए छीए. ते उपरांत हींसाधरमी आज पीसतालीस आगम माने छे, ते बत्रीसथकी तेर अधीकां माने छे. ते मध्ये देवंदथुओ, तंदुलवेयालीया, गीणीवीजा, मरणविभत्ति, आउरपचखाण, माहानीसीथ, माहापचखाण, चंदवीज. ए आठना नाम तो नदीसुत्रमां छे. पण ए ग्रंथ मुळगां नथी. ते केम जो मुळगा होवे तो आचार्यना कीधा कीम कहेवाय? आचार्यना जोडया छे ते माटे पछे जोडाणा जाणजो. तीम द्वादसांगी भगवंत गणधरनी

कहीं थकी छे, तेमां कोइ आचार्ये कर्या, एवुं नाम कोइ सीद्धांतमां नथी. ते माटे ए आठ ग्रंथना नाम तो मुळगां रह्यां, पण ग्रंथ आचार्ये जोडया छे. तीम महानसीथ नाम तो आगलो छे, पण आठे आचार्ये मळीने बांध्यो छे, सेख सुत्र तेर मांहीला रह्या ते कोण? तेना नाम. कचउसरणपइनो. भत्तपइनो, संथारपइनो, जीतकल्प, पींडानिर्युक्ति.

ए पांच नाम तो मुदल कोइ सुत्रमां साखमात्र पण नथी, तो तेहने सुत्र जाणीने कीम प्रमाण कीजे. ए पीसताळीस. वळी माहासुठीणभावना, चारणभावना तेयनासग्गणं, आसीविसभावना, दीठीवीसभावना. ए पांच सुत्रना नाम व्यवहारसुत्रमां छे. ए ५ अने ७२ पुर्वला मळी ७३ थयां. वळी ठाणांग दसमे ठाणे दस सुत्रना नाम कह्यां ते. कर्मविपाकदशा ते तो विपाकसुत्र, उपासगदशा ते उपासगअंगमां आव्युं, अंतगडदसा ते आठमो अंगज, अणुत्तरोववाइदसा ते नवमो अंग, प्रश्नव्याकरणदशा दशमो अंग, आयरदसी ते दसासुतखंध. १ खंधदसा. २ दोगधीकदसा. ३ दीर्घदसा. ४ संखेवीयदसा. ए चारना नाम तथा ग्रंथ अप्रसिद्ध छे. एवं ब्यासी नामनो सुत्रमां नाम साख पामीए छीए. सर्वाळे चोरासी कहे छे, पण त्रेविस नाम तो लाभतां नथी. ते मांहींथी जे पुर्वला गणधरकृत होवे तेटलानो प्रमाण छे. सेखना कीधां ते एकांत सुद्ध नहीं. सुद्धासुद्ध मीश्र होवे ते सीद्धांत सरखा करी कीम मनाये? तीवारे हींसाधरमी कहे जे जो केडला आचार्यना कर्या ग्रंथने सीद्धांत करी न मानो तो दसविकालीकसुत्र सीयंभवआचार्यनी कीधी कीम मानो छो शुत्र गणोछो सीयंभव गणहरा जीणपडीमा दंसणेण पडीबुधा ए पांचमे आरे थयो छे. ते उत्तरः दसविकालीक तो भगवंत थकानी छे. नंदीसुत्रमां साख छे. जो पांचमे आरे थइ होवे, तो नंदीसुत्र चोथा आरानो तेमां नाम पहीलांथी कीम घलाय?

वली हींश्याधरमी कहे छे जे, पन्नवणा तो पाट २३ मे सामाचार्य थया तेणे करी छे, ते पण जुठो कहे छे. जो त्रेवीशमे पाटे थइ होवे तो गगवती भगवंतने गौतमनी करी तेमां पन्नवणाना छत्रीश पदनी भळामण कीम कीधी जो पछे थइ छे तो नंदीसुत्रमां चोथेआरे नाम कीम नोंधाणो? सामाचार्ये विसमृत अधीकार काढीने लघुरुप कीधी छे. पण नवो आळजुळ कांइ घाल्यो नथी. ते माटे पन्नवणा तो पुर्वलां छे. तथा हींस्याधरमी कहे छे. नंदीसुत्र देववाचकनो कर्यो छे ए पण खोटो कहे छे. नंदीसुत्र गणधरकृत छे. नंदीमध्येज नंदीनो नाम छे, नंदीशुत्रने धुरे पचास गाथा छे, पांचमां आराना आचार्यना नामनी ए गाथा देववाचक कृत छे

पण नंदीसुत्र तो पुर्वलो छे तथा लघुसुत्र नीसीथ विसाखागणीनी कीधी कहे छे, ते पण असत्य कहे छे. नंदी सुत्रे नाम नसीथनो छे. इम पुर्वाचार्यना मान वधारे छे, जे सुत्र आचार्ये कर्यों छे ते मृखा कहे छे.

वळी जीतकल्पग्रंथने छेदसुत्र कहे छे, तेनुं नाम नंदीसुत्रमां साख मात्र पण नथी तेमां पोताना मत दृढ करवाने एहवा पाठ जोडया छे, ते कहे छे.

से भयवं तहारुवं समणं वा माहाण वा चेइ घरेगछेजा हंता गोयमा दिने२ गछेजा से भयवं जठ दिने न गछेजा तउ पायछितं हवेजा भयवं किं पायछित्तं हवेजा गोयमा पमायं पडुच्च तहारुवं समणं वा माहाणं वा सो जिणघरं न गछेजा अहवा दुवाल समं पायछितं उवदंसेजा से भयवं समणो वासगस्स पोसहसालाए पोसहिए पोसह बंभयारी किं जणहरं गछेजा हंता गोयमा गछेजा से भयवं केणठेण गछेजा गोयमा नाण दंसण ठयाये गछेजा जे केइ पोसहसालाए पोसह बंभयारी जो जिणहरे न गछेजा तो पायछितं हवेजा गोयमा जहा साहु तहा भाणियवं छठे अहवा दवाल समं पायछितं उवदंसेजा ॥

एहवा कल्पीत पाठ जोडया छे, श्रावक प्रमादे श्री भगवंत तथा साधुने वांदी न सकयो तो तेहनो पश्चाताप करे, पीण प्रायच्छीत तो कोइ सुत्रमां कह्यो नथी. तथा वृत्तिकल्प, व्यवहार, निसीथ, आचारंगमां साधुना आचार वखाण्या तथा प्रायच्छीतनी वीधीयुं वरणवी तीहां देहेरे न गयानो तो प्रायच्छीत कोइ सुत्रे कह्यो नथी, तो जीतकल्प प्रकरण जोडीने तेमां घाल्यो. तथा प्रायच्छीत लघुमास, गुरुमास, लघुचौमासी, गुरु चौमासी, लघुछमासी, गुरुछमासी. एहवे नामे प्रायच्छीतनी संज्ञा बांधी छे, पण उघाडो उपवास, छठ, अठम, आंबील, एकासणा, चोलो, पचोले कह्यो नथी, पण सुत्रसीलीना अजाण, मीथ्यादृष्टी नवा पाठ जोडे; पण उघडयावगर न रहे. तथा अभव्यकुलक ग्रंथ भरुचक मध्ये हरीभद्रसुरी हता जेणे चउदसें चमालीस बोधमतिने मंत्रने जोगे होम्या. एहवा दयावंत माहाव्रतना धणी ! तेहनो कीधो छे ते कहे छे.

जेह अभव्य जिवेही ॥ न फासीया एवमाइया ॥ भावाइं दतंमणुत्तरसुरं ॥ सिलाय नर नार दतंच ॥ १ ॥ केवली गणहर हथे ॥ पव्वजातिथवछरंदाणं ॥ पवयण सूरी सुरत्तं ॥ लोगातिय देव सामित्तं ॥ २ ॥ तयातिसग सुरतं ॥ परमहिम्मिय जुगल मणुयत्तं ॥ संभिन्नसोति तह ॥ पुव्वधराहार पुलायत्तं ॥ ३ ॥ मइनाणाइं सलद्धी ॥ सुपत्त दांण समाहि मरणंच ॥ चारण दुगमधुसिप्पिय ॥ खीरासवारखीण ठाणतं ॥ ४ ॥ तिथयर तिथपडीमा ॥ तणुपरी भोगाइ कारणे ॥ विपुणो पुढवाइय भावंमियं ॥ अभव जीवेहीं नहुपत्तं ॥ ५ ॥ चउदस रयणत्तंपी ॥ नपत्तं पुणोवि विमाण सामीत्तं ॥ समत्त नाण संयम ॥ तवाइं भावन भाव दुग्गे ॥ ६ ॥ अणुभवजूत्ता भत्ति ॥ जिणाण साहाम्मियाण वाछलं ॥ नयसाहेति अभावो ॥ संवेग तंनसुपखं ॥ ७ ॥ जिण जणणी जाया ॥ जिणजखादीवगा जूम्मप्पहाणा ॥ आयरीय पयाइं दसगं ॥ परमथ गुण ढमपत्तं ॥ ८ ॥ अणुबंध १ हेतु २ सरुवा३॥ तथ अहिंसा तिहां जिणु दिठा ॥ दव्वेणय भावेणय ॥ दुहावी ते सिंन संपत्ता ॥ ९ ॥ इति अभव्यकुलक ॥

एमां कह्युं जेः अभव्य जीव एटलावाना न पामे, तेमा उपसम न खायकभाव संबंधी तो वस्तु न पामे, ने उदयभावाश्रुत्र वस्तु तो पामे नारदपणो, परमाधामी, जुगलीयो, तीर्थंकरनी प्रतिमाना भोगमां आवे पृथ्वी, पाणी वनस्पती तेमां चउद रतनमां. वीमानना धणीमां, सासन देवी, चोवीस जक्ष, चोवीस जक्षणी, अभव्य जीव एटला वाना न पामे कह्युं. अने सीद्धांतमां तो ए सर्व वस्तुमां भव्य, अभव्य उववन्न पुवा असइं अदुवा अणंतखुत्तो कहेतां उपना छे. अतीतकाळे वारंवार निश्चे अनंती अनंती वार. तो जे मुळसीद्धांतथकी न मळे एवा प्रवर्ण जोडया तेह ग्रंथने सीद्धांत करी केम मनाये ? वळी हींसाधर्मि कहेछे.

सुत्तंगणहररइयंतहेव । पत्तेय बुद्धि रइयंच ॥ सुय केवलणा रइयं । अभिन्नदस पुविणारयं.

गणधर, प्रत्येकबुद्धी, चउद, १३, १२, ११, १० पुर्वि, ए सातनो कर्यो ते वचन सुत्र कहीये. ए वात तो ठीक छे ते माटे पुर्वाचार्य पुर्वधर हता तेहना जोडर्या ग्रंथ प्रमाण जाणवा, तेनो उत्तरः हींसाधरमी पुर्वधारी आचार्यनो तो ओठो लीएछे. अने पछी तो विना पुर्वधारीना कीधा ग्रंथने पण सुत्र करी प्रमाण माने छे ते कीम कर्मग्रंथ, दीवाळीकल्प, सेत्रंजा माहातम, संदेहदोळावली, संघाचार, वीवेक विलास, भरथेसरवृति, जोग शास्त्र. कल्पकीरणा, इत्यादीक ग्रंथ वीनापुर्वधारीना कीर्धा पण मानेछे. अने पुर्वधारीना कीर्धा ग्रंथ प्रमाण ए वात सत्य छे, पण केवळीनी नेश्राये करी कीर्धा होवे उपयोग सहीतपणे मुळसुत्रथकी वीखवाद न पडे ते प्रमाण छे सीद्धांत गणधरना कीर्धा छे भगवंतनी नीश्रायथकी थया, ते मांही संदेह नहीं. अने टीकामां ठाम ठाम संदेह पडया त्यां तत्वनुं केवळी गम्य कह्युं, ते इम जाणजो जे टीका नवी जोडी छे. भगवंतने सन्मुख नथी जोडाणी. अनेरा पुर्वधरना वचन पण संका सहीत होवे, सत्यासत्य बहु होवे छद्मस्थपणा माटे छद्मस्थ पुर्वधर आगम व्यवहारी पण भाषा चुके छे ते साख सुत्रथकी कहे छे.

१. श्री तीर्थंकरदेव छद्मस्थ होवे त्यां लगे सुत्र परुपे नहीं. केवळपाम्या केडे परुपे. छद्मस्थपणामां तीर्थंकरने पण जोग ९ होवे—चार मनना, चार वचनना, ने उदारीक ते माटे असत्यना भयथकी सुत्र परुपे नहीं.

२. श्री नेमनाथस्वामीये श्री कृष्ण आगळे सोमल ब्राह्मणनो नाम न कह्यो, जे कृष्णने द्वेष उपजे ते माटे एहवो केवळीनो मार्ग झींणो छे. अने धर्मगोख आचार्य पुर्वधारी हतो; तेणे नागेसरीने हेळावी, नंदावी, दुखी करी, ए छद्मस्थपणानी भूल.

३. सुमंगळा साधु अवधनाणी आगम व्यवहारी ते चार घोडा, रथ, सारथी ने वीमळवाहन राजा ए छने बाळशे, अने भगवंतना मुख आगळे गोसाळे बे साधु बाळ्या, पण भगवंते मनोमात्र द्वेष न कर्यो. ए सुमंगळा अणगारने छद्मस्थपणानी भुल. कोइ कहेशे सुमंगळासाधुने प्रायच्छीत कीम न कह्यो. ते उतर प्रायच्छीत तो एवंता मुनीने पण नथी कह्यो. पण ए ठाम प्रायच्छीतनु खरुं के अनुमोदवानुं ते वीचारो.

४. केसी कुमार चउनाणी, चउदपुर्वि तेणे प्रदेसीराजाने जड, मुर्ख, तुच्छ कह्यो, कठीन भाषा बोल्या. ए छद्मस्थपणानी भुल.

५. गोतमस्वामी मृगालोढीयाने देखवा गया, ए छद्मस्तपणानो उच्छकभाव ते छद्मस्थपणानी भुल.

६. वळी गौतमस्वामीए अन्यतिर्थिनी प्रसंसा तथा परीचय करवाना समदष्टीने तो पचखाण कराव्यां हतां अने पोते खंधकने साहमा गया आववानो अनुमोद्यो. ए छद्मस्थपणानी भुल.

७. भगवती सतक पचीसमे पुर्वधर कषाय, कुसील तथा नीयंठाथकी पडवाइ थाय ए छदमश्थपणानी भुल.

८. वळी पुर्वधरने पण भाषा चारना जोग कह्या. ते असत्य ने मीश्र भाषा बोलाय छे ते छदमस्थपणानी भुल.

९. पुर्वधर आहारक शरीर करे संका उपजे थके, ते भगवती सतक सोळमे उद्देसे आहारक शरीरने अधीकरण कह्यो छे. तथा पन्नवणा पद छत्रीसमें अहारक समुदघात करतां पांच क्रीया लागे ते आहारकलब्धी फोरवे ते छदमस्थपणानी भुल.

१०. पुर्वधर आहारकशरीरी अनंता नीगोदमां पामीये, असंख्याता नारकीमां पामीए. ए छदमस्थपणानी भुल.

११. दिसाचरे पुर्वधरे गोसाळाने अंगीकार कीधो शीष्य थइने रह्या ए छदमस्थपणानी भुल.

१२. वळी दसविकालीक आठमे अध्ययने गाथा ५० मीमां कह्युं जे.

आयारं पन्नंति धरं ॥ दिठिवाय महिजग्गां ॥
वइ विखलियं नच्चा ॥ नं तं उवहसे मुणी ॥

अर्थः—आ. आचारंगना भणनार. प. विवाह पन्नंति. ध. धरणहार. दी. दष्टिवादना. आ. भणनार साधु. व. वचन. कर्ता. वी. खलाणाने. न. जाणीने. तं. ते साधुने. न. उ. हशे नहीं. मु. साधु.

आचारंग भगवतीनो जाण, द्रष्टी वादनो जाण, वचन बोलतां भुले तो तेहनो हास्य न करवो. एटले भुलपणे तो छे ए छदमस्थपणानी भुल. ए साख शुत्रथकी ते माटे पुर्वधरनो वचन, ग्रंथ, सर्वज्ञ समीपे गणधरना कह्या सरखो न मनाय. अने पुर्वधरने कह्यो अजीणा जीणसंकासा जीणाइवअहीत वागरेमाणा एहवा कह्या ते सत्य, पण जे जाण्या पदार्थ छे केवली भाखीत अने पुरा धार्या छे उपयोग सहीत बोलतां जीन सरखाज कहीये. वळी हींसयाधरमीने कहीए जे भगवंत निर्वाण पछी एक हजार वरश लगे पुरवानो ज्ञान रह्यो, पछी वीछेद गयो, सीळंगाचार्य, अभयदेवसुरी, मल्यागीरीसुरी, हरीभद्रसुरी एओ टीकाना करणहार क्या पुर्वधारी हता?

एटलाने पुर्वनो ज्ञान तो न हतो अने तेहना जोड्या वृत्ति प्रमुख अनेक ग्रंथ छे. ते सीद्धांत बरोबर कीम होवे ! टीका तो सुत्रना शब्दनो अर्थ छे, पण कीहांइ मुळ सुत्रनो शब्द न होवे. तीहां आळजुल मतकल्पनानो घाल्यो होवे ते संकानो ठाम जाणवो जीम चउदमे सतक सातमे उदेसे भगवंते गौतमने कह्यो, जे ताहरे माहरे घणा काळनी प्रीती छे. इहांथी चव्या वेहु तुल्य थाशुं एहवो अर्थ टीकामां पण एहज छे, पण अष्टापद जाओ, भरथना कराव्या बींब वांदो, एटलुं टीकामां घाल्युं ते क्या मुळसुत्रना शब्द उपरे ? तीम टीकामां अनेरा ग्रंथमां जेटला अर्थ सीद्धांत थकी मीळता होवे ते प्रमाण पण टीका तथा अनेरा ग्रंथ मानतां सुत्रनो अर्थ विघटे ते ग्रंथ अप्रमाण थाय. सीद्धातना शब्द वीना टीकामां जे अर्थ फेलाव्यो तेहनो धणी कोण ? वळी टीका ते अर्थागम छे इम कहे छे, ते वात खरी छे, पण मुळ शब्द होवे तेहनी तो टीका खरी, पण सीद्धांतमां मुळगो शब्द नहीं ते टीकामां अर्थ कीहांथी आव्यो ?

वळी मुळसुत्र तो भगवंतना वाराना गणधरना कर्यां छे ते पछे काळप्रभावे घटयां छे, पण जे रह्यां ते तो शुद्ध छे. पण आगली वारानी टीका कोइ केम रही नथी, ने आचार्यने नवी जोडवी पडी ते माटे आगे वृत्ति,चुर्ण पुर्वे हंती के न हती, सर्व नवीज थइ छे ?

आचारंगनी, सुगडांगनी वृत्ति, सीलांगाचार्ये कीधी, सेख नव अंगनी वृत्ति अभव्यदेवसुरे कीधी. नंदी, अनुजोगद्वारनी व्रत्ति मळयागीरी आचार्ये कीधी, दस विकालीकनी टीका हरीभद्रसुरे कीधी, आवस्यकनी वृत्ति भद्रबाहुये कीधी तो पुर्वकाळनी टीका एकही तुमारे साख भरवा कीम न रही ?

हवे सीद्धांत गणधर कृतथकी वृत्यादी प्रकरणमां केटलाक पाठ, अर्थ विरुद्ध पडे छे. ते मानतां सुत्रनी असातना थाय छे, ते केटलाक बोल नीचे लखे छे.

१. ठाणांगसुत्र मध्ये सनतकुमार चक्री अंतक्रीया करी मुक्ति गया कह्या. अने आवस्यनीर्युक्ति मध्ये त्रीजे देवलोके गया कहे छे, ठाणांगनी टीका मध्ये पण त्रीजे देवलोके गया कहेछे ए सुत्रवीरुद्ध.

२. उववाइ, भगवती, पन्नवणामां कह्युं पांचसें धनुष्यनी अवगाहणाथी उपर होवे ते न सीझे. तेने जुगळीयो कह्यो, सतक चोवीसमे अने आवस्यकानिर्युक्तिमां मरुदेवा सवा पांचसें धनुष्यनां सीद्ध थयां कहे छे ए वीरुद्ध.

३. समवायंगसुत्रमध्ये रुखभदेव, भरथ, बाहुबळ, ब्राह्मीसुंदरी, ए पांचनो सरखो आउखो चोरासी लाख पुरवनो सुत्रपाठे कह्यो. अने आवसकनिर्युक्तिमध्ये कहेछे. रुखभदेव पोते नवाणुं पुत्र भरथ वीना अने भरथना आठ पुत्र एवं एकसो आठ उत्कृष्टी अवगाहनाना धणी एक समये सीद्धा ते गाथा आवसकनिर्युक्तिनी नीचे मुजब.

उसभो सवस्स सुया । भरहेण विवजियानव
नउ । भरहस्स वसुयासिद्धा । एगंमिसमयंसे

हवे रुखवदेव ने बाहुवळ सरखा आउखाना साथे केम सीद्धा ए वीरुद्ध,

४. मल्लीनाथस्वामीने चारीत्र अने केवळकल्याण ज्ञाता सुत्र आठमे अध्ययने पोश शुद अगीयारसने दीने कह्यो. अने आवस्यकनिर्युक्ति मध्ये मागशर शुद अगीयारश दीने कहे ए सुत्रविरुद्ध.

९. आवस्यकनिर्युक्तिमां कह्युं साधु पंचकमांही काळ करे तो पांच पुतळां डाभना करी भेळां बाळवां. अने आज ग्रहस्थ भला होवे ते पण डाभाना नथी करता नथी बाळतां. ब्रतिकल्पसुत्रमां तो एम कह्युं जे, साधु काळ करे त्यारे वांसनी झोळी करी साधु वनमां परठी आवे;

दुन्निपदाविढपते ॥ दभमया पूतला कायव्व ॥
समखितंमअइको ॥ अवढ अभिन्न कायव्वो ॥

ए आवस्यकनिर्युक्ति पारी ठावणीया समीतनी कह्युं पुतळां करवां. ए सुत्र विरुद्ध. ए वचन पुर्वधरनां न होय.

६. भगवतीमां कह्युं एक पुरुषने उत्कृष्टा पुत्र होवे तो पृथक लाख होवे, पण आधिका न होवे. प्रकरणमां भरथने सवा क्रोड पुत्र कह्या. ए वीरुद्ध.

७. गोसाळो भगवंतनो अपराधी वे साधुनो मारणहारो पण भगवंते मार्यो तो नहीं पण मारवानी आज्ञा पण न कीधी. अने पुलाकनीयंठानी टीका तथा संघाचारनी टीका मध्ये कह्युं जे,

संघाइयाणकजे ॥ चुनीजा चक्कवट्टी सेनं ॥
पीक्कविउभुणीमहप्पा ॥ पुतायलद्धीसंपन्नो ॥

चक्रवर्तिनी सेन्याचुरवी, विष्नुकुमारनी परे धर्म अपराधीने मारवो ते विरुद्ध.

८. सुत्र मध्ये नारकी देवताने असंघणी कह्या छे, अने प्रकरणमां संघेण मानेछे ए सुत्र विरुद्ध.

९. पन्नवणा तथा भगवतीमां पांच थावरने एक मीथ्यत्व गुण ठाणो कह्यो. अने कर्मग्रंथ प्रकरणे पेहेलो बीजो ए बे गुणठाणा मानेछे ते विरुद्ध.

१०. दसविकालीक आठमे अध्ययने अठावीसमी गाथामां कह्युं जे,

अथं गयंमि आइचे । पुरथाय अणुगए ॥
आहारमइयं सव्वं । मणसावि न पथए २८

अर्थ—अ, आथमेछते. आ. आदित्य (सुर्य) पु. पुर्वे दीस सुर्य अणउगेछते (रात्रीए). आ. आहारादीकमात्र. स. सर्व म. मने करी पण न. पार्थे नहीं. (एटले रात्रे कांये नहीं लीए. नहीं राखे. २८.

कह्युं अने वृत्तिकल्पनी वृत्तिमां, चुर्णमां साधुने रात्रीभोजन कह्युं ते पाठ.

इंदाणी कप्पीया भणई आणायोगे दार गाहा आणाभोगेणं वाराइमत्तंभुंजे जागीलाण कारणेणवा अद्धापडी सेवणवादुल्लभ दव्वंठं तावा १ उत्तम मठ पडीवन्नो राइमत्तं भुंजेजा पउसकालेमी गछाणुं कंपीया एवा राइभत्तंणुणा सुतथ विसारएवा राइभताणुं नाएंसखेवथो इदानी एकेक स्पद्धोरस्प विस्तोरेण व्याख्या क्रीयते.

ए रात्रीभोजन करवो कह्यो. ते सुत्र विरुद्ध.

११. तथा वृतिकल्पनी चुर्णमध्ये साधुने कुशील शेववा कह्या. एम माहानीसीथमध्ये पण कुशील शेववा कह्या. अने ठाणांग बीजे ठाणे सील राखवा माटे आपघात करी मरवो कह्यो ते पाठ.

दोठाणाइं अपडी क्रठाइं पनंते तंजहा वेहानसे गिद्धपठे.

अर्थ.—दो. बे मरण आगले कहीशे ते कारण सीलादीक राखवाने नीमीते नीखेध्या नथी, तं. ते केहेछे. वे. आकाशने वीखे उपनुं ते वेहार्यास ते गलेपास लइने मरे. गी. गंध फसनुं छे जे मरणने वीखे ते ग्रंध स्पष्ट अथवा ग्रंथने जे भक्षवा जोग्य जे स्पष्ट उदरादीक अव्यव हाथी उंटादीकना ते मांही पेसीने जे महासत्वना धणी मरे ते गंध स्पष्ट मरणे. ते माटे कुसील शेववा कह्या ते सुत्र वीरुद्ध.

१२. भगवती मध्ये छठे अध्ययने छठो आरो वेसतां वैत्याढय वरजी सर्व पर्वत वीछेद जास्ये कह्युं प्रकरणे कह्यो सेत्रजो सास्वतो ए सुत्र वीरुध.

१३. भगवती अध्ययन आठेम उदेशे नवमे कृतम वस्तुनी स्थीती संख्याता कालनी कही. प्रकरणे कह्यो संखेश्वरा पारसनाथनी प्रतीमा आठमा चंद्रप्रभव जीनना वारानी छे एम कहे छे ते शुत्र वीरुद्ध.

१४. ज्ञाता अध्ययन शोळेम पांच पांडवे सेत्रंजा उपर संथारा कीधा. प्रकरणमां कहे वीस क्रोड साधु साथे सीद्धा ए सुत्र वीरुद्ध.

१५. भगवती मध्ये भगवंतने सासने सातसें केवळी सीद्ध कह्या प्रकरणे पंदरशे तापस केवली वधार्या ए शुत्र वीरुद्ध.

१६. ठाणांग चोथे ठाणे मानुखोत्तर पर्वत चार कुट कह्या, इंद्रना आवास तीहां चार सीद्धांयतन माने छे ए सुत्र वीरुद्ध.

१७. सुत्रमां साधु, साधवीने मुल्ये आण्यो आहारादीक न कल्पे कह्यो. प्रकरणमां सात खेत्रमां साधु, साधवी गणी एहने काजे धन कढावे ते वीरुद्ध.

१८. शुत्रमां रुचकाद्विप पंदरमो कह्यो प्रकरणे तेरमो कहे छे ते वीरुद्ध.

१९. शुत्रमध्ये छपनअंतराद्विप जळथकी अंतरीक कह्या. प्रकरणमां चार डाढा उपर कहेछे सुत्रमां डाढानो नाम पण नथी. ए सुत्र वीरुद्ध.

२०. पन्नवणा पद अढारमे छदमस्थ आहारकनी वे समयनी स्थीती कही. प्रकरणे त्रण समा अणहारीक माने. सतक सातमे उदेसे पेहेळे चार समानी वीग्रहती कही, प्रकरणे पांच समा विग्रह उत्कृष्टी कहे. ते विरुद्ध.

२१. समवायंगमां आचारंगनो माहापरीज्ञा अध्ययन नवमो कह्यो छे. प्रकरणे सातमो कहे ए सुत्रविरुद्ध.

२२. समवायंगे चोपनमे समवाये चोपन उत्तम पुरुप कह्या. प्रकरणे त्रेसठ माने छे ए सुत्रविरुद्ध.

२३. पन्नवणामां समुछिम मनुष्यने सर्व पर्यानो अपर्यामो कह्यो. ने प्रकरणमां त्रण साढीत्रण पर्या माने ते सुत्राविरुद्ध.

२४. भगवती सतक आठमे उदेसे दसमे सवं सवेण वंधइ कह्युं. जीव प्रदेशे एकेको कर्म प्रदेश अनंता आविभाग पलीच्छेद थकी ओवेष्टित कह्यो. सर्व प्रदेसे कर्म प्रदेसे अनंता छे. प्रकरणे आठ रुचक प्रदेस उदेस उघाडा माने ए सुत्रवीरुद्ध.

२५. उत्राध्ययन २८ मे छांयां, ताप, सब्द, अंधाकार, उद्योतना वीस्सा पुदगळ लीधा न आवें कह्यो. प्रकरणे गौतमे सुर्यकिरण पकडी कहे. ते विरुद्ध.

२६. सुत्र ठाणांगे असीझाय वत्रीश कही छे, प्रकरणे आयोजने चैत्र मासे नव नव दीन ओळीना असीजाइ कहे. ए सुत्र विरुद्ध.

२७. अनुजोगद्वारे उछेदांआंगुळथकी प्रमाणुं अंगुळ हजारगुणो कह्यो. ए लेखे चार हजार गाउनो प्रमाणुं जोजन छे, प्रकरणे सोळसें गाउनो माने ए सुत्र विरुध.

२८. भगवती सतक सोळमे उदेशे छठे, ठाणांग दसमे ठाणे, श्री माहावीरना दस स्वप्ना छदमस्थपणानी छेळी रात्रे दीठा कह्यां. आवस्यके प्रथम चोमासे दीठां. कहे तेनां फळ वळी उत्पल ब्राह्मणे कह्यां कहेछे, ते विरुध.

२९. संजम आदरतां समयमात्रनो प्रमाद न करवो. उतराध्ययन दसमे कह्युं अने गणीवीज्य पइनामां कह्युं श्रवण, धनीष्टा, पुनर्वसु ए त्रण नक्षेत्रमां दीक्षा न लेवी कहे छे. ते गाथा.

श्रवणे धणीठा पुनर्वसु नकरिजनिखमणं ए सुत्रविरुद्ध.

३०. वळी चार नक्षेत्रे लोच वरजवो कहे छे ए सुत्रविरुध.

कतियाही विसाहाहि मधाहि भरणीइ वाएएहिं चउरखेहिं लोकमाइ वजए.

३१ धणीठाहिं समभिषासाइं ॥ सवणोय पुणवसु ॥ एएसू-गुरु सुसुषा चेइयाणंचपुयणं

ए पांच नक्षेत्रे गुरुनी पूजा करवी सेख नक्षेत्रमां नहीं, जे लोकोत्तरपक्षे अने धरमपक्षे ए बे पुजा छे तो पांच नक्षेत्रनुं शुं कारण? सदाए करवाज, सीद्धांत मध्ये तो गुरु, देवनी सेवा नीत्य करवी कही छे. ए पांच नक्षेत्र कह्या तेसुत्रवीरुद्ध.

३२. सुप्रमां पांचमे आरे छ संठाण, छ संठाण जंबुद्धिपपन्नंतीमां कह्या छे. अने तंदुलवेयाळीयापइनामां पाठ छे. ए सुत्राविरुद्ध.

३३ आसीय मणूयाणं छविहे संगणे तंजहा समचरंसे जाव हुंडे संपइषद्ध आउसोमणू याणं हुंड संठाणे वठइं.

आसीय आउसोपुव्विं मणुयाण छविहे संघयणे तंजहा

वजरीसह संघयणे जाव सेवठ संघयणे संपइ खलु आउ सोम-णुयाणं छेवठ संघयणे वठइ.

३४. भगवती सतक आठमे उद्देसे दशमे आराधना अधीकारे आराधकने उत्कृष्टा पंदर भव कह्या. अने चंदावीजय पइनामां त्रण भवहीज कह्या. ए सूत्रवीरुद्ध. ए चंदावीजय पइनानी गाथा.

आराहणो चउतासम्मांकाउणसु विहोकालं उक्कोसं तिन्नि-भवे ॥ गंतुणलभि जिनिवाण ॥

३५ सुत्रमां जीवने चक्रवर्तिपणो उत्कृष्टो बे वार पामवो कह्यो. अने माहापचखाण पइनानी चोसठमी गाथामां अनंतवार इंद्र, चक्रवर्ति थयो इम कह्यो. ए सुत्र-विरुद्ध. माहापचखाण पइनानी गाथा नीचे मुजब.

इदंत्तंय क्कवट्टीतं तणाइ ॥ उत्तमाइ भोगाइं पन्नो अणंतखुतो नहुतितिउ तेवी ॥ १ ॥

३६. भगवती सतक उद्देसे कह्युं जे.

केवलीणं भंत्त हसेजवा उसुयाएजवा नोतिणठे समठे. केवळीने हसवो, रमवो, ऊंघवो. नाचवो, मोहणीजनीतकर्म, नहीं इम कह्यो ने प्रकरणमध्ये कहे कंपील केव-लीये भील (चोर) आगले नाटक कीधो कहे ए सुत्र वीरुध.

३७. दसविकालीक पांचमे अध्ययने साधुने वेस्याने पाडे जावो नीखेध्यो. ने प्रकरणे कहे थुलीभद्रे वेस्याने घरे चोमासो कीधो. ते सुत्रविरुद्ध.

३८. भगवंत गर्भथी साहरतां आचारंगे कह्युं जे साहरीजमाणे जाणइ अने कल्पसुत्रमां कह्युं जे साहरजिमाणे नो जाणइ. ए विरुद्ध.

३९. घणे सुत्रे कह्यो छे जे मंसआहार ते नारकीनो कारण तथा साधना वीरद कह्यां. उववाइ, प्रस्नव्याकरणे त्यां अमज मंसासीए कह्या. अने भगवतीनी टीकामां कुर्कट मंस शब्दे कुर्कटनो मंस, मंजार मंस जेवो श्रुयमांणहीज अर्थ सदहे भगवंते मंस, आहार कर्यो कहे ए सुत्रविरुद्ध.

४०. आचारंगे मंसखलं वा मछखलंवा तीहां मंस अर्थ करे ते विरुद्ध.

४१. सुत्रमां जीम मंस निखेद छे तीम मदीरा पण नीखेध छे, अने ज्ञाता पांचमे सेलंग राज रुषीये मद्यपान कीधो एम अर्थ करे ते सुत्र विरुद्ध.

४२. सुत्रमध्ये मनुष्यनो जनम एकवारे एक जोनीथी होवे तो प्रथक जणनो होवे कह्यो अने प्रकरण मध्ये सगरचक्रीने साठ हजार बेटा एकेवारे जन्मा कहे छे. ए सुत्रविरुद्ध.

४३. सुत्रे कह्यो सास्वति पृथवीनो दळ उतरे नहीं, अने प्रकरणे कहे दळ सागर पुत्रे तोडयो भवपतिना घरमां गंगानो प्रवाह चाल्यो ते विरुद्ध.

४४. सुत्रमध्ये आचार्य, उपाध्याय, तीर्थंकरनी तेत्रीश असातना टाळवी कही. अने प्रकरणमां प्रतीमानी चोराशी अशातना कहे ए वीरुद्ध.

४५. उपवासमां पाणी वीना बीजो द्रव्य खावा निखेध्यो छे. अने प्रकरणे तमाकु, हरडे, बेहेडा, आंबळीया, दाडमना छोडा अणाहार कहे ते विरुद्ध.

४६. सीद्धांतमां भगवंतने सहसबुधाणं कह्या अने कल्पसुत्रमध्ये निशाळे भणवा मुक्या कहे ए सुत्रविरुद्ध.

४७. सुत्रमां हाडनी असझाइ कही छे अने प्रकरणमां हाडकाना थापनाचार्य थापे छे ए शुत्रविरुद्ध.

४८. सुत्रपन्नवणामां बीजे पदे आठसेजोजननी पोलाणमां वाणव्यंतर रहे छे इम कह्यो. अने प्रकरणे अेंसीजोजननी पोल बीजी कहे ते विरुद्ध.

४९. जीनमारगी जीव नरक जावाने नामे पण भय पामेछे. अने प्रकरणे कहे के कोणीक राजा सातमीये जावा माटे कारमा रतन कर्या तो कोणीकराजा समदीष्टी जीनवचननो जाण ने तेरमो चक्री कीम थाशे ? थावानी हुंस कीम करे ? ए सुत्र विरुध.

५०. कर्मापुत्र केवळ पाम्या केडे छ मास घरमां रह्या कहेछे ते विरुद्ध.

५१. सुत्रमध्ये सर्व दानमां साधुनो दान उतकृष्टो लाभ कह्यो. अने प्रकरणमां विजयशेठ, शेठाणीने जमाडये चोरासी हजार साधुने दान देवे तेहनो फळ कहे ए सुत्रविरुद्ध.

५२. भरथेशरे रुखभदेवनो ने नवाणुं भाइना १०० शुभ कराव्या प्रकरणमां कहे छे ए सुत्रविरुद्ध.

५३. पांडवे शेत्रंजा उपर संथारा कीधा छे. अने प्रकरणमां कहे छे जे. शेत्रंजा उपर पांडवे उधार कराव्या छे सुत्रमां तो उद्धार कराव्यां नथी कह्या ने देहरा प्रतिमा बांध्या पण नथी कह्या जे पुदगल उधार कीधा कहे ते विरुद्ध.

५४. पांचम मुकी चोथनी स्वंछरी कहे छे ते सुत्रविरुद्ध.

५५. सुत्रमां २४ जीन वंदनीक मोक्षदायक कह्या छे. अने वीवेकवीलासमां कहे एकवीस तीर्थंकरनी प्रतिमा घरमां मांडवी त्रणनी न मांडवी. मल्लीनाथ, नेमनाथ ने माहावीर ए त्रणने पुत्र न थया ते माटे एह लोक हेते पुजा ठहरी ए सुत्र विरुद्ध.

एहवा ग्रंथ पोतानी मतीथकी कल्पीने कर्या ते सुत्र प्रमाणे केम मनाय वळी प्रकरण, लोकीक, कुराण, पुराण जेटला ग्रंथ सीद्धांतसाथे मीले आर्य वचन होवे ते प्रमाण. अने जे वचन सूत्रथकी वीघटे ए प्रमाण.

५६. आचारंग सुत्रपाठमां पचीस भावना पांच माहावृतनी कही. ने टीकामां पांच भावना समकीतनी वधारी तेमां ठाम ठाम तीर्थभूमीकाये जात्रा जावुं घाल्युं. ए क्या पाठ उपरे ? पांच भावना वधारी ते सुत्र विरुद्ध.

५७. कर्मग्रंथ प्रकरणमां एक मोहनी कर्म आश्री नवमा गुणठाणालगे फेर छे ते कर्मग्रंथनो मत कहेछे.

पहीले गुणठाणे समकीतवेदनी, समपीथ्यातवेदनी. ए वेनो उदय नही. ए सेख २६ नो उदय. मीथ्यातमोहणी समपीथ्यात्वमोहनी वे अनुतानवंधीनी चोकडी ए छ वरजी सेख २२ नो उदय. पांचमे गुणठाणे चोथानीपरे छ तेहीज ने अपचखाणीनी ४ एवं दश वर्जी १८ नो उदय. छठे गुणठाणे. ए दस प्रकृति अने चार पचखाणावरणी. ए चउद वरजी सेख चउदनो उदय. सातमे गुणठाणे छठानीपरे चउदनो उदय. आठमे गुणठाणे धुरली पंदर प्रकृति वरजी सेख तेरनो उदय.नवमे गुणठाणे संजल चार, वेद त्रण ए सात प्रकृतीनो उदय सेख एकत्रीसनो उदय नहीं. ९, १०, ११, १२, १३, १४ मे गुणठाणे सुत्रवत छे.

हवे सीद्धांतमां पहेले गुणठाणे वेनो उदय कह्यो. ए विरुद्ध. वीजे त्रण मोहनी दर्शननीनो उदय कह्यो. ए विरुद्ध. त्रीजे वेनो उदय कह्यो. ए विरुद्ध. ३, ४, ५, ६, ७, ८, गुणठाणे समकीत वेदनीनो उदय कह्यो. ए विरुद्ध. नवमे गुणठाणे चार संजलना त्रण वेद ए सातनो उदय कह्यो. ए विरुद्ध माटे सीद्धांतमां कह्युं तेहीज सत्य जाणवुं.

तथा चुरणमां कटलाएक वोल विरुद्ध छे. ते कहे छे.

५८. कणेरनी कांव फेरवी, मंत्रथकी सत्रुनामना मायां पाडवां. ए आचारंगनी चुरणमां.

५९. तथा नसीथचुरणमां हाथेवाहाली (हथेळी) खणवी.

६०. मैथुन सेववां. ६१. रात्रीये आहार लेवो. ६२. अनंतकायनो दांडो लेवो. ६३. मंत्र भणवा. ६४. केळां आदी फळ खावां. ६५. काचुं पाणी पीवुं. ६६. अदत्त लेवुं. ६७ खासडां पहेरवां. ६८. पान खावां ६९. लोहारनी धमण धमवी. ७०. फुल सुंघवां. ७१. स्नान करवां. ७२. अनंतकायने झाडे चडवां. ७३. आघाकरमी आहार लेवो. ७४. घृतादीक वासी राखवुं. ७५. घात पाडवी. ७६. निधान उघाडवां. ७७. अन्यलींगीनो वेश करवो. ७८. थंभणीविद्या प्रजुंजवी. ७९. मृखावाद बोलवुं. ए बावीश चुरणना. ते सुत्र विरुद्ध छे.

८०. हवे भाष्यमां आवस्यकनी भाषा अठावीश हजारीमां माहावीरना २७ भव कह्या. तेमां कह्युं जे मनुष्य मरी चक्रवर्ति थयो. ए सुत्र विरुद्ध.

८१. भाष्यमां अरीष्टनेमीने गणधर अगीयार कह्या. ने सीद्धांतमां अढार कह्या. ए सुत्र विरुद्ध.

८२. पार्श्वनाथने सुत्रे गणधर २८ छे. ने निर्युक्तिये १० छे. ते विरुद्ध.

८३. साधु ग्रहस्थपणामां रह्या तीर्थंकरने वांदे कहे ते सुत्र विरुद्ध.

८४. संथार पइनानी गाथा साठमी नीचे लखीछे.

भालुकीए करुण षजंतो ॥ घोर वेयणतोवी ॥
आराहणा पवन्नोझाणेण । अवंती सुकुमालो ॥

८५. चंदावीजय पइनानी गाथा साठमी नीचे लखी छे.

उजेणीनयरीए अवंतिनामेण । विस्सुउआसी ॥
पाउवग पवन्नो ॥ सुसाण मझिम एगंतो ॥

यवंती सुकमाळना अधीकार माटे ए पइना चोथा आराना जोडया के पांचमा आराना जोडया ?

एवां एवां प्रकरणे अनेक विरुद्ध छे. ते जाणवा माटे थोडा लख्यां छे.

---

२६. सुत्रमां श्रावक कह्या तेमां कोइये प्रतिमा पुजी न कही ते विषे.

सीधांतमां जे जे श्रावक श्रावीका थयां तेनां सर्वाळे नाम कहेछे.

१. श्री आचारंगमां–सीधारथ राजा, त्रीसळा राणी. २. २ श्री सुगडांगमां–लेप–गाथापती १. ३ श्री ठाणागमां–सुलसा १. ४ श्री भगवतीमां–जयंती, मृगावती, सुदर्शनशेठ, रुखीभद्रपुत्र, उत्पळा, संख, पोखळी, उदाइ राजा, अभीचकुमार,

कार्त्तिकसेठ, मंडुक श्रावक, सोमील वीप्र, वरणनागनटुओ, १३. ५ श्रीज्ञातामां— पोट्टला, सेलंग राजा, पंथक प्रधान प्रमुख पांचसें मंत्रीशर, सुदर्शन शेठ, अरण्यक श्रावक, कुंभ राजा, प्रभावती राणी, जीतशत्रु राजा, सुबुधी प्रधान, नंदमणीयार, तेतली प्रधान, कनकध्वज राजा, पुंडरीक राजा, ११३. ६ श्री उपासगदसामां— आणंद, कामदेव, चुलणीपीता, सुरादेव, चुलसत्तक, कुंडकुलीओ, सककाल पुत्ते, माहासत्तक, नंदणीपीया, तेतलीपीया, सीवानंदा, अग्नीमीत्रा, १२ ७ अंतगडमां- सुदर्सन, १. ८. श्री विपाकमां—बाहुकुमार, भद्रनंदीकुमार, सुजातकुमार, सुवास- कुमार, जीणदासकुमार, वेसमणकुमार, माहाबळकुमार, भद्रनंदीकुमार, माहाचंद्र- कुमार, वरदत्तकुमार, १० ९. श्री उववाइमां—अंबड श्रावक ने तेना सातसें शीष्य, ७०१. १० श्रीरायप्रसेणीमां—रायप्रदेशी, चीतसारथी, २. ११. श्रीजंबुद्वीपपन्नती- मां—श्रेयांसकुमार, भद्रा, २. १२. श्री नीरावलीयामां—सुभद्रा, सोमील ब्राह्मण, निषेध कुमार, अनीवीह कुमार, वेहकुमार, प्रकितकुमार, युक्तिकुमार, दसरथकु- मार, द्रढरथकुमार, माहाधनुपकुमार, सतधनुपकुमार, ११. १३. श्री उत्राध्ययनमां पालक. १. १२७० तथा राजग्रही नगरी, चंपा, द्वारकां, आलंभीया, सावथि, वाणीग्राम, हथीणापुर, पोलाशपुर, तुंगीया, वनीता ए आदी घणी नगरीमां घणां श्रावक श्राविकाना वास छे. तीहां देहेरां प्रतिमा कह्यां नथी.

वळी भरथेशर, बाहुबळ, श्रेयांसकुमार, कृष्णवासुदेव, श्रेणीक राजा, कोणीक राजा, ब्रह्मदत्त चक्री, पांच पांडव ए आदी राजानाराजा जीनमार्गना प्रभावीक थया तीर्थंकरना गाढा भक्तिवंत थया. धरमने सहायना दातार थया. कोइये साधुने दान दीधां, कोइये संजम लीधा, कोइए अगीयार पडीमा आदरी, कोइये सामायक पोसाह कीधा, प्रश्न पुछयां, ए अधीकार सुत्रमां कह्या छे; पण धन खरची देहेरां, प्रतिमा कराव्यां, पुज्या, संघ काढया ते अधीकार सीद्धांतमां कह्या नथी. सुत्रमां देहेरां, प्रतिमा कराव्यानी विधी, पुजवानी विधी पण कही नथी. प्रतिमा पुजवी, देहेरां कराववां, संघ काढवाना लाभ पण सुत्रमां कह्यां नथी. जो सुत्रमां अंकुरामात्र कह्युं होय तो प्रकरणमां घणो वीस्तार छे ते पण प्रमाण थाय; पण सुत्रमां अंकुरा मात्र नाममात्रही नहीं ते केम प्रमाण थाय.

श्रीभगवती सतक उदेशे पांचमे तुंगीया अधीकारे तथा सुयडांग सुत्रमां मीश्र पक्षने अधीकारे तथा उववाइ सुत्रमां श्रावकनी नित्यकरणीनो आळावो.

अहिंगय जीवाजीवे उवलद्ध पुणपावा आसव संवर नि-

जरा किरिया अहिगरण बंध मोख कुसला ॥ १ ॥ असाहेजार देवासुर नाग सुवण जख रखस्स किन्नर किंपुरिस गुरुल गंधव महोरग्गा दिएहिं देवगणेहिं निग्गंथाउं पावयणाउं अणइक्कमणि जाउं ॥ ३ ॥ निगंथे पावयणे निस्संकिया निकांखिया निविति- गिछा ४ लद्धठा गहियठा पुछियठा अभिगयठा विणिछियठा ५ अठमिं ज पेमाणु रागरत्ता ६ अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अठे अयंपरमठे सेसे अणठे ७ उसिय फलीहा ८ एवं गुयंदुवारा ९ चियत तेउर परघरप्पवेसा १० बहुहिं सीलवय गुण वेरमण पच- खाण पोसहोववासेहिं चाउद सठ मुदीठ पुणमासीणीसु पडीपुन्नं पोसहसम्मं अणुपालेमाणे ११ समणे निग्गंथे फासु एसणीजेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं वथ पडीग्ग कंबल पायपुछणेणं पाढीयारु पीढ फलग सेजा संथारएणं उसह भेसजेणं पडीलाभे- माणा आहापडीग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणंभावेमाणा विहरंति ॥

सीद्धांत जीनमार्ग. अ. अर्थ (सार) छे. अ. परम (उत्कृष्टो) मोक्षनो अर्थ छे. सेष पुत्र कलत्रादी. अ. अनर्थ (असार) छे; ए दर्शनगुण २. हवे चारीत्रगुण कहेछे– उ. ऊंची. फ. फीजे भोगळ. अ. उघाडां छे घरनां बारणां जेहनां. ची. मतीत छे अंतेउरने विषे. ५, पारका घरनेवीषे. घणा आचार–सीयळव्रत नीवरतवुं, त्याग, पोषह, देवसावगासीक. चा. चउदस अ. आठम. उ. अमावास्या. तथा कल्याणक तीथी. पु. पुनम त्रण. चउमासा संबंधीने वीषे प्रतिपूर्ण आठ पहर. पो. पोषा भलीपरे अतीचार रहित. अ. पाळताथका. स. श्रमण. नि. नीग्रंथने. फा. अचीत दोषरहीत शुद्ध. अ. अन १, पा. पाणी २. खा. सुखडी, मेवो ३. सा. मुखवास ४. व. वस्त्र. ५. प. पात्रां ६. कं. कांबळीनी जात ७. पा. रजोहरणे करीने ८. पा. पाढीयारो (मागी लइ पाछुं देवुं) ९. पा. बाजोट १०. फ. पाटीयां ११. से. उपाश्रय तथा पाठ १२. सं. संथारो (डाभ तृणादीक) १३, उ. ओषधभेषधादीक १४. प. प्रतीलाभता (वोहोरावता) थकां. आ. यथायोग्य (पोतानी शक्ति प्रमाणे) ते. तपस्या करताथका. आ. आत्माने भावताथका जीनमतने विषे वीचरे,

ए करणीना करणहार नित्यप्रत्ये एहवी करणी करेछे ते श्रावक कहीये. पण देहेरां कराव्यां नथी, प्रतिमा पुजी नथी, तेम संघ पण काढया नथी.

---

२७. सावद्ध धरमकरणीमां जीन आज्ञा नथी ते विषे.

वळी सावध करतव्य सहीत धरमकरणी होवे तेमध्ये भगवंतनी आज्ञा नथी, करणहारनी इच्छा जाणवी ते करतव्य.

१. सुबुधी प्रधाने जीतसत्रु राजाने बुझववामाटे पाणी समर्यो ते आपणी इच्छा.
२. श्री मल्लीनाथ स्वामीये मोहनघर कराव्यो ते आपणी इच्छा.
३. आणंद श्रावके न्यात जमाडी ते आपणी इच्छा.
४. कोणीक राजाये नगर सीणगार्यो ते आपणी इच्छा.
५. धर्मगोख आचार्ये नागेसरीने हेळी ते आपणी इच्छा.
६. प्रदेशीराजाये दानशाळा मंडावी ते आपणी इच्छा.
७. चीतसारथीये घोडानो मीस कर्यो प्रदेशीने आण्यो ते आपणी इच्छा.
८. सुरीयाभ देवताये नाटीक कर्यो ते आपणी इच्छा.
९. अभयकुमार, भरथेशर, पदमोत्तरराजाये अठम कर्यो ते आपणी इच्छा.
१०. द्रुपदीये प्रतिमा पुजी ते आपणी इच्छा.

११. श्रेणीकराजाये सेवकसाथे साधुने थानकनी आज्ञा देवरावी ते आ० इ०
१२. कोणीकराजाये नीत्य वधाइ दीधी ते आपणी इच्छा.
१३. दीक्षा मोहोच्छव ठाम ठाम कीधा छे ते आपणी इच्छा.
१४. श्रीकृष्णे दीक्षानी दलाळीकाजे द्वारकामां पडहो फेरव्यो ते आपणी इ०
१५. इंद्रे तथा देवताये जन्म, दीक्षा, नीर्वाणना महोच्छव कर्या ते आपणी इ०
१६. देवता अठाइ महोच्छव करे ते आपणी इच्छा.
१७. जंघाचारण प्रमुख साधु लवधी फोरवे ते आपणी इच्छा.
१८. अंबड श्रावक सो सो घरे पारणो करे तथा वासो वसे ते आपणी इ०
१९. चमरेंद्रे भगवंतनी नेश्राय करी ते आपणी इच्छा.
२०. संखश्रावके जमवो भेळो परठयो ते आपणी इच्छा.
२१. माहास्तक श्रावक संथारामां स्त्रीने कठोर वचन बोल्यो ते आपणी इच्छा.
२२. तेतली प्रधानने पोटल देवताये माया करी समजाव्यो ते आपणी इ०
२३. तीर्थंकरने संवछरी दान आप्या ते आपणी इच्छा.
२४. देवता प्रतिमा डाढाओ पुजे ते आपणी इच्छा.
एमां जीन आज्ञा नथी.

---

२८. द्रव्य नीखेपा विषे.

हींस्याधरमी कहे छे, तुमे द्रव्य नीखेपा वंदनीक न जाणो त्यारे रुखभदेवना साधुने चोवी संस्तव आवस्यक कीम थातो हशे तेवीस तीर्थंकर तो हजी थया नथी तेहने न वांदे. त्यारे भावनिखेपे तो रुखभदेवहीज एकने वांदे चोवी संस्छवा कीम थातो हशे, एम गुणरहीत द्रव्यनीखेपो मनावी पछे गुण रहीत थापना मनावे इम वेखास करे. ते उत्तरः सुत्रमध्ये तो अनुजोगद्वारमां आवस्यकना छ अध्ययन कह्या छे.

सावज जोगवीरइं १ उक्कीत्तण २ गुणवउय पडीवत्ती ३ खलीयस्सयनंदणा ४ वणातितिगछ ५ गुणधारणा चैव ६ ॥१॥

अर्थ––सा. सावज व्यापार पापने वीखे मन जोग, वचन जोग, कायाजोग तेहनी वीरती ते समायक. १ उ. तीर्थंकरना गुणग्राम करवां नाम भणवां ते चोवी संथो १ ५. ज्ञान, दर्सन, चारीत्र गुणवंतनी भक्ति ते वांदवारुप जाणवा. ३ ख. व्रतने वीखे जे अतीचार तेहनो आलोववो ते पडीकमणारुप वंदे तु ४. आ अती-

चाररुप तृण जे गुंबडो तेहनी ति. तिगीछा ओखधरुप काउसग ५. गु. तृतने वीखे मूळगूण, उत्तर गूणनुं धरवुं ते पचखाण ६ ए छ आवस्यक.

ए छ अध्ययनना नाम छ कह्या तेमा चोवीसंस्तवना तो लोक कहेछे. एहनो नाम तो उतकीर्तन कह्यो छे. ए उतकीर्त्तन जे तीर्थंकर हुवा छे के होवे छे तेटलाने वंदणा करे. चोवीशनो मेळ नथी. जे द्रव्यनीखेपो होवे, चारगतमां होवे, अव्रती अपचखाणी होवे तेहने व्रतवंत, पांच छ गुणठाणावाळो कीम वांदसे? अने चोवीस जीन वांध्या वीना चोवी संतो न थाय तो माहावीदेह खेत्रे तो चोवीसनो मेळ नथी अनंता थया ने थाशे. वरतमाने तो वीजथ दीठ अेकेक होवे तीवारे चोवीसनो मेळ न आवे ते माटे उतकीर्त्तन अध्ययनमां जे जीनराज वर्त्तमानपणे होवे तेहने वांदे जो माहावीदेहे एक जीन वांधे चोवीस सस्तव थाय, तो रुखवदेवने वारे रुखभदेव वांद्याथी चोवीसस्तव कीम न थाय? ते वीचारी जो जो, गण द्रव्य नीखेपो घालवानो ठाम नथी रह्यो.

---

२९. स्थापना नीखेपा विषे.

हींरयाधरमी कहे छे तुमे स्थापमा नीखेपो न मानो तो आचार्य, उपाध्यायना उपगरणने संघटो केम नथी करता? सुत्र दसविकाळीक नवमे अध्ययने बीजे उदेशे अढारमी गाथामां कह्युं छे,

संघट्टाइता काएणं ॥ तहाउवहिणामवि ॥
खमेह अवरा हमे ॥ वएजन पुणोतिय १८

अर्थ--सं. संघटो करीने. का. कायाए करी. त. तीमहीज अवी. वळी. उ. उपधीनो संघटो थयो होय तीवारे शीष्य एम कहे ख. खमो. अ. अपराध. मे. माहरो व. वळी कहे नहीं करुं बीजीवार इ. ए संघटादीक अवीनय. ति. वळी.

एमां उपगरणने तथा आचार्यने पगथकी संघटया तीवारे इम कहे. खमो माहरो अपराध हवे हुं नहीं करुं ए लेखे उपगरण, पाट, सीज्या, संथारो. थापनानी आसातना टाळवी कही छे. ते उत्तरः ए गाथामां तो सत्य कह्युं छे, जे उप गरण आचार्यनी ने श्रायमां छे. जीम शरीर प्रयोग परणम्या पुदगळ छे तीम उपगरण पण प्रयोग परणम्या द्रव्य छे. तेहना भोगमां आवे छे. आचार्य भावनीखेपे छे, तीम उपगरण भाव नीखेपाना भोगना छे

शरीरनी परे. वळी कह्यो खमो अपराध वळी नहीं करुं, ए आचार्यथकी प्रतक्ष वचन छे उपगरण अचेतन खमाव्यो न वांद्यो सूं जाणे ? ए उपगरणनी असातना टाळी ते आचार्य सहीत उपगरणनी असातना टाळी छे. ए थापना कहे वाय नहीं. थापना तो कहीए,जे आचार्य तो गया अने तेहना उपगरणनी पछे असातना टाळे तो थापना कहीये,पीण आचार्यना सयण,आसण शीष्य न भोगवे,असातना लागे ते माटे, पछे आचार्य वीहार कर्या केडे तेहीज सयणासण शीष्य सुखे भोगवे.जीम चंपानगरीये बागमां प्रथवीशील्लापट छे ते उपर भगवंते वेशीने उपदेश दीधो. ए उववाइ सुत्रमां कह्यो छे. पछे भगवंते विहार कीधो पछे तेहीज पृथ्वी सीलापट उपर गौतम,सुधर्मा स्वामी समोसर्या ते बेठा के न बेठा? जो न बेठा होय तो उपगरणनी असातना टाळी कहीये, अने बेठा तविारे तो भगवंतनी भाव नीखेपानी असातना टाळी कही. इम आचार्यना उपगरण पण जाणजो, तथा तमारे मते उपगरणनी, थापनानी, मोटेरानां पगलां थाप्यां होय तेहनी असातना टाळवी कहोछो. ए लेखे तो गुरुना छांयडानी छांया पडे छे, ते उपर पण पग देवो न घटे, जे छाया गुरुनी ठहरी ते माटे तथा गुरु केडे शीष्य चालतो होय तेहने गुरुना पगनी छांया पडी ते उपर पण पग देवो न घटे. जो मुवा गुरुना पगलां पुजोछो, तो जीवता गुरुना पगलानी तो आसातना टाळो, पण एटलो वीवेक नथी.

---

३० धर्म अपराधीने मारे लाभ कहे छे. ते उत्तर.

वळी हींस्याधर्मि कहेछे, उत्तराध्ययन बारमे गाथा बत्रीसमीमांहे ब्राह्मणना पुत्र देवताये मार्या त्यारे ब्राह्मणने हरकेसी मुनीये कह्युं जे,

पुव्विंचइंहच अणागयं च ॥ मणंपदोसोन मे अथिकोइ ॥
जखाहु वेयावं पडियं करेति ॥ तम्हाहु एए निहया कुमारा ॥३२॥

अर्थः—पु. पुर्वकाळ, वर्त्तमानकाळ. अ. अनागतकाळ. च. पुरणे. म. प्रद्वेष. मे. मुजने. अ. छे नहीं कोइ अल्पमात्रपण. ज. जक्ष जे भणी. वे. वेयावंच क. करेछे. तं. ते माटे. ए तेमज ए नि. हण्या, कु. कुमार.

जे मारे तो त्रण काळमां ए छोकरा उपर द्वेष नथी. पण जक्ष माहरी वेयावंच करेछे तेणे ए कुंवर मार्या. जुवो ए कामने हरकेसीमुनीये वेयावंच करी बोलावी. ते माटे अपराधीने हणतां दोष नहीं, एम करीने सावद्ध भक्ति ठरावे छे. ते उत्तर. एहवी मनुष्यने मार्ये भक्ति जाणोछो, तो तुमारे मते जुं, लींख, चांचड, मांकड,

डांस, वीछी, सर्प, खुद्रजीव साधुना उपगरणमाहीला बाधाकारी होवे तेहने तावडे नाखवा, मारवा सुखे कल्पे खरा ? अपराधीने मारीने साधुने साता उपजावे तेहनो पाप तो नथी, तो खुद्रा पाणीने मारतां शंकायो कीम छो ? एहवी भक्ति तो अन्य तीर्थि सुलभबोधी होवे ते पण नथी करता. देखत पापथी बीए छे. अने गणधरे तो सुत्रमां भक्ति कही बोलावी ते तो हरकेसीनुं कहीण कह्युं छे जे हरकेसीये एम कह्युं. ने हरकेसीमुनी तो छद्मस्थ छे. चार भाषाना बोलणहार छे माटे ते भाष्य नीकळी. केवळी भगवंत ए कामने भक्ति न जाणे. एहवी भक्ति जीनमारगमां करवी कही होय तो गोसाळो जीवतो केम जाय ? ते वीचारो. तथा आचारंगमां कह्युं साधु नावाये बेठा छे अने नावडीयो रीसाणोथको पाणीमां बोळे तो ते समये भगवंतनी आज्ञा ए छे जे,

तंनो सुमीणे सीया दुमीणे सीया नो उचाययं मणं नियछेजा नो तेसिंबालाणं घायाए वहाएसमुठेजा ॥

अर्थ.—तं. ते. नो. नही. सु. भलुं मन करे नहीं. तेम. दु. माठुं मन पण करे नहीं. जे हुं मरी जइश. नो. तेम ऊंचा मननो पण वीचार करे नहीं. नो. ते बाळअज्ञानी (नाखवावाळो) तेनी घात पण चीतवे नहीं. व. तेम तेने पकडीने वृद्ध करुं एम पण चीतवे नहीं.

मनमां पण धेख न आणवो कह्यो. तेना पुत्रादीकनी घात न चींतवे तो पचेंद्री मार्येथके वित्तराग भक्ति करी केम जाणे ? ए तो मिथ्यातमोहनीकर्मनो उदयज कर्मनो उदयज मारेछे, जे अनार्यनीपरे जीवहींसानी सुग गणताज नथी.

---

३१. वीस वैहरमानना नाम विषे.

हींसाधर्मि कहे छे, तमे सुत्र ३२ मानोछो तो कहो वीसवैहरमानना नाम क्या सुत्रमां छे ? ने सुत्रमां नथी तो मानोछो कीम ? ते उत्तर. सीद्धांत जबुद्वीपपन्नंतीमध्ये कह्युं जे, जंबुद्वीपमां जघनपदे ४ तीर्थंकर होयज. ने अढी द्वीपमां २० होयज. एटलुं कह्युं छे. ते वीस सासवता होवेज. सेखना भजना ने श्री मंदीर प्रमुख नाम कहे छे ते तो सुत्रमां नथी. अने सुत्रथकी मळतां पण नथी. ते कीम. वीपाकसुत्रे सुख विपाकमध्ये बे अध्ययने कह्युं छे, भद्रनंदीकुमार पुर्वभवे माहाविदेह खेत्रमां पुंडरगणी नगरीने विषे जुगबाहु जीनने प्रतिलाभ्या संसार परीत कर्यो मणुसा-

ओए निश्चे इहंउपन्ने एम माहावीर स्वामीये गौतमने कह्युं ते जीवे (भद्रनंदी कुमारे). माहावीर पाशे संजम पण लीधो इम इहां पुखलावती वीजयमां श्री मंदीर नामे तीर्थंकर तो नथी कह्या. जुग वहु नामे कह्या छे, तुमे कहो छो श्रीमंदीरस्वामी सतरमां, अढारमा जीननां अंतरे जनम्या छे वीसमाने वारे दीक्षा लीधी छे. आवती चोवीसीमां मुक्ति जशे, पण ए लेखे नाम मळ्यो नथी. वळी वीस नाम नियमा एहीज छे तेम नथीः ए नामनी भजना छे. ज्ञानी जाणे ते खरुं. वीस नाम परंपराथी कहेछे. ए वातनो पक्षपात अमारे नथी ते जाणजो.

---

३२. चेत्य शब्दे सुत्रमां कह्या ते ठाम कहे छे.

१. चेइयं शब्दे तीर्थंकर तथा साधु कह्या छे. प्रथम तो श्री सुयगडांगने वीजे सुतखंधे सातमे अध्ययने गौतमे उदकपेढालने कह्युं.

आउसंतो उदग्गा जेखलु तहारुवस्स स मणस्संवा माहणस्सवा अंतिए एगमवि आ यरियं धाम्मियं सुवयणं सोचा निसम्म अप णो चेव सुहुमाए पडीलेहाए अणुत्तरं जोग खेम पयलभिएसमाणे सेवि तावि तं अढाइ परीयाणइ वंदइ नमंसइ सकोरइ समाणेइ कल्लाणं १ मंगलं २ देवयं ३ चेइयं ४ पजूवासई

अर्थ—आ. अहो आउखावंत. उ. उदक. जे. जे नीश्चे ते. तथा रुप. स. श्रमण. मा. ब्रह्मणनी अ. समीपे. ए. एकपणे. आ. आर्य. ध. धर्मसंबंधीयो. सु. रुडुं वचन. सो. सांभळीने. नि. सम्यक प्रकारे हइये धारीने. अ. आपणथकी. सु. कुसाग्रनीपरे तिक्षण बुद्धे करी. प. आलोचीने जुओ. हुं पण एहवुं प्रधान. अ. सर्वथी उत्कृष्ट. जो. रुडुं मुक्ति साधवा जोग्य. प. पद लाधुं एतावता एहथकी में एक पद रुडुं लीधुं. से. ते पुरुषने पण तो. पहीलो लोकीकपणे. तं. ते उपदेशनो देणहारनो अ. आदर करे, प. ए पुन्य ए सुं करी जाणे. वं. तेहने वांदे तेहने आगळे अंजळी करे. न. मस्तक नमाडे. स वस्त्रादी पडीलाभे. स. अजयुस्थानादीक सनमान दइ. क. तथारुपे मोटुं कल्याण नीपनुं. म. मंगळीक. दे. धर्मदेव. चे चैत्य मनने प्रस्नाकरी साधुने. प. सेवा करे सामान्य लोक पण हीतोपदेश दातारने पुजे कीसुं कहेवो अनुत्तर धर्मना उपदेशना दातार कोइक वंदनादीक वांच्छे नहीं, तथापी तेणे सांभळनारे ते परमार्थोपकारी भणी यथाशक्ति विनयादीक समासरवुं.

इहां चार नाम साधुना ते माटे अत्र चैत्य शब्दे साधु जाणवा.

२. श्री ठाणांग त्रीजे ठाणे पहेले उद्देसे सुभ दीर्घ आउखो वांधे तीहां

तहारुवं समणंवा माहाणंवा वंदीत्ता नमंसित्ता ससक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं १ मंगलं २ देवयं ३ चेइयं ४ पुजवासीत्ता.

अर्थ—त. तथारुप. स. श्रमण. मा. माहणने. वं. वांदे. नं. नमस्कार करीने. स. वस्त्रादीक सत्कार देइ. स. सनमान देइ. कल्याणकारी. मं. मंगलकारी. दे. धर्मदेव, चे. ज्ञान सहीतछो प सेवाकरे. चैत्य साधु.

३. ठाणांग त्रीजे ठाणे त्रीजे उदेसे देवता थइ धर्माचार्यने वांदवा आवे.

आयरिएतिवा १ उवज्झायतिवा २ पवतिए तिवा ३ थेरेतिवा ४ गणीतिवा ५ गणधरेतिवा ६ गणावछेदतिवा ७ वंदामी नमंसामी सक्कारेमी समाणेमी कल्लाणं १ मंगलं २ देवयं ३ चेइयं ४ पज्जुवासामी ॥

अर्थ—आ. धर्माचार्य छे १. उ. उपाध्याय छे. २, प. धर्मना प्रवर्त्तावणहार छे ३. थे. थीवर साधु छे ४. ग. गणी गच्छाधीपती ५. ग. गणधर ते भगवंतना शीष्य ६, गच्छनो अंस केटलोएक समुदाय ते लेइ वीचरे ७. ए सातने वं. वांदु छुं न. नमस्कार करुं. स. सत्कार दऊं. स. सन्मान देउं क. कल्याणकारी. मं. मंगळकारी. दे. धर्मदेवने. चे. ज्ञानवंत. ९ सेवा करुं एम जाणीने आवे. अत्र चैत्य केतां साधुज.

४. चोथे ठाणे वांदवा आवे तीहांपण ए सातने पाठ एहीज छे.

५. भगवती सतक बीजे उदेसे पहेले खंधके एम चीतव्यु.

समणं भगवं महावीरं वंदीत्ता नमंसित्ता सक्कारेमी समाणेमी कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामी ॥

अर्थ—स. श्रमण. भ. भगवंत. म. महावीर. वं. वांदुछुं न. नमस्कार करुं स. सतकार करीने. स. सनमान करीने. क कल्याणकारी. मं. मंगळकारी. दे. धर्मदेव. चे. ज्ञानवंत. ९. प्रत्ये सेवा करुंछुं. इहां अरीहंत ते चैत्य. खंध के प्रतिमा नथी संभारी.

६. वळी खंधके प्रत्यक्ष भगवंतने वंदना कीधी. त्यां पण ते पाठ छे.

७. वळी सतक बीजे उदेसे पांचमे तुंगीयाना श्रावके एम चीतव्यु थेरे भगवंते वंदामी नमंसामी जाव पज्जुवासामी अत्र थीवर भगवंत ते चैत्य जाणवा.

८. ९. सतक अगीयारमे उदेसे नवमे सीवराजरुषी; तथा सतक अगीयारमे उदेसे अगीयारमे पोगलनामे परीव्राजके इम कह्युं.

तंगछामीणं समणं भगवं महावीरं वंदामी जाव पज्जुवासामी एयंणे इहभवे परभवे हियाए जाव भवीस्सई ॥

अर्थ–तं ते. भणी हुं जाऊं. स. श्रमण. भ. भगवंते म. श्री महावीरप्रत्ये व. वांदुं. जा. जावत. प. सेवा करुं. ए. ए ठाणे. क्षमाने इणभवने विषे तथा परभवने विषे इत्यादी अणुगामीपताये हुसे. एठलालगे कहेवो. अत्र चैत्य ते श्री महावीर जाणवा.

१०.–११. सतक नवमे उदेसे तेत्रीसमे रुखभदत्ते देवानंदाने कह्युं. सतक बारमे उदेसे बीजे जयंतीये मृगावतीने कह्युं ते पाठ पण एमज.

१२. सतक अगीयारमे उदेसे बीजे आलंभीया नगरीना श्रावके भगवंतने वांद्या, तुंगीया नगरीना श्रावकनी परे.

१३. सतक बारमे उदेसे पेहेले संख श्रावके आलंभीयाना श्रावकनीपरे वंदणा कीधी ए तेर ठाम मळता कह्या.

एयंणे इहभवे परभवे हियाए भाव अणुगामीयत्ता ॥ ए लगे पूरा पाठना आळावा कह्या. ते चार ठामे माहावीरने चैत्य कह्या.

वळी सतक सोळमे उदेसे पांचमे गंगदत्त देवताए चीतव्युं.

समणं भगवं महावीर वंदामी जाव पज्जुवासामी ॥

१५. सतक ८ मे उदेसे दसमे सक्रेंद्रे श्री महावीर वांद्या त्यांपतेपाठ छे.

१६. रायप्रदेसी अमलकपा नगरीये रह्यां " " "

१७. अभीयोगी देवताये कह्यु तथा पोते सयमेव आव्या "

१८. सुरीयाभे तथा विजयपोळीये तेमज अनेरा देवताये प्रतिमा पूजी डाढा पुजी तथा अभीयोगी देवताये प्रतीमा पूजी बतावी जे सीद्धायतनमां एक सोने आठ जीनपडीमा ने डाढाए तुमने तथा सुरीयाभे विमानवासी देवताये अचणीजाउं वंदणीजाउं जाव पज्जुवासणीजाउं कह्युं. तेमां पण कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवा-

सणीजाउँ कह्युं ते देखी भूलवुंनही. पुर्वभद्र जक्षने पण अचणीजाओ जाव पजुवाणीजाओ एटला बोल कह्या छे ते लोकीक सबंधी कल्याणं प्रमुख जाणवा. तीम प्रतिमाना पण इह लोक संबंधी कल्याणं प्रमूख जाणवा. पुर्वे साधु तथा भगवंतनी परे कल्याणं प्रमूख लोकोत्तरपक्ष जेवा नहीं ते केम जे भव्य, अभव्य, समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी सर्व पुजेछे. ते माटे लोकीक कल्याण.

१९. दसासुतखंधमां दसमा अध्ययने राजा श्रेणीके चेलणाने कह्यं.

तहारुवाणं अरहंताणं भगवंताणं जाव वंदामी नमंसामी सक्कारेमी सम्माणेमी कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामी एयणं इहभवे परभवेइ हियाए ५ बोल ॥

अर्थ—त. तथारुप. अ. अरीहंतने महीमावंतने. भ. भगवंतने. जा.. जावत. वं. आपणे स्तवीए. न. आपणे प्रणमीये कायाथकी. स. आपणे सतकार करीए. स. आपणे सनमान दइए. क. कल्याणना हेत ते कल्याण. मं. दुरीत टाळे ते मंगळं. दे. देव छे. चे. ते चैत्य वीरचीत्त प्रश्न कहीए एहवाने. प. पर्युपासना ते सेवा कर्ये. ए. ए भगवंतने वंदनादीक आपणने इ. इह भवने विषे. प. पर भवने विषे. ही. हीतने पथ्य तेहने १ सुखने अर्थे २. क्षमाने अर्थे एटले संगते. ३. मोक्षने अर्थे. ४. जावत आनुगामीकर ते भवनी परंपराइ सुभानुं बंधनो कारण होसे. ए पांच बोल. अत्र चैत्य श्री महावीर.

२०. उववाइमां घणा लोक एम कहे. समणं भगवं महावीरं वंदामी जाव पज्जुवासामी कहेतां श्रमण भगवंत श्री महावीरने आपणे स्तवीए जावत पर्युपासना ते सेवा करीए. अत्र चैत्य ते साधु जाणवा.

२१. रायप्रसेणी मध्ये केसवाइसई अत्र चैत्य ते साधु जाणवा.

२२. वळी प्रदेसीए धर्माचार्यनी भक्ति वखाणी तीहां कह्युं. जे जथेव धमारियं पासेजा तथेव वंदिजा जाव पज्जुवासेजा कहेतां जीहां हवे धर्माचार्यने देखे तीहां वांदे जावत पर्युपासना करे. अत्र चैत्य ते साधु.

२३. उपासगदशामां आणंदे कह्युं. अन्यतीर्थिना देव १, अन्यतीर्थिना गुरु २. अन्यतीर्थिये ग्रह्या जीनना चैत्य ३. ते वांदुं नहीं. बोलावुं नहीं. दान दउं नहीं. इहां अन्यतीर्थिये ग्रह्या चैत्य ते साधु पण प्रतिमा नहीं. जो प्रतिमा चैत्य होवे तो बोले कीम ? दान लीए कीम ? ते माटे चैत्य ते साधु जाणवा.

२४. एम उववाइमां अंबडने अधीकारे त्रण बोल वोसराव्या. ते आणंदनीपरे तो राख्या ते बोल आणंदथकी जुदा कीम पडे ? ते माटे अरीहंत ते वाते तो अरीहंतनी प्रतिमा ए बे देवमध्ये आव्या तो गुरु (साधु) वांदवानो पाठ कीहां ? ते माटे अत्र चैत्य ते साधु.

ए चोवीश सास्त्र चैत्यनी कही. तेमां अरीहंतने साधुने चइत्य कह्या. ते ज्ञानवंत माटे ते भणी कह्या छे.

२५. ज्ञानने चैत्य समवायंगे कह्यो छे ते कहे छे. एए सिणं चोवीसाए तिथमराणं चोवसिं चेइ रुखा पन्नंता चोवीस चैत्यवृक्ष हुआ. जे वृक्ष हेठे केवळज्ञान उपनो ते वृक्ष चैत्यवृक्ष कहीए. इत्यर्थ ते क्यां ?

जे वृक्षहेठे केवळज्ञान पाम्या ते ज्ञानचैत्यनी नेश्राए वृक्षने चैत्य कह्यां.

२६. वळी सतक वीसमे उदेसे नवमे चेइयाइ वंदीतए कह्युं. तीहां श्री वित्तराग चइत्यने वांध्या छे. मानुखोत्तर पर्वते प्रतिमांना सीद्धायतनना कुट मुळथी नथी कह्या ते माटे.

२७. तथा चमरेंद्रने आळावे अरीहंतेवा अरीहंतचेइयाणिवा अणगारेवा भाणी अप्पणो निसाए उठं उप्पयति कह्युं इहां पण "अरीहंताणं भगवंताणं अणगाराणं" शब्दे एकज अरीहंतज जाणवा. पाछो सक्रेंद्रे वीचर्यो त्यां चेइ नाम मुळगोजनथी. "अरीहंताणं भगवंताणं अणगाराणं", शब्दे एकज अरीहंतज जाणवा. पाछो सक्रेंद्रे वीचर्यो त्यां पण चेइ नाम मुळगोज नथी. ए त्रण शब्दे अरीहंतज. जो चेत्य शब्दे प्रतिमानी नेश्राय होय तो चमरेंद्रना भवनमां सास्वती हती. त्रीछेलोके, द्वीप, समुद्रे पण सारस्वती प्रतिमा हती, ऊंचुं मेरुपर्वते प्रमुखे तथा सुधर्मविमाने सीद्धायतनमां नजीक हती तेहने सरणे कीम न गयो ? प्रतिमानी नेश्राय ठरी नहीं.

२८. वळी उत्तराध्ययने वनवृक्षने पण चैत्य कह्यो. अध्ययन नवमे गाथा नवमीना पेहेला बे पदमां मिहीलाए चइएवछे ॥ सियछायमणोरमे कहेतां मीथीळा नगरीनेविषे उद्यानमांहे वृक्ष हतो, सीतळ छांया छे जेहनी तेवो, मनने रमणीक तथा उत्तराध्ययन २० मे बीजी गाथाना चोथा पदमां मंडी कुछिसी चेइए कहेतां मंडी कुक्षी नामा वनने वीषे.

२९. ज्ञानवंत माटे जक्षने पण चैत्य कह्यो. उववाइमां पुर्णभद्रव्यंतरनुं स्थानक छे.

सचे सचोवाए बहु जणस्स अचणिजे वंदणीजे पुजणिजे

सक्कारणिजे णं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिजे ॥

अर्थ–स. साचा छे. स. साचो. प. उपाय छे. ब. घणा. ज. लोकने. अ. अरचवा जोग्य छे. वं. वांदवा योग्य छे. पु. पुजवा योग्य छे. स. सत्कार करवा योग्य छे. क. कल्याणकारी. मं. मंगळीकनो करणहार. दे. प्रत्यक्ष देवरुप. चे. देवतानी प्रतिमा. प. सेवा करवा योग्य.

३०. आरंभने ठामे प्रतिमाने पण चैत्य कह्या छे.

३१. पुढवी हिंसंति मंदबुधिया कहेतां पृथ्वीकायने हणे माठी बुद्धीवाळा; तथा पांचमे आश्रवद्वारे चैत्य परीग्रहमां कह्या तीहां; तथा पांचमे संवरद्वारे प्रतिमा जोवी नीखेधी त्यां ए त्रणे ठामे प्रतिमाने चैत्य कह्या.

३२. देवलोकमां चैत्यवृक्ष कह्यां छे. ते प्रतिमा नश्रित छे माटे.

एम सीद्धांतमां चैत्य शब्द घणा ठामे कह्यो छे. पछे जेहवो ठाम होवे तेहवो " चैत्य शब्दनो " अर्थ जाणवो.

---

३१. धर्म करणीना फल कह्या ते विषे.

सीद्धांतमां दस समाचारीना फळ उत्राध्ययन छवीसमे कह्यां. तीर्थंकरगोत्र बांधवाना वीस प्रकार ज्ञाता आठमे अध्ययने कह्यां. तप, संजमना फळ तुंगीया अधीकारे कह्यां तोंतेर बोलना फळ उत्तराध्ययन ओगणत्रीसमे कह्यां. तपस्याना फळ उत्तराध्ययन त्रीसमे कह्यां. प्रवचन माता पाळवना फळ उत्तराध्ययन चोवीसमें कह्यां, ब्रह्मचर्यना फळ उत्तराध्ययन सोळमे कह्यां. दस वेयावंचन फळ ठाणांग, भगवती, उववाइ, विवहारसुत्रे कह्यां, प्रतिमा घडाव्या, संघ काढवाना फळ तथा वीधी कोइ सुत्रे कही नथी. जे ते मनुष्य लोकमध्ये सुत्रमां प्रतिमा पुजी एक द्रुपदी कहोछो ते पण निर्णय नथी करता के; कया तीर्थंकरनी, कोणे करावी, कये वारे करावी ते मांहीलो नाम ठाम पण नहीं. अने पुजानी वीधी ते पण अविरती देवतानी भळामण दीधी. आणंद कामदेवादीक श्रावकनी भळामण पण नथी. पुजा पण छकायना वध सहित भगवंतने न कल्पे तेहवी. वळी तुमे आज प्रतिमा पुजो छो तेने वस्त्र, स्त्रीनो फरस नथी करता जे अभोगी देवनी प्रतिमा माटे. त्यारे एटलुं नथी वीचारता जे स्त्री, वस्त्रना तो भगवंत अभोगी छे, तो सुं फुल, पाणी, दीप, धुपना भोगी छे ? भगवंतने तो एके वस्तु न कल्पे, त्यारे सुं जाणीने प्रतीमा

पुजो छो ? साहमो भगवंतने कलंक लगावो छो. जे अभोगीने भोग करावोछो ते सारुं करता नथी.

---

३४. महीया शब्दे फुलथी पुजा कहेछे ते विषे.

हींसाधरमी कहेछे लोगसमध्ये कीतीय वंदीय महीया पाठ छे ते " महीया " शब्दे फुलथी पुज्या कह्या छे. एवो खोटो अर्थ कहेछे. ते उत्तर.

ए लोगसना करणहार तो गणधरदेव छे; साधु, साधवी, श्रावक, श्राविकांने सीखवबो संजमी, वीरती, सामायक, पोषाना धणी सावद्धकरणीनो उपदेश न दीये. अने तुमे "महीया शब्दे" फुलपुजा कोना कह्याथी जाणी ? गणधरना कह्याथी जाणी छे? गणधरने पुछे जे फुलनी पुजा करुं? तीवारे हा तथा ना शुं कहे? जे काम गणधर पोते न करे ते कामनी बीजाने आज्ञा केम दीये? गणधरने तो नवकोटीये पचखाणछे सावध करणी त्रीवधे त्रीवधे करवाना पचखाण छे, ने महीया शब्दे तो भावपुजा कही छे. जे पुजाने भगवंत सत्कारेछे ते करवी कही छे. अने फूलथकी भगवंतनी पुजा गणधरे बतावी होय तो पांच अभीगम साचवतां सचीत वस्तु समोसरणमां आण्यांनी ना केम कहे ? ते वीचारजो.

---

३५. छकायाना आरंभ निखेद्यानो आळावो.

श्री आचारंगने प्रथम सुतखंधे सस्त्र परीज्ञा अध्ययने छ उदेसा छे, तेमां छकायनो आरंभ निखेद्यो छे तीहां एम कह्युं छे जे,

तथ खलु भगवया परीन्ना पवेवइ इमस्स चेव जीवीयस्स १ परिवंदणा २ माणण ३ पुयणाए ४ जाइ मरण मोयणाए ५ दुख पडीघायहेउ ६ ॥

अर्थ—त त्यां (लर्मबंधनना कारणने विषे) ख. निश्चे. भ. भगवंत. प. ज्ञानबुद्धीये प. हींसाये कर्मबंध, दयाये करे निर्जरा. ए मज्ञा कही. इ. इणे चे. पुरणे. जी. जीवतव्यना अर्थे १. प. प्रसंसाने अर्थे २. मा. मानवाने अर्थे ३. पु. पुजा सलाघा पामवाने अर्थे ४. जा. जन्म. म. गरण. मो. मुकवाने अर्थे ५. दु. संसारी दुःख. प. टाळवाने अर्थे ६.

ए छ कारणे छकायनो आरंभ करेछे तेहने ए फळ लागशे जे,

तं से अहियाए तं से अबोहिए कहेतां ते पृथ्वीना आरंभ ते पुरुषने अहीतनो अर्थ होइ, ते आरंभ तेने बोधबीज अणपामवानो अर्थ होय, अहीतना कारण थासे. वळी. एस खलु गंथे १ एस खलु मोह २ एस खलु मारे ३ एस खलु नीरए ४ कहेतां ए पृथ्वीनो आरंभ, नीश्चे कर्मबंधनुं कारण १, ए नीश्चे अज्ञानपणानुं कारण २, ए नीश्चे अनंत मरणनुं वधारनार ३, ए पृथ्वीनो आरंभ नीश्चे नरकनुं कारण ४

ए छ कारणनी हींसा कही. तमे धर्महेते हींसा करो छो ते छ कारण मांहे छे के बाहेर छे? सातमुं कारण तो हींसानुं भगवंते कह्युं नथी. ए लेखे पुजानी हींसाना फळ लागे के न लागे? अने समदृष्टी संसार हेते छ कारणमां अर्थपाप करेछे, पण पांडुओ जाणे छे तेणे करी एहवां फळ न लागे ने तमे तो पुजाहेते आरंभ करीने अनुमोदोछो आरंभ वधारवाना कामी छो तमारी सी गती थाशे ते सुत्रन्याये वीचारी जोजो.

वळी एहीज पांचमे उदेसे वनस्पति ने मनुष्यनो तुल्यपणो कह्यो ते.

इमंपि जाइ धम्मियं एयंपि जाइधम्मियं १ इमंपिवुढी धम्मियं एयंपिवुढि धम्मियं २ इमंपि चित्तमं त्तयं एयंपि चित्तमंतयं ३ इमंपि छिन्नलो मितियं एयंपि छिन्नलो मितियं ४ इमंपि आहारगं एयंपि आहारगं ५ इमंपि अणिच्चं एयंपि अणिच्चं ६ इमंपि असासयं एयंपि असासय ७ इमंपि चयावच्चयं एयंपि चयावच्चयं ८ इमंपि विपरिणाम धम्मियं एयंपि विपरिणाम धम्मियं ९ ॥

अर्थ–इ. जेम मनुष्यने शरीर. जा जेम जन्मने. ध. स्वभावे जन्मा छे. ए. ए मनुष्यनुं शरीर. जा जन्मनुं. ध. स्वभाव छे. १ इ. ए मनुष्यनुं शरीर. वु. वृद्ध स्वभाव पामे छे. ए. ए वनस्पतीनुं शरीर पण वु. वृद्ध पामे छे, २. इ. इम मनुष्यनुं शरीर चि. चेतनावंत छे. ए. एम ए पण चेतनावंत छे ४. इ. ए मनुष्यनुं शरीर जेम. छो. छेद्यो. मि. मुकाय. ए तीम ए पण छेद्यो मुकाय ४. इ. ए मनुष्यनुं शरीर जेम आ आहार लीये. ए तेम ए आहार लीये ५. इ, ए मनुष्यनुं शरीर अ. अनित्य अथीर. ए एम ए पण अनीत्य अथीर ६ इ. ए मनुष्यनुं शरीर जेम. अ. असास्वतुं (क्षीण क्षीण आवाची मरण). ए तेम ए पण असास्वतुं ७. इ. ए मनु-

ष्यनुं शरीर जेम. च. पुष्ट. अ. हीणुं थाय. ए तेम ए पण पुष्ट, हीणुं थाय ८. इ. ए मनुष्यनुं शरीर जेम, वि. रोगादीके बणसवानो स्वभाव छे. ए. तेम ए पण रोगादीके करी. वि. वीणसे. ९.

ए आळावे "इमंपी" कह्युं ते वनस्पती आश्रें अने "एयंपी" कह्युं ते मनुष्य आश्रे सरखुं उपजवुं, वधीं पामवुं, रोगपणु, वीणसवुं, मरवुं सरखुं देखाडयुं. ते वृक्ष देहरामां उग्युं होय तो साधु हाथे छेदे छतां दुषण नहीं. एवुं कहेतां परलोकनो भय नथी गणता ते रुडुं नथी. वनस्पतीनो संघटो करे तो सुत्रमां प्रायच्छित कह्युं छे. अने तमे वृक्षने हणतां पण बीचारता नथी. एहवा अधर्म करो छो.

---

३६. जीव दयासारु साधु खोटुं बोले कहे छे ते विषे.

हींसाधर्मि कहे साधुने विहार करतां वचमां कोइ वद्धवा गुरुने पुछे जे तमे क्यांइ मृगादीक दीठां? तीवारे आचारंगने भाषा अध्ययने पेहेले उदेसे कह्यो छे जे, जाणेतिवा नोजाणंति नोवदेजा तीहां इम अरथ करे छे जे जाणतोथको (साधु) नथी जाणतो एम दयाने अर्थे जुटुं बोले, ए वात सुत्र विरुद्ध कहे छे. सुत्रमां तो पांचे आश्रवना फळ सरखां कह्यां छे. जीव उगार्यानो जुठो बोल्या ऐमां साधुने बीजु व्रत तो न रह्यं. साधु जुटुं बोले नहीं. "जाणंतीवा" कहेतां साधु जाणतोथको मृगादीकने, "नोजाणंती" कहेतां जाणुं छुं एम "नोवदेजा" कहेतां न कहे, एटले मौन करी रहे. तीवारे हींसा न जुटुं ए बे दोष टाळ्या, ने बीजुं व्रत पण पाळ्युं. एम सुद्ध अर्थ जाणवो. जुटुं बोलवानुं सुं काम छे. ने एम सीद्धांतना अर्थ फेरव्ये स्यो लाभ छे? दसविकाळीक ७ मे अध्ययने पेहेली गाथामा कह्युं छे जे.

पउन्हं खलु भाषाण । परीसंषाय पन्नवं ॥ दोन्हं तु विणयंसिखोदोन भासे जसव्वसो

अर्थ—च. चार. ख नीश्चे. भा. भाषाना स्वरुपने. प जाणीने. प प्रज्ञावंत साधु. दो. सत्यअसत्य १, असत्य २, ए बे भाषाने तु. पुरण वी. बोलवाना उपयोगने. सि. सीखे. दो. असत्यवी भाषाने १. सत्या असत्या. २ ए बे भाषा न बोले स. सर्वथा प्रकारे.

एमां असत्य अने मीश्रभाषा बे कारणे नीकारणे पण बोलवी निखेधी छे, वळी पन्नवणा अगीयारमे पदे कह्यो जे,

सरीर प्पभवा भाषा दोहि समएहि भासए भासं भासा चउप्पगारा दोनिय भाषा अणुमयाउं ॥

अर्थ—स. सरीर प्रभावता पुर्वे कही छे. पण इहां काययोगे भाषा पुद्गळ ग्रहेछे "आहच्च भद्रबाहुस्वामी गीणेये कायेणं निसरे. तंहय वाइएणं जोगेण इति" एक समे कायाये ग्रहे. बीजे समे वचन नीसरे एठले बे समये भाषा. एक समये भाषाना पुद्गळ ग्रहे, बीजे समये भाषा परीणमावी नसंगे. ए भाषाना चार भेद कह्या तेमां साधुने बे भाषा अनुमत छे ते कही सत्यभाषा १ असत्यासत्या २ ए बे भाषा.

एमां पण सत्य, व्यवहार ए बे भाषानी अणुआज्ञा तीर्थंकरे दीधी. तथा आचारंग बीजे सुतखंधे भाषाअध्ययने पहेले उदेसे कह्युं छे जे.

अतीता जेय पडुप्पन्ना जेय अणागया अरहंता भगवंता सथेते एयाणिचेव चत्तारी भाष एजाताइ भासिसुवा भासंतिवा भासस्संतिवा ॥

अर्थ—ए. ए. च. चार भाषानी जातने अत्रे एम न कह्युं जे तीर्थंकर चार भाषा बोले. ता. ते भा० सरुपने भाखताहुवा. भा. भाखेछे वर्त्तमान जीन. भा० आगळे तीर्थंकर भाखशे. (अर्धमागधी भाषाये).

इहा हींसाधरमी कहे, तीर्थंकर पण चार भाषा बोले. एम करी जुटुं बोलवुं जाणे ठरेछे, जेम तेम करी जुटुं बोलवुं ठरे तो पछी हींसा पाठ ठरे. पण एम नथी जाणता जे श्री तीर्थंकर जुटुं बोले ए वात केम बोले. इहां तो एम कह्युं छे जे त्रण काळना तीर्थंकर चार भाषाना सरुपने परुपे छे. जे ए सत्यभाषादीक इम चार ओळखावे छे. जेम बे प्रजापी, बे अप्रजापी; बे बोलवी, बे न बोलवी. तथा ४२ भेद कहीने ओळखावी एम कह्यो छे, पण तीर्थंकर जुठो बोले ए अर्थ नथी. तथा समदृष्टी चार भाषा बोलतां आराधक पन्नवणा पद अगीयारमे कह्यो छे. अने असंजती चार भाषा बोलतां पण विराधक, तेमांही हींसाधरमी कहे सासननो उडाह थयो होवे, चोथो आश्रव सेव्यो होय, तो जुटुं बोलवो, ढांकवो एहवे समदृष्टी जुटुं बोले. ए अर्थ खोटो कहे छे. समदृष्टी चार भाषाना सरुपने जथार्थ जाणतोथको बोलेछे. ते माटे जथार्थभाषी थयो, आराधक कह्यो. अने मीथ्याती चार भाषा

सरुपथकी जाण्याविना बोलेछे ते माटे वीराधक कह्यो. जीम जाणवुं ते तो ज्ञान छे पण मीथ्यातनी नेश्राये त्रण ज्ञान कह्या. तीम समदृष्टी यथार्थ जाणतो चार भाषा बोले तेणे आराधक. अने मीथ्याती सरुप जाण्या वीना बोले ते कारणे चार बोल तो वीराधक कह्या. इहां चार भाषा समदृष्टीने बोलवानी भगवंतनी आज्ञा नथी.

---

३७. आज्ञाये धर्म (दयाये नहीं) कहेछे ते विषे.

हींसाधर्मि कहेछे जे आज्ञाये धर्म कहीये, पण दयाये धर्म न कहीये. अहवो दयाथकी द्वेषभाव छे. दयाये धर्म कहेतां तो देहरां कराववां, प्रतिमा पुजवी, संघ काढवा ए काम अटकाइ जाय. ते माटे दयाये धर्म न कहीए. आज्ञाये धर्म कहीये. पण मुर्ख एम नथी जाणता जे भगवंतनी आज्ञा दयामांज छे, ने हींसामां तो आज्ञा नथी. धर्मरुची अणगार ज्ञाता अध्ययन सोळमे कह्यो; धर्मगोख गुरुए कह्युं जे, ए कडवो तुंबडो "स्नेहवगाढ" निर्दोष थंडीले जइने परठवो. ए आज्ञा गुरुनी हती. पछे सीष्ये तेहवो ठाम न देख्यो, तीवारे सर्व पोतेज आहार कीधो. इहां कीडीनी दया पाळतां गुरुनी आज्ञा रही के भांगी ? ए साक खाधानी तो गुरुनी आज्ञा हती नहीं. एणे कर्त्तव्ये धर्मरुची अणगारे गुरुनी तथा तीर्थंकरनी आज्ञा राखी के भांगी ? जो आज्ञा वीराधक होय तो स्वारथसीद्ध केम जाय ? ए लेखे दया पाळी तेणे आज्ञा आराधीज कहीये. आज्ञा ने दया ते एकज छे. तीवारे हिंसाधरमी कहेसे, जो आज्ञा अने दया एकज छे तो नदी उतरतां आज्ञा तो छे, पण दया कीहां रहेछे. ते उत्तर. साधु नदी उतरेछे ए तो असक्यपरीहार छे. अने आकुटी जाणीने उतरेछे. पण भगवंतने अनाकुटी कही छे. तथा तेहनो परमाण पण बांध्यो छे. समवायंग सुत्रे एकवीसमे समवाये कह्यो छे जे,

अंतो मासस्सतउ उदग लेवे करेमाणे सबले अने अंतो-संवछरस्स उदग लेवे करे माणे सबले. ॥

मासमां बे तथा वरसमां नव उतरवानी आज्ञा नथी. जो होय तो 'कप्पइ अतोमासस्स दो उदग लेवा' एम नथी. एक त्रण लेप करे तो सबळो दोष लागे. एम वीक देखाडी. वळी उतरता साधु हर्ष नथी पामता. जेम तमने पुज करतां हींसा थाय छे ते हींसा तमारे तो अनुमोदवा खाते छे. अने साधुने नदीनी हींसा ते नींदवा खाते छे. साधु नदी अणउतर्या पश्चात्ताप न करे अने तमे पुज

अणकीधे पश्चाताप करो छो. साधुनी नदी, ने तमारी पुजा एकसरखी नथी. पुजा उपर नदीनो द्रष्टांत मळयो नथी ते जाणजो.

---

१८. पुजा ते दया कहे छे ते विषे.

हींसाधरमी कहेछे अमारे पुजा करतां हींसा थाय ते दयाज छे. परीणामने सुद्धपणे करीने आगळ भावनानो लाभ घणो थाय. जेम कुवो खोदतां धुळ लागे. पण पछे भावना जळथी मेल उतरी जाय. ते उत्तर. ज्यांथी देहेरांनी नीव खोदाय. इंडा चढे, पुजा थाय, नाटीक करे तीहांलगे तो हींसारुप धुडनी धुड नीकळे तीवारे तमारी पुजा बंध थाय. ए लेखे तो धुडज नीसरे छे. कुवाना खोदवानो द्रष्टांत पुजा उपर मळयो नहीं. धुडथकी पाणीनी प्रकृति भीन्न छे. तेम पुजाथकी दयानी प्रकृति पण भीन्न छे. तीवारे हींसाधरमी कहे प्रश्नव्याकरण पहेले संवरद्वारे दयानां साठ नाम कह्यां छे, तेमां "पुया" एहवो दयानो नाम छे, ते माटे पुजा ते दया जाणवी. तीवारे कहीये जो हींसासहीत पुजा तेने दया ठसावसो तो, ए साठ नाम दयाना छे तेमां "जणो" (यज्ञदेवनी पुजा) एहवो नाम पण दयानो छे ए लेखे पसुवद्धकरी यज्ञ करेछे ए पण दयामांज ठरशे. दयानो यज्ञ तो हरकेसी मुनीये ब्राह्मणने उत्तराध्ययन बारमामां ४१–४२ गाथामां कह्यो. ते यज्ञ दयामांज गणीये. जेमां कांइ हींसा न आवी ते.

छजीवकाए असमारभंता । मोसं अदत्तंच असेवमाणा ॥
परीगहं इथिउ माण माया एवं परीणायचरेज दंता ॥ ४१ ॥
सुसंवुडा पंचहि सवरेहि । इह जीवियं अणवकंखमाणा ॥ वोसिठ काया सुइचत्त देहा । माहा जयं जयइजन्नसेठं ॥ ४२ ॥

अर्थ–छ. छ जीवनी कायाना. आ. आरंभने अणकरतोथको. मो. असत्यने. अ. अदत्तने. पुनः अ. अणसेवतोथको. प. परीग्रहने. ई. स्त्रीने. मा. मान. मा. मायाने. ए. ए पूर्वे कह्या तेने. प. माठां जाणीने. पचखीने प्रवर्ते. द. इंद्री दमतेथको. ४१. सु. भलीपरे संवर्यां छे आश्रव जेणे. प. पांच संवरे करी. इ. ए मनुष्यलोकने विषे. जी. असंजमी जीवतव्यने. अ. अणवांछतोथको. वो. ममताभावने करवे करी वोसरावी छे काया जेणे. सु. मनजोगे करी पवीत्र सुश्रुखा अणकरवेकरी तज्या छे. देह जेणे, एवा साधुते म. मोटाछे कर्मशत्रुनो जय जेहने विषे. जे. एहवा जज्ञमांहे.

श्रेष्ट प्रधान जज्ञने. य. जे जे क्रीया बहु वचनने ठामे एक वचन छे इत्यादीक व्यय ते माटे. ४२.

ए यज्ञ दयामां; पण द्रव्ययज्ञ दयामां कीम ठरे ? तमे कहोछो पुजानाम दयानो छे त्यारे ब्रह्मा, विष्णुनी पुजा सेमां छे ? ए पण तमारे मते दयामांज ठरशे. तथा साधुने " समणा माहण " कह्या, समण माहण ते साधु कहीये तमारे लेखे समण साकयादीक तथा माहण जेटला ब्राह्मण तेटला सर्व साधुज थाश्ये. एम सुन्यउपयोगी थका केम बोलो छो. दयानो नाम मंगळ पण छे. तमारे लेखे आठ मंगळीक तथा आंबाना पाननी वानरवाळ बांधे ए पण दयाना साठ नाम थाशे. एम लोकीक पक्षनां रुढां नाम दयाने कह्यां. पण करतव्य लोकीकनां नथी गण्या. दयानुं नाम " ओसवो " कह्युं. ते ओच्छव. ते पण दया. ए लेखे नाटीक ओच्छव ते दया होय तो सुरीयाभने आज्ञा कीम न दीधी ? तथा पुजा तेहीज तमारेमते दया छे तो साधु पुजानी आज्ञा कीम न दीये ? दयानी तो आज्ञाज छे.

वळी हींसाधर्मि पोतेज जे मानसीत सुत्र माने छे तेना त्रीजा अध्ययनमां ध्रव्यपुजा, भावपुजा, ने सावज पुजाना अधीकार छे. तथा ध्रव्य पुजाना ने सावजपुजाना फळ देखाडयां छे ते पाठ त्रीजा अध्ययनथकी.

भावच्चणं चारीत्ताणुठाणं कट्टुग्ग घोरं तव चरणं दच्चचरणं वीरय सीलपुया सकार दाणादिचोक्क गोयमा भावच्चणं मुग्गविहारी आयदवचणंतु एथंच गोयमा केई अमणीय समय सझावे उसनाविहारी नियवासिणो अहिठपरलोगपचखाए सयंमती इढिरससायागारवाइमुछीए रागदोसा मोहाहंकार ममकारीयं संजम सद्धम्मपरंमुहे निदयं अकलुण एगंतेणं रोदकु राभीग्गाहिउं मिछदिठीणो कयसावजजोग पचखाणविप्पमुक्का सेसंगारंपरीगाहे दव्व त्तातए भावत्तातए नाममेत्तं मुंडे अणगारे महव्वयधारी समणे वीभवीत्ताणं एवंमन्न माणे अमहे अरहंताणं भगवंताणं गंध मल्लं यदीव धुया पुयासकारेहिं अणुदियह पक्कुव्वाणातिछुछप्पण करेमित्तं तहत्तिउतंच गोयमा समणुनजाणेजा बुधिही-

छकायहीयं तु संजमवीउनकप्पए सव्वहाअविरए सुउणसे क-सीणठकम्मषयकारियंतु भावछयमणुठे गोयमा मनीसेसयंदे सवि-रयअविरयाणंतु भयछ अवोछीन्नघोरदुषगिदावय जलिउउव्वेवे-यसंसत्तो अणंतखुत्तो दुगंधा खार पीत वसजलुसपुयं कढकढत खटलटलस झंतो गोयमा ॥

अर्थ—(हवे भावपुजा तीर्थंकरनी) चा. चारीत्र अनुष्टान. क. उग्रघोर. त. तप. च. चारीत्रने वांदवुं नमस्कार करवो ते भावपुजा. द. हवे द्रव्यपुजा कहे छे. वी. व्रत आदरवां ते. सी. सील आचाररुप पुजा. स. सतकार करवो ते. दा. दान, सीयल, तप, भाव ते सरवे द्रव्यपुजा. गो. अहो गौतम वळी भावपुजा ते. भा. भावपुजा वळी. मु. उग्रवीहारी भणी होय. आ. द्रव्यपुजा ते जतीने देवुं ते. ए. जीनसासनने विषे. गो. अहो गौतम. के. कोइक अमुनी. स. सीद्धांतना भाव जाण्या नथी. उ. संजमथी पडया. वी. वीयारथी थाक्या हारी. नी. प्रतिबंधन वास सहीत. अ. जेणे परलोकनी पीडादीठी नथी जाणता नथी. स. पोताने मते चाले छे. इ. रीधी, रस, गारव साताागारवे करी मुरछाणा थका. रा. राग, द्वेषेकरी सहीत. मो. मोह अंधकारेकरी सहीत. म. ममताने विषे प्राति बंध सहीत. सं. संजमथी भला धरमथी उपरांठा नि. दया रहित त्रास रहीत पापनी सुग रहीत अ. करुणा रहीत. अे. अेकांतपणे. रो. रुद्रकरमना करणहार पाप करमे करी सहीत अभीग्रहीत. मी. मीथ्याद्रष्टीनो धणी. क. सावज जोगना पचखाण करी वेगळां मुक्यां. से. आरंभ. परीग्रहना संग त्रीविधे अंगीकार करीने. द. द्रव्यमात्र. भा. भावमात्र. ना. नाममात्र. मुं. मुंड अणगारनाम. म. माहाव्रत धारी साधु अेहवुं मनमां. स. समणे. भ. धारसे. अे. अेम मानताथकां. अ. अमे. अ अरीहंतने. भ. भगवंतने. गं. गंधेकरी. म. फुलेकरी. दी. दीवेकरी. धु. धुपेकरी. पु. पुजा सत्का-रेकरी. अ. दीन दीनथकी उद्यम करताथका. प. बळात्कारे अमे तिर्थंकरनी स्था-पना करसुं ते सरवे द्रव्यलींगीनुं वचन. त. रहेत नहीं. गो. अहो गौतम. सं. द्र-व्यलींगीनुं वचन भलुं पण न जाणवुं. बु. तीर्थंकर छकायना हेतकारी धरम कहे माटे. सं. संजमना जाण ते पुफादीक पुजा करे नहीं. अणुमोदे नहीं तो श्रावकने सावजपुजा केम कहे. स सर्वथा अव्रतीने पण आदरवा जोग्य नहीं, पुजा करवा जोग्य नहीं. क. करम क्षय करवा काजे आठ करम क्षय करवा काजे. भा. संज-

जमरुप भावपुजाथकी करम क्षय थाय. गो. अहो. गौतम. म. अणुव्रती, देसव्रती. अ. समद्रष्टी, अव्रती सर्वेने. भ. भावपुजा आदरवा जोग्य. अ. हवे सावज द्रव्य-पुंजाना फळ देखाडे छे. ज तेणे दीरघदुःख स्वरुप अगनजुं वळजुं ते दुवेदु नथी. अ. अनंतीवार दुख पामशे. दु. वळी दुरगंध मंद्रे करी खरडया. खा. खार. पी. पीतोडा सळखम तेनो समोह छे. व चरबी रुधीर तेनो समोह छे. क. दुधनीपरे उकाळो उकळे तेम दुख गाढो. ल. दाझगरा रोगनी परे वळवळता उळवळाट शब्द करे. गो. अहो गौतम सावज द्रव्यपुजाना एहवां फळ पामे.

ए वीगेरे माहानसीतसुत्रना त्रीजा अध्ययनमां अधीकार घणा छे ते ग्रंथ वधी जवाना सबबथी आंही सारांसमात्र दाखल करेलछे जेथी वधु अधीकार माहानसी-तथी जोइलेवा. सीवाय तेज सुत्रना पांचमा अध्ययनमां पण तेवा अधीकार छे ते पण जोवा.

(सदरहु माहानशीतनो विषय आ ग्रंथ छपाववो शरु कर्या बाद श्री जाम-नगरना सूज्ञ श्रावको तरफथी लखाइ आव्यो. तो तेओ साहेबोना आग्रहथी तेमन मानखातर कींचीतमात्र दाखल करवामां आव्यो छे.)

---

३९. प्रवचनना प्रतिनिकने हणतां दोष नथी कहेछे ते विषे.

हींसाधर्मि कहेछे प्रवचनना प्रतिनीकने हणवो तेनो दोष नथी, तेनी साख नसीतचुर्ण मध्ये कही छे जे, वाटमां वाघनो भय हतो. तीहां आचार्य घणे परीवारे आव्या. वाघनो भय जाणीने सीष्येने कह्युं. गच्छने राखो. तीवारे सीष्ये कह्युं केम राखीये, तीवारे गुरु कहे पहीलो अविराधवे. पछे विराधवे राखो. पछे सीष्ये रात्रे त्रण सींह मार्या. सीष्ये प्रायच्छीत माग्युं. गुरु कहे तुं सीद्ध छे. तने प्रायच्छीत न आवे. ते माहा फळ उपायो. एम कही आगलाना हइयाथकी दया काढी. तेनो उत्तर. जो सींह मार्ये प्रायच्छीत नथी, तो गोसाळे बे साधुं मार्या तो, एहवा अपराधीने हण्यो नहीं केम ? भगवंते हणवानो पण उपदेश केम दीधो नहीं ? अने पोतानुं व्रत भांगीने आगलाने उगारे तेनुं पाप नहीं तो अंबडना सातसें सीष्य तृषा परीसहे पराभव्या मुवा. तेमां एक जण आज्ञा देत सात सें जीवत पण वित्तरागनी आज्ञा एम नथी जे पोतानां व्रत भांगीने आगलाने उगारवो इ सुत्राविरुद्ध कहे छे भगवंतनो मारग तो ए छे जे अंतगडसुत्रे प्रवर्गे श्री कृष्णे पुछयुं जे गजसुकमाल कीहां ? त्यारे भगवंते कह्युं, " साहिय अठे " मुक्ति

गमनरुप कार्य अर्थ साध्यो. त्यां भाइना वद्धक उपर कृष्णने द्वेष आव्यो त्यारे भगवंते कह्युं.

माणं तुम्मं कन्हा तस्स पुरिसस्स पउभावजहिं एवं खलु कन्हा तेणं पुरीसेणं गयसुकमालस्स अणगारस्स साहिजे दिन्ने॥

अर्थ–मा. रखे. तु. तुम्हे. क. हे! कृष्ण. त. ते. पु. पुरुष उपरे. प. द्वेष करशो तेम द्वेष म करो. ए. एम. ख. नीश्चे. क. हे! कृष्ण. ते. ते. पु. पुरुषे. ग. गजसुकमाल. अ. अणगारने. सा. साहज्य. दी. दीधी.

जेम तमे वृद्धपुरुषना इंटवाळा फेरा टाळ्या. तेम ते पुरुषे गजसुकमालना फेरा भवटाळया. त्यारे कृष्ण कहे ते पुरुषने हुं केम जाणीश? तीवारे भगवंते कह्युं तमने द्वारकामां जातां साहमा देखी ठीयाचेव ठिइभेएणं कालं कारिसइ कहेतां उभोज थयो. थीती भेद करीने. काळ करशे.

एम इसारतमां ओळखाव्यो. जे तमने देखी उभोथको हेठो पडीने मरशे. तीवारे तुं जाणीस. जे ए पुरुष गजसुकमालने मारणहारो छे, पण प्रगट नाम भगवंते कह्युं नहीं. प्रतिनीकने मारवो, हेरवो एवो कर्म जीनमारगमां केम होवे? ते वीचारी जोजो.

४०. गुरु माहाव्रती ने देव अव्रती कहे छे ते विषे.

हींसाधर्मि आवस्यक करे त्यार थापनाचार्य कोडा हाडकाना करी गुरु ठरावी तेने खामणा देवे, पण ते थापनाचार्यने पुष्प, पाणी, धुप, दीप कांइ न करे, ते केम जे गुरु माहाव्रती छे. तेने सचीतनो संघट घटे नहीं. पण विवेक विगर एटलुं न जाणे जे गुरु माहाव्रती छे. त्यारे देव सुं अव्रती छे? ए सचीतनो संगट देवने केम घटशे? एम तो विचारो?

---

४१. जीनप्रतिमा जीनसरखी कहे छे ते विषे.

हींसाधर्मि कहे जे जीनप्रतिमा जीनसरखी छे. देवलोक पर्वते ते जघन्य ७ हाथ उत्कृष्टी ५००) धनुष्य प्रमाणे ते तीर्थंकरना ऊंचपण प्रमाण छे. पुजा करतां नमोथ्थुणं पण करे छे, त्यारे पुछीये जे अवगाहनानुं तो सरीखपणुं छे, पण गुणनो सरीखपणो केम नथी? ज्ञान, दर्शन, विगेरे केम नथी. तथा जीनवरने मुख आगे पांच अभीगम साचवे छे. अने ए प्रतिमाने फुल, पाणी, वस्त्र, आभूषण, धुप, दीप,

वेसायाएणं वाल तपसीने संताप्यो किंभवं मुणी मुणी तिउदाहु जुएसे जायरीए.

तीम ढींसाधरमी ते दयाधरमीने देखीने संतापे पण छे.

३. वळी गोसाळे पढनामा नपउअपरीहार पनगती जोडीने कह्या. तेम ढीं. साधरमी नवा ग्रंथ सेत्रुंजा माहातम तथा वीवेकवीलास आदी घोगणे ग्रंथ जोड्या छे. देहरां प्रतिमा जोडवा कराववां संघ काढवाना लाभ देखाडवा माटे.

४. वळी गोसाळामतीए इमोए.

अणति कम्मणि जाइंछ वागरणाइं वागरेतीतं लाभं अलाभं सुहंदुहं जीवीयंमरणां

तेणेकरी आणीवतमत कहाणो तीम ढींसाधरमी पण लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, जीवीत, मरण मंत्र, जंत्र, जोतीष, वैदककरी आजीवीका करे छे.

५. वळी गोसाळे वे साधु वाळ्या, भगवंतने तेजुलेसा मुकी पण पापथी न डर्यो. तेम ढींसाधरमीये पण चउद सेंह चमालीश वेधने होम्या. वळी दयामारगी साधुने मारे तेनो पाप सवा मांखीनो वतावे छे.

६. गोसाळाने शरीरे दाधज्वर थयो तेवारे मोटी पीश्रीत पाणी छांट्यो "अंवकुणग हथगए" अंवफळ हाथमां लीधां, काचा आंबाना फळ खावा मांड्यां ते पाप ढांकवाने.

तस्स वियणं वजस्स पछाहण छयाए इमाइं अठ चरीमाइ पन्नवेतित चरिमे पाणे चरिमेगेय चरिमे नटे चरिमे अंजली कम्मे चरीमेपोखल सवटए माहामेहे चरिमे सेएण गंधहथी चरीमे माहाशीलाए कंठए संगामे अवचण इमीसे उसप्पिणीए चउविसाए तिथयकराणं चरिमे तिथयरे सीझीसई ॥

अर्थः—तेने पण मद्यपानने आछान नीमीते मद्यपानोदी पापने नीमीते इत्यर्थ. एत्र क्षमाण आठ चरीम मते परुपे. वळी ए नहीं हुवे इम करीने ते कहे छे. चरीम पान १, चरीम गान २, चरीम नाटक ३, चरीम अंजली कर्म ४, चरीम पृष्फळ मेध ५, चरीम सेचनक हस्ती ६, चरीम माहासीलाकंटकनामासंग्राम ७, अ-

चक्रनो भय वीगेरे भगवंतना पुन्यने अतीसेकरी घणा उपद्रव नहीं. अने जीनप्रतिमा जीनसरखी छे तो तेमांनो एक पण भय केम टळतो नथी? माटे भ्रमनाथे भुलोमां.

४२. हींसाधर्मि अने गोसाळामतिनो मुकाबलो.

गोसाळामतीनो मत कहे छे—सुयगडांग बीजे सुतखंधे छठे अध्ययने कह्युं.

सीउदगंसिवउ बीयकायं ॥ अहायकम्मं तह इथियाउं ॥
एगंत्तत्तारीसिह अम्म धम्मे ॥ तवस्सिणो णाभिसमोतिपावं ॥७॥

अर्थः—स. सचीत पाणी सेववुं (पीवुं) बी. साळ, गोधमादीकनो उपभोग करवो. अ. आधाकरमी अहार लेवो. त. तेमज तथा. इ. स्त्री. नो प्रसंग पण करवो ए. एकाकी बिहारनेविषे उद्यमवंतने ३. इ. इणे प्रकारे आपणने परने उपकार हुइ इम कहेछे अ. अमारा धर्मने विषे. प्रवर्तताने. त. तपस्वीने णा. पाप लागे नहीं यद्यपी सीतोदकादिक कांइएक कर्मबंधनो कारण छे तथापी धर्मधार शरीरने राखवाने अर्थ. करतां थकां एकलाविहारी तपस्वीने बंधन नथी. ७

१. अद्रकुमारने गोसाळे कह्युं शरीर रक्षणे धर्म अमारो छे. सीतोदग पाणी. बीजकाय, फळ, फूल, आधाकरमी आहार, अने स्त्रीने सेववो कारणे एटलांवाना भोगववा तेहनो दोष नहीं, ते सरधा तमारी पण छे आद्रकुमारे पाछुं कह्युं तेज सुत्रमां तेज ठेकाणे नवमी गाथामां.

सिवाय बी उदग इथियाउं ॥ पडीसेवमाणा समणाभवंति ॥
जागारिणोवि समणाभवंतु ॥ सेवंतिउतेवि तहप्पगारं ॥९॥

अर्थ.—सि. कदाची. बी. बीज, साळ, गोधुमादीक. उ. सचीत पाणी. इ. स्त्रीयादीक. प. एटलावानां परिभोग करताथकां. स. तपस्वी हुइ आ. तो गृहस्थ पण देसांतरने विषे. विचारतां. स. साधु तपस्वी हूई (थाय) से. सेवे, भोगवे. अ. ते पणे. त. तथाप्रकारे जेम जतीने एकल विहारादीक तेम गृहस्थने पण धनार्थि मार्गे ने अवस्थाये आसावंतने कंचन पण एकाकी विहारपणुं हुइ क्षुधा तृषादीकना कष्ट सही एणे कारणे ते पण तपस्वी गण्यो. ९.

२. भगवती सतक १५ मे गोसाळानो मत कह्यो. त्यां सीद्धा बेठांथकां.

वेसायाएणं बाल तपसीने संताप्यो किंभवं मुणी मुणी तिउदाहु जुएसे जायरीए

तीम हींसाधरमी ते दयाधरमीने देखीने संतापे पण छे.

३. वळी गोसाळे पलनामं नपउउपरीहार मनथकी जोडीने कह्या. तेम हीं. साधरमी नवा ग्रंथ सेत्रंजा माहातम तथा वीवेकविलास आदी सोगमे ग्रंथ जोडया छे. देहरां प्रतिमा जोडवा कराववां संघ काढवाना लाभ देखाडवा माटे.

४. वळी गोसाळामतीए इमोए.

अणति कम्माणि जाइंछ वागरणाइं वागरेतीतं लाभं अलाभं सुहंदुहं जीवीयंमरणां

तेणेकरी आणीवतमत कहाणो तीम हींसाधरमी पण लाभ, अलाभ, सुख, दूःख, जीवीत, मरण मंत्र, जंत्र, जोतीप, वैदककरी आजीवीका करे छे.

५. वळी गोसाळे वे साधु बाळ्या,भगवंतने तेजुलेसा मुकी पण पापथी न डर्यो. तेम हींसाधरमीये पण चउद सेंह चमालीश बांधने होम्या. वळी दमामारगी साधुने मारे तेने पाप सवा मांखीनो बतावे छे.

६. गोसाळोने शरीरे दाघज्वर थयो तेवारे मोटी मीश्रीत पाणी छांट्यो "अंबकुणग हथगए" अंबफळ हाथमां लीधां, काचा आंबाना फल खावा मांडयां ते पाप ढांकवाने.

तस्स वियणं वजस्स पछाहण छयाए इमाइं अठ चरीमाइ पन्नवेतित चरिमे पाणे चरिमेगेय चरिमे नट्टे चरिमे अंजली कम्मे चरीमेपोखल सवट्टए माहामेहे चरिमे सेएण गंधहथी चरीमे माहाशीलाए कंठए संगामे अवचण इमीसे उसप्पिणीए चउविसाए तिथयकराणं चरिमे तिथयरे सीझीसई ॥

अर्थः—तेने पण मद्यपानने आछान नीमीते मद्यपानोदी पापने नीमीते इत्यर्थ. एव क्षमाण आठ चरीम मते परुपे. वळी ए नहीं हुवे इम करीने ते कहे छे. चरीम पान १, चरीम गान २, चरीम नाटक ३, चरीम अंजली कर्म ४, चरीम पुष्फळ संवर्तकमेघ ५, चरीम सेचनक हस्ती ६. चरीम माहासीलाकंटकनामासंग्राम ७, अ-

हंनामहुचपुनः एहीज अवसर्पिणीने विषे चोवीश तीर्थकरमांही चर्म तीर्थकर हुं सीझीस, जावत अंत करीश. तीहां पानकादीक चारने पोतानी अपेक्षाये चरमपणो एहवो पोताना निर्वाण गमने करी वळी अणकस्त्राथकी ए जीन निर्वाणकाळे जीनने अवस्ये हुवे एहने विषे दोष नहीं. तथा नहीं एहने दाहोपसमने काजे सेवुंछुं. एहने प्रकाशवानेअर्थे तथा अवध ढांकवाने अर्थे हुवे. इम कह्युं. तेम हींसाधरमी पण पोते आचार कुसीळ सेवीने शास्त्रना पाठ जोडीने नवा देखाडे छे.

७. गोसाळे पोतानो नाम तीर्थंकर धराव्यो जे त्रेवीस पुर्वला अने चोवीसमो हुं, तीम हींसाधरमी पण कहे माहावीरथकी अमे आटलीमे पाटे " गोयम सोहम " जंबुने पाटे अमे एम कहेछे.

८. गोसाळे मरणांतवेळा कह्युं, माहारो महोच्छव सीवका (पाळखी) करी घणा आडंबरथी काढजो चोवीसमा जीन मुक्ति गया एम कहेजो. तीम हींसाधरमी पण कही कहीने मांडवी करावे, जय जय नंदा, जय जय भदा कहावे. मुवाकेडे देरडी, पगलां करावे छे.

९. " अंतीमराइयं सीपरिणममाणांसि पडीलद्ध समत्तं " कहेतांः पछी गोशाळे सातमी रात्रीने परीणमतांथकां, नीवर्ततांथकांने वीषे पाम्यो समकित तीहां कह्युं हा ! हा ! हुं तो गोसाळो ? (मंखलीपुत्र) समणघाती. अरीहंतनो अवनीत पोताना शीष्य, श्रावकने तेडीने कह्युं जे डाबे पगे जेवडी (दोरडी) बांधी सावरथी नगरीमां—राजपंथ चौवटा. सेरी, सर्व ठामे ताणी घसजो, मुखमांथुंकजो ने कहेजो जे गोसाळो मंखलीपुत्र श्रमणघातक, महा पापी. पाखंडी, छदमस्तथको मुवो. इम न करो तो तमने मारा सम छे, एम कहेतो काळगयो. पछे सीष्य, श्रावक लोकमां लाजतांथकां उपाश्रयना कमाड दइ सावरथी नगरी चीतरी थापना नीखेपो मांडी हळवे हळवे बोलता राडुं डाबे पगे बांधी ताणी कीधो. घस्यो, एम करीने सम मुकयो. एण सावरथी नगरी सावरथी चीतरी थापना करी ए बरोबर जाणी. तेम हींसाधरमी पण थापना जीन जेवी मानेछे.

१०. उपासगदशा छठे अध्ययने कुंडकोलीया श्रावकने गोसाळामती देवताये कह्यो " उठाणकर्म " (अणउद्यमे आण करवे) बळवीर्यनो कीधो कांइ नथी थातो थानार होय ते थाय. तीम हींसाधरमी पण कहेछे, जो क्रीया कर्ये मुक्ति नथी मळती. भवस्थीति पाकसे त्यारे उद्यमविना मुक्ति मळशे.

११. १५ मे सतके गोसाळानो मोटो श्रावक आयंपुकनामे रात्रे चीतवे छे. जे माहारो धर्माचार्य गोसाळो मंखलीपुत्र सर्व ज्ञानी, सर्व दर्शनी, सर्व पदार्थना देखणहार " तीय पडुप्प न्नमणागय सव्वनु सव्वदर्सि " तेहने काळे वांदसुं अने मस्न पुछसु. ए मुरखे अजीनने जीन करी मान्यो; तेम हींसाधरमी पण ज्ञान, दर्शन, चारीत्र, अतीशय वाणीवीना प्रतिमा अजीनने जीन करी माने छे. ए आदी घणा पाठ जोतां हींसाधरमी गोसाळाना फेडायतहीज जाणवा. गोसाळाने मते थापना माने छे.

---

४३. मुहपति सदाकाळ राखवा विषे.

वळी हींसाधर्मि दयाधर्मिने कहेछे जे तुमे मुहपति सदाकाळ केम राखो छो : गोतम स्वामीये तो विजय राजानी राणी (मृगाराणी) तेने मृगालोढीयो मोटो पुत्र छे. सेख चार पुत्र माहा सुंदराकार छे. ने मृगालोढीयो माहा दुर्गंध छे. भोंयरामांहे राखे छे. राणी वेस पालटी, गाडलीमां आहार भरी तेहने देवा जाय छे ते देखवा माटे गौतमस्वामी गया. राणीए वांद्या. पुछयुं जे केम पधार्या छो ? गौतम कहे तमारो पुत्र जोवा. त्यारे राणीए चार पुत्र सींणगार्या. गौतमने पगे लगाड्या. गौतम कहे भोंयरामां राख्यो छे ते देखवो छे राणीये वस्त्र पाटल्यां भोंयराने द्वारे गइ. तीहां महा दुर्गंध जाणी राणीए गौतमने कह्युं, स्वामी दुर्गंध घणी छे ते माटे मुख बांधो. तीवारे राणीनुं कहेण राखवा माटे " मुहपोतीयाये मुह बंधे " कह्युं. पण गौतमस्वामी तमारीपरे सदा मुहपति देता नहीं. ते उत्तरः जो गौतमस्वामीये भोंयरा आगळ राणीना कह्याथी मोढे मुहपति बांधी मानोछो, तो राणीथकीवात करी चार कुंवर तो देखवा नथी आव्यो. तारो पुत्र भोंयरामां राखे छे ते देखवा-माटे आव्योछुं. एटली वात सुं उघाडे मोढे करी ? मुहपति हती के नहीं ? तमारे लेखे तो उघाडे मोढे बोल्या ठर्या. मुहपति ते भुंयरा आगळ दीधी ते पहेलां मोढे हाथ पण दीधो नथी कह्यो. त्यारे उघाडे मोढे गौतम स्वामी बोल्या के कीम कीधो ते कहो ? देवाणुपीया ! साधुनो वेषज रजोहरणोने मुहपति छे, जीम ब्राह्मणने जनोइ होवे ते रीते मुहपति तो गौतमने छेज. पण भोंयराने द्वारे दुर्गंध जाणीने राणीना कहीण राखवा माटे नाके दुर्गंध न आवे तेम कर्युं. ए तो समताभावी माहा-पुरुष छे, पण एटलो भक्तिवंतनो वचन राख्यो. जीम रीखवदेवस्वामी लोच करतां इंद्रना कह्याथी सीखा राखी तीम. पण गौतम उघाडे मोढे बोलेज केम ?

वळी कोइ कहे वराळ वायु निकळे तेणे वायुकाइया जीव मरे तेहनी जतनाने काजे मुहपति साधु देवे छे तो वायुवराळ नाकेथी नथी नीकळतो ? नाकनो वायु केम नथी रोकता ? ते उत्तर. जेटलो रोकाय तेटलो रोकीये छीये. सुत्रमां मुहपति कही छे पण नकपति नथी कही. तीवारे हींसा धरमी कहे नाक पण मुखमर्यादामांही छे, तो पुर्णचंद्रमा सरखो मुख कह्यो तीवारे नाक भेळो आव्यो के नहीं ? तेवारे कहीये जे पुर्णचंद्रमुख गणीये तीवारे नेत्र पण मुखमर्यादामां आव्या ते पण ढांकवा. पण सुत्रमां मुहपति कहीछे ते मुख ढांकवा माटेज कही छे ते जाणजो.

---

४४. देवता प्रतीमा पुजे ते लोकीकखाते ते विषे.

सोहम्म कप्पवासी देवो ॥ सकस्सउमरीस्सेणं ॥ सामाणिम संगमउ ॥ बेइ सुरिंदपडीनिविठो ॥१॥ तिल्लोकं असम थंति ॥ पेहय तस्स चालणं काउं ॥ अवेज पासह हमं ॥ ममशरगं मठ जोगंच ॥२॥

ए बे गाथा आवसकनी निर्युक्तिनी छे. सक्रेंद्रनो सामानीक संगामो देवता अभव्य मीथ्यादृष्टी विमाननो धणी तेणे प्रतिमा पुजी कही. जो समकितखाते प्रतिमानुं पुजवुं होय तो मीथ्याती अभव्य कीम पुजे ? नमोथुणं कीम कहे ? अभव्येबहु पुजे तेणे प्रतिमा संसारहेते. नतु मोक्ष.

---

४५. श्रावक सुत्र न वांचे कहेछे ते विषे.

केटलाएक हींसाधरमी कहेछे जे, श्रावकने सुत्र वांचवा नहीं, ते उपर सुत्रना नामनी खोटी साक्षीओ देखाडे छे, तेहनो उत्तर. तुंगीयाना श्रावकने आळावे "लद्ठा" कह्या. पण "लद्सुत्रा" नथी कह्या. तेहना उत्तर. ज्ञाता अध्ययन पेहले तथा भगवती सतक अगीयारमे उदेसे अगीयारमे स्वप्नपाठकने "सुतथ विसारए" कह्या. ने "स्वप्नशास्त्रना लद्ठा" पण कह्या. माटे सुत्रनो नीखेद नथी कह्यो. तीम श्रावकने पण समवायंग तथा नंदीसुत्रमां, उपासगनी हुंडीमां "सूयपरीगाहा" कह्या. ने तुंगीया अधीकारे "लद्ठा" कह्या. स्वप्नपाठकने न्याये तथा श्रावकने पण "आगमे तीवीहे पन्नंते. तंजहा सुतागमे. अथागमे, तदुभयागमे" छे के नथी ते कहो ?

तथा श्री प्रस्नव्याकरणना बीजा संवरद्वारना पाठ देखाडे छे. " जे देवींद नरींद भासीयथं माहारीसीणं समयप्पादिनं " जे सत्यवचन भगवंते देवताने, मनुष्यने अर्थरुपे दीधुं छे ने मोटारुपी साधुने सुत्ररुपे दीधुं एहवो पक्ष ताणीने अर्थ करे छे पण ए तो सहीज पाठ छे. इहां थाप उथाप नथी. उव्वाइमां श्री माहावीरे उपदेश दीधो अर्थ मागधीभाषाये सुत्ररुपे दीधुं तीहां देवींद्र ने नरींद्र पण हता ने रुपी, मुनी, जती, पण हता सर्वने सुत्रार्थरुपे दीधुं देवींद्रने, मनुष्यने, माहारुपीने जुदुं कह्युं नथी. तथा देवींद्र नरींद्रने अर्थरुपे कह्युं. वळी उत्तराध्ययन तेरमे बारमी काव्ये कह्युं. महथ रुत्रा वयण प्पझवा गाहाणु गेया नरसघमझे " इहां मनुष्यने सुत्ररुपे दीधुं अने मोटारुपीने सुत्रपणे दीधुं ते पण सामान्य वचन छे. गणधर माहारुपीने अर्थरुपे दीधुं कह्युं. " अथं भासइ अरहाए " अनुजोगद्वारे साख तथा कोइ हठ वादी सुत्राक्षर प्रमाणेज अर्थ माने तेहने एम कहीये. एहीज सत्यने अधीकारे प्रस्नव्याकरणे सत्य वरणव्यो तीहां एम कह्युं " मणुय गणाणं चंचदणीजं अमरगणाणंच अचणीजं असुरगणाणंच पुयणीजं " ए पाठनो हठ ताणे तेहने लेखे ए सत्यवचन मनुष्यगणने वंदनीक पण देवता असुरने वंदनीक नहीं. अने देवताना गणने अर्चनीक पण मनुष्यने असुरने अर्चनीक नहीं. असुरने पुजनीक पण मनुष्य, देवताने पुजनीक नहीं. एतो सहीज वचन छे, तेम देवता, मनुष्यने अर्थरुपे ने साधुने सुत्ररुपे सत्य दीधुं ए सहीज वचन छे. ए शब्द उपर हठ न करवो. तथा श्रावक सीद्धांत वांचतां अनंत संसारी थाय ए पाठ क्या सुत्रनो छे? देसव्रती श्रावक निर्मळ बार व्रतधारी, प्रतिज्ञाधारी, ब्रह्मचारी अनेक गुण भंडार " धम्मीयाधम्माणु " आदी विरदनो धणी सुत्र वांचतां अनंत संसारी थाय तो अव्रती देवताइ " धम्मीयं सथं पोथरएणं वाएइ " कह्युं, ए देवता अनंत संसारी केम न थाय? तेथी ए " धम्मीएसथे " ते लोकीक

सीद्धांतने प्रवचन कह्यां. तथा उत्तराध्ययने एकवीसमे पालक श्रावकने निर्ग्रंथना प्रवचनमां कोवींद जाण कह्यो निर्ग्रंथना प्रवचन ते सीद्धांतहीज छे अनेरुं कांइ नथी. तथा ज्ञाता बारमे अध्ययने सुबुधी प्रधाने जीतशत्रु राजाने "संताणं तहीयाणं तच्चाणं सब्भुयाणं" जीनप्रणीत सीद्धांत कह्यो ए वीरद सीद्धांतनाज छे. तथा राजे मतिये संजम लीधो तीहां सीलवंता बहु सुया कही ते संजम तो ततकाळ लीधो छे घरमां तो सुत्र भण्यानी तमे ना कहोछो तो ए बहुसुया कीवारे थइ?

वळी कोइ कहे श्रावक सुत्र भणे ते आवसक सुत्र आश्री भणवो कह्यो छे तेहने एम कहीए जे आवसक उपर सुत्र भणवानी ना कही ते देखाडो. तथा आवसकमध्ये श्रावक "सुतागमे अथागमे" कहे छे ते सुत्र भण्यावीना सुं अतीचार आलोवे छे? गाम नास्ती कु तो सीम, तथा आवस्यक तो अनुजोगद्वारे "अतो अहोनिसेस" अकाळ वेळामां ने असज्झाइना दीवसमां पण करवो कह्यो एहने तो "अकालेकउ सज्झायं प्रमुख अतीचार नथी लागता ने जेहने अकाल असज्झाइ लागे छे ते सुत्र भणवा तमे निखेधोछो त्यारे "अकालेकउ सज्झाओ" प्रमुख चार अतीचार लागता केम कह्या? ते कहो. तथा उववाइ मध्ये कोणीक राजा सुभद्रा प्रमुख राणी अनेरा पण लोके ज्ञातामध्ये मेघकुमार भगवती मध्ये खंधक सन्यासी, जमाली प्रमुख रायपसेणीमध्ये रायप्रदेसी, चीत्तसारथी उपासगमध्ये आनंदादीक श्रावक उपदेशने अंते कह्यो जे "सद्दहामीणं भंते निगंथे पावयणे पतियामीणं रोएमीणं भंत्ते निगंथे पावयणं" जो प्रवचन सीद्धांत सांभळ्यां नहीं तो संभळाव्यां नहीं तो सर्दह्या प्रतिरोच्या सुं? ए लेखे देवींद्र नरींद्रने प्रवचनरुपे सत्य दीधुं छे छे के नहीं? नर, सुरने अर्थ रुपेज दीधुं ए हठ न करवो. वळी भगवती सतक नवमे उदेसे बत्रीशमे असोचाकेवलीने अधीकारे एम कह्यो छे जे.

असोचाणंभंते केवलीसवा १ केवलीसावगसवा २ केवलीसावीयाएवा ३ केवलीउवासगसवा ४ केवलीउवासीयासवा ५ तपखीयसवा ६ तपखीयसावगासवा ७ तपखीयउवासगसवा ८ तपखीयसावीयाएवा ९ तपखीयउवासियाएवा १०

अर्थः—अ. अणसांभळीने धर्मफळतुं फल वचन पुर्वकृत धर्मनी रागथी भगवंत केवळी जीन भगवंतनो ? केवळीजीने पुछ्या तेणे केवळीनुं वचन सांभळ्युं

ते केवळी श्रावक कहीए २ केवळीनी श्रावीका तेहनो ३ केवळीनी उपासनाना करनार तेहनो ४. केवळीनी उपासनानी करनारी तेहनो ५ केवळी पाक्षीक श्रावक ते स्वयंबुध कहीए तेहनो ६ ते स्वयंबुधीनो श्रावक तेहनो ७ ते स्वयंबुधीनी शेवा करतेयके ८ ते स्वयंबुधीनी श्रावीका तेहनो ९ ते स्वयंबुधीनी शेवा करती यकी स्वयंबुधे अन्यने कहीतां सांभळ्युं ते पुरवे १०

ए दसने समीपे केवळी परुप्यो धर्म सांभळी कोइ केवळज्ञान पामे ते सोचाकेवळी कहीये. ए दसने समीपे केवळी परुप्यो धर्म सांभळ्या वीना केवळज्ञान पामे ते असोचा केवळी कहीए. ए लेखे केवळी परुप्या. धर्मना कहीणहार ए दसे जाणवा केवळी "पन्नतंधम्मं" ते सीद्धांत के कांइ वीजुं होस्ये ? एटली सुत्रसाखे नर, सुर, मुनी, रुषी सर्व सुत्र, अर्थ भणे तेहने कांइ ना नथी कह्युं. वली कोइ नसीथनी साख कहे जे "भीक्षु अणउथी याणवा गारथीयाणवा वाएइवायं तंवासाइजइ" तेहने कहेवो जे ए पाठमां समुचे वांचणी नीखेधीछे. सुत्र भणाववुंज नथी नीखेध्युं ते अन्यातिर्थिने अन्यातिथिना ग्रहस्थ निखेध्या छे समणोपासक नथी निखेध्या. उपासगमां भगवंतने वांदवा जातां आणंदने गाहावइ कह्यो. ने व्रत लेइने घरे पाछो वळता "आणंदे समणोवासए" कह्यो. तीम नसीतमध्ये समणोपासक (श्रावक)ने वंचाववो वरज्यो नथी. तथा समवायंगमध्ये चोत्रीश अतिशयमां कह्युं. "भएवंचणं अधमागही भासाये धम्मपरीकहेइ" त्यां देवता, मनुष्य, रुषीने जुदोजुदो भांखत्र नथी कह्युं, एम घणी युक्तीओ छे.

४६. देव, गुरु, धर्म. ए त्रण तत्वनी ओळखाण विषे चोपाइ.

परम पुरुष परमेश्वर देव ॥ तेहतणी नीत कीजे सेव ॥ भवदुःख भंजन श्री अरीहंत ॥ राग द्वषनो कीधो अंत ॥ १ ॥ चोत्रीस अतीशे सोभीत काय ॥ त्री-भोवन जगनायक जीनराय ॥ पांत्रीस वाणी वचन रसाळ ॥ सीवसुख कारण दीन दयाळ ॥ २ ॥ सुरीनर कींनर वंदीत पाय ॥ जय जगदीश्वर त्रीभोवनराय ॥ सीद्धपुरुष अवीचळ सुख धणी ॥ सेवकरो भवीयण ते तणी ॥ ३ ॥ अष्ट करम दळ कीधां चुर ॥ चीदानद सुख लीधे भरपुर ॥ अनंत ज्ञान दर्शन आधार ॥ इंद्री देह रहीत निराकार ॥ ४ ॥ तेहने जन्म जरा नहीं रोग ॥ नहीं तस दारा नहीं तस भोग ॥ नहीं तस मोह नहीं तस मान ॥ नहीं तस माया नहीं अज्ञान ॥ ५ ॥ नहीं तस वेरी नहीं तस मीत्र ॥ ज्ञान सरुप जगनाथ पवित्र ॥ ते प्रभु नहीं सरजे

संहरे ॥ राग द्वेष ते चीत नवी धरे ॥ ६ ॥ ते प्रभु नवी पामे अवतार ॥ आद्य अंत नहीं तेनो पार ॥ ते प्रभु लीळा चीत नवी धरे ॥ ते प्रभु हांस क्रीडा नवी करे ॥ ७ ॥ ते प्रभु नवी नाचे नवी गाय ॥ ते प्रभु भोजन कांइ न खाय ॥ ते प्रभु पुष्प पुजा सुं करे ॥ ते प्रभु चक्र, गदा नवी धरे ॥ ८ ॥ ते प्रभु त्रीशुळ धरे नहीं पाण ॥ साचा जगदीश्वर ते जाण ॥ वेद पुराण सीद्धांत विचार ॥ एवा जगदीश्वर नहीं संसार ॥ ९ ॥ ए जगदीश्वर माने जेह ॥ निराबाध सुख पामे तेह ॥ एह तजी बीजो कोण ध्याय ॥ अमरत छांडी विष कोण खाय ॥ १० ॥ रतनचींतामणी नाखी करी ॥ कोण ग्रहे कर काच ठीकरी ॥ पोळी मुठी दीसे असार ॥ पथ्थर वांदे नहीं भव पार ॥ ११ ॥ अथवा मोहग्रंथीळ नवी लहे ॥ देखी पथ्थर सोवन कहे ॥ नेत्र रोग पीडीत होय जेह ॥ पीत्त स्वेत नर भांखे तेह ॥ १२ ॥ सतगुरु मळे जो पुन्य संजोग ॥ तो मिथ्यामत जाये रोग ॥ सतगुरु तारे ने पोते तरे ॥ उपकार नावतणी परे करे ॥ १३ ॥ क्रोध, मान, माया, परी-हरे ॥ त्रस, थावरनी रक्षा करे ॥ सत्यवचन मुखथी ओचरे ॥ कुड कपट ते चीत नवी धरे ॥ १४ ॥ अणदीधुं ते गुरु नवी ग्रहे ॥ दयाधरम भवीयणने कहे ॥ ना-रीतणी संगत परीहरे ॥ ब्रह्मचर्य चोखुं आदरे ॥ १५ ॥ नव विध वाड विसुद्ध व्रत धरे ॥ ए गुरु तारे ने पोते तरे ॥ काम भोग लालच परीहरे ॥ सीळा गरथ गुण ते आदरे ॥ १६ ॥ ब्रह्मचर्य पाखे जो गुरु होय ॥ तो गुरु थाये जग सहु कोय ॥ ग्रहस्थ गुरु ग्रहीने सुं करे ॥ लोहसंग पथ्थर केम तरे ॥ १७ ॥ तारे श्री गुरु माहाव्रत धार ॥ पंडीत जन एम करे विचार ॥ कनक रजत धन ममता तजे ॥ लोभ छांडीने सीद्धने भजे ॥ १८ ॥ एणीपरे पंच माहाव्रत धरे ॥ चार कखाय मुनीवर परीहरे ॥ सास्त्रतणो नीत्य दीये उपदेश ॥ सतगुरु टाळे सकळ क्लेस ॥ १९ ॥ राग द्वेषमोहटाळी करी ॥ एवा मुनीवर लहे सीवपुरी ॥ तरवा जो वंच्छो संसार ॥ तो आराधो गुरु व्रतधार ॥ २० ॥ दयाधर्म उपदेसे सार ॥ जीव सहुने करे उपकार ॥ दयाधर्मजग मोटो सही ॥ जेथी दुःख कोइ पामे नहीं ॥ २१ ॥ कैजन दया दया मुख भणे ॥ धर्म कार्य त्रस थावर हणे ॥ बोले साचु पण नवी करे ॥ कहो ते भवसागर केम तरे ॥ २२ ॥ दया वीना जो थाये धरम ॥ तो हींसाये नवी लागे करम ॥ जो तपस्या घेर बेठां थाय ॥ तो घर छोडी वन कोण जाय ॥ २३ ॥ शास्त्रतणो ते अनुवय सही ॥ दया वीना धर्म थाये नहीं ॥ ज्यां हींसा त्यां पातीक होय ॥ पंडीत शास्त्र विचारी जोय ॥ २४ ॥ प्रथवी, पाणी,

अग्नी, वाय ॥ वनस्पति छठी तसकाय ॥ बे, त्री, चोरंद्री, पंचेद्री, सार ॥ त्रस थावर आगम विचार ॥ २५ ॥ जैन, शीव पण एह, जीव कहे ॥ एहने राखे शीवसुख लहे ॥ एह वचन नवी माने जेह ॥ भव बंधन नवी छुटे तेह ॥ २६ ॥ हरी, हर, ब्रह्मा बुध, जीनराय ॥ तेहतणा जे शेवे पाय ॥ ते पण धर्म करे तो तरे ॥ पाप करे तो भवमां फरे ॥ २७ ॥ देव नीरंजन गुरु व्रतधार ॥ धरम दयामय शीव सुखकार ॥ ए त्रण तत्व समकित कहेवाय ॥ एह आराध्ये शीवसुख थाय ॥ २८ ॥ भवीयण पामी मनुष्य अवतार ॥ ए समकित आराधो सार ॥ रुपी काहतणे पसाय ॥ राम मुनी एम कहे सझाय ॥ २९ ॥

प्रतीमा पुजवा विषे.

मनहर छंद.

लाकडांनी असीलेइ, सुरो सेनामांही जइ,
कहो एते शुरो शेना, केटली सहारशे;
चीतारे चीतरी सर्स, पुतलीओ सदनमां,
कहो एते सुंदरी, अर्थ कशो सारशे;
कंदोइनी कारीगरी, खांडनी बनावी गाडी,
कहो एते बोज पंथ, केटलो बीदारशे;
तेम करी पाशाणनी, प्रतिमाने पुजे जन,
अम्रचंद कहे एतो, केम करी तारशे.
मांदाने मोकल्यो वळी, सेना मांही सज करी,
कहोएतो मांदो, अरी मारशे के मरशे,
सीलतणुं नाव करी, तरवाने बेठोनर;
कहो एते नाव, एने तारशे के तरशे,
चोरतणो संग करी, धर्म हरवाने चाल्यो,
कहो एने धर्मए, हरावशे के हरशे.

इंद्रवीजय छंद.

सीरजटा धरवे सूख थायज तो वड व्रक्ष जटाज धरेछे,
वानी भूस्यार्थी मळे कदी मोक्षज तो खरा कामज एज करे छे;
सिर मुंडयाथकी सांती मळे कदी गाडरडां सिर मुंडी फरेछे,
डाढी धरे दुःख दुर रहे कदी डाढी सही बकरांज मरेछे.
ठंडक ताप खमेथी मटे अघ तोतरु ठंडक ताप सहेछे,
अंबुज स्नान थकी अघ जायज तो मछ अंबुज मांहीज रहेछे;
जागण नीशी कर्याथी मळे शीव तो घुड उंघज त्याग करेछे,
आसना सर उंघेथी मळे शीव तो वड वांदरी एम करेछे.
तीळक ताणे त्रीवीधी टळे कदी तोज मुनीव्रत केम धरेछे,
आंग मांही बळवाथी दहे अघ तो तन पतंग त्याग करेछे;
सारुं यशे जन जेनीज कामज जे सत नीमीत चाह चहेछे,
अमरचंद कहे नकी एकज दया थकी अघ दूर रहेछे.
बहु बन्या एक अवनीमां तेने पंथ प्रगटा नवीन हजारो.
कैक तो स्वादार्थे धर्म ग्रहे अने सिरापुरीथी कहे पंथ सारो;
ताळ कुटी दीन रात गुमावे ने खावा पीवा थकी लागेज प्यारो,
साचुं कहे सूर इंन्दु सूणोजन म्हेरविना उगरवानो न आरो.

निति वचन लीख्यते.

१ कृपणने दान देवुं दूकर.
२ कायरने व्रत पचखाण पाळवां दूकर.
३ मोटाने क्षमा करवी दुकर.
४ योवन अवस्थामां शियळ पाळवुं दूकर,
५ आठ कर्ममां मोहनी कर्म जीतवुं दुकर.
६ पांच इंद्रीमां जीभ्या इंद्री जीतवी दुकर.
७ चार कषायमां लोभ कषाय जीतवो दुकर.
८ त्रण योगमां मनयोग जीतवो दुकर.

---

१ श्री वितरागनी वाणी सांभळतां पाप नासे.
२ क्षमा करतां कलेश नासे.
३ धर्मनो विचार उद्यम करतां दाळींद्र नासे.
४ जागतो रहे तो चोर नासे.

१ समकीतनो भाजन जीव.
२ जीवनो भाजन शरीर.
३ शरीरनो भाजन लोक.
४ लोकनो भाजन अलोक.
५ अलोकनो भाजन केवळ ज्ञान.

१ धर्मनुं जाणपणुं होय तो दया पाळे.
२ ज्ञाननुं वळ होय तो थोडुं बोले.
३ बुद्धीवंत होय तो सभा जीते.
४ साधुनी संगत होय तो संतोष पामे.
५ वैराग होयतो इंद्री दमे.
६ सूत्रसिद्धांत सांभळ्यां होयतो धिरजपणुं पामे.
७ प्राणी जीवनी हिंसा न करे तो निर्भयपणुं पामे.
८ मोह मच्छर छांडे तो देवनी पदवी पामे.
९ चार तिर्थने साता उपजावे तो साता पामे.
१० न्याय मार्गे चाले तो शोभा पामे.
११ दया शीयळ पाळे तो मोक्षना अनंता सुखने पामे.

---

१ कलेश घटाडयो घटे ने वधार्यो वधे.
२ हाश्य घटाडी घटे ने वधारी वधे.
३ आहार घटाडयो घटे ने वधार्यो वधे.
४ मैथुन घटाडयुं घटे ने वधार्युं वधे.
५ खाज घटाडी घटे ने वधारी वधे.
६ शोक घटाडयो घटे ने वधार्यो वधे.

७ चिंता घटाडी घटे ने वधारी वधे.
८ भय घटाड्यो घटे ने वधार्यो वधे.
९ नींद्रा घटाडी घटे ने वधारी वधे.
१० त्रष्णा घटाडी घटे ने वधारी वधे.

---

१ दया पाळे तो दानेश्वरी.
२ धर्म विचार जाणे तो ज्ञानी.
३ पापथी बीए तो पंडित.
४ कुळमां खापण न लगाडे तो चतुर.
५ पांच इंद्री दमे तो सूरो.
६ सत्य वचन बोले तो सिंह समान.
७ धर्म वधारे तो धनेश्वरी.
८ निर्धन शुं नेह करे तो अजर अमर.

अथ मिथ्यातको वर्णन.

मनहर छंद.

मिथ्याति कुमति कोस, हींसातणी अती होंस;
अदत्त मैथुन मोष, दोष भरपुरजी;
मद मगरुर अंध, करे पापका प्रबंध;
जुठ वचाईको धंध, करवेमां सुरजी;
व्रत पचखाण हीण, विषय प्रमाद कीन;
नाचत खुंदत कर्म, करत करुरजी;
हींसामें धरम वाल, करत अधम ख्याल;
खोडीदास कहत, मिथ्याति ऐसा भुरजी. १
झुक्यो राग द्वेष मुंढ, गहत धरम रुंढ;
पापमें अरुंढ अहो-निश जिव घातकी;
धुप, दीप, पुष्प, फळ, जळमें कीलोल भये;
गावत धवल ते, मिथ्याति महा पातकी;

१ श्री वितरागनी वाणी सांभळतां पाप नासे.
२ क्षमा करतां कलेश नासे.
३ धर्मनो विचार उद्यम करतां दाळीद्र नासे.
४ जागतो रहे तो चोर नासे.

१ समकीतनो भाजन जीव.
२ जीवनो भाजन शरीर.
३ शरीरनो भाजन लोक.
४ लोकनो भाजन अलोक.
५ अलोकनो भाजन केवळ ज्ञान.

१ धर्मनुं जाणपणुं होय तो दया पाळे.
२ ज्ञाननुं बळ होय तो थोडुं बोले.
३ बुद्धीवंत होय तो सभा जीते.
४ साधुनी संगत होय तो संतोष पामे.
५ वैराग होयतो इंद्री दमे.
६ सूत्रसिद्धांत सांभळ्यां होयतो थिरजपणुं पामे.
७ प्राणी जीवनी हिंसा न करे तो निर्भयपणुं पामे.
८ मोह मच्छर छांडे तो देवनी पदवी पामे.
९ चार तिर्थने साता उपजावे तो साता पामे.
१० न्याय मार्गे चाले तो शोभा पामे.
११ दया शीयळ पाळे तो मोक्षना अनंता सुखने पामे.

---

१ कलेश घटाडयो घटे ने वधार्यो वधे.
२ हाश्य घटाडी घटे ने वधारी वधे.
३ आहार घटाडयो घटे ने वधार्यो वधे.
४ मैथुन घटाडयुं घटे ने वधार्युं वधे.
५ खाज घटाडी घटे ने वधारी वधे.
६ शोक घटाडयो घटे ने वधार्यो वधे,

७ चिंता घटाडी घटे ने वधारी वधे.
८ भय घटाड्यो घटे ने वधार्यो वधे.
९ नींद्रा घटाडी घटे ने वधारी वधे.
१० त्रष्णा घटाडी घटे ने वधारी वधे.

---

१ दया पाळे तो दानेश्वरी.
२ धर्म विचार जाणे तो ज्ञानी.
३ पापथी बीए तो पंडित.
४ कुळमां खापण न लगाडे तो चतुर.
५ पांच इंद्री दमे तो सुरो.
६ सत्य वचन बोले तो सिंह समान.
७ धर्म वधारे तो धनेश्वरी.
८ निर्धन शुं नेह करे तो अजर अमर.

अथ मिथ्यातको वर्णन.

मनहर छंद.

मिथ्याति कुमाति कोस, हींसातणी अती होंस;
अदत्त मैथुन मोष, दोष भरपुरजी;
मद मगरुर अंध, करे पापका प्रबंध;
जुठ वचाहीको धंध, करवेमां सुरजी;
व्रत पचखाण हीण, विषय प्रमाद लीन;
नाचत खुंदत कर्म, करत करुरजी;
हींसामें धरम वाल, करत अधम ख्याल;
खोडीदास कहत, मिथ्याति ऐसा क्रुरजी. १
झुक्यो राग द्वेष मुंढ, गहत धरम रुंढ;
पापमें अरुंढ अहो–निश जिव घातकी;
धुप, दीप, पुष्प, फळ, जळमें कीलोल भये;
गावत धवल ते, मिथ्याति महा पातकी;

पुजे पथ्थरका देव, करे कुगुरुकी सेव;
हींसामे धरम गम, नाहीं दीन रातकी,
मोहमें छकेल छेल, करत मंडप खेल;
खोडीदास मेल मेल, सोवत मिथ्यातकी. २

समकितसार भाग २ जो.

" श्रीजैनधर्मजयति "

मंगळाचरण.

शार्दुलविक्रिडितवृत्तम्.

श्रीआदी जिन गुणनीधि थिरता तीर्थादि धुरेक्रता,
इत्यादी वृद्धमान नाण विमळा क्षांती धर्मो वाग्रता;
दाता सांत सुधाज सूमतिकळा त्रीरत्न वंदु मुदा,
भक्तीभाव जनो सदा चितरमे वीघ्नो न आवे कदा. १

मनहर छंद

जयजय जगपति समरुं हुं अंतरथी अकळ अगमगति नथी जन[1]मरना,
सकळ करसवार परिब्रह्म निराकार चिदानंद परावार भव भय हरना;
लोकालोक चरी सब अजाण न रहे कब द्वी गुणकी[2]एह ठब लय गत चरना[3],
एसाहे अगमनाथ त्रिहु तन[4]विरलात जीह वासे तुज ख्यात करीलीयुं चरना. २

दुमीला छंद.

चरणांबुज[5]आपतणे नीज शेवक नामि सदा शिश काज सरे,
तुम नाम तणी गुण कीर्त तणी शुद्ध वोध तणी चित आश धरे;
समकीत तणो गुण सार चही[6]भुज भाग थुणे जडताज हरे,
धन रे धन रे त्रिहुलोक धणी तुज ज्ञान सुणी हठवादि डरे. ३
जीनकार[7]कही खट काय हणे न गणे परपीर भवो रटवा,
जिव घात करी प्रतिमाकु धरी परपंच वरी धनने झटवा;

---

१ जनम. २ ज्ञान, दरसन. ३ क्षय थयो गतीमां चालवानो. ४ त्रण शरीर. ५ कमळ, ६ लइ. ७ आज्ञा.

गुणहीण समोः[१]भरपुर तमो[२]नहि खंति[३]स्वभाव तपा:कटवा,
त्रस थावर देख न मेर धरे मुसको[४]पर जुं[५]मिनकी लटवा[६].

मतगयंद छंद.

श्वानपरे मुखसुं प्रतिमा मति ग्रंथ भसि भसि मुग्ध फसावे,
देव कुगरुकि भक्ति तणांफळ मोक्षरु लक्षमि भोग वसावे;
संत्रति [७]नाम लजावत पारधी दुरती पुजन पाप रचावे,
तस सभावि भया मृग शेवक दौरही दौरत मांहि धसावे.

मनहर छंद.

समकीत सल्योद्वार रच्यो ए प्रपंचगार हिंसातणी दृष्टी लार परीक्षाव्यो आपकुं,
ठामठाम निंदायुक्त शब्द धरी बुधलुप्त[८] मानत हे अहं मुक्त तेतो महापातकुं;
एसो नाही ज्ञानभेद जेथी लहे सवखेद आणादया तणो छेद कीयो मीथ्या दातकुं,
वीज्ञ सुणो मेरी लया [९]चाहो जो आणाने दया परीहरो सल्योद्वार पंथ महाघातकुं. ६

दयाधर्म स्थापनार विषे,

मनहर छंद.

त्रित्या जेने रागद्वेश मोह नै अंतरे लेश केवळ नाणने दर्स लेइ वदे ज्ञानकुं,
स्याद वाद निरापक्ष संग्रही आतम लक्ष खटकाय जंतरक्ष दीए अभेदानकुं;[१०]
आप दया करी पर दयासें उमंग धरी निरवद्य वदेचरी सुख सब जानकुं,[११]
एसा ए अगमनाथ आणाकुही दया साथ रुदे धरो एही वात हणो मत प्राणकुं. ७

दयाधर्मीओने सुचना.

मनहर छंद.

खटकाय जंतको उगारनार भविबंधु वांचि समकितसार दया करो सबकी,
दया सुख सिंधु[१२] सही भवमें भमत नहीं शीवगत गहे[१३] वही फेरी मटे कबकी;
विगुत्यो[१४]अनंतकाळ हिंसा मिथ्यातणी ढाळ खोलो देव द्रिग[१५]अब जागो जागो झबकी,
दयाहीको धर्मद्वार खोल्यो जीनज्ञान लार ग्रहो समकीत सार तजो चिंता जगकी. ८

---

१ ढगले. २ तमोगुण. ३ क्षमा. ४ ऊंदर. ५ बिल्ली. ६ जपट. ७ समभाव. ८ अलोप. ९ वाणी. १० वाणी. ११ प्राणी. १२ सागर. १३ लीए. १४ गमाव्यो. १५ नेत्र.

प्रथम आ ग्रंथना प्रारंभमां परमेश्वर जगत त्राता, भक्तजनोने ध्यान समरणा वलंवन* भुत एवा भजनानंदिना भजनथी भव दवाग्निनी विकट झाळथी मुक्त थइ जवाने माटे जीनेश्वर देवना ध्यान समरणरुप पुष्कळ संव्रत मेघनी धारा, ए सर्व भव जीवोना अंतःकरणने पर्म शितळ करनार छे. ते परमेश्वर केवा छे ? अकळ एटले कोइना कळवामां आवे नहीं, ने अगम्य एटले ज्ञानविना जेने ओळखवानो सुगमता पडे नहीं. एवा जे अविनाशी नाथ, जेना नाश पामेला छे जन्म मर्ण, अने सर्व कर्मरुप वादळ विखराइ जवाथी परिब्रह्म निरावरण एटले आवरण रहित प्रगट थयेलो छे ज्ञानरुपी सुर्य जेने ते ज्ञानरुपी सुर्यना प्रकाशथी लोकालोकनुं स्वरुप अवलोकन करी पर्मपद पाम्या छे. वळी फरीने आ जग्तमां जेने देह धरवापणुं रहयुं नथी, एवा विश्वानंदी पर्म देवना सकळ गुणनी स्तवना करीने आ "समकितसार भाग बीजो" दया धर्मनी वृद्धि थवा अने हिंसा बुद्धिथी मुक्त थइ जवा माटे मारा स्वआत्मधर्मी विवेकी वीरनरोनी शुद्ध श्रद्धानी पुष्टिनी खातर अर्पण करिए छीए, तो सर्व जैनी जीवदया प्रतिपाळ साहेबो वांचीने तेनो लक्ष लइ दया धर्मनी वृद्धि करवामां कांइपण खामी न राखतां आत्मसुधारो करी अहीं[1] कंचुकी[2]ने न्याये दुर थइ जवुं. एज ज्ञान धर्मीओनो मुख्य विवेक छे.

आत्मबोध परिक्षा.

अरे धर्मभिलापि वीरनरो ! प्रथम आपणा शुद्ध अंतःकरण सहित प्रवर्ती संबंध मुकीने निवृतिनी साथे एक चित्तथी निर्वद्य[3] वाणी गुरुमुखथी श्रवण करीने उपयोग करोजे आ आत्मा आजगतने छांदे केम चाले छे ? ते विर्ध ऐव[4] चक्षु[5] उघाडीने जोशो के तरत जणाइ आवशे, जे अनादि काळथी आजपर्यंत सुधी रागद्वेषादिक ममतारुप फांसीना वंधनमां फसाइ जइने महा विटंबना पाम्योछे. वळी पोताना तत्वरमणिक स्वरुपने भुलीजइने पुद्गळीक भावमां रमणता पामी, चौदराज लोकमां सूक्ष्म अने वादरपणे चारे गतिओना स्थानको नवनव वेषे जन्ममर्णे करीने फरसी मुक्याछे. वळी त्यां अनंता दुःख रह्यां. तेनो मुळ हेतु एमज जणाइ आवेछे के वितराग भाषित दयाधर्म तथा समकितज्ञान सहित कर्णीथी उलटी रीते एटले तेथी विरुद्ध एवो जे मिथ्यात्वधर्म अज्ञान बुद्धिथी आचरण करी संसार भ्रमण कर्युं

* आधार. १ सर्प. २ कांचळी. ३ प्राण दुवाय नही तेवी. ४ ज्ञान. ५ आंख.

छे. वळी ज्यांसुधी ज्ञान दर्शनना उपयोगमां स्थिरताभाव नहीं पामे, त्यांसुधी चार-गतिना बंधनथी मुक्त थइ जवुं मुश्केलछे. माटे अहो धर्मात्मा ! आ जुलमी जगतने विषे मनुष्य जन्म पामीने पोताना अमुल्य आत्मानुं सार्थक करवाने माटे प्रथम महद् विनयादिक गुणोने अनुसरीने ज्ञान सागर शुद्ध धर्माचार्यना चितने विनयादिक गुणोथी संतोष पमाडी तेमना मुखथी वितरागभाषित निर्वेद्यज्ञान श्रवण करीने यथाशक्ति ज्ञान अभ्यास करवो. वळी तेज ज्ञान शक्तिथी सत्यासत्य पदार्थनो निश्चय करवो. एम प्रतिदीन ज्ञानवृद्धिना कारणथी समकितनी पुष्टि थतांज स्वपरनी वहेंचण करवाने शक्तिवान थशो. वळी अनादिकाळथी स्वभावने छांडी परभावमां अहंपद मानेलुंछे, तेनुं निराकरण थशे. ते नीचे मुजब.

दोहरो.

तजविभाव होजेमगन, शुद्धातमपदमाह;
यकमोक्षमारगइह, अवरदुसरोनाह.

भावार्थ—अरे विज्ञपति ! वीभाव एटले जगत ज्ञाळमां पुद्गळ धर्मनी वस्तु तेने नाशवंत जाणीने तजीदे. अने तारा शुद्धात्मारुप रत्नत्रय अर्थात, ज्ञान, दर्शन अने चारित्रमां सदा मग्नरहे. मतलब के रत्नत्रय सिवाय बीजुं कोइ मोक्षमार्ग मेळववानुं साधन नथी.

दोहरो.

जेपूर्वकृत्योदये, रुचिशुंभुजेनाह;
मगनरहेआठुंप्रेहर, शुद्धातमपदमाह.

भावार्थ—अरे सुज्ञ ! ज्यारे पोतानी शांत दशामां आवीने अनुभव गुणना आधारथी आत्मिक उपयोगमां स्थिर थवानो वखत आवी मळ्यो, ते वखते जेजे शुभाशुभ कर्मो प्रगटे, तेते नीर्मोहपणे भोगवे. परंतु ते पुद्गळिकाभावमां रुचि न उपजे अने आठ पहोर शुद्ध आत्मउपयोगमांज वर्ते तेज धर्मपामवानुं प्रमाण छे. मतलबके आत्मा अनंतज्ञाननो भंडारछे. सदा परमानंद स्वरुपी, आप कर्त्ता अने आप भुक्ता छे, अने आपज पोतानी शक्तिए मोक्षपद पामवा सामर्थ्यवान छे. पण पोताना शुद्ध उपयोगनी शक्तिसिवाय कोइ अन्यपुरुष मोक्ष आपवा सामर्थ्य छेज नहीं तेना दृष्टांतमां नीचे लखेलो. दोहरो.

दोहरो,

ज्युंरत्नरयणादिकघर, महिवीनऔरनकोय;
त्युंसिवसुखरयणेभरी, तुजआतमामनमोय.

भावार्थ—जेम सर्व जातना रत्नने उपजवानुं घर एटले ठेकाणुं मही एटले पृथ्वी सिवाय वीजुं छेज नहीं, तेमज शीव एटले मोक्ष रुपी जे रत्न ते सर्व तारा ज आतमामां भरेलांछे. पण अरे वेव्रक[1] विर ! ते रत्नोनो भुक्ता तारा सिवाय बीजो कोइ दृष्टीमां आवतो नथी.

दोहरो,

ज्युंअंकुरेमहिभरी, जलविननहिप्रगटाय;
त्युंतुजगुणअंकुरसवे प्रवचनविनसवछाय.

भावार्थ—जेम महि एटले पृथ्वीमां सर्व जातना तृणाना अंकुरा भरेलाज होय छे, पण ग्रिष्मरुतुमां प्रवळ तापनी आकृतिथकी संताप पामीने वहारथी सुकाइने जमीनमां छुपी जायछे. तेमज अरे शुद्धआतम ! मोक्ष सुखना अंकुरा जे शुद्ध ज्ञानादिक ते सर्व तारा अमुल्य आत्मानी अंदरज भरेलाछे. पण आ जुलमी जगत झाळमां भयानक पाप कर्मरुप तापनो संताप घणो लागवाथी छुपी रहेला छे. तेना उपर प्रवचन कहेतां पंचमज्ञानीना ज्ञानरुप वर्षादनी झपट लागवाथी आपेज प्रगट लागवाथी आपेज प्रगट थशे. द्रष्टांत जेम अषाडमासमां वर्षादनी झपट लागवाथी तृणना अंकुरा आपेज प्रगट थाय, तेमज आत्मगुण पण प्रगटे.

दोहरो.

ज्युंसारंगलखेनहीं, भरीसुगंधनिजेदेह;
त्युंतुंनिजगुणनहींलखे, शुक्लध्यानवीनतेह.

भावार्थ—जेम सारंग एटले मृगलो, तेनी देहमां नाभिस्थळे कस्तुरी पाकेछे, ते कस्तुरीनी वाश तेने आवेछे, त्यारे पोतानी अजाणताने आधिनथइ अन्य स्थाने ढुंढतो फरेछे जे आवी अभिनव एटले नवीन तरेहनी सुगंधनी लेहेरो कइ तरफथी आवे छे; परंतु ते अज्ञानतानो स्वभाव छे. तेमज अहो जडमति आश्रवार्थीओ !

---

१ डहापणदार.

मोक्षरुपी सुगंधतो आत्मामांहेज भरेलो छे. पण सुकळ एटले शुद्धज्ञानथी उज्वळ ध्यान आव्या सिवाय ते वस्तु देखवामां आवती नथी अने पोताना मतमां अंध थइने महा खटकाय[1] मर्दन[2]नो धर्म चलावी पहाडे पहाडे ने डुंगरे डुंगरे भटकीने त्यां अनेक आरंभना ओघवाळीने एम मानोछो जे (अर्हंमुक्त धर्म) ए केटली मुर्खाइ छे ! ! अररर ! कांइ विचारज करता नथी ! तो आगमन काळे तमारा शा हाल थशे ! पण अरे ! एने माटे तो ज्ञानी पुरुषोनेज फिकर थाय छे.

दोहरो.

माखणघृतवतजाणीए, विमलअग्निसंजोग;
त्युंद्वादसाविधतापता, होयआत्मअमोग.

भावार्थ—जेम माखण छे ते तदन घृत छे, पण तेने ज्यारे अग्निना तापउपर मुकीए त्यारेज विमळ एटले निर्मळ घृत थाय, तेमज अरे भोळानरो ! आत्मा छे, तेज माखणना पिंडरुप छे. पण बार भेदे द्रव्यभाव तपरुप अग्निना तापउपर मुकायतो कर्मरुप मेल वळीने शुद्ध आत्मारुप घृत थाय. अनेकःप्रकारनी मिथ्यात्व बुद्धिथी अनंत प्राणीने परिताप करी आत्मकल्याणनो लाभ लेवा धारे, ते रुद्रें खरडेलुं लुगडुं रुद्रमां धोवाजेवुं छे.

अरे ज्ञानार्थी बंधुओ ! ओघसंज्ञामां गुंचवाइने असंज्ञी विकलेंद्री समान मिथ्यात बुद्धिथी पुष्ट थएला जनोने कहेवानुं एटलुंज के निरापक्ष अने निर्मळ सुत्र सिद्धांतो वांचतां छतां भव लत्तानी[3] वृद्धि करवा माटे खटकाय मर्दन करीने अज्ञान स्वभावथी मोक्ष लेवाने इच्छो छो, ते कया शास्त्रनो न्याय छे ? अरे विचार तो करो ! आ उत्तम नरभव आर्यकुळ क्षेत्र पामीने हारीजवुं ए फरी कयां मळवानुं छे ? परंतु आ आर्य मनुष्य जन्ममां आववानी धर्म साधन करवा माटे समक्ति देव देवेंद्रो पण वंच्छा करे छे. तो कहेवानुं ए जे एवो आर्य मनुष्य जन्म सर्वोपरी छे. ते मनुष्यजन्मनो लाभ तमोने मळ्याछतां न मळ्याजेवो गणाय छे. मतलब के अमुल्य मनुष्य भवमां आवीने कुळाचारनी शरमे शरमे या नात जातनी शरमे शरमे खोटा हिंसामार्गने खरो ने खरो दयामार्ग छे तेने खोटो कहोछो ते कांइ थोडी दिलगीरी!!! वळी केटलाक व्हाला अज्ञान साहेबो समजता छतां पण हठवादथी हिंसाधर्म पकडी राखे छे अने आवो रत्न जेवो मनुष्य जन्म तेने कांकराना भावमां रोळी नाखे छे,

---

१ प्रथमव्यादी छकाय. २ हणवानो. ३ ...ी.

ए तो केवळ मुर्खाइ समजवी. अने परभवे अत्यारना करेला आरंभनी स्थापनानो बदलो भोगववानो वखत ज्यारे आवी मळशे त्यारे नातजात, भाइ, बाप ने पाषाणादिकनी मुर्त्तीओ विगेरे आडी पडीने सहाय नही करे एतो अवश्य छे. परंतु अज्ञानतानेविषे जीवतरनी वांच्छना करनार अनाथ प्राणीओना प्राणने संताप उपजावीने मोटा कर्मनो संग्रह करेलो छे, तेना लाभमां अधोगतीनी राजधानीना अमलदारो तो पापी प्राणीओनी खातरी बरदाश करवामां घट नहीं राखे, ए खातरीपुर्वक समजवा लायक छे. मतलब के जैन शास्त्रमां सर्वज्ञ पुरूषोए भव्य प्राणीओने धर्म उपदेश्यो छे, ते वखते शिष्ये प्रश्न कर्यु जे स्वामि! केटली रीतथी नर्कनुं आयुष्य अज्ञानीओ वांधे छे ? तेविषे ठाणायंग सूत्रना चोथा ठाणानो मुळ पाठ.

चउहिंठाणेहिंजिवानिरयाउपयंपकरंतिमहाआरंभीयाए
महापरीगहियाएकूणीमहारेणंपंचेंदियवहेणं ॥

भावार्थ—चारे प्रकारे जीव नार्कीनुं आयुष्य बांधे छे. १ जुलम छकायनो आरंभ करे ते. २ घणो परिग्रह मेळवनार. ३ कुणामांसनो भोगवनार ने ४ पंचेंद्रि प्राणीनी हिंसा करनार. ए चार प्रकार नर्कनी स्थिती बंधावनार छे. एवा पाठ जाणता छतां अज्ञानी जनोनो विचार मजकुर कारणोथी पाछो हठतो नथी. पण एम समजवुं जे " यतःकडाणकमाणनमोखअथी " मतलब जे बांधेला कर्मो भोगव्याविना बंधनथी मुकाय नहीं. माटे आश्रवमति मित्रोने कहेवानुं एटलुंज के तमो नात जात अने मत झंगनी शरम न राखतां निरपक्षपणे विचार करो जे आ ग्रंथोमां कार्मीक[1] बुद्धिथी हिंसा पुष्टि करेली छे अने तेमां कल्पित देवोनी शेवा भक्ति या पुजा श्लाघा सारंभी सावद्य खट मर्दन करवामां मोटां लाभनां लाकडां भरावीने अज्ञाननी ढाळउपर चडावी दीधा छे. माटे अरे पामर प्राणीओ ! ते पीळां वस्त्र धरनार वेषधारीओनां वचन रुप प्रहारोथी न हणातां तेओनी शरमनो टाळो करी पोताना अमुल्य आत्मानी दयानी खातर, आ नीचे लखेली वातो या पदार्थो उपर खुब ध्यान आपी खोटानो त्याग करी सत्यनुं ग्रहण करो ने खराने खरो अने खोटाने खोटो जाणो. तेनी मतलब ए के जेथी आत्मा पाछो दुःखरुपी समुद्रमां घसडाइ न जाय, एम सदाकाळ उत्साह राखो, अने आ जगतमां धर्मनुं अवलोकन करवामाटे मुख्य त्रण तत्व छे

१ खोटी.

तेने जाणीने यथायोग्य ग्रहण करो. ते तत्वनां नाम. " हेय, गेय अने उपादेय " ए त्रण तत्वनीमांहे (हेय) एटले आ जगतमां जेटली असत्य अने नाशवंत वस्तु छे तेने छांडवी. (गेय) एटले आ जगतमां सर्व वस्तुओ जाणवाजोग, अने (उपादेय) एटले आ जगतने विषे सत्य वस्तुओ होय तेज आदरवा योग्य. ए त्रण तत्व सिवाय आ जगतमां चोथो तत्व छेज नहीं. माटे नीचे लखेली बाबतो मजकुर त्रण तत्वनी साथे जोडीने यथास्थित करवुं, एज विद्वतानुं लक्षण छे.

त्रण तत्वनी साथे जोडेला पदार्थो.

शुद्धज्ञान १, सुधर्म २, सुदेव ३, सुगुरु ४, समकित ५, सुमार्ग ६, सुमति ७, न्याय ८, तत्व ९.

अशुद्धज्ञान १, कुधर्म २, कुदेव ३, कुगुरु ४, मिथ्यात्व ५, कुमार्ग ६, कुमति ७, अन्याय ८, अतत्व ९.

पुन्य १, पुन्यानुपाप २, पुन्यानुंपुन्य ३, द्रव्य ४, रूरुय ५, क्षय ६, लोक ७, भव्य ८, मोक्ष ९.

पाप १, पापनुंपुन्य २, पापानुंपाप ३, अद्रव्य ४, अरूरुय ५, अक्षय ६, अलोक ७, अभवी ८, नर्क ९.

सज्जन १, मित्र २, त्रस ३, शुचर ४, स्थळचर ५, कर्मी ६, धर्मी ७, जीव ८, आश्रव ९, बंध १०, निर्जरा, ११.

दुर्जन १, शत्रु २, स्थावर ३, खेचर ४, जळचर ५, अकर्मी ६, अधर्मी ७, अजीव ८, संवर ९, मोक्ष १०, अनिर्जरा ११.

उदय १, अल्पसंसारी २, कवी ३, सुकाळ ४, कर्मभुमी ५, उर्धलोक ६, सकामी ७, रागी ८,

ए विगेरे अनेक पदार्थो जगतमां छे. ते एकबीजा पदार्थोना प्रतिपक्षि छे. माटे ज्ञानपणानी अने चतुराइपणानी एज फरज छे. दृष्टांत. जेम कोइ झवेरी परीक्षासिवाय हिरा हाथमां लेज नहीं तेमज पारेवुं सळेला दाणाने चांचमां लइने तरत परिक्षा करीने पडतुं मुके, पण कदी भक्ष करेज नहीं तेमज सुज्ञपुरुषोने लाजम ए छे जे आ जगतना निवासमां रहेतां घणुं दुःख पामे छे एवा दुःखनुं भंजन अने कर्मना बंधनथी मुक्त करनार एक दयाधर्म छे. तेनी परिक्षा करीनेज ग्रहण करवो जोइए.

आ उपरनी जे बाबतो लखी छे ते नानीसुनी समजवी नहीं. अर्थात के तेनो विस्तार करीने लखीए तो अकेक बाबतनां सेंकडो पानां भराय, पण ग्रंथ वधीजवाना भयथी विवेकी ने सुज्ञपुरुषोने टुंकामां कुलभावार्थ समजाव्यो छे, माटे ते पदार्थोनो खरेखर उपयोग करतांज मालम पडशे, केम जे प्राचिनकाळथी जैनधर्म आद्य, मध्य ने अंते दयाथीज भरपुर छे, एम जैनशास्त्रोमां केवळज्ञानी महाराजे प्रगट कहेलुं छे, एमां भव्य प्राणीओने निःशंकपणुं छे एटलुंज नहीं पण जैन धर्मना प्रतिपक्षीओ एटले बीजा धर्मवाळाओना शास्त्रोमां पण दया धर्म सिद्धकरी बताव्यो छे ते विषे शाक्षीओ नीचे मुजब.

" दयाआज्ञा ए धर्म "

महाभारतनो श्लोक.

योदद्यातकांचनमेरु, कृत्स्नांचैववसुधरां;
एकस्य जीवितंदद्यात, नचतुल्यंयुधिष्टिर.

भावार्थ—कोइ पुरुष सोनानो मेरु अने आखी पृथ्वी दानमां आपीदे, एने एक पुरुषे एक प्राणीने दयाना अंकुरथी जीवितदान आप्युं, तो हे युधीष्टिर प्रथमनुं दान जीवतरदाननी तुलयमां आवे नहीं. एम महाभारतमां कहे छे. माटे ए वाक्यमां सर्व प्राण, भुत, जीव, सत्वना अणओळखीता छतां दया धर्मनुं स्थापन करे छे. तो अरे विवेकगत वहालाओ जैनधर्ममां शुं दयाधर्मनी वृद्धि करवाने मुळ शास्त्रोनी खामी छे? के नवा कल्पित कार्मीक ग्रंथोना आधारथी खटकाय मर्दन करीने जन्मांतरनी वृद्धिनो लाभ लोछो ? वळी आपनी अज्ञानताना वधारामां मुळ

शिद्धांतोनी आस्था नथी के शुं ? पण अरे जराक विचार तो करो ? जे शास्त्रमां धर्मनुं मुळ तेज दया कही छे अने विद्वान लोकोए पण तेनुंज प्रमाण करेलुं छे अने निर्दय स्वभाव तेज अधर्मनुं मुळ छे. माटे अरे धर्म इच्छको ! एवी जे अमुल्य दया तेना स्वरुपनो लक्ष करवो ते धर्मीजनोने घटारत छे केम जे ते अमुल्य दयाना तो सिद्धांतमां अनेक भेद छे. पण लखाण वधी जवाना संभवथी टुंकामां समजण आपवामां आवेछे के धर्मनी मुख्यताए दयाना बे भेद छे. तेमां पहेली स्वदया, एटले पोतानो आत्मा अनंत अने अक्षय सुखनो भंडार छे तेने आठ कर्मरुप ताळां जडेलां छे. ते ताळांओने खोलीने अनंत आत्मिक शक्तिरुप लक्ष्मिनो भुक्ता थवा माटे सहज स्वभावें करी ने पुदगळ विभावी सुखथी निर्मोहि थवुं तेनुं नाम स्वदया.

बीजी परदया ते संसारिक सुखनुं निदान छे, एटले वहेवारीक सुख आपनार छें पण स्वदया प्रगट करवाने परदया ते मुख्य कारणभुत छे अने जेना पशायथी देव मनुष्यना अत्यंत महत सुख भोगवी अंते स्वदया गुण पामीने मोक्ष पद पमाय छे. पण परदयानुं विशेषण एछे जे आ जगतमां पांचसें त्रेसठ भेद जीवना छे. तेओने ओळखीने ते उपर सदा रहेम ने करुणाबुद्धिथी उगारवा तेनुं नाम परदया कहीए. परंतु ते दया पाळवाथी केटलाएक देहार्थी फायदा थाय छे तेनी साक्षी नीचे मुजब.

दीर्घमायुःपरंरुप मारोग्य श्लाघनी नीयतां,
अहिंसायाःफलं सर्वंकिमन्य त्कामदेवता.

भावार्थ—सर्व प्राणीओने जीवितदान देवाथी दिर्घ एटले मोटुं आयुष्य पामे अने उत्कृष्टरुप तथा आरोग्यता तथा सर्व लोकने प्रशंशा करवायोग्य ए चार तथा बीजा घणा फायदाओ अहिंसा एटले दया पाळवाथीज मळे छे. ए सिवाय अरे जगतवासी मित्रो ! वांछीतार्थ पुरनारो क्यो देव श्रेष्ट छे ? छेज नहीं. माटेअरे जंतुद्रोही अज्ञान नरो ! ज्ञान द्रीग खोलीने जोशो के तरतज सर्वत्र दया उपयोगमां आवी जशे अने अमुल्य दयाधर्म रुचमान थइ पडशे.

धर्मार्थीवाच. अहो विज्ञपती आत्माने तरवा माटे धर्मनुं मुळ दया कही, तेतो सत्यमेव छे परंतु ते दया केम समजाय ?

गुरुवाच. अरे भद्र अमुल्य दयानुं मुळ ते ज्ञान छे के जेनी सहायताथी दया पुष्टी पामी शके छे. हवे दया पाळवा माटे ज्ञाननुं विवेचन आपे छे. दशवीकालीकना चोथा अध्ययननी दशमी गाथा.

पढमंनाणंतउदया, एवंचिठइसव्वसंजए:
अन्नाणीकिंकाही, किंवानाहीसेयपावगं १०

भावार्थ—अरे शिष्य ! प्रथम गुरु मुखे ज्ञान अभ्यास करीने स्वपरनुं जाणपणुं करे तो त्यारपछी स्व ने पर दया प्रगट थायछे. माटे तेज प्रमाणे वितरागनी आज्ञाए दया धर्म पाळनार सर्व संजती थीरता भावमां आनंद मग्न रहेछे. परंतु जेणे ज्ञान दशाने जाणेली नथी, ते अज्ञानी शुं जाणशे के दयाधर्म ने कल्याण मार्ग कहेने कहेवाय छे. माटे ज्ञानथी दयाज पळेछे. ए सत्यमेवं.

हवे ते दयानुं मुळ तो ज्ञान छे. तेनो घणो विस्तार तो श्री नंदी सुत्रमां छे, तेथी आ ठेकाणे सविस्तर न लखतां तेना जुज नाम मात्र आ लखाणमां दाखल कर्या छे ते निचे मुजब.

१ मतिज्ञान ए जे बुद्धि या अक्कलपणुं ते सर्व मनुष्य या जानवरोमां पोतपोताना पुन्य प्रमाणे स्वभावेज उपजे छे. तेना अठाविश भेद छे. तेने सविस्तर करतां त्रणसें चाळीश भेद पण कहेछे तेनुं नाम मतिज्ञान.

२ सुत्रज्ञान के जे भणवाथी तथा सांभळवाथी सर्वने पुन्य प्रमाणे उपजे छे. तेना चौद भेद छे अने वीश भेद पण कहेछे.

३ अवधिज्ञान के जेना मुख्य तो छ भेद कहेवायछे.

४ मन पर्यवज्ञान के जेना बे भेद कहेवायछे.

५ केवळज्ञान के जे अनंत शक्तिवंत छे. ते जे मनुष्यने उपजे ते चौदराज्य लोक पोतानी हथेलीमां जेम वस्तु देखे तेम देखे अने सर्वत्र जगतना जीवोना परिणाम उपयोग दीधा वगर हमेशां जाणी देखी रहे तेनु नाम केवळज्ञान.

ए पांच ज्ञान छे. तेमां प्रथमनां बे ज्ञान तो स्वभाविक छे. तेतो थोडा या घणा सर्वने होय. पण त्रीजुं, चोथुं अने पांचमुं ए त्रण ज्ञान छे, तेतो आत्मिक छे. ते ज्यारे आत्मा कार्मीक स्वभावथी खसीने स्व स्वभावमां आवे त्यारे आप थकीज़ उपजे, पण ते कोइना शिखव्या या भणाव्याथी आवेज नहीं. एवा सदरहु कहेला ज्ञानना लाभ सिवाय स्व अने परदया पळेज नहीं माटे धर्मनु मुळ ते स्व अने परदयारुप ज्ञान छे अने ज्ञाननुं मुळ विनय एटले नम्रता करवी तेना तो अनेक भेद छे. ते गुरुगमे जाणवा. पण विनय छे तेज जैन धर्मनुं मुळ छे. तेने विशे शास्त्रोक्त गाथा निचे मुजब.

विणउजीणसासणमुलं, विणउनीव्वाणसाहगो;
विणउवीप्पमूकस्स, कउधम्मोकउतवो.

भावार्थ—विनय एटले सर्वगुणी वडीलोने नम्रतार्थी पद वंदनादीक आसन सन्मान सहित आदर दइ त्रिकरण शुध्धे शेवना करवी तेज नम्रताना लाभमां आचार्य ज्ञानदान आपे ते विनयथी निर्वाण एटले मोक्षनी प्राप्ति थाय. माटे विनय करवो. अने जे माणसना अंतःकरणमां स्वअभिमानर्थी विनय अने नम्रता नाश पामी गयेली छे ते माणस अभिमानाश्रित धर्मकृत करे तोपण शुं ? अने अनेक तप क्रियाओना ओघ वाळीदे तोपण शुं ? ए सर्व तेनुं निष्फळ थाय छे. माटे धर्मदया अमे ज्ञान मेळववा माटे विनय एटले नम्रता राखवी. ए धर्म आराधनारने माटे चार हेतुभेद कह्या छे, ते धर्म अधिकार माटे सुचना मात्र लखुंछुं.

दयाधर्म अने दाननुं विवेचन.

धर्मना मुख्यतो बे भेद छे. एक साधु धर्म अने बीजो गृहस्थ सागार धर्म, अथवा एक निराग धर्म ने बीजो स्वराग धर्म. निरागी धर्मतो उत्कृष्ट दशाए जाणवो, अने जीवनमुक्त थइ विदेहमुक्त पद पामे. परंतु सरागी धर्ममां असंख्य भेद छे. तेमां मुख्यत्वे चार भेद छे, तेना नामनी मात्र सुचना लखुंछुं.

१ अभयदान जेना बे भेद छे, तेमां प्रथम पोताना आत्माने अभय करवो एटले भयरहित करवो. ते भय कोण छे के आत्माने जन्म अने मर्णतुल्य अन्य कोइ भय नथी. ते भयानक भयथी बचवाने माटे प्रयत्न करवो तेनुं नाम स्व अभयदान कहीए. एज मुख्यत्वे मोक्ष मार्ग छे. परंतु तेना सहस्त्रो भेद छे. ते सविस्तर गुरु गमताए धारवा. बीजो पर अभयदान, तेनो भावार्थ एम छे के जेटला जगतमां त्रस अने स्थावर छे ते सर्वने पोतानी तरफथी अभय करवुं, एटले कोईपण प्राणीओने पोतानी तरफथी मन, वचन अने कायाये मर्णांति भय न उपजाववो. तेना अनेक भेद छे. ते बीजा धर्मनी मुख्यताए मोक्ष सार्थक छे.

२ हवे बीजो सुपात्रदान ते पण मोक्ष पदनुं निदान समजवुं. तेना अनेक भेद छे. परंतु तेना मुख्य बे भेद छे ते एके जे प्राणी सुपात्र होय एटले स्व अभय अने पर अभय संयुक्त होय, एवा प्राणीने परिक्षीने कोमळामतुणे अन्न वस्त्रादिक तेना योग्यदेवुं ए प्रथम भेद. हवे बीजो भेद एजे दानदेवानी वस्तु तथा दान

आपनारो दातार ए बे सुपात्र होय, एटले वस्तु पण शुद्ध ने देनार पण शुद्ध होय. एना अनेक भेद छे. ए बीजो सुपात्रदान जाणवो.

३ हवे त्रीजो अनुकंपादान धर्म छे. ते पण महापुन्य बंधननो हेतु छे. ते दानथकी देव तथा मनुष्यना अत्यंत सूख पामीने छेवट तेओनी सहायताथी तेने अभयदान अने सूपात्रदान ए बेनो रस्तो मळे के जे बे दान महानिर्जरा हेतु छे ने तेथी मोक्ष पद पामे. तेवा बे दान अनुकंपादानथी प्राप्त थाय छे.

४ हवे चोथो किर्तीदान एके जे भाट भवैया विगेरे याचकोने देवुं. तेनो हेतु एके एवा लोको किर्तीदानना लाभमां जगत लोकोनी पाशे जरा किर्ती बोले, पण ते सकामनिर्जराहेतु नहीं. पण अल्पलाभ केळना फळनी पेठे मेळवी शके.

५ पांचमुं उचितदान एछे जे पोताना नोकरो चाकरो, सगांसंबंधी, नातजात, कुटुंबकबिला, विगेरेने देवुं. तेमां तो आत्माने व्यवारीकज लाभ प्राप्त थाय छे. उपर मुजब सरागी धर्मना मुख्य चार भेदछे. ते मांहे आ प्रथम दानधर्मनो भेद कह्यो.

भेद बीजो.

ब्रह्मचर्य तेना मुख्य भेद नव छे, ते नववाडे विशुद्ध ब्रह्मचर्य आराधन करवुं अने तेना गुरुगमताए सविस्तर अढारहजार भेद थाय छे. ए धर्मनो बीजो भेद.

भेद त्रीजो.

हवे त्रीजो तपधर्म एटले कार्मीक सूखथी निराशीपणे[1] तप करावो. तेना बहाज्य[2] अने अभ्यंतर[3] मळीने बार भेद थाय छे ते धर्मनो त्रीजो भेद.

भेद चोथो.

सूभाव एटले सारोभाव, तेना चार तथा आठ भेद छे माटे आ चोथो भावधर्म भेद सर्वोपरी छे. अने महा मोटा सुखनुं निधान छे, अने सर्व जगत एनी प्यासनो दरकार धरीनेज रहयुं छे. ते खुलासावार गुरुमुखे विवेकीओने धारवा अमारी विनंति छे.

अरे धर्मार्थी नरो! मजकुर करेला चार भेद धर्मना अमुल्यकार्य सिद्ध करनार छे तेथी तेनी याचना पण हमेंशा धर्मार्थीओने लागु पडेलीछे. पण जे अधर्म धुरींधर आश्रव मार्गमां भुला पडेलाछे ते खटकाय मर्दन धर्मनी उन्नती वधारवा सदा

---

१ संसारीक सूखनी आशारहीत. २ सर्वने देखवामां आवे. ३ बीजाने देखवामां न आवे.

उत्साहभेर साहसीकपणुं धरीने प्रभुनी तथा गुरुनी भक्तिनी कहाणीने माटे विचारा अनाथ प्राणीओनां प्राणनो लुसन करी निर्जरा हेतु माने छे. ने अल्पपाप ने महा निर्जरानी स्थापना करीने कर्मवसे मरेला जेवाज त्रस स्थावरना उपर पीत वस्त्र वेषधारी राजाओ पीळा तिलक करनारी निर्दय–हृदयनी फोज लइने अनेक कल्पित ग्रंथोरूप हथिआरोथी सैनबंध थइने देवळ प्रतमारूप झंडो रोपण करीने छ कायनी साथे पुर्वना वेर सबंध शोधीने तेओने पचारी पचारी मर्दन करीने अधोगत नामनी राजधानीना लाभनी फतेह मेळवेछे. एम दया धर्मनी प्रनाळकाथी खातरी थायछे. परंतु दिर्घश्रवी* बंधुओना अंतकरणमांतो बीजी रीते ठसावेलुं जणाय छे.

केम जे तेओ धर्मने माटे छ कायनो नाश करी एम माने छे जे एवा सारंभी कार्य करतां अमने निर्जराकारक गुण प्रगट थायछे. परंतु अरे भोळा प्राणीओ! एम पण नथी जाणता के मोक्षने बदले मोहोक्ष एटले कर्म करीने कांध वधीजवानुं छे. माटे तेनो वखत आवशे ते वखते तेनो अनुभव खातरीछे वळी कहेवानुं जे निर्मळ बुद्धि वापरीने सर्व प्राणीओनुं रक्षण करवुं एवा वखतनीतो आरंभ करनारानी तरफमां मोटी खामी रहेलीछे. कारण जे पुर्वजन्मना बांधेला अंतराय कर्मनी प्रबळताने लीधे आश्रवमार्गनो त्याग अने संवर मार्गनुं आचरण ते क्यांथी बने!!!

केटलाएक मति भ्रमनावाळा एम बोलेछे जे अमो धर्मकार्य करतां आरंभ करीए छीए ते बीजाओने हिंसारूप देखायछे. पण अमने तो हिंसा लागेज नहीं. एवुं बोलनाराना वचन ऊपर ज्ञानी पुरुषो आश्चर्य पामेछे के अहोहो!!! केवुं अजाणतापणुं!!! हवे धर्मना अभिलाषीओने कहेवानुं एटलुंज के आ जनआत्मिक धर्ममांतो वितराग देवे आद्य, मध्य ने अंते दयारूप बोधनोज प्रवाह चलावेलोछे ए सुलभ बोधी जनोए निःशंकपणे समजवुं. पण अन्य धर्मना शास्त्रोमां पण सत्यतानां वाक्यो रहेलांछे, कारण के तेओ जीवादिक पदार्थोना अजाणछतां दयानी दढता बतावेछे. ते विषे सोमसुंदरनो श्लोक.

> कृपानदीमहातिरेसर्वेधर्मतृणान्कुराः
> तच्छोषेशोषमायांतितध्वरध्वैा वृद्धिमान्युयुः ॥

भावार्थ–कृपारूपी नदीने कांठे सर्वे धर्मो तृणांकुरासमान सुशोभित छे अने

---

*मोटा कर्मनी आवादानीवाळा.

ज्यारें धर्मात्मा पुरुषो गणाइने तेना अंतःकरणमांथी कृपा एटले दयारुप प्रवाहनुं सुकावापणुं थई जाय त्यारे तेओना धर्मनो निर्वाह क्यांसुधी थई शके ? अर्थात निर्दयपणुं छे ते मोक्ष मार्गनो शत्रु स्वभाव छे. माटे तम स्वभावि गुणसंपन्न नामदारोने केहेवानुं के अन्य धर्मीओ एम हिंसानो निःच्छेद करीने दयानुं प्रतिपादन करे छे. पण तमो दया दया एवा शब्दो तो बोली जाणो छो. पण धर्मार्थे दिर्घे आश्रवरुपी तोपनो अवाज करोछो तेथी तमारो दयारुप अलोप थइ जाय छे. कारण केटलाएक प्राणीओने मुखे दया शब्द बोलवानो वखततो आवी मळे छे, परंतु अनाथ प्राणीओ छकायजीव तेओनी द्रष्टीतळे आवे के तरतज पुर्वेना शत्रुभावे मुशक मिनकीनो दाखलो तेओने लागु पडी जाय छे. तेथी खटकायनो विनाश करवा सदा संतोषभेर रहेता हशे एम संभवे छे. परंतु तेओने केहेवानुं एटलुंज के अहो विभ्रमि ! जो हिंसाथीज धर्म होय तो विषमांथी अमृतनी उत्पत्तिनो संभव थाय, अग्निमांथी शितळ जळ पेदा थाय, सर्पना मुखमांथी अमृतनो रस उत्पन्न थाय, खळना मुखमांथी परगुणनो उच्चार थाय, समुद्रना उष सरीखा जळमांथी दुध पेदा थाय, कादवनो कपुर थाय, सोमलनी साकर थाय, गळीना तिलकथी केशरनुं तिलक थाय ने भृतकमांथी सजीवनपणुं देखाय, पण एम तो कदी थतुंज नथी. कदाचित्त कोइ देवना सान्निधथी एम बने तो नास्तिक नहीं, पण हिंसा करता मोक्षफळ ने धर्मनो संभवतो भुत, भविष्य ने वर्तमान काळमां नज होय. आ सत्यबोधनो तमारा अंतःकरणमां खातरी तो थएली हशे, पण जेम हारेलो जुगारी बमणुं जुगटु रमे तेमज पापाश्रवना आधारी प्राणीओ पुर्व जन्ममां क्रुर कर्मना उदयथी दयारूप लक्ष्मि हारी जइने अढारमा पापस्थानकना प्राधीनपणाथी आश्रवरुप जुगार रमीने कोटीध्वज थवा धारे छे ए केवी अचंबानी वात छे ! ! ! माटे अरे भ्रमित जनो ! तमारा अंतःकरणमां जरापण विचारतो करो ! के आ जगतमां क्या क्या प्राणीने मर्ण वल्लभ छे ? अने कया कया प्राणीने जीवतर ने सुख भोगववुं अप्रिय छे ? ते शाक्षी शास्त्रोक्त रीते आपवी जोइए. जीवतर ने सुखनी आशाने माटे हास समुचय ग्रंथमां कह्युं छे के,

अमेध्यमध्येकीटष्य, सुरेन्दस्वसुरालये;
समानाजीविताकांक्षा, समम्रृत्युभयंद्वयो.

भावार्थ—सेतखानुं एटले पायखानानी गंदी वस्तुमां रहेनारा जीवडाने तेमज देवलोकमां वास करनार सुर तथा इंद्रने जीववानी इच्छा सरखी छे, अने मृत्युनो

भय पण बंनेने सरखो छे. एम केटलाएक ग्रंथो पण प्राणीना वचाव माटे केटलीक रीतथी साक्षि आपेज छे. वळी जैन शास्त्रमां केवळी महाराजे दशवीकालीकना छठा अध्ययनी अगियारमी गाथामां पण उपरनी रीते खुल्लुं कहेलुं छे के,

सव्वेजीवावीइच्छंति जीवीउनमरीजीउ;
तम्हापाणवहंघोरं निग्गंथावज्झयंतिणं ॥ ११ ॥

भावार्थ—केवळी महाराज केहेछे के अरे भव्यजीवो ! आ जगतवासी स्थावर जंगम सर्व प्राणीओ इच्छा करे छे जीवतरनी, तथा सुखनी, पण न इच्छे मर्णने के दुःखने ते माटे अहो सुज्ञ नरो ! प्राणवध एटला जीव हिंसाना कर्म आत्माने महा रौद्र भयना देनार जाणीने निग्रंथ एटले परिग्रह रहित साधु चारित्रीया तेनो परित्याग करे छे. ए उपरनी गाथा आद्यमां लइने वीशमी गाथा सुधी साधुना पांच महाव्रत अने छठुं रात्रीभोजन तेनुं वर्णन करेलु छे. तेमां पांच माहाव्रतनी आद्यमां साधुजी नवकोटीए जीवहिंसा करे नहीं, करावे नहीं अने जीवहिंसा कर्त्ता-ने भलुं पण जाणेनहीं. एम साधुओना सर्वव्रतो निर्वद्य छे, एम सिद्धांतोमां प्रत्यक्ष-पाठ छे. तेम छतां पण मुग्ध* जनोना अंतःकरणमां महा हिंसारुप रोद्रप्रणामनो[1] संभव थयो छे. हवे एवी अज्ञाननी ढाळउपर चडावनारनो जन्मांतरे दुःखे दुःखे पण बांधेला कर्मोथी छुटको थवो मुश्केल छे. मतलबके निर्लेप मोक्षमार्गने हिंसारुप कर्दम चडावीने सलेप करवा धारोछो ए केवी भुल छे ? केमजे दशवीकालीक सुत्रना प्रथम अध्ययनमां पेहेली गाथा कही छे, ते नीचे मुजब.

धम्मोमंगलमुक्कठं, अहिंसासंजमोतवो;
देवावितंनमंसंति, जस्सधम्मेसयामणो. ॥ १ ॥

भावार्थ—जैन आत्मिक धर्म मोक्षनी साधना करवामां परम मंगळिक छे. मतलब के ते आ जगतना अनेक कार्मीक धर्मोथी सर्वोपरी उत्कृष्ट छे. एनीतुल्य बीजो कही शकातो नथी. ते श्रेष्ठधर्म केने कहिए ? अहिंसा एटले न हणवा प्रा-णीना प्राणने, तेनुं नाम जीवदया एज धर्मनो प्रथम पायो समजवो, अने ते दया-नी प्राप्तिना लाभमां सत्तर प्रकारनो संजम प्रगट थाय छे. एटले आश्रवनो निग्रह× थाय. ते आश्रव रोकवाथी निर्जरा प्रगट थाय छे, ने ते पुर्व कृत्य कर्मोनो सोस न करवाने माटे छे. निर्जराना छ अभ्यंतर अने छ वाहाज्य एम बार भेद छे.

* मुरख. १ रूधीर जेवा. × रोकवापणुं.

तेतुं नाम द्रव्य अने भाव तप कहीए. ए त्रण भेद मुळ धर्मनी आद्यमां कह्या छे. ते अहिंसा, संजम अने तप, ए त्रणने त्रिकरणशुद्धे आराधना करनार पुरुषोने देव आदि सर्व मनुष्यो तेना पद वंदन करी संतोष पामे छे. ते पुरुष केवा छे ? जेतुं सदा सर्वदा मजकुर धर्मनी आराधना करवामां मन, वचन ने कायाना योग्य थीरता पामेला होय छे. तेज देवादिकने अर्चवा लायक छे, पण जे खटकाय मर्दनादिक सारंभमां मतावलंवित थइने पोते आश्रव करे, परने उपदेश करे तथा कर्त्ताने भलु जाणे, एवा अज्ञानदशावाळाओनी पण पंदर जातना अधोगतस्वामि, देवो शेवाभक्ति करवा चुकशे नहीं. एम सिद्धांतोमां प्रत्यक्ष ज्ञानीपुरुषोए कहेलुं छे. हवे मजकुर गाथामांतो अहिंसा एटले स्वदया तथा परदया एज धर्म कह्यो छे. तो एवी गाथाओनो उपदेश संवेगी नाम धरावनार जनो पीळातिल्लकनी सभाने केवी रीते करी वतावता हशे ? ए सर्व विचारवा जेवुं छे. परंतु कुमतावलंवित वाळमित्रोने हितेच्छु तरिके वोध करवा जरुर एटलीज के तमारी कर्मोपार्जित वे चक्षु तो उघाडी छे. परंतु ज्ञानरुप चक्षुने मृषावाक्योथी रचीत ग्रंथीरुप पडळ आवी जवाथी जैन शासनरुप आर्यभुमी उपर दयारुप अंकुरा, ज्ञान, वोध मेघनी धाराथी प्रगट थएला छे. ते गणधर महाराजे अनंतज्ञानी तिर्थंकरदेवनी सहायताथी सुत्रार्थमां रचीने सर्व भव्यजीवोना हितने माटे प्रगट करेलुं छे, तेम छतां तमारा पाषाणरुपी कठोर हृदयमां ते नजरे आवतुं नथी, तथा ते वाक्यो रुचमान न थतां तेओना शत्रु भावे नवीन ग्रंथोना प्रवंध रचीने खटकायने खपाववा हुशिआर थया. परंतु अनंतज्ञानीना निरापक्ष सुत्रोनुं उलंघन करवा धारो छो, तो शुं ? एवी मुर्खाइ, ने अज्ञानरुप लवानथी दया धर्मनो नाश थशे ? पण अरे वाळ मित्रो ! दयारुप सुर्यना प्रवळ प्रकाशनी आगळ अज्ञानरुप हिंसा, मृषादिक अंधकार, कदी रहेवानो छेज नहीं. मतलव के सर्वना प्राणीओना रक्षणने माटे पुनः अन्य धर्मीओना शास्त्रनी केटलीएक शाक्षिओ लखी छे. श्रीमहाभारते शांती पर्वणी प्रथम पदे तथा विश्नु पुराणादिक मध्ये पण दया धर्म निरुपण करेलो छे.

श्रीमहाभारते कृष्णोवाच ॥

सत्येनोत्पद्यतेधर्मःदयादानेनवर्धते,
क्षमयास्थाप्यतेधर्मक्रोधलोभाद्विनश्यति.

भावार्थ—सत्य थकी धर्मनी उत्पत्ति थाय छे. ने ते धर्म दया ने दानथी

वृद्धि पामे छे अने क्षमा करवाथी धर्म स्थिर थाय छे. अने क्रोधादिक सर्व नाश पामे छे, ए अवश्य छे.

अहिंसासत्यमस्तेयमत्यागमैथुनवर्जनम्,
पंचस्वेत्तेषुवाक्येषुसर्वेधर्माःप्रतिष्टिता,

भावार्थ—अहिंसामां एटले दयामां, सत्यमां, अदत्य त्यागमां, दानमां, मैथुन त्यागमां, ए पांच प्रकारना धर्मोने विषे जे जे विवेकीओ प्रवर्ते ते ते सज्जनोना आत्मामां सर्व प्रकारना धर्मोनो लक्ष प्रगट थाय छे.

सर्वेवेदान्तत्कुर्यःसर्वेयज्ञाश्चभारत,
सर्वेतिर्थोभिषेकाश्चयत्कुर्यातप्राणीनांदया ॥

भावार्थ—सर्वे वेद भणो या अनेक यज्ञ करो या सर्व तिर्थोमां स्नान करी, परंतु जेनो सदाय प्राणीओ उपर निर्दय भाव छे ने हिंसा करे छे तेना मजकुर कृत्यो सर्व वृथा थाय छे. अर्थात दयानी तुल्य न थाय.

अहिंसालक्षणोधर्मःअधर्मःप्राणीनांवधः
तस्मात्धर्मार्थीभिलोकैःकर्तव्याप्राणीनांदया ॥

भावार्थ—अहिंसा अर्थात दया तेज धर्मनुं ळक्षण छे ने सर्व आत्मधर्मनी आद्यमां स्वदया अने परदया होवी जोइए. एज धर्मनुं लक्षण छे. अने स्व तथा परप्राणीनी घात करवी तेज अधर्मनुं लक्षण छे, माटे अरे धर्मार्थी बंधुओ ! सर्व प्राणीनुं रक्षण करवुं !

शोणितार्द्रतंवस्त्रंशोणितैनैंवशुध्यति,
शोणितार्द्रतयद्वस्त्रंशुद्धंभवतिवारिणा.

भावार्थ—लोही थकी खरडाएलुं वस्त्र, लोहीथी धोतां कदी साफ थतुं नथी तेमज हिंसा करतां एटले परप्राणीओना प्राणनो अपहार करतां अनादि काळना लागेला भयानक पाप कदी धोवायज नहीं अर्थात लोहीथी रंगाएलु वस्त्र जेम पाणीथी शुद्ध थाय छे तेमज दयारुप जळथीज मेल धोवाय छे, एम श्री कृष्ण महाभारतमां कहे छे,

विश्नुपुराणश्लोके.

अहिंसासर्वजीवेषुतत्वज्ञैपरिभाषितः
ईदंहिमुलंधर्मस्यशेषंतस्यैवविस्तरं.

भावार्थ—सर्व जीवविषे ज्ञानी पुरुषोए दया करवी जोइए. अने दया तेज धर्मनुं मुळ छे. ने दान, शिळ, तप, भाव ते दया धर्मनी शाखाओ जाणवी. माटे मत हणो कोइ पण प्राणीना प्राणने.

अहिंसासत्यमस्तेयंब्रह्मचर्यसुसंयमं,
मद्यमांसमधुत्यागोरात्रीभोजनवर्जनं.

भावार्थ—अहिंसा एटले जीव दया तथा सत्य बोलवुं तथा चोरीनो त्याग करवो तथा ब्रह्मचर्य पाळवुं तथा सुसंजम एटले पांच इंद्रीओना विषयनुं रुधन करवुं तथा चार महा विगय ते मदिरा, मांस, मध ने रात्रीभोजन ए सौनो त्याग करवो. ते सर्वनो मुख्य हेतु दया होय तोज ते सर्व त्याग थाय छे.

प्राणिनांरक्षणंयुक्तंमृत्युभिताहींजंतवः
आत्मोपम्येनजानन्‌हीइष्टंसर्वस्यजीवितं.

भावार्थ—धर्मार्थीओने प्राणीनी रक्षा करवी ते योग्य छे. मतलब के मर्णथकी सर्व जीवो सदा भय पामे छे. माटे सर्व जंगम ने स्थावर प्राणीओने आपणा प्राण शद्रस पर प्राणने जाणवो. केम जे सर्व जीवोने जीवतर वाहालुं छे ने मर्ण अळखामणुं छे.

उद्यतंशस्त्रमालोक्यविषादयातिवहृयलाः
जीवाःकंपन्तिसंत्रस्तानास्तिमृत्युसमंभयं.

भावार्थ—आ जगतमां मति भ्रांति निर्दय स्वभावी अज्ञान जनोए पापबुद्धिथी परप्राण हरवाने माटे घडावेला शस्त्र, ते तथा संसारमां लांवा वखतसुधी जन्म मरणना लाभ मेळववा माटे अज्ञान बुद्धिथी त्रस स्थावर प्राणीना प्राण हणवानी खातर रचेला हिंसानी विधीना शास्त्र. तेनुं नाम शास्त्र तो नहीं परंतु तेने शस्त्र तरीके गणवा. एवा उजळा हिंसारुप शस्त्र उचा उपाडया देखीने विपवाद पामीने थरथर कंपायमान थाय छे, सर्व त्रसने स्थावर प्राणीओ. मतलबके देह धरनार प्राणीओने मृत्यु समान वीजो भय नथी, एम ज्ञानीओ कहे छे.

कंटकेनापिविद्धस्यमहतीवेदनाभवेत,
चक्रकुंतासियष्ट्याद्यैर्मार्यमाणस्यकिंपुनः

भावार्थ—पगमां मोजडीओ पहेर्या विना पंथे चालतां कांटाथी विंधाएला पगने अत्यंत वेदना थाय छे ते खमी शकाती नथी तो पर प्राणीओने हणवाने माटे द्रव्य-शस्त्रो जेवा चक्र, भाला, तरवार, लाकडी विगेरे मारतां तेओने वेदना न थाय ? अर्थात थायज. परंतु ए मजकुर कहेला शस्त्रोना प्रतिपक्षी हिंसाचार्य इंद्रियर्ममां लुब्ध थइ गएला ने नास्तिक जगत बंधननी फांसीना पराधीन पणामां फसाइने पोताना देहार्थी साधनो साधवा माटे अनेक कपोळ कल्पित कुतर्कोथी भरपुर दिर्घ आश्रवना समावेश साथे कुशास्त्ररुप शस्त्र तेनी परुपणां करतां थकां शुं पर प्राणी-ओना प्राणने कुशळ रहेवानुं छे ? ना ना एम नहीं. पण एमतो खरुं के हिंसा कर-नार प्राणीओ तो बीजा त्रस स्थावर प्राणीओने वागवा माटे शस्त्ररुप कांटानी जाळ बांधीने आ जुलमी कळिकाळमां जन्म लीधो छे. तो ते कांटारुप शास्त्रोना वचन-रुप तिक्षण अणीओने चूरण करीनाखवा माटे ज्ञानोदयथी दयावाक्योथी भरपुर शास्त्रना बोधरुपी मोजडीओ पहेरीने धर्मधरा एटले धर्मरुप पृथ्वी उपर थइने दया-मार्गे चाली मोक्षरुप शहेरमां पधारवा माटे निर्भय थइने सदा आनंद उत्साह-भेर रहेवुं.

इत्यादिक श्री महाभारते तथा विश्नुपुराणे दयाधर्मनी पुष्टि करेली छे. एट-लुंज नहीं पण बीजा अन्यदर्शनीना शास्त्रोमां पण दरेक ठेकाणे दयाधर्मविषे दरेक रीतथी विवेचन आपेलुं छे. कारणके दयानुं स्थापन कर्यासिवाय जेजे धर्मशास्त्रो छे ते सर्व स्थळ विनाना वृक्षोपमिक थइ जाय छे. माटे अन्य दर्शनीओ जीवदया जाणे या न जाणे पण दरेक शास्त्रना प्रबंधमां लावे त्यारे ते शास्त्र मान्यपुज्य थाय छे. परंतु एवा धर्मशास्त्रना रचनाओ पोते बहिरातमां छतां विभंग ज्ञानावलंबनथी जाणे तेटली परदयानुं स्थापन करीशकया छे. कारणके स्वदयाना स्वरुपनुं तेओने लक्ष ज्ञान न थतां एकतरफी बोध निरुपण करेलो छे. पण स्वदयालक्षी तो अंतरात्मा परमात्मा सिवाय लक्षमां लइ शकेज नहीं. तथापि परदया छे ते पण महा पुन्यनुं निदान छे, अने तेज स्वदयानुं आलंबन छे. परंतु स्व अने परपक्षनी दयाविना जे जे पुरुषो धर्म कर्णीमान्य करी रह्या छे तेतो केवळ तम स्वभावी आश्रवमतिओ एक तरफी निर्दयपणामां बोलेछे के भक्तिने माटे आश्रव थाय तेमां " अपकर्म-

बहुनिर्जरा" एटले अल्प कर्म लागे छे ने घणा कर्म निर्जरे छे.एवी भ्रमना राखीने पोताना आत्माने पोतेज शत्रु थइने ठगी रह्या छे. माटे तेओ भयानक जन्मथी केम छुटी शकाशे ? अने आ जगतमां तेओने शरणभुत कोण थनारुं छे ? कारणके " वेराणुंवंधानिरिया उवयंति " अर्थात जे परप्राणीओनुं दयाधर्मी थइने रक्षण करवा मददगार न थाय ने विरुद्ध रीते दयाधर्मी एवुं अमुल्य नाम स्थापी परमेश्वरने माटे अथवा गुरुभक्तिने माटे कल्पना करी करी त्रस स्थावरनां प्राण हणीने वेरझेरनी पुष्टि करतां पाछी पानी भरता नथी. पण काळांतरे कृत्य कर्मना उदयना वखतमां हिंसा करनार प्राणीओनी वरदाश करवा माटे पेली पंदर जातनी काळी पलटणो तैयार थइ बेटेली छे. तो त्यांनी न्यायकोरटमां करेलां करमोनो जवाव देवो मुश्केल थइ पडनारो छे. वळी आत्मकार्यनो सुधारो करवाना वखतमां पोतानी कुबुद्धिना कारणथी पोताना लाभमां गेरहांसल करनारा जडमतिओने विपत्तिना वखतमां केवो पश्चाताप करवो पडशे ? कारणके निति ज्ञान ने दर्शननो लाभ लइ निरमळ दयाधरमनुं आगेवानी पणुं धरावीने घरम संबंधी सर्व कार्योमां प्राणवध करतां जरापण अशंका पामता नथी, ते केवी जुलमनी वात छे ? तेनुं द्रष्टांत नीचे मुजब.

संवत १९४०ना फाल्गुन मासमां भावनगरमां जैनधर्मनाम धरावनार तपालोकोए एक समोसरण करेलुं ते वखतमां एक तपा सावजनी स्त्रीए एक गायने घी पीवाना अपराधमां मर्णांत सजा करी हती. ते गौहत्यानुं पाप अगणित छे. तेमज संवत १९४१ना पजुसण अगाउ भावनगरी तपानी सुधरेली सभामां शास्त्रज्ञाननो अभ्यास करनारे एक बकराने पोतानी मतलबनी खातर होमीनांख्यो. ते तमारी कुसंपीली ज्ञातमां बकरा विषेनी अफवा चालेली ते सांभळवामां आवी हती. ते विषे खरुं खोटुं तो परमेश्वर जाणे, पण तेवांकृत्य जैनीनाम धरावीने करवां ते कांइ जैनधर्मनी कोमळवाळा गणाता नथी. वळी एवा बिचारा अनाथ पंचेंद्रिजीव गाय तथा बकरुं पोताना पुर्व कृत्यथी जन्म हारीजइने तिर्यचनी योनीमां जइ फसाया ते पुर्व कृत्यथी मरीतो रहेलाज हता पण तमारा जेवा जुलम करनार जनोने हाथे पडतां निरापराधि बे जीवोनो नाश करी नांख्यो ते कांइ कर्मपुर्व जन्मांतरेतो भावी भुलनार नथी. परंतु आधुनिक जमानाना वहेवार प्रमाणे तमारी सज्ञातीए ते जुलम गुनो छुपावीने सुधरेली सभानी मदद खातर तेनो बीलकुल तपास न करतां उलटी रीते माया कपटथी साग्रित थइने आनंद मंगळ वर्तावोछो. परंतु ते बाबत

तमोए लोकापवादथी पण डर न राखतां अपराध छुपावी राख्यो छे, तो कहेवानुं एटलुंज के शुं तमारा पीळां वस्त्रवाळा वेषधारीओनी पासे ते बाबतनुं प्रायच्छित या आळोयण लइने शास्त्रोना रिवाज प्रमाणे शुद्ध थइ गया हशो के शुं ? ना ना तेमपण खातरी थती नथी. कारण के लोको अपवाद टाळवाने तथा ज्ञाती धर्म राखवानी खातर नवराश लीधी होततो धर्मापराध टाळवामां पण नवराश लीधी समजाय. पण ते बे तरफना अपवादथी निरापराधि न थाय माटे एम समजाय छे के ए जीवर्मिसानां लागेलां कर्मोथी तमो सुधरेला वकीलो कायदा कलमो लागु करी करीने दुर्गतिना स्वामिओनी झपटमांथी छुटी जवा धारो छो के केम ?? पण अरे बाळ मित्रो ! तमारा कठोर अने पाषाणरुपी हृदयगां स्वप्ने पण धारशोना जे नर्काधिपति पासेथी छुटी जइए. केम जे तमारी डाहापणदार ज्ञातीए मजकुर बे प्राणीओना मर्ण सामे ध्यान न आपतां केवळ तमारीज दयाथी यवनधर्म साचव्यो छे. पण जन्मांतरे नर्काधिपतितो लांच न लेतां या सिपारस न राखतां कायदानी रीतेज मर्ण पामनार प्राणीओनुं करज तमारी पासेथी लेशे. एम खातरीथी समजवुं. अने एवा मोटा प्राणीओना प्राणवधनो तमारी पाषाणरुपी हृदयमां कांइपण शोच थतो नथी; तो बिचारा पृथ्वीआदि असंज्ञी पंचेंद्रिओनावध सुधीनो आरंभतो तमो मोक्ष अने महानिर्जरा हेतुज गणोछो, तो अरे दयाधर्मीओना प्रति पक्षीओ ! तमने पुछवानुं एटलुंज के तमो ठाम ठाम ग्रंथोमां तथा चोपानीआमां दया, दया, दया, एम लवान करोछो, माटे ते दया ते कया प्राणीनी पाळवी ? ते प्राणीना नामठामतो बतावो ? वळी दरेक ठामे हिंसा करवाथी नर्के जाय एम कहोछो ते कया जीवनी हिंसाकरवाथी नर्के जाय ? अने ते कोण जशे तेनो खुलाशो आपवो जोइए. ते सिवाय पुछवानुं के अन्य धर्मवाळा तेओना शास्त्रनी रीत प्रमाणे दया पाळवानो उपदेश करता हशे ? अने तमे कया प्राणीओनी दया पकडी छे ते कहो? परंतु अन्य दर्शनीओ बाळज्ञानावलंबनथी आश्रव शेवी खटकायना अजाणपणामां आरंभ करेछे तेने कहोछो जे ते भारे कर्मीछे अने तमे कहोछो के अमो सर्वोपरि शास्त्रना पारावारीछीए तेमज छकायने ओळखीए छीए. एम जाणपणानुं खोटुं डोळ घालीने धर्मार्थे प्राणीओना पाणनो नाश करो तो तमने आश्रव थोडो लागे अने प्रति पक्षिओने वधारे लागे तेनुं केवी रीतेछे ? ते लखीतवार सुत्रना मुळ पाठ साथे जवाब आपवो जोइए. परंतु मिथ्यात्वि तथा समक्तिना करेला आरंभविषे घटवध थाय छे ते अमो जाणीए छीए. केमजे भगवतिजीमां कह्युं छे जे कोइ अनार्थ पुरुषे

क्रोधाकुळ थइने कोइ स्थळ वाळी मुकवानी खातर अग्नि मुकी, ते अनार्यना विचारमांतो सर्व प्राणीओनो नाश करवानी बुद्धि छे. हवे तेज वखतमां एक आर्य पुरुषे ते लाय लागती देखी सर्व प्राणीओना बचाव माटे अग्नि ओलववानी बुद्धिए प्राणी विगेरे छकायना आरंभथी सळगावेली अग्नि बुझावी. ए बे जणाए महा आरंभ करेलोछे. पण तेमां अग्नि सळगावनारने चिकणां कर्म अने बुझावनारने स्थळ कर्म लाग्या छे. ए बेउनुं समाधान वितरागे करेलुंछे पण तमो तमारा धर्मना आरंभ उपर न ताणी जतां वितरागना वचनने अनुसरीने जवाब आपवो जोइए. अन्यदर्षनीओने छकाय जीवोनुं जाणपणुं नहीं होवाने लीधे सारंभी धर्म मानेछे, तो तेने तमे दुर्गत दायक गणो छो अने तमो सर्व प्राणीओने ओळखी शस्त्र आधारथी प्राण, प्रजा, इंद्री, जीग, संज्ञा, परखी परखीने धर्मनी खातर तिव्र रससाथे हणोछो माटे प्रति पक्षीओनी अपेक्षाए धर्म जाणो हिंसा करनार केटलामां ? पाताळ सुधी पहोंचवा धारेल छे ? ए विचारतो करो ! वळी कहेवानुं के केटले प्रकारे अज्ञान प्राणीओ नर्कनुं आयुष्य बांधे छे ? ते सुत्र पाठ साथे बतावबुं जोइए. वळी पीळा वस्त्रवाळाओने पुछवानुं के तमो श्रावकोने पुरेपुरा सूत्रनुं जाणपणुं करावो छो के एकला गपोड ग्रंथोथीज कान भरी दीओ छो? ते शी रीते छे ? केमके आ अमुल्य दया धर्म शुद्ध छे. तेम छतां हिंसा रोपण करोछो ए कांइ जैन धर्मीओनो वव्यहार या आचार जणातो नथी. परंतु अन्न दर्शनीओ तो कहेछे के अमारा शास्त्रोमां दया पाळवा विषे महान पुरुषोए घणुंज विवेचन आपेलुं छे, पण अमो लाचार के ते प्रमाणे न चालतां वव्यहारना पराधिनपणाथी पळी शक्तुं नथी. एम ए लोको कबुल करीने पण निराधराधीपणुं गणावेछे. परंतु तमो दयाधर्मीओनुं डोळ घालनाराओ अनंता प्राणीओने धर्मनी खातर हणीने दया मान्य करोछो ते दया शास्त्रनी रीते प्रमाणीक केम थाय ? माटे अरे दिर्घाश्रवी प्याराओ ! आद्य पर्यंत सुधी सिद्धांतोनुं श्रवण करीने पछी दयानो पोकार करो तो व्याजवी कहेवाय, पण हाल तो मजकुर प्रति पक्षीओना धर्मीओनी रीते दिनपणे आरंभनो गुनो माफ मागवो जोइए, जे अमारा दयाधर्मना नामगुणनी रीते चाली न शकतां आरंभ मार्गनी रुढीमां फसाया छीए, एवी रीते तमो उदासीभाव आणशो के तेज वखते करेला आरंभना कर्मनी बहुळता थएली हशे ते तरतज घटवा मांडशे, अने ते कर्म घटवाना लाभ ां वितराग प्रणीत धर्मनी रुचीथी दयारुपी स्वभाव थशे ए निःसंदह छे. कारण के वितरागे सिद्धांतोमां आद्य

पर्यंत सुधी हिंसा करवाथी संसार तरे एवुं वाक्य कोइपण स्थळे वापरेलु नथी. परंतु अगियार अंग,बार उपांगादि सुत्रोमां हिंसा करनारनी कर्णी या तेनी सावद्य-क्रिया बतावी छे, पण एवी क्रिया निर्जरा हेतु गणवी एम कांइ सिद्धांतमां नथी. परंतु एवी सावद्य क्रिया अकाम निर्जराहेतु गणाय छे ए सिद्धांतोमां जोसो तो तरत जणाइ आवशे. तेमज श्री उत्तराध्ययनना छठा अध्ययननी सातमी गाथा नीचे मुजब.

अज्झत्थंसव्वउसव्वंदिस्सपाणेपियायए,
नहणेपाणिणोपाणेभयवेराउउवरए

भावार्थ—सर्व प्रकारे इष्टना संजोगथी उपज्युं सुख ते सर्वने वल्लभ छे. एम शास्त्रोक्त रीते देखीने जिवत्व वहालु छे प्राण धरनारा प्राणीओने माटे न हणो न हणो ! प्राणीओना प्राणने. अर्थात दया पाळो ने तमारी तरफना भयानक सात भयथी तथा वेरभावथी निर्भय करी अभयदान आपो तो तमे पण अभयपदजोग थशो. वळी तेज सुत्रना अढारमा अध्ययनमां कह्युं छे के.

सगरोवीसागरंतंभरहवासंनराहियो;
इसरियंकेवलंहीच्चादयाएपरिनिवुडो ॥ ३५ ॥

भावार्थ—सगरनामां चक्रवर्तीए त्रण दीसे समुद्र लगे आण वरतावी अने उत्तरे लघु हेमवंत लगे आण वरतावी ते भरतक्षेत्रनो राजा केवळ या संपुर्ण ठकराय छांडीने स्व अने परदया संजमे करी अंतक्रियाने योग्ये सिद्ध पद पाम्या ते दयानो प्रभाव छे.

॥ काव्यः ॥ नतंअरीकंठछेत्ताकरेई,
जंसेकरेअप्पणियादूरप्पाः
सेनाहिमच्चुमुहंतुपत्ते,
पच्छाणुतावेणदयाविहुणो ॥ ४८ ॥

भावार्थ—तेज सुत्रना विशमा अध्ययनना काव्यमां कहेलुं छे जे जैननो वेष धरीने पोते इंद्रिओना पराधिनपणाथी मिथ्यात्व सेवना करीने पछी पोतानी सहायता माटे परने मिथ्यात्व शेवरावे ए महा अपराधी गणवा योग्य छे, मतलब

के जेटलुं प्राणनो हरनार अने वेरी न करे तेथी वधारे भुंडुं ते वेष लजावनारो करे. अर्थात पोते वेषधारी हिंसा मार्ग आदरीने शर्णागतने पण तेमज वरतावृवा धारेछे तो पोतानुं अने परनुं कार्य विनाश कर्युं माटे मर्णांते ते असंजमीओ मोटा पश्चातापमां पडनारा छे.

गाथा ॥ इंदिअथेवीवजितासझायंचेवपंचहा
तमुतितपुरकारेउवउतेरियंरीए ॥ ८ ॥

भावार्थ—तेज सुत्रमां चोवीशमे अध्ययने कहेलुं छे जे अरे संजमार्थी ! तुं पांच इंद्रीओना विकारने वरजीने तथा पांच प्रकारनी सझाय, ए दश बोलने वरजीने शुद्धात्म उपयोगे इरिया एटले पंथे चालतां सुमती एटले ज्ञान बुद्धी लावीने चार हाथ प्रमाणे द्रष्टी आगळ करीने खटकाय प्राणीनुं रक्षण करजे. अर्थात दयानी खातर सावधान थइ चालजे एम दया पाळवा आज्ञा कही छे.

गाथा ॥ एवमेयाणिजाणीतासव्वभावेणसंजए
अप्पमत्तोजयेनिचंमणिदिएसमाहिए ॥ १६ ॥

भावार्थ—दशविकालीक सुत्रना आठमा अध्ययननी सोळमी गाथा अगाउ भगवंते छकाय जीवने ओळखवानुं स्वरुप वताव्युं, त्यार पछी मजकुर गाथामां कह्युं जे अरे संजमार्थीओ ! छकायना जीवनुं स्वरुप जाणीने पछी पोताना आत्म सुधारा माटे मन, वचन, अने काया स्थिर करीने संजति कहेला आठ स्थानकनी रक्षा करे अप्रमाद[1]पणे. अर्थात दया पाळे. पोतानी पांच इंद्रीओनो निग्रह[2]करीने ज्ञानवंत संजति एम कह्युं. माटे सर्वथा दया पाळे ने परने पण पळाववा चुकेज नहीं. पण कोइ कारणे हिंसा करवा आज्ञा नथी ते अवश्य छे.

गाथा ॥ संधएसाहूधम्मंचपावधम्मंनिराकरे;
उवहाणंविरिएभिख्खु, कोहंमाणंचविवज्जए.

भावार्थ—सुयगडांग सुत्रना अगियारमा अध्ययनमां पांत्रिशमी गाथामां कह्युं छे के अरे संजतिओ ! भला धर्मनी साधना करीने हिंसा धर्मने तजो. अने उत्कृष्ट तप करीने क्रोधादिकने छांडो. कारण के क्रोधादिकथी तपनो नाश थाय छे. एमज हिंसा करवाथी भलो धर्म एटले मुक्तिना साधननो नाश थाय छे. माटे

१ सावधान. २ वश.

तेहनो त्याग करो एम कहयुंछे. एवी रीते तीर्थंकर माहाराजे सर्व सुत्रोमां हिंसा धर्म छांडवानी आज्ञा कहेली छे, पण हिंसा करवा आज्ञा करेली नथी. एमज भुत, भविष्य ने वर्त्तमानकाळे हिंसानो त्याग बतावशे. पण हिंसा स्थापन माटे कदी बोध नहीं करे एम जैनशास्त्रो शाक्षि पुरे छे.

गाथा ॥ गारंपिआवसेनरेअणुपुव्वंपाणोहिंसंजए
समयासव्वथसुवएदेवाणंगछेसलोगयं ॥ १३ ॥

भावार्थ—वळी तेज सुत्रना बीजा अध्ययनमां त्रीजा उदेशानी तेरमी गाथामां एम कहयुं छे जे गृहस्थ वासमां वसनारा श्रावको अनुक्रमे युक्ति करीने यथाशक्ति जीवनी जतना करी रुडा व्रत पाळीने सरव जीवने पोताना आत्मा तुल्य गणी दया, धरम, संवर, सामायक, पोषण करीने देव लोकमां जाय एम कहयुं छे. वळी उत्तराध्ययनना अढारमा अध्ययनमां सक्रेंद्रनी प्रेरणाथी दसारण भद्र राजाए कार्मीक रिद्धिनुं अभिमान तजी धरमाभिमान राखवा माटे दया धरम एटले स्व तथा परनी दया तेज संजम आराधना करी, एटले तेज वखते इंद्रे आवी सरव देव रिधि साथे नमन कर्युं, ए संजम दयानो प्रभाव छे.

श्री ज्ञातासुत्रना प्रथम अध्ययनमां मेघ कुमारे पुर्व जन्मांतरे तिर्यंच हाथीना भवमां भद्र प्रणामे वनमां दावानळना प्रज्वलित तापथी भय पामता एक ससलाने बचाववानी खातर पोतानो पग उंचो तोळी राखीने पोताना भारे शरीरने महद तस्दी आपी ते कारणथी पोतानो प्राण त्याग थइ गयो, त्यां भद्र स्वभावे मनुष्य भवनुं आयुष्य उपार्जीने मेघ कुमार थया पछी संजमजोगे मर्णांतकार्य साधीने विजय वैमानमां बत्रिस सागरोपमनी स्थिति भोगवी. महाविदेह क्षेत्रे मनुष्यभव प्राप्तना वखतमां संजमानुष्टांन साधीने मोक्ष प्राप्त थशे. ए सर्व दयाधर्मनोज प्रभाव छे.

एमज सोळमा शांतिनाथ तिर्थंकरनुं पुर्व जन्मांतर एटले दशमा भवमां मेघरथ राजा एवुं नाम हतुं. त्यां कार्मीक देवकृत्य पारेवानो बचाव करवा माटे कार्मीक देवकृत्य सिचाणाना कहेवाथी पोताना शरीरनुं मांस कापीकापीने त्राजवे भर्युं. तेम छतां सिचाणानी धारेली मुराद हांसल न थतां पोते सर्वांगे सिचाणाने अर्पण थया. त्यां दयाना परिणामथी तिर्थंकर गोत्र उपार्ज्युं छे. ते पण दयानोज प्रभाव छे. जेम ए देवकृत्य पारेवानो बचाव करवानी खातर मेघरथ राजाए पोतानुं स-

वांग सिचाणाने भक्षण करवा अर्पण कर्युं तो कुदरती साचा प्राणीओने बचाववा दया धर्मीओ शुं न करे ? जे धारे ते करवा कदी चुके नहीं. ए सर्व दयानोज प्रभाव छे. परंतु तेमां कांइ हिंसानो प्रभाव नथी.

प्रश्न—व्याकरणना छठ्ठा अध्ययनमां कह्युं छे जे अहोपुज्य ! दयाना वीरुद्ध धरनार कोण कोण पुरुष छे ? ते पाठ जगनायकेहंत्रिलोयमहिएहं भावार्थ—सर्व जगतना नाथ अने त्रण लोकना महिए एटले यथागुणे पुजनिक एवा तिर्थंकर महाराज पोते दया पाळवा उद्यमवंत थया. तेमज सामान्य केवळी, तथा मनपर्यवज्ञानी तथा अवधज्ञानी तथा मतिश्रुती ज्ञानी तथा लब्धिधर विगेरे जे जे दया धर्ममां उत्तम पुरुष थया ते सर्व दया धर्मनीज वृद्धि कर्त्ताछे. एम सर्व सुत्रार्थमां खुलीरीते निरापक्षपणे पाठ छे. वळितिर्थंकर चक्रवर्ती वासुदेव, वळदेव, ए पदवीधर थया, ते सर्व संजम दयाना प्रभावछे, हिंसाना कृत्यथी कोइ पण सिद्धांतमां उत्तम कार्यनी फतेह मेळवी, तेवुं द्रष्टि गोचरे आवतुं नथी. तेथी ए खातरीबंध दयाधर्म सर्वोपरी छे, अने आत्मगुणना मुळभेद खोलववानी दयारुप कुंची समजवी. केमजे दशवीकालीक सूत्रना छठ्ठा अध्ययननी नवमी गाथामां कह्युं छे ते नीचे मुजब.

तथ्थिमंपढमंठाणंमहाविरेणदेसियं
अहिंसानिउणादीठासव्वभुएसुसंजमो ९

भावार्थ—तेज मोक्ष साधना करवाना वखतमां प्रथम धर्मनुं स्थानक ते अहिंसा. अर्थात. दयाज दीठी एटले सर्व प्राणीभुतनुं रक्षण करवुं. तेज संजमगुण धर्म वृद्धि करनार छे. एम जाणीने केवळज्ञानना उदयकाळमां भव प्राणीने बोध निचे मुजब कर्यो छे.

गाथा. जावंतिलोयपाणातस्साअदुवथावरा
तेजाणंमजाणंवानहणेनोविघायए १०

भावार्थ—वळी दशमी गाथामां कह्युं छे जे अरे धर्मार्थी आ लोकमां जेटला प्राणी छे, ते त्रस तथा स्थावर बे जातना छे. ते सर्वने जाणतां या अजाणतां कोइ कार्य कल्पिने न हणो न हणो. मतळब के दया करो. वळी उत्तराध्ययन सतरमानी गाथा छठीमां कह्युं छे जे साधपणुं नाम धरावीने हिंसानो बोध करे तेज महापापी.

गाथा. समदमाणीपाणाणीबियाणिहरियाणिय;
असंजएसंजयमनमाणेपावसमणेतिवुचई ६

भावार्थ—जे पुरुष साधपणुं लइने पान, फळ, फुल, हरीकाय तथा बीजनी जात विगेरेनी हिंसा करे या करावे या कर्त्ताने भलु जाणे तेने पापी समण कह्या छे. माटे दया श्रेष्ठ छे.

गाथा. ताणिठाणाणिगछंतिसिखितासंजमंतवं;
भिख्खाएवागिहथेवाजेसंतिपरिनिव्वुडा. २८

भावार्थ—उत्तराध्ययन पांचमानी अठावीसमी गाथामां कह्युं छे जे धर्मार्थी साधु तथा गृहस्थी ए बेउ मोक्षार्थी संजम तपनी आराधना करीने मुक्तिपद योग्य थाय.

एम गृहस्थोने पण तप संजमनी दयाकरणी बतावी छे, अने आश्रव त्याग करवानुं कहुं छे, अने जीनेश्वर देवनी आज्ञा तो एकांत निर्वद्य छे, अने भुत भविष्य अने वर्तमान काळे पण तेज संवरकर्णीनो बोध थशे, पण आश्रव स्थापवा कोइ तिर्थंकरे कहेलुं नथी, सर्व स्थळे दया स्थापित छे.

गाथा. सवणेनाणेविनाणेपच्चख्खाणेयसंजमे,
अणन्हएतवेचेववोदाणेअकीरियासिद्धि. १

भावार्थ—भगवतिजीमां कहुं छे जे साधुमुनी राजनी संगत करतां सुत्र सांभळवा पामे १ अने सांभळतां ज्ञान प्राप्ति थाय २ पछी विज्ञान एटले अनुभव प्रगट थाय ३ पछी यथायोग्य पचखाण आवे ४ पछी तेहनुं फळ संजम गुण प्रगटे ५ तेहनुं फळ जीनआज्ञा प्रमाणे अन आश्रवी[1] थाय ६ पछी बारे भेदे तप करे ७ एमज निश्चे कर्मना बंधनोने निकंदन करे ८ पछी अकीरिए ऐटले क्रिया रहित थाय ९ पछी सिद्धि गइ एटले सिद्धपद पामे छे १० एम साधु महाराजाओना प्रसंगथी दश फळ मळे छे. तेथी कहेवानुं के ज्ञानी पुरुषना समागमनो लाभ ज्ञान वृद्धिनी साथे आत्मकल्याणिक दया, संजमने तपनो लाभ मळे ए सुत्रवाक्य अवश्य छे. अने अज्ञानी वेषधारी माया, कपटी, पडवाइ, रसना लोलपी छकायना अहित वंछक एवा दिर्घाश्रवी ऐटले मोटा आश्रव आरंभ करवा वाळाओनी संगत करवाथी मजकुर दशगुण नाश पामीने अवळी रीतना दशगुण दुर्गतिदायक प्रगट

---

१ आश्रव रहित.

थायछे. माटे ए मजकुर गाथानो मतलब ए छे के हिंसाबोधकनी सोबतथी तरी चालवुं. तेथी अरे धर्मना अर्थीओ ! दिर्घाश्री आरंभ कर्त्तानो संग तजी दयामार्ग शुद्ध करो ! वळी वितराग देवे मोक्षमार्ग प्रकाश करवाने आद्ये छकाय जीवना हितवंच्छक थइने दयाधर्ममां पोतानी तथा परप्राणीओनी दया बतावीने ते पछी श्रावकधर्म तथा साधुधर्मना भेद बताव्या छे. तेमां दयाना भेदनो कुल समावेश आवी गएलो छे. परंतु एकली दयाज एम नहीं धारता. सर्व सिद्धांतोनो सार. आयाभावजाणतीतंसव्वंजाणई. जेणे पोताना आत्मानुं स्वरुप जगत कार्मीकथी जुदुंज जाण्युं तेणे सर्व जाण्युं, अने जेणे पोताना आत्मिक भावने न जाण्यो ते सर्व वस्तु थकी अजाण थइनेज जगतनापर पुदगळिक भावमां भमे छे. माटे अरे भोळा प्राणीओ ! जे वितरागे जगतना भवजीवोने तारवानी बुद्धिए प्रथम दया धर्मनो उपदेश कर्यो छे, ते सर्व तमारा जोवामां आवतां छतां आम एकदम अवळी प्रवर्तीमां फसाइ जइने महा आरंभनी आदृतिमां आरंभ साधनानी कल्पना करवा उत्साह धरोछो, ए केवुं आश्चर्यकारक ! ! ! वळी दशवीकाळिकना चोथा अध्ययनमां कह्युं छे जे.

गाथा. जयंचरेजयंचिठ्ठेजयंमासेजयंसए,
जयंभुजंतोभासंतोपाव्वकम्मंनबंधइ. ८

भावार्थ—आठमी गाथामां संजम धरनार मुनीने कह्युं छे जे अरे धर्मार्थी छकाय जीवोना प्राण राखवानी खातर अने तारा आत्माने कर्मरुप बंधनोथी मुक्त करवाने माटे मोक्ष मार्गमां जतना करीने चालजे, या उभो रहेजे, या बेसजे, या संथारे सयन करजे, या निर्दोपी भोजन करजे, या निर्दोषी भाषा बोलजे, एवी रीते सदा उपयोगमां वर्तशो तो पाप एटले जीवहिंसारुप कर्मना बंधनमां नहीं बंधाओ. ए मजकुर गाथाना अर्थनो फेलाव करतां पार आवे तेम नथी. माटे सूलभबोधी सज्जनोए खरुं ध्यान आपीने समजवुं एवी रीते सर्व गणधर माहाराजे सर्वज्ञ केवळी भगवंतनी शाक्षि साथे सिद्धांतो गुंथेला छे. ते सर्वनो भावार्थ आद्य पर्यंत सरखावतां एक अंशमात्र पण फेरफार न थाय एम सिद्ध थएलुं छे.

परंतु काळांतरे केवळज्ञानी महाराजना विरह काळ पछी जे जे आचार्ये सिद्धांतोना आधार उपर ध्यान आपीने पोतानी नामदारीने माटे ग्रंथना प्रबंध बांधेला छे. तेमां केटलोक भाग तो मुळ शास्त्रोने अनुसरीने रचेलो छे, अने केटलोक भाग

देशकाळ प्रवर्तावा माटे या पंचमा काळना उत्पातने लीधे बुद्धिमां न समजायाथी, या पोताना भरणपोषणमां हरकतो न आववादेवी एवा अनेक विचारोनी साथे प्रपंची शब्दोना समावेशथी मिश्रित करीने मुळ शास्त्रथी वहार बीजा ग्रंथो आशरे एक लाख अने आडत्रिस हजार रचाया छे, तेमां केटलाएक ग्रंथोमां तो एकांत आरंभ समारंभथी पुजानोज पाठ समावेश करेलो छे. तेमज केटलाएक ग्रंथोमां सारंभथि, गुरुभक्तिनोज समावेश करेलो छे. तेमज केटलाएक ग्रंथोमां एकला पहाड पर्वते तिर्थ कल्पि देरां चणावीने पाषाणादिकनी प्रतिमा बेसाडवा माटे महद्फळ बतावी महा आरंभनोज समावेश करेलो छे. तेमज केटलाएक ग्रंथोमां तो मजकुर तिर्थोए जात्रा जवुं, तेना आरंभमां मळता लाभनोज समावेश करेलो छे. एवी रीते जे जे ग्रंथ कर्त्ता आचार्योंने काळना माहात्म प्रमाणे पोताना तथा शेवकोना मनने प्रसंन करवाना कारणो सुझतां गयां तेवी तेवी बाबतमां ग्रंथो स्वइच्छाए रची रचीने तेनुं महात्म वधारता गया. परंतु तेमां लोकोपयोगी मनरंजीत करवाना वहेवारोनी पुष्टिना ग्रंथो रच्या, तेमज पोताना शारिरीक सुखनो लाभ मळे तेवो बोध करता गया, ते सबबथी मूळ सूत्रोनो भाग अल्प रह्यो, ने ग्रंथोनो भाग वधी गयो. माटे आ ठेकाणे धर्मीजनोने जाणवानुं एटलुंज के ते आचार्यना करेला मिश्र ग्रंथने तथा गणधर महाराजे केवळज्ञानी महाराजनी शाक्षिथी गुंथेला मूळ सुत्र, ते बंनेने सरखावतां परस्पर भेद पडेलो छे, ते तरत मालम पडी आवशे. मतलब के अनंत ज्ञाननी शक्तिए जे सुत्रो रचेला छे, तेमां आद्य पर्यंत, निर्वद्य अने निर्लेपबोध मळी आवे छे; अने कळीकाळना आचार्योए रचेला ग्रंथो छे, तेमां ज्यां सुधी मूळ सूत्रोनो आधार राखीने रच्या त्यां सुधी निर्वद्य अने निर्लेपबोध दाखल कर्यो छे. परंतु कळीकाळना प्रवर्तमाननो स्वभाव उदय थयो, त्यारे सूत्रथी उलटी रीते हिंसा बोधकमां उतरी पडीने मजकुर ग्रंथोमां दयारुप वाक्यतो जुज वापरेला छे, ने हिंसा वचनमांतो कांइ खामीज राखेली नथी. तो अहो मित्रो! तेवा ग्रंथोने सिद्धांतोरुप केम कहेवाय? ते विवेकीजनोए वहारिक ज्ञानचक्षुथी विचारी लेवुं. परंतु आ स्थळे अमारे कहेवानो हेतु एटलोज छे के जे जे ग्रंथोमां जे जे वात, जे जे अर्थ, ने जे जे शब्द मूळ शास्त्रना बोधने विरुद्ध पडतां न आवे, तेमज निर्वद्य वचन वितरागना बोध प्रमाणेज मळी आवे, ते सर्व प्रमाण करवुं, ए विद्वता तथा स्वधर्मनी पुष्टि कर्त्ता छे. मतलब के आचारंग सूत्रमां तथा नंदी सूत्रमां कह्युं छे जे मिथ्यात्व सूत्र समकितीना हाथमां आवे त्यारे ते उपरथी समकिती जीव,

निर्वद्यबोध करीने धर्म दीपावे; तेमज दयानो फेलाव करे. माटे ते समकित, नीश्रित वेद, पुराण, कुरान विगेरे समकित सुत्र समजवा, ए निःसंदेह. परंतु जे अगियार अंग तथा बार ऊपांगादिक जैनधर्मना समकित सुत्रछे. ते अन्य दर्शनीना हाथमां जाय, त्यारे ते घणिज निर्वद्य भाषाथी भरपुर होय. पण अन्यदर्शनीओ ते सुत्रोना सावद्य भाषाथी बोध वापरण करेछे. तेवा हेतुथी ते सुत्रोने मिथ्यात्व निश्रित मिथ्यात्व सुत्र कहीए. माटे अरे मित्रो ! जे जे शास्त्रोना वाक्यथी निर्मळ गुण, या ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपनी पुष्टि थाय, ते सर्व वाक्यो मान्य पुज्य योग्य छे. सबब के वितरागे सर्व सुत्रोनोतो निर्वद्य बोध करेलोज छे. परंतु अन्य मतना शास्त्रमां शुद्ध धर्मनुं साधन करवा माटे श्रीमद भगवतगीताना बारमा अध्यायना त्रीजा ने चोथा श्लोकमां कह्युं छे के.

येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तंपर्युपासते;
सर्वत्रागमचिंत्यंचकूटस्थमचलंध्रुवं. ३
सन्नियम्येंद्रियग्रामंसर्वत्रसमबुद्धयः
तेप्राप्नुवंतिमामेवसर्वभूतहितेरताः ४

भावार्थ—जे सर्व प्राणीनुं भलुं इच्छवामां सदा तत्पर ने इंद्रिय समुदायने नियममां राखीने सर्व ठेकाणे समबुद्धि सहित अक्षरनी देस्य, अव्यगत, सर्वव्यापक, अचित्य, कुटस्थ अचळ, ध्रुव, एवा स्वरुपने चित्त रमे, ते परमात्माना पदने पहोंचे एमां शुं आश्चर्य छे ? ?

श्रेयोहिज्ञानमभ्यास्याज्ज्ञानाद्ध्यानंविशिष्यते;
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छांतिरनंतरम् १२.

भावार्थ—श्रेष्ठ जन्म एनो के जे आत्मिक सार्थकने माटे ज्ञान अभ्यास करे छे; अने ते ज्ञान वृद्धिना लाभमां महद्शुद्ध ध्यान प्रगट थशे, तेमज ते शुद्ध ध्यान प्रभावथी जन्मांतरना उपार्जेलां कर्मोना फळनो त्याग थशे. अर्थांत. त्याग धर्म प्रगटवाथीज मोक्ष धर्मनां मळी जवाय छे, माटे ज्ञान अभ्यासमां शान्त दशानो स्वभाव छे. ने ते स्वभावथी पोतानुं तथा सर्व जंतुओनुं रक्षण करे, ते नीचे मुजब.

अद्वेष्टासर्वभूतानांमैत्रःकरुणएवच;
निर्ममोनिरहंकारःसमदुःखसुखःक्षमी १३

देशकाळ प्रवर्ताववा माटे या पंचमा काळना उत्पातने लीधे बुद्धिमां न समजायाथी, या पोताना भरणपोषणमां हरकतो न आववादेवी एवा अनेक विचारोनी साथे प्रपंची शब्दोना समावेशथी मिश्रित करीने मुळ शास्त्रथी वहार बीजा ग्रंथो आशरे एक लाख अने आडत्रिस हजार रचाया छे, तेमां केटलाएक ग्रंथोमां तो एकांत आरंभ समारंभथी पुजानोज पाठ समावेश करेलो छे. तेमज केटलाएक ग्रंथोमां सारंभथि, गुरुभक्तिनोज समावेश करेलो छे. तेमज केटलाएक ग्रंथोमां एकला पहाड पर्वते तिर्थ कल्पि देरां चणावीने पाषाणादिकनी प्रतिमा बेसाडवा माटे महदफळ वतावी महा आरंभनोज समावेश करेलो छे. तेमज केटलाएक ग्रंथोमां तो मजकुर तिर्थोए जात्रा जवुं, तेना आरंभमां मळता लाभनोज समावेश करेलो छे. एवी रीते जे जे ग्रंथ कर्त्ता आचार्योंने काळना माहात्म प्रमाणे पोताना तथा शेवकोना मनने प्रसंन करवाना कारणो सुझतां गयां तेवी तेवी वावतमां ग्रंथो स्वइच्छाए रची रचीने तेनुं महात्म वधारता गया. परंतु तेमां लोकोपयोगी मनरंजीत करवाना वहेवारोनी पुष्टिना ग्रंथो रच्या, तेमज पोताना शारिरीक सुखनो लाभ मळे तेवो बोध करता गया, ते सववथी मूळ सूत्रोनो भाग अल्प रह्यो, ने ग्रंथोनो भाग वधी गयो. माटे आ ठेकाणे धर्मीजनोने जाणवानुं एटलुंज के ते आचार्यना करेला मिश्र ग्रंथने तथा गणधर महाराजे केवळज्ञानी महाराजनी शाक्षिथी गुंथेला मूळ सुत्र, ते बंनेने सरखावतां परस्पर भेद पडेलो छे, ते तरत मालम पडी आवशे. मतलब के अनंत ज्ञाननी शक्तिए जे सुत्रो रचेला छे, तेमां आद्य पर्यंत, निर्वद्य अने निर्लेपवोध मळी आवे छे; अने कळीकाळना आचार्योंए रचेला ग्रंथो छे, तेमां ज्यां सुधी मूळ सूत्रोनो आधार राखीने रच्या त्यां सुधी निर्वद्य अने निर्लेपबोध दाखल कर्यो छे. परंतु कळीकाळना प्रवर्तमाननो स्वभाव उदय थयो, त्यारे सूत्रथी उलटी रीते हिंसा बोधकमां उतरी पडीने मजकुर ग्रंथोमां दयारुप वाक्यतो जुज वापरेला छे, ने हिंसा वचनमांतो कांइ खामीज राखेली नथी. तो अहो मित्रो! तेवा ग्रंथोने सिद्धांतोरुप केम कहेवाय? ते विवेकीजनोए वहारिक ज्ञानचक्षुथी विचारी लेवुं. परंतु आ स्थळे अमारे कहेवानो हेतु एटलोज छे के जे जे ग्रंथोमां जे जे वात, जे जे अर्थ, ने जे जे शब्द मूळ शास्त्रना बोधने विरुद्ध पडतां न आवे, तेमज निर्वद्य वचन वितरागना बोध प्रमाणेज मळी आवे, ते सर्व प्रमाण करवुं, ए विद्वता तथा स्वधर्मनी पुष्टि कर्त्ता छे. मतलब के आचारंग सूत्रमां तथा नंदी सूत्रमां कह्युं छे जे मिथ्यात्व सूत्र समकितीना हाथमां आवे त्यारे ते उपरथी समकिती जीव,

निर्वद्यबोध करीने धर्म दीपावे; तेमज दयानो फेलाव करे. माटे ते समकित, नी-
श्रित वेद, पुराण, कुरान विगेरे समकित सुत्र समजवा, ए निःसंदेह. परंतु जे अ-
गियार अंग तथा बार ऊपांगादिक जैनधर्मना समकित सूत्रछे. ते अन्य दर्शनीना
हाथमां जाय, त्यारे ते घणिज निर्वद्य भाषाथी भरपुर होय. पण अन्यदर्शनीओ ते
सुत्रोना सावद्य भाषाथी वोध वापरण करेछे. तेवा हेतुथी ते सुत्रोने मिथ्यात्व नि-
श्रित मिथ्यात्व सुत्र कहीए. माटे अरे मित्रो ! जे जे शास्त्रोना वाक्यथी निर्मळ गुण,
या ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपनी पुष्टि थाय, ते सर्व वाक्यो मान्य पुज्य योग्य
छे. सवव के वितरागे सर्व सुत्रोनोतो निर्वद्य बोध करेलोज छे. परंतु अन्य मतना
शास्त्रमां शुद्ध धर्मनुं साधन करवा माटे श्रीमद भगवतगीताना बारमा अध्यायना
त्रीजा ने चोथा श्लोकमां कह्युं छे के.

येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तंपर्युपासते;
सर्वत्रागमचिंत्यंचकूटस्थमचलंध्रुवं. ३
सन्नियम्येंद्रियग्रामंसर्वत्रसमबुद्धयः
तेप्रान्पुवंतिमामेवसर्वभूतहितेरताः ४

भावार्थ—जे सर्व प्राणीनुं भलुं इच्छवामां सदा तत्पर ने इंद्रिय समुदायने
नियममां राखीने सर्व ठेकाणे समबुद्धि सहित अक्षरनी देस्य, अव्यगत, सर्व व्यापक,
अचित्य, कुटस्थ अचळ, ध्वरु, एवा स्वरुपने विषे रमे, ते परमात्माना पदने पहोंचे
एमां शुं आश्चर्य छे ? ?

श्रेयोहिज्ञानमभ्यास्याज्ज्ञानात्ध्यानंविशिष्यते;
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छांतिरनंतरम् १२.

भावार्थ—श्रेष्ट जन्म एनो के जे आत्मिक सार्थकने माटे ज्ञान अभ्यास करे
छे; अने ते ज्ञान वृद्धिना लाभमां महदशुद्ध ध्यान प्रगट थशे, तेमज ते शुद्ध ध्यान
प्रभावथी जन्मांतरना उपार्जेलां कर्मोना फळनो त्याग थशे. अर्थात. त्याग धर्म
प्रगटवाथीज मोक्ष धर्ममां मळी जवाय छे, माटे ज्ञान अभ्यासमां शान्त दशानो
स्वभाव छे. ने ते स्वभावथी पोतानुं तथा सर्व जंतुओनुं रक्षण करे, ते नीचे मुजव.

अद्वेष्टासर्वभूतानांमैत्रःकरुणएवच;
निर्ममोनिरहंकारःसमदुःखसुखःक्षमी १३

भावार्थ—जे ज्ञानी धर्मीपुरुष छे तेने द्वेष नथी, अने ते सर्व भुतनो मित्र दयावान स्वभावमां मग्न रहे छे, तथा अहंकारादिक ममता रहित रहे छे. वळी जेने सुख अने दुःख समान छे ने सदा दयाने क्षमानो निःग्रह करेलोछे, एवा पुरुषोने संसारमांथी तरी जवुं सुगमछे वळी गिताना तेरमां अध्यायनो सातमो श्लोक नीचे मुजब.

अमानित्वंअदंभित्वमहिंसाक्षांतिरार्जवम् ॥
आचार्योपासनंशौचंस्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥७॥

भावार्थ—हवे ज्ञानी आत्मा केम केहेवाय ? अहो अरजुन ! जेमां निराभिमानपणुं तथा अदंभिपणुं तथा अहिंसापणुं तथा शांती एटले क्षमापणुं तथा पोताना आत्मानुंसदा निर्मळपणुं तथा जेणे धर्मनो रस्तो बताव्यो ते आचार्यनी यथायोग्य भक्ति त्रिकर्णशुद्धे करवी, तथा आत्माना मुळ, गुणोने आधारे अशुद्ध कर्मोथी जय पामवुं ते. ए सर्व गुणज्ञानी आत्मामाटेज घटेछे ने तेना सर्व गुण सिद्धि छे तेमज तेरमा अध्यायनो अगियारमो श्लोक.

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वंतत्वज्ञानार्थदर्शनं ॥
एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तमज्ञानंयदतोन्यथा ॥ ११ ॥

भावार्थ—जेने अध्यातम ज्ञानमां नित्य विचार छे, अने तत्व ज्ञानना अर्थनुं सर्वदा जोवापणुं छे; तेनुं नाम ज्ञान कहेवाय. माटे ए विना जे जे अनेक कार्यो छे तेने अहो अरजुन ! अज्ञानतानुंजरुप समज ! वळी पंदरमा अध्यायनो अगीयारमो श्लोक.

यतंतोयोगिनश्चैनंपश्यंत्यात्मन्यवस्थितं ॥
यंततोप्यकृतात्मानोनैनंपश्यंत्यचेतस ॥ ११ ॥

भावार्थ—स्व तथा पर आत्माना यत्न करनारा जोगी पुरुष पोतानी ज्ञानबुद्धिमां रहेला जीवने सदाय जुवे छे. तेवा पुरुष आ जगतमां सर्वोपरी छे. परंतु जेणे ज्ञानीपणुं धरावीने पोताना चितनुं साधन करेलुं नथी, तेवा मुढ जडबुद्धिवाळा जतनावंत नाम धरावतां छतां पण पोताने तथा परने देखवा सामर्थ्य थता नथी एवा अजाण प्राणी मोक्ष लायक पण नथीज. वळी सोळमा अध्यायना बीजा श्लोकमां संसार तारनार सदगुणी पुरुषनां लक्षण बताव्यां छे, ते निचे मुजब.

भावार्थ—जे ज्ञानी धर्मीपुरुष छे तेने द्वेष नथी, अने ते सर्व भुतनो मित्र दयावान स्वभावमां मग्न रहे छे, तथा अहंकारादिक ममता रहित रहे छे. वळी जेने सुख अने दुःख समान छे ने सदा दयाने क्षमानो निःग्रह करेलोछे, एवा पुरुषोने संसारमांथी तरी जवुं सुगमछे वळी गिताना तेरमां अध्यायनो सातमो श्लोक नीचे मुजब.

अमानित्वंअदंभित्वमहिंसाक्षांतिरार्जवम् ॥
आचार्योपासनंशौचंस्थैर्यमात्मविंनिग्रहः ॥७॥

भावार्थ—हवे ज्ञानी आत्मा केम केहेवाय ? अहो अरजुन ! जेमां निराभिमानपणुं तथा अदंभिपणुं तथा अहिंसापणुं तथा शांती एटले क्षमापणुं तथा पोताना आत्मानुंसदा निर्मळपणुं तथा जेणे धर्मनो रस्तो वताव्यो ते आचार्यनी यथायोग्य भक्ति त्रिकर्णशुद्धे करवी, तथा आत्माना मुळ, गुणोने आधारे अशुद्ध कर्मोथी जय पामवुं ते. ए सर्व गुणज्ञानी आत्मामाटेज घटेछे ने तेना सर्व गुण सिद्धि छे तेमज तेरमा अध्यायनो अगियारमो श्लोक.

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वंतत्वज्ञानार्थदर्शनं ॥
एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तमज्ञानंयदतोन्यथा ॥ ११ ॥

भावार्थ—जेने अध्यात्म ज्ञानमां नित्य विचार छे, अने तत्व ज्ञानना अर्थनुं सर्वदा जोवापणुं छे; तेनुं नाम ज्ञान कहेवाय. माटे ए विना जे जे अनेक कार्यो छे तेने अहो अरजुन ! अज्ञानतानुंजरुप समज ! वळी पंदरमा अध्यायनो अगीयारमो श्लोक.

यतंतोयोगिनश्चैनंपश्यंत्यात्मन्यवस्थितं ॥
यंततोप्यकृतात्मानोनैनंपश्यंत्यचेतस ॥ ११ ॥

भावार्थ—स्व तथा पर आत्माना यत्न करनारा जोगी पुरुष पोतानी ज्ञानबुद्धिमां रहेला जीवने सदाय जुवे छे. तेवा पुरुष आ जगतमां सर्वोपरी छे. परंतु जेणे ज्ञानीपणुं धरावीने पोताना चित्तनुं साधन करेलुं नथी, तेवा मुढ जडबुद्धिवाळा जतनावंत नाम धरावतां छतां पण पोताने तथा परने देखवा सामर्थ्य थता नथी एवा अजाण प्राणी मोक्ष लायक पण नथीज. वळी सोळमा अध्यायना बीजा श्लोकमां संसार तारनार सदगुणी पुरुषनां लक्षण वताव्यां छे, ते निचे मुजब.

अहिंसासत्यमक्रोधस्त्यागःशांतिरपैशुनम् ॥
दयाभुतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवंहीरचापलं ॥ २ ॥

भावार्थ—अहिंसा एटले जीवदया, सत्य, अक्रोधीपणुं, त्यागपणुं, शांत स्वभाव तथा अपैशुन्य एटले चाडीयापणुं जेणे छांडेलुं छे तथा सर्व भूतनी दयापाळे तथा अलंपटपणुं, मार्दव एटले सदा नीरार्भीपणुं, सदा लज्जावंतपणुं तथा स्थिर स्वभावथी अचपळतापणुं, ए सर्व गुण संपन होय ते पुरुष तरण तारण समजवो. ते सिवाय कोइ पुरुष तरवानो रस्तो बतावबा सामर्थ्य नथी. एवा निरापक्षी बोधरुपी वाक्यो परधर्मीओना दरेक शास्त्रमांथी मळी आवे छे तेम गजकुर श्लोकोनो बोध जैन धर्मना मुळ सिद्धांतोनी साथे परस्पर मळता जाणी ते वाक्यो धर्मीजनोने आचरण करवा योग्य छे. माटे जेटला वाक्यो निरापक्षी छे तेओने समकितसुत्रनी साथेज समजवां. परंतु जे जे वाक्यो समक्ति ज्ञानशास्त्रना मतने अणमळता होय ते सर्व हय एटले त्यागवा. एम शास्त्र अनुसारे ज्ञानदृष्टीथी विचारतां मालम पडे छे. पण कोइ धर्ममां दयाथी उल्टी रीते थइने हिंसा बुद्धिथी जीवनुं कल्याण थशे, एम कहेवातुं नथी. तो तमे दया धर्मी एवुं नाम धरावीने सर्व धर्मीक कार्योमां प्रथमथीज हिंसानुं प्रतिपादन करीने स्वआत्माना कल्याणनी धारेली मुराद हांसल करवा धारो छो तो ए कांइ जैन धर्मना शास्त्रोने अनुसारे समकीती कही सकाय नहीं. कारण के समकित सहित ज्ञान धरनार पुरुषोनुं सदा चोख्खुं चित्त सर्व प्राणीओना रक्षणने माटेज होय. परंतु कोइपण प्राणीना प्राणना बचावमां गेरहांसलरुप न होय, एम तो शास्त्रमां खुल्लुं मालम पडेलुं छे पण तपामति घणाज ताता एटले गरम अग्निरुप स्वभावना वाक्योथी दयारुप बोधना करनार उत्तम धर्मीओनी सामे हिंसानुं प्रतिपादन करवा अनेक कुतर्कों सहित वांधो लेवा तत्पर थाय छे, अने स्व अभिमानथी हिंसा धर्मनी पुष्टि करवानी खातर वितराग भाषित मुळ शास्त्रोनुं उलंघन करे छे. एवी अज्ञान बुद्धि राखनार हिंसामतवाळाओने जैनना मुळ शास्त्रोनी महेलीका जोतांतो संसारीक दुःखथी मुक्त थइ जवुं ए महा मुश्केल छे. परंतु अन्य धर्मना शास्त्रोमां पण शाक्षि छे. ते नीचे मुजब.

गीताना सोळमा अध्यायनो अढारमो श्लोक.

अहंकारंबलंदर्पंकामंक्रोधंचसंश्रिताः
ममात्मपरदेहेषुप्रद्वीषंतोभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥

भावार्थ—जे ज्ञानी धर्मीपुरुष छे तेने द्वेष नथी, अने ते सर्व भुतनो मित्र दयावान स्वभावमां मग्न रहे छे, तथा अहंकारादिक ममता रहित रहे छे. वळी जेने सुख अने दुःख समान छे ने सदा दयाने क्षमानो निःग्रह करेलोछे, एवा पुरुषोने संसारमांथी तरी जवुं सुगमछे वळी गिताना तेरमां अध्यायनो सातमो श्लोक नीचे मुजब.

अमानित्वंअदंभित्वमहिंसाक्षांतिरार्जवम् ॥
आचार्योपासनंशौचंस्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥७॥

भावार्थ—हवे ज्ञानी आत्मा केम केहेवाय ? अहो अरजुन ! जेमां निराभिमानपणुं तथा अदंभिपणुं तथा अहिंसापणुं तथा शांती एटले क्षमापणुं तथा पोताना आत्मानुंसदा निर्मळपणुं तथा जेणे धर्मनो रस्तो बताव्यो ते आचार्यनी यथायोग्य भक्ति त्रिकर्णशुद्धे करवी, तथा आत्माना मुळ, गुणोने आधारे अशुद्ध कर्मोथी जय पामवुं ते. ए सर्व गुणज्ञानी आत्मामाटेज घटेछे ने तेना सर्व गुण सिद्धि छे तेमज तेरमा अध्यायनो अगियारमो श्लोक.

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वंतत्वज्ञानार्थदर्शनं ॥
एतज्ञानमितिप्रोक्तमज्ञानंयदतोन्यथा ॥ ११ ॥

भावार्थ—जेने अध्यातम ज्ञानमां नित्य विचार छे, अने तत्व ज्ञानना अर्थनुं सर्वदा जोवापणुं छे; तेनुं नाम ज्ञान कहेवाय. माटे ए विना जे जे अनेक कार्यो छे तेने अहो अरजुन ! अज्ञानतानुंजरुप समज ! वळी पंदरमा अध्यायनो अगीयारमो श्लोक.

यतंतोयोगिनश्चैनंपश्यंत्यात्मन्यवस्थितं ॥
यंततोप्यकृतात्मानोनैनंपश्यंत्यचेतस ॥ ११ ॥

भावार्थ—स्व तथा पर आत्माना यत्न करनारा जोगी पुरुष पोतानी ज्ञानबुद्धिमां रहेला जीवने सदाय जुवे छे. तेवा पुरुष आ जगतमां सर्वोपरी छे. परंतु जेणे ज्ञानीपणुं धरावीने पोताना चितनुं साधन करेलुं नथी, तेवा मुढ जडबुद्धिवाळा जतनावंत नाम धरावतां छतां पण पोताने तथा परने देखवा सामर्थ्य थता नथी एवा अजाण प्राणी मोक्ष लायक पण नथीज. वळी सोळमा अध्यायना बीजा श्लोकमां संसार तारनार सदगुणी पुरुषनां लक्षण बताव्यां छे, ते निचे मुजब.

अहिंसासत्यमक्रोधस्त्यागःशांतिरपैशुनम् ॥
दयाभूतेष्वलोलुप्त्वंमार्दवंह्रीरचापलं ॥ २ ॥

भावार्थ—अहिंसा एटले जीवदया, सत्य, अक्रोधीपणुं, त्यागपणुं, शांत स्वभाव तथा अपै शुन्य एटले चाडीयापणुं जेणे छांडेलुं छे तथा सर्व भूतनी दयापाळे तथा अलंपटपणुं, मार्दव एटले सदा नीराभीपणुं, सदा लज्जावंतपणुं तथा स्थिर स्वभावथी अचपळतापणुं, ए सर्व गुण संपन होय ते पुरुष तरण तारण समजवो. ते सिवाय कोइ पुरुष तरवानो रस्तो बताववा सामर्थ्ये नथी. एवा निरापक्षी बोधरुपी वाक्यो परधर्मीओना दरेक शास्त्रमांथी मळी आवे छे तेम मजकुर श्लोकोनो बोध जैन धर्मना मुळ सिद्धांतोनी साथे परस्पर मळता जाणी ते वाक्यो धर्मीजनोने आचरण करवा योग्य छे. माटे जेटला वाक्यो निरापक्षी छे तेओने समक्तिसुत्रनी साथेज समजवां. परंतु जे जे वाक्यो समक्ति ज्ञानशास्त्रना मतने अणमळता होय ते सर्व हय एटले त्यागवा. एम शास्त्र अनुसारे ज्ञानद्रष्टीथी विचारतां मालम पडे छे. पण कोइ धर्ममां दयाथी उलटी रीते थइने हिंसा बुद्धिथी जीवनुं कल्याण थशे, एम कहेवातुं नथी. तो तमे दया धर्मी एवुं नाम धरावीने सर्व धर्मीक कार्योमां प्रथमथीज हिंसानुं प्रतिपादन करीने स्वआत्माना कल्याणनी धारेली मुराद हांसल करवा धारो छो तो ए कांइ जैन धर्मना शास्त्रोने अनुसारे समकीती कही सकाय नहीं. कारण के समकित सहित ज्ञान धरनार पुरुषोनुं सदा चोख्खुं चित्त सर्व प्राणीओना रक्षणने माटेज होय. परंतु कोइपण प्राणीना प्राणना बचावमां गेरहांसलरुप न होय, एम तो शास्त्रमां खुल्लुं मालम पडेलुं छे पण तपामति घणाज ताता एटले गरम अग्निरुप स्वभावना वाक्योथी दयारुप बोधना करनार उत्तम धर्मीओनी सामे हिंसानुं प्रतिपादन करवा अनेक कुतर्को सहित वांधो लेवा तत्पर थाय छे, अने स्व अभिमानथी हिंसा धर्मनी पुष्टि करवानी खातर वितराग भाषित मुळ शास्त्रोनुं उलंघन करे छे. एवी अज्ञान बुद्धि राखनार हिंसामतवाळाओने जैनना मुळ शास्त्रोनी महेळीका जोतांतो संसारीक दुःखथी मुक्त थइ जवुं ए महा मुश्केल छे. परंतु अन्य धर्मना शास्त्रोमां पण शाक्षि छे. ते नीचे मुजब.

गीताना सोळमा अध्यायनो अढारमो श्लोक.

अहंकारंबलंदर्पंकामंक्रोधंचसंश्रिताः
ममात्मपरदेहेषुप्रद्वीषंतोभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥

भावार्थ—आ जगतमां आ ज्ञानीजनो मद एटले अहंकारथी भरपुर रहे छे, ने एम कहे छे, जे अमारी ज्ञाती उंची ने मोटी, अमारुं कुळ श्रेष्ठ ने अमो मोटा धनाढय तथा अमो घणा शास्त्रोमां पारागत थया, ए विगेरे अनेक रीते स्वअभीमान करीने तेमज काम रागथी पुष्टि पामेलुं सदाय जेनुं अंतःकरण छे, तेमज पोतानी नीची बुद्धिथी ग्रहण करेलो कुपंथ तेनुं महातम वधारवा माटे सर्व जनोनी साथे क्रोधाकुळ थइने मजकुर कहेला दुराचर्णोना आश्रव करी शुद्ध, श्रेष्ठ अने निरापक्षी मार्गनी निंदा करे छे. एवा पुरुष पोते द्वेषरूप समुद्रमां घसडाइ जतां उत्तम धर्मीओने पण तेमज करवा धारे छे. तेवो प्राणी अहो अर्जुन ! पुरेपुरो मारो द्वेषी छे. एम अन्य शास्त्रोमांथी पण नीकळी आवे छे, तो तेवा पुरुषोनी बाबत जैन शास्त्रमां धिकारेली होय, तेमां शुं नवाइ छे ? ? ?

हवे आ प्रसंगे कहेवानुं जे आ पहेला प्रश्नमां दया पाळवानुं विवेचन शास्त्रोना आधारथी आपेलुं छे. तेमां केटलाएक अन्य शास्त्रोना श्लोको जैन शास्त्रना वाक्योने मळता जाणी सुत्र वचननी पुष्टि माटे दाखल करेला छे. परंतु तेहनो हेतु एटलोज के जैन धर्मना मुळशास्त्रोतो निर्वद्य बोधमां रचायां छे. पण अन्य दर्शनीओ छकायने सारंभे वर्ततां छतां तेमणे बनावेला ग्रंथमां केटलेक स्थळे निरापक्ष बुद्धिथी जाणे तेटली दया पाळवा विषे बोध करेलो छे. तो कहेवानुं एटलुंज के वितराग देवे छकायना बचावनी खातर सिद्धांतोनो निरापक्ष बोध करवामां कांइपण घट राखेली नथी. एम सुत्रना दयारुप वाक्योने सुत्रना आधारथी तथा अन्य दर्शनीनां शास्त्रो थी पुष्टि मळे छे. माटे वितरागनी आज्ञा दयामय छे, पण हिंसा करवानी नथी.

कयबलीकम्मानुं प्रश्नोत्तर.

१ प्राचिन काळमां घणा धनवान श्रावक गृहस्थो तथा घणा देशाधिपति जैनधर्मी राजाओ हता. तेओ सदगृहस्थाइना कारणथी पोताने रहेवाना मकानो बणावता त्यारे सुवाना, बेसवाना, स्नानमंजन करवाना, आभुषण पोशाक पहेरवाना ए विगेरे घणां जुदां जुदां खातानां मकानो बणावीने गृहस्थाइ चलावतां तेमज ते गृहस्थोने अमुक अमुक मांगळिक कार्यनो वखत आवतो, त्यारे दरेक गृहस्थ प्रथम स्नानमंजन करवाना घरमां जइने स्नान करवाना आसनपर बेसे, ते वखते तेने स्नान विधि करावनारा शेवको अनेक प्रकारना उत्तम द्रव्योथी मिश्रीत पीठी तेल विगेरेथी मर्दन करावे त्यारबाद अनेक जातीना पाणिथी स्नान करावे, ते स्नाननी विधिनो हेतु एटलोज के शरीरनी शुद्धताने माटे, तथा बळ, पुष्टि, पराक्रम वृद्धि

पमाडवाना हेतुए. ते विधिनो जे जे सुत्रमां अधिकार छे, त्यां " कयवळीकम्मा " एवो पाठ छे. हवे ए पाठनो अर्थ शरीरनुं बळ पुष्टि करवानो छे, त्यां केटलाएक मतावलंबीत पुरुषो मिथ्यात्वोदयथी आश्रव मार्गनी पुष्टिनी खातर टीकाना करनारे एम अर्थ कर्यो छे, जे घरना देवनी पुजा करवी. एटलोज अर्थ कर्यो छे. परंतु केटलाएक पोताना मतजंगथी ऐवी कुयुक्ति मेळवे छे जे समकिती श्रावकने घरेतो तिर्थंकरनी प्रतीमा छे, माटे श्रावकने घरना देव ते तिर्थंकरनी पुजाओ कहेली छे, एम अर्थ करेछे. तेओने कहेवानुं एटलुंज के टीकाना करनाराए तो तिर्थंकरनी प्रतिमा पुजवी, एम मुळगोज अर्थ कर्यो नथी. तो तमोए आवुं डहापण क्यांथी कहाडयुं ? मतलव के टीका करनारनो तथा तिर्थंकर ठरावनारनो परस्पर मत मळतो आवतो नथी, तेज अघटित छे.

हवे आ प्रसंगे अल्पमति मित्रोने कहेवानुं जे तिर्थंकर महाराजे व्यव्हार संवंधी भोगावळी कर्मने अंते वैरागदशाना लाभमां कार्मीक जगत जनोए चणेला घर वार विगेरे सर्वने छोडीने दीक्षा लीधी. त्यारबाद चार घंनघाती कर्मक्षय थइ जवाथी केवळज्ञान प्रगट थया पछी चार तिर्थ स्थापीने तेओना हेतने अर्थे उपदेश दइने व्यव्हारीक घरनां वंधनमांथी छोडावे छे. अने सासवतुं सिद्धपदरुप घर त्यां पहोंचाडवानो वोध करीने पोते वायुनी पेठे निर्वंधन रहेछे. पण कोइना मोहरुपी बंधनमां नथी. हवे तेवा तिर्थंकर महाराजने गृहस्थपणानी अवस्थामां पोताने रहेवाने माटे घर नहोतुं ? के ते तमारा भुंडा कुबामां आवी जुलमी पराधिनपणामां रही तमारा वज्जररुपी आंगळीना घोंका खावा घरना देव थइ रहे ! ! एम कदी कोइना तावामां रहेलाज नथी. मतलव के तेओनां नाम वितराग कहेवाय छे. एटले क्षय थइ गया राग बंधन. तो ते केना घरना देव छे ? वळी जेणे मात, पीता, स्त्री, पुत्रादिकनुं पण वंधन राखेलुं नहोतुं, तो तमो शुं वधारे तेमना खान दान हेतार्थे हता के तमारा घरना देव तरीके वसे ! एम कदी होयज नहीं. परंतु घरवारीना वंधनमां बंधइ जइने जे देव घरमां बिराजे छे, तेतो पित्र, सत्ति कुळदेव या कुळदेवी विगेरे व्यव्हारना भोगीदेव होय, तेज घरमां बेसे छे. वळी कदाच कोइ न बेसारे तो केटलाएकनां घरनां माणसने धूणावी धफावीने पण घरमां बेसे छे. माटे ए तमारा घरना देव होय तो ना कही शकता नथी. पण वितरागने माटे तो एम छे जे, जे दीवसथी तिर्थंकरे घर छांडेलुं हतुं, ते दीवसथी ज्यां ज्यां विहार करीने गया त्यां त्यां शहेरोमां अने वहार या कोइनी शाळामां या करियाणानी वखारमां

या राज सभामां, एवा प्रासुख निर्दोषी मुकामो स्त्रीपुरुष; नपुंशक, वर्जीत तेमां स्वाधिनपणे निर्बंधन थइ समोसरणे बिराजेला छे, पण कोइ वखते त्याग अवस्थाए भोगी लोकोना स्वाधिनपणानां तेना घरमां विचर्या नथी. एमज अंतक्रियाथी विदेहमुक्त पाम्या छे. परंतु ज्यारथी संजम लीधो त्यारथी शिवपद पहोंच्या त्यांसुधी वहारना वहार रह्या, पण पाछा कोइना घरमां आवी बेठा नथी. तो तमे घरमां बेसाडवानो अर्थ करोछो तो तेमां पुछवानुं के ए देव केवी अवस्थाना छे ? ते कहो वळी तिर्थंकरनी त्याग अवस्थाने घर भळावशो तो तेमां पडवाइ थइ जवानो संभव धारता हो तो घरमां बेसे, पण अमारा ध्यानमां तो एम छे के अनंतज्ञानी तिर्थंकर महाराज अपडवाइ छे. माटे घरमां केम बेसे ? वळी तमारा घरमां बेठेला देवोने प्रतिमातो कहेवाय, परंतु तिर्थंकर देव केम कहेवाय ?

२ विशेप मजकुर शब्दनो अर्थ तमारा मानवा प्रमाणे देव पुजा थतो होयतो कुळदेवादिक देवोने समकिती श्रावको जगतनो व्यव्हार राखवा माटे पूजे अर्चे तो तेमां शुं आश्चर्य छे ? पण एमतो खरुं के मोक्ष धर्मने हेते न पुजे. दृष्टांत. जेम हालमां केटलाएक श्रावक व्यव्हारी लोको जगत व्हेवार खाते विवाह विगेरे प्रमोद महोत्सवमां गणेश. भेरव, नवग्रह तथा दीवाळीमां लक्ष्मी तथा सरस्वती पुजन करे छे, तेमां कांइ मोक्ष खातुं जणता नथी. पण व्यव्हारीक सुखमाटे करे छे, एटलुं प्रति बंधन गणवुं, पण निर्जराहेतु न समजवुं.

३ जेम भरत चक्रवृति चक्ररत्ननी पुजा करे छे ते सर्व व्यव्हारीक खाते छे. ते पुजानो पाठ जंबुद्वीप प्रग्न पति सुत्रमां जोइ लेवो.

४ ज्ञाता सुत्रना आठमा अध्ययने अरणक श्रावकनो अधीकार छे, तेमां ते अरणक श्रावक मुसाफरीने माटे वहाणमां बेसती वखते भोगी देवोने वळ बाकळा द्दीया ते विगेरे केटलाएक व्यव्हार कारणो करेला छे, ते पण व्यव्हारीक सुखने अर्थेज करेला छे. परंतु निर्जराहेतु नथी.

५ अंतगड सुत्रमां त्रीजा वर्गना आठमा उदेशामां भद्दलपुर नगरना रहिस नागशेठनी स्त्री सोळसाजीए पुत्रनी वंछा माटे घणा दीवस हरणमेसी देवनी पुजा करी हती, ते पण संसारीक सुखार्थे. एम घणे ठेकाणे संसार व्यव्हारने अर्थे सारंभी देवोनी गृहस्थो पुजा करे छे. पण तिर्थंकर तो सारंभथी कदी पुजाय नहीं मतलब के मुळमांतो " कयवळीकम्मा " शब्दनो अर्थ देव पुजा करवानो थतो नथी. परंतु एनो अर्थ तो नहावाना घरमां शरीरनी विभुषा, शोभा, तिलकादिक

वळ, पुष्ठन माटे छ. ते सुत्र साक्षीए कहे छे.

६ भरतेश्वरना स्नानाधिकारे सविस्तारथी पाठ छे. त्यां " कयवळीकम्मा " शब्द वीलकुल नथी. तो शुं ते टेकाणे तेने घरना देव नहोता ? जरा विचार करीने अर्थ करो तो समजण पडे.

७ उवव्वाइ सुत्रमां कोणीक राजाना स्नानाधिकारे पण मजकुर पाठ नथी. अने कोणीक राजाने " पेमाणुरागरता " एटले घणा प्रेमथी भक्ति करवामां रंगाइ गएलो छे. एम कह्युं छे. पण " कयवळीकम्मा " नो पाठ नथी तो तेणे पुजा पण शेनी करी हशे ? कारण के सिद्धांतोमां ज्यां ज्यां सविस्तरे स्नान मंजनना अधीकार चाल्या छे, त्यांतो मजकुर पाठ नथी. अने ज्यां ज्यां विधिवार पाठ नथी त्यां त्यां मजकुर पाठ छे. तो अवश्य छे के ए शब्दनो अर्थ शरीरना वळ, पुष्ठिने माटे छे.

८ ज्ञाताजीना वीजा अध्ययनमां भद्र सार्थवाहनी स्त्रीना अधीकारनो पाठ छे. तेमां ते सार्थवाहनी पुत्रनी इच्छाए नगर वाहारना नाग भुतादिकनी शेवा मानताने अर्थे पुजापो लइ गइ छे. त्यां स्नानने अवसरे सर्व पुजापो वाव्यने कांठे मुकीने पोते वावडीमां गइ. ने स्नान करती वखते " कयवळीकम्मा " नो पाठ छे तो त्यां कया तीर्थंकर या देवने पुज्या ? ने पुज्या कहो तो शेने करीने पुज्या ? केमके पुजापो तो सर्व वहार मुकयो छे ने पुजाविधी पुजापाथीज वने छे एम कहो छो. वळी आवे वखते तमो पाणीनी अंजळी अर्पण करी पुज्या एम ठरावो छो ते केवी बुद्धी केळवो छो ? परंतु जळ अंजळी अरपण करतां पुजा कवुल राखो छो तो तमारा देवळमां तथा घरमां जे देव कल्पी वेसाडया छे तेने पण जळ अंजळी अरपण करीने वोसिरावता केम नथी ? अने आवडो छकायना प्राण हरवानो जुलम केम गुजारो छो ? कारण के एक अंजळी जळनो आरंभ करवो शास्त्रमां धर्म खाते कह्यो नथी. तो पण आप वाळ मित्रोए छकाय जीवनी पासे काळांतरनुं पुरेपुरुं वेर शोधवा मांडयुं छे. एम संभवे छे. परंतु त्यां वाव्यमां मजकुर शब्दने माटे भद्रा सार्थवाहनीने वैश्नओनो दाखलो आप्यो छे पण तमारामां तथा वैश्नव धर्मीओनो पुजनमां शुं तफावत छे के तेनो दाखलो आपवो पडे छे आ जवावमां तो तमो पण भद्रानी रीते घर देवने जळ मेलीने वखत साचवता हशो ! ! एम तमारा केहेवा प्रमाणे संभवे छे.

९ ज्ञाताजीने अध्ययन सोळमे द्रौपद्दिना स्नानाधीकारे नग्न भावे " कय-

वळीकम्मा " नो पाठ छे त्यां पाछला स्वप्नावस्थाना पाप छेदन करवा माटे व्यव्हारीक स्नान मंजन ते, वळ पुर्वीनी वृद्धि करवाने माटे अनेक जातना जळथी मंजन करी मंगळीक व्यवहारीक वस्त्र पेहेरीने निद्यान फळनीमुराद हांसल करवा घरना व्यवहारीक जीन देवनी पूजा करवा गइ छे. परंतु नाहवाना वखतमां " कयवळीकम्मा " ने ठेकाणे तिर्थंकर या अन्य देवनी पूजा कहे छे ते संबंध केम मळे ? पूजा करवा गइ ते ठेकाणानो पाठ एक घणी मुदतनी लखाएली ज्ञाताजीना मुळ पाठमां तो नीचे लखवा मुजब छे.

जीण पडीमाणं अचणं करेइ करेइत्ता.

ए पाठ सिवाय मुळमां नमोथुणं या चैत्तवंदन या प्रदक्षिणा या तीखुतो इत्यादिक सुरीआभ देवनी भलामणनो किंचित्त पाठ नथी. कारण के दिल्ली शेहेरमां उदयचंदजी जति छे तेनी पासे छसें वरसनुं ज्ञातासुत्र लखाएलुं छे. तेमज कनैयालालजी गृहस्थ पासे घणा वरसो उपर लखाएली जुनी ज्ञाताजी छे. ते वे सुत्रोनो पाठ परस्पर मळतो छे, एटलुंज नहीं पण ते सुत्रो त्यांज हाजर छे. माटे आ कांक्षावाळाओए जोइ लेवुं त्यार पछीनी लखावटमां आवेली थोडां वरसो उपरनी ज्ञाताजीनी प्रतोमां आवडो फेर थयो छे, तो तेमां थएलो फेरफार कल्पित संभवे छे. राजप्रश्नी सुत्रमां केशी स्वामिए प्रदेशी राजाना करेला प्रश्नना जवावमां कठीआरानो दाखलो आप्यो छे, ते कठीआरे जंगलमां आखो दीवस काष्ट कापवाना परिश्रमे थाकीने रसोइ कर्या अगाउ यथा योग्य रीते स्नान मंजन कर्युं त्यां " कयवळीकम्मा " नो पाठ छे. हवे त्यां घरदेव, के परदेव कोण आवीने बेठो हतो ? के तेनी तेणे पुजा करी. आ पाठनो उत्तर आश्रवमति एम आपे छे के त्यां तेना मान्य पुज्य देवने पुज्या हशे एमां शुं आश्चर्य छे ? एम मोढेथी वकीलात करी कुतर्को वापरवा, ते रीतसर नथी. आ सघळुं जोतां एम जणाय छे के आश्रवमतिओए छकाय जीवोना प्राण भेदवा माटे भयानक शास्त्ररुप जुल्मी जन्म धारण कर्यो हशे. कारण के दरेक वातमां हिंसानी पुष्टिवाळो मत आगळने आगळ चलावे छे ए कांइ ओछु अचंबाभुत नथी.

दिक्षा महोत्सवविशे प्रस्नोतर.

केटला एक मतजंगी हिंसानी पुष्टि खातर एम बोले छे जे प्राचिन काळमां अनेक गृहस्थोए घणां द्रव्य खरचीने दिक्षा महोत्सव कर्या. त्यां दिक्षा लेनारना भावने पुष्टिकारक टेको आप्यो. ते लाभनुं कारण छे. माटे दरेक दिक्षा महोत्सवे

घणुं धन खरचवुं ने एवा महोत्सवथी संजमार्थीनी भक्ति थाय एम कहे छे, ते वृथा छे. कारण के परिग्रह खरचीने भावनी शोत करवा चाहे छे; पण एम कांइ भावनी वखारो भरी नथी, के आरंभथी निरजरारूप भावनो लाभ मळी जाय ! ! एम तमारी अल्पमतिने अनुसरीने कदी समजता नहीं. कारण के शुद्ध भाव या शुद्ध ध्यान ए बे तो ज्ञानदर्शनना उपयोगथीज वधवानां छे. माटे परिग्रहथी आरंभ मेळवीने संजमार्थीनी भक्तिने माटे मजकुर भावनी आशा राखे छे, ते बाळ अज्ञानीओनी भुल छे. केमके व्यव्हारी लोको गृहस्थाइमां शक्तिवान होय तो धारेला विचारनी साथे दिक्षा महोत्सवमां धन खरचीने गमे तेवो व्यव्हारीक लाव लइ शके. तेमां गृहस्थोनी स्वइच्छा होय तेम करे, पण ए कांइ शास्त्ररिवाज प्रमाणे निरजराहेतु न समजवो. वळी वैराग दशावाळा पुरुषोने माटे दिक्षा महत्व करे या न करे तो पण शुं ! मतलब के जे दिक्षाना मोटा महत्सव विना संजम ले तेना चरित्रमां शुं घट थाय ? अने जे मोटा महत्सवथी दिक्षा ले तेना चरित्रमां शुं वृद्धि थाय ? एम कांइ छे नहीं. केमजे संजती राजा, दसारण भद्रराजा, गौतमादिक अगियार गणधर भरतेश्वर, मरुदेवा, रिखभदत्त, देवानंदा, विगेरे अनेक साध साध्वीओ तथा अंतगड केवळज्ञानी थया, तेना दिक्षा महत्सव सिद्धांतोमां चालेला नथी पण तेमणे ज्ञानदर्शनना आलंबनथीज आत्मसाधन करेलुं छे. भगवतीजीमां नवमा सतकना तेत्रीसमा उद्देशामांज माळीनो दिक्षा महत्सव थएलो छे. पण आखर पडवाइ थया ते सर्व पुर्वोपारजीत कर्माधिन छे. माटे महत्सवादिक व्यवहारो संसार व्यव्हारना लाभे वृद्धि करता छे. ते निःसंदेह.

श्रावक तिर्थंकरना दरशन करवा जाय त्यारे स्नान करीने जाय एम कहेछे त प्रस्नोतर.

केटलाएक मतिभ्रमित एम कहे छे जे भगवानना दरशन करवा श्रावको जाय. त्यारे स्नानमंजन करीने जाय, नहीतो जवाय नहीं. एम कहे छे तेने केहेवानुं के अहो आश्रवमति ! जे माणस समकितीया मिथ्यात्वी समोशरणे जवाना वखतमां स्नानादिक शरीरनी शश्रुखा विभुषा करे छे. ते पोतानी गृहस्थाइना व्यवहार माटे छे, मतलब के गृहस्थने सदाय व्यवहार शणगार शोभामांज छे परंतु निरजराहेतु नथी. केमजे सिद्धांतना अधिकारोमां जे जे श्रावकोए यथाशक्तिए व्रत लीधा, ते

वखते संसार व्यवहारमां रहेतां न चाले तेवी बाबतनी छुट राखी छे. पण ए रा-खेली छुटने धर्म खाजे मानता नथी, तो स्नान करीने जाय तेमां शुं आश्चर्य छे!! तेमज जो बत्रिश मांहेली कोइ पण पोता पासे असजाय न होय तो स्नान कर्या विना शुं हरकत छे? तेनो विचार तो करो? वळी कहेवानुं एके भगवती शतक बारमाने पेहेले उद्देशे सावथी नगरीना रहिश संखनामे श्रावक पोषधशाळा मांहेथी पोषासहित वीर स्वामीने समोसरणमां वांदवा गया हता, त्यां भगवंते संखजीने उत्तम जाग्रका जागनार कह्या छे. ते वखते शंख श्रावकजी स्नान मंजन कर्या विनाज गया हता, ते विचारी जुओ? विशेष कहेवानुं के श्रावक धर्म पाळनारा गृहस्थोए जे जे सागारी वृत आदरेलां छे. ते वृतोने शुद्ध श्रद्धाथी आराधना करीने पछी राखेली छूटोना आरंभने दीन प्रतिदिन छांडवा विचार करे. पण ते आरंभने पुष्टि न करे. परंतु विनाकारणे निरारंभीपणे रही शकाय तेवा विचारो गोठववा कदी चुके नहीं. तेमज ते गृहस्थो घणा वरससुधी सामान्य श्राव-कपणुं पाळे, तेम छतां उत्कृष्टी श्रावकनी कर्णी करवा धारे त्यारे अगियार श्रावकनी पडिमा आदरे ते वखते विशेपण ए जे बारवृत आदरती वखते छ छींडीना आगार राखेला हता तेनी पण पहेली पडिमा आदरतां बंधी करी लेछे. एम पडिमा मांहे चडते नियमे चडतां चडतां छट्ठी पडिमाना वखतमां स्नानादिक केटलाक छुटा व्य-वहारोने बंधीमां आणीने श्रावकपणानी कर्णी करे छे. एवा पडिमाधारी गृहस्थोने स्नानादिकनी बंधी थइ तो तमारा कहेवा प्रमाणे तेमनुं समोसरणे जवुं बंध थइ गयुं के शुं? आ ठेकाणे तमारा अवळा विचारनी श्रधाथी जणाइ आवे छे के एवा निराश्रवी पाठना दाखला देवाने तमो घणीज शरमथी लज्जा पामी जता हशो. कारण के जे जे गृहस्थोए व्यवहारने अनुसरीने संसार खाते करेला आरंभोना रिवाजना पाठ आगळ धरोछो ते वेळाएतो तमारा स्वभावनो विचार एम जणाय छे के जाणे छकाय जीवने ओळखताज नहीं होय तो केम जे वखतो वखत जेम आरंभ वधे तेम करवा धारोछो. परंतु प्राचिनकाळना श्रावक गृहस्थोए ज्ञान वैरागथी केट-लीक वस्तुओनो करेलो त्याग तथा धर्म ध्यान साधवाना वखतमां देवतादिकना करेला परिसह सहन कर्या. ए विगेरे केटलीएक रीतथी श्रावकपणानी उत्कृष्ट कर्णी करेली. तेम करवा तो कदी धारता नथी. ने नाचवुं, खुंदवुं, खावुं, पीवुं, गावुं, वजाववुं, शोभा शणगार रचवो एम करवा सदा विचार रहेछे तो शुं एकला संसा-रनाज लाभनी इच्छाछे के?

॥ दोहरो. ॥

जबलगतेरापुन्यका, पूगेनहींकरार;
तबलगगुन्हामाफहे, अवगुणकरोहजार.

भावार्थ—अरे अज्ञान मित्रो ! तमारा मनमां खातरी तो हशे पण हवे विशेष राखवी जोइए. ज्यां सुधी पुर्वोपार्जीत पुन्योदय छे त्यां सुधी जडमतिओ स्वइच्छाए धर्म विरुद्ध चालवा चुक्ता नथी. केम जे करेला कर्मोनो गुनो माफी थइ गयो एमज गणता हशो. पण ज्यारे खरी मुदत पाकशे त्यारे वितरागना अमुल्य दयारुप वाक्यो याद दास्तीमां आवशे.

प्रतिमा देखवा वांदवाथी समक्ति प्रगटे छे ते प्रश्नोत्तर.

केटलाएक विवेकहीन मिथ्यात्वोदयथी एम कहे छे के प्रतिमा देखवा, वांदवा अने पुजवाथी समकित प्राप्त थाय छे. पण एम कहे छे ते वृथा छे मतलब के समकित पामवानो रस्तो तो शास्त्रोमां ज्ञान भेदथी बतावेलो छे ते विगत आ जुलमी जगत झाळमां अनंता काळथी समकितविना मिथ्यात्व धर्मनी प्रबळताथी जन्म जरा ने मर्णेकरी परिभ्रमण कर्युं एम अनंत कोटी जन्मांतरमां रटण करतां अनेक जातना कष्टोथी अकाम निर्जरा करतां करतां यथा प्रवर्तीकरणनो लाभ मळ्यो त्यार बाद अनंत कोटी अशुभ कर्मोनो नाश थतां अपुर्व करणनो वखत मळ्यो. ते अपुर्व करणनी उदयार्थीमां ग्रंथीभेद करीने त्रीजा अनिवर्तीकरण प्राप्तिना काळमां द्रव्य भाव गुरुना आश्रयथी सासवादान समकित वरजीने रहेला चार सम्कितोमांथी अमुक समकित उदय थाय. परंतु ते वखतमां प्रतिमा मळवाथी समकित थाय एवुं तो कांइ जाणवामां आव्युं नथी.

उपासक सुत्रमां आणंद श्रावकने प्रथम मिथ्यात्व वोसीरावबाना अवसरमां श्री महावीरनो मेळाप थयो छे ते वखते यथायोग्य रीते पदवंदन करी, त्री कर्ण शुद्धे शेवा करीने सागार अणगार धर्मनो बोध सांभळ्यो ते पछी उठीने विनय नम्रता साथे भगवंतने कहेजे अहो भगवान ! मैं निग्रंथना प्रवचन "सद्दहामीजावरुयमि" एम कहीने "एव्वंमेयंभंतेतहमेयंभंते" अर्थात. अहो भगवान ! जेम तमे कहो छो तेमज निराश्रवी निग्रंथनो धर्म छे. एमज निर्वद्यमार्ग श्रधुं छुं, एम कहीने कहेजे "देवाणुपियाणं अत्तिएवहवेजावमुंडेभवित्ता, नोखलुअहंतहासंचा-

एमि " अर्थात. आपनी पासे घणा हळुकर्मी दिक्षा ले छे. तेम करवा हुं असमर्थ्य छुं. माटे हुं आपनी पासे श्रावकना बार व्रत आदरवा इच्छु छुं. एम कही विधिपुर्वक सर्वव्रत आदर्या. पछी "आणंदेसमणोवासएजाएअभिगएर्जीवाजीवेउवलधपुन्नपावे" अर्थात. समकित सहित बार व्रत आदर्या त्यारबाद भगवंत कहे छे जे आणंद श्रावकनो जन्म थयो एटले मिथ्यात्वमांथी शुद्ध समकित धर्ममां जन्म्यो, अने जीवादिकना नव पदार्थ जाण्या छे. एम सर्व सागार एटले गृहस्थाश्रमने चलाववाने योग्य आगार राखीने श्रावक धर्मने योग्यव्रत आचरण कर्या ते "जाव" बारमाव्रतमां मुनीने अहारादिक कलपतादान देउ ए विगेरे सर्व नियमो धारण कर्यां. ए सिवाय आश्रवमत सारंभ धर्मार्थे कांइपण देरां प्रतिमा करुं या करावुं या कर्त्ताने भलु जाणुं एवी रीते व्रत लेनारा आणंद श्रावके कांइ पण मर्यादा करी नहीं, अने द्रव्य तथा भावथी समकित आराधन कर्युं.

वळी सातमा व्रतमां छवीस बोलनी प्रतिदीन मर्यादा श्रावक धर्मने खपती वस्तुओ भोग उपभोगने माटे करी. पण घरदेरासर या बहार देरासर खाते कांइ पण मर्यादा करी नथी कारण के समकित धर्मीओने निर्थक आरंभ अनर्थादंडनो हेतु जाणीने न राखी. तेमां कोइ वखत कुळाचारे कुळधर्मना देवोना कारण जाणी अवसरे भोग उपभोगथी शेवा साचवे. परंतु ते कुळ धर्मना निरापराधी देवोने तभारी रीते दररोज संतापे नहीं. माटे ए आणंद श्रावक नकामो आश्रव यथायोग्य रीते वोसीरावीने नित्य कर्म एटले सदाय सत्यधर्म सामायकादिक पोषह विधीओ ए सर्व निर्जराहेतु करवा चुकेला नथी. एमज मर्णांते सर्व आश्रव वोसीरावी पहेले देवलोके पहोंच्या तेमज पछातना नव श्रावकोनी वीगत जाणी विवेकीओए मान्य करवी. कारण के आणंद श्रावकनी रीते समकित प्राप्त थाय.

तेमज भगवती सुत्रना अढारमा सतकना दशमा उद्देशामां सोमल ब्राह्मण तेमज सावथी नगरीना रहिश श्रावको, तथा तुंगिया नगरीना रहिश श्रावको तथाराय पसेणीमां चित्तसार्थी तथा परदेशी राजा, तेमज राजग्रही नगरीमां सुदर्शनादिक अनेक श्रावको, द्वारावती नगरीमां जादववंशीओ श्री कृष्णादिक, तेमज विशाळा नगरपति चेडाराजा विगेरे काशी कोशाळादिक अढारदेशना राजाओ, एमज जैंती सोळसा मृगावती विगेरे अनेक श्रावक तथा श्राविकाए जेजे समये समकित तथा व्रतआदर्यां ते सर्वश्रावक श्राविकाना नियमो या समकितनी विधिओ पोतानी मेळे बोध पामेला धर्माचार्यों पासे बोध उपदेश पामीने आचरण करेली छे, अने सयं-

बोधी तिर्थंकरे पोते आपे बोध लीधो छे, अने प्रत्येक बोध थया ते चर्मशरीरी छे. माटे तेणे अमुक वस्तु प्रत्यक्ष देखी समकित पामीने तरतज आश्रवमार्ग छांडीने साधुपणुं आदरी धर्म साधन कर्युं छे. अने श्रावक श्राविकाओ समकित व्रत पाम्याथी सदा धर्मोपदेश सांभळी बनतो आश्रव छोडीने पोषा, पडिकमणा, उपवासादिक उत्तम कर्णी करी मनुष्य जन्मनो लाभ लेवा चुकता नहीं. ए सर्व ज्ञाननी प्रबळताना लाभमां समकित सहित निराश्रवी कर्णी करीने पामेला समकितनी मुराद हांसल करेली छे. परंतु मजकुर श्रावक श्राविकाओए समकित पामवाना लाभथी तमो हठवादीओनी रीते आश्रव मार्गनी पुष्टि करेली नहोती. वळी तेमणे समणोपाषक नाम धराव्युं ते प्रमाण छे, एमतो सुत्रोमां विवेचन सविस्तारपणे छे. परंतु कोइ सुत्रोना मुळमां या अर्थमां या टीकाचुरणी, भाषनिर्युक्ति, न्याय, भेद, संगित तथा संस्कृत. प्राकृतमां एम नथी जे मंदीरोपाषक या पाषाणोपाषक. तो कहेवानुं एटलुंज के तमारी मांदगी मतिमां शो कोप छे के समणोपाषक नाम छतां प्रतिमा देरांओना आश्रव स्थापवाने माटे समकितनी प्राप्ति उलटी रीते ठरावो छो.

समकित पामवाना सडसठ भेद कह्या छे, तेमांतो कांइ देरां प्रतिमानां कारण बताव्यां नथी, तेमज पूर्वाचार्योना रचित आगम सारादिक ग्रंथोमां जेटलो निरापक्ष बोध सुचव्यो छे, तेमां समकितनो उदय केवी रीते कह्यो छे ? ते विचारी जुवो ! अने तेज आचार्यो सावद्यमार्गनुं स्थापन करवा तैयार थया त्यारे भवभ्रमणना हांसलने माटे पाषाणादिकना सल्य पक्षेप्या, ते वेळाए तेओ केवी दशामां आवी गयेला हशे ? ते विषे सिद्धांत पाठ तथा निरापक्ष ग्रंथना आधारथी तथा स्वपक्ष ए सर्व खुली रीते बताववुं जोइए.

वळी भगवतीजीना अढारमा सतकने सातमे उद्देशे मदुक श्रावके समकित आदर्युं. तेमज उत्तराध्ययन वीशमाने मध्ये अनाथी मुनीना बोधथी श्रेणीक राजाए मिथ्यात्व बोसीराव्यो ने समकित आदर्युं, त्यांपण श्रेणीक राजाए गुरु मुखना धर्मबोधनो महिमा कर्यो छे, ते विचारतां मालम पडशे. अने तेज राजाए समकित पाम्या अगाउ अनाथी गुरुना नाथ थवा विगेरे जे जे वचन भुलथी कह्या छे, तेना थएला अपराधनी माफी मागी छे. मतलब के त्यागीने भोगामंत्रण करवुं ए सर्व अयोग्यज छे. माटे खमाव्या छे, एविशे वधारे लखाण आगळ आवशे.

वळी ज्ञातासूत्रना बारमा अध्ययनमां जीतशत्रु राजा, सुबुद्धि श्रावकनी सहायथी समकिती थया छे. ते राजाए धर्म इच्छाना वखतमां सुबुद्धि श्रावकने कह्युं छे,

"इच्छामिणंदेवाणुपियाणंतवअंतिएजिणवएणंनिसामित्तए" अर्थात. अहो देव व-ल्लभ ! तमारी पासे केवळी परुप्यो. धर्म सांभळवा इच्छुछुं. एम राजाना कहेवाथी हवे श्रावक धर्मोपदेश करे छे.

तएणंसुबुद्धिअमचेजियसतुस्सरन्नेविचित्तंकेवळी,
पन्नंतंचाउजामंधम्मंपरीकहेइतंमाईखेईजहाजीवा;
बुझंतिजावपंच अणुवयायंतएणांजियसतुराया,
सुबुद्धिस्सअंतिएधम्मसोचाजावसेजहेयंतु भवेदह.

भावार्थ—ते सुबुद्धि श्रावकना बोधने अंते जीतशत्रु राजा कहे छे. सरदह्या अहो श्रावक ! तमारा वचन ए विगेरे सर्व संबध कहीने राजाए सुबुद्धि श्रावक पासे समकित धर्म पामी यथायोग्य रीते आश्रव मार्ग वोसीराव्यो परंतु तामस गुणीओनी रीते आश्रवनो वधारो कर्यो नहीं.

श्री सुयगडांग सूत्रना बीजा सुतस खंधना सातमा अध्ययनमां श्रावकना गुण-विशे मूळ पाठ कह्यो छे.

अप्पारंभाअप्पिच्छाअप्पपरिगहाधम्मियाधम्मयाधम्माणुंया,
सामाइयंदेसावगासियंपुरथापाइणंपडिणंदाहिणंउइणं;
तावजावशव्वपाणेहंजावसव्वसतेहंदंडेनिखितेसव्व,
पाणभूयजीवसतेहंखेमंकरेअहंअसि.

भावार्थ—श्रावक ज्यारे समकित दशामां आवे त्यारे व्रत पचखाण आदरोने निर्ममत्व दशामां संतोषमान थाय छे, त्यारे अल्प इच्छा, अल्प परिग्रह, सुशियळ, सुवर्ती, धर्मीष्ठ. धर्मवर्तीय, सामायक तथा दशमुं दिशावगासिव्रत आदरे, त्यारे पुर्वा-दिक चारे दिशाओना क्षेत्रनी मर्यादा बांधीने पछी धर्म ध्यान करे अने कोइ प्राण, भुत, जीव अने सत्वने पोते हणे नहीं हणावे नहीं ने मनवचन कायाएकरी यथा-योग्य कोटीए सर्व जीवउपर क्षमा करे एवो समकित वृति श्रावकोनो धरम छे एम श्रावकोने वैरागयी भरपुर कह्या छे. तेम छतां तमो "देवानु प्रिय" स्नेहीओतो खटकायना प्राण हरवा माटे एटला उत्साही थइ पडेला छोके ते मजकुर गुणना धरनार श्रावको तमारा अघोर करनी करणी जोइने महाअशंका पामे. केमजे कळी-

कालना जनोनी कर्मकरणी आगळ तेओनी राखेली लुटनो आश्रव कोण मात्र छे, ए तमारा आश्रव स्वभावमां आश्चर्य कारक छे !

समकित ने मिथ्यात्वीनुं अल्प बहुत्व.

केटलाएक अजाण नरो कहे छे के अमारा सत्य धर्मना प्रभावथी अमारा धर्ममां घणा जणनो समुह छे ने घणाजण भळे छे. तेना जवाबमां कहेवानुं के आ एक चोवीशी बाबत सहज दाखलो छे ते उपर लक्ष लगाडशो. पहेला रुषभदेव ते महावीर स्वामि पर्यंत तथा त्रीजा आराथी ते पांचमा आरासुधीमां समकिती जीव थोडा अने मिथ्यात्वी जीव अनंतगणा हता. तो सर्व सूत्रोनी महेलीकाना मत साथे विचार करीए तो भुत, भविष्य अने वर्तमान काळमां समकिती जीवोथी मिथ्यात्वी अनंतगणा मालम पडशे. कारण के पांच स्थावर, त्रण विगलेंद्रि, छ मुर्छीम पंचेंद्रि ए सर्व मिथ्यात्वी छे. परंतु गर्भज तिर्यंचमां समकित धारक थोडा अने मिथ्यात्वी असंख्यातगणा. एमज नर्कमां तथा चार जातना देवतामां समकितीथी मिथ्यात्वी असंख्यातगणा तथा एकसोने एक क्षेत्र मनुष्यनां तेमां छपन अंतरद्वीपना जुगलीआ वर्जिने पछात रहेला अकर्मभोमी तथा कर्मभोमीमांहे समकित लाभे छे, तेमां समकिती करतां मिथ्यात्वी संख्यातगणा छे. एम सर्व काळमां मिथ्यात्वीनो वधारो अने समकितनो अल्प भाग छे. अर्थात आश्रम मार्गनोतो सदा वधारोज होय, दृष्टांत. नेमनाथ भगवाननी वारे जादव वंशमां छपनकोटी जादव अने साडा त्रण क्रोड कुमार ए दसारोना परिवारमां एटला पुरुषो छे तो कृश्नादिक सर्वनी मळीने घणी स्त्रीओमां समकितना धणी अल्प ने मिथ्यात्व रमणी संख्यात गणा छे केमजे जादवो मदिरापान करी द्विपायाण रुषिने संतापीने द्वारकाना अंतनो वखत लावी मुक्यो.

वळी वीर परमात्मा केवळज्ञान सहित निर संसयीक बोधना करनार हता. तेना बोधनी तुल्य बीजा सदग्रहस्तोनो बोध किंचित न आवे. एम एमनुं प्रबळ प्रभाव छतां विरना रागी श्रावक एक लाख अने ओगणसाठ हजार समद्रष्टि थया, अने गोशाळाने अगियार लाख शेवको सांभळवामां आव्या छे. आहा मिथ्यात्वनी विशेषता केवी छे ! ! ! माटे वितरागना वचनने अनुसरीने चालनारा उत्तम जैन दयाधर्मीओनो अल्प भाग प्रत्यक्ष देखवामां आवे छे. तेमज आश्रवनिपुण विकर स्वभावीक खटकायमर्दन करनार तप्त स्वभावीओ आवे ठेठ निगोदताइ अनंतगणा समजवा. मतलब के जे तत्व मार्ग छे, तेमांतो तत्क्रियानो

रस पीनाराज पीने लींन थइने रहे. अने आश्रवमतीओना सचळ चित्तने भेदनारा बाविश परिसह तेनी झपाटोथी पाछी पानी न भरे. तेमज निर्मळ मतिपणे निश्चळ चित्तथी, समकित मार्गने अनुसरीनेज चाले छे. माटे तेनो जुज भाग समजवो. हवे मिथ्यात्वमतिओनो वधारो थवानुं कारण ए के दरेक कारणथी स्वईच्छाए प्रवर्तवुं, या ते पंथमां कोईपण जातथी परिसहनो उपसर्ग नहीं, तेमज कल्पित भोगोपभोग लेवानी आशाए घणा भोळा प्राणीओ ते मार्गमां अनादि कालथी फसाइ रहेला हता, ने हालपण तेमज जणाय छे. एमां आश्चर्य शुं छे ? ! ! दृष्टांत. जेम गदियाणा सोनाना रुपिआ दश, अरधा रुपिआ वीश, पावला चाळीस, बेआनीओ अेंसी अने तेना आना एकसोने साठ. ए रीते जेम निच वस्तु छे ते वृद्धि पामे ए प्रत्यक्ष छे. पण स्वाभिमानीओ कहे छे के, अमारा धर्मनो फेलावो घणो छे, माटे अमारो धर्म उत्तम छे ! एतो फक्त पोतानुं पोते कहेवुं एटलुंज. परंतु शास्त्राधारे तो एम छे के दीनप्रतिदीन सु शास्त्रो, सु साधुओ तेमज शुद्ध दया धर्म काळना महात्म प्रमाणे अल्प थतो जशे, तेमज कुशास्त्रो फीतुरी कुसाधुओ तथा आश्रव धर्मनो विशेष विस्तार पांचमा आराना बीजा पहोरसुधी रहेशे. अने उत्तम वितराग प्रणित धर्मना आराधिको भर्तइर्वर्तेमां पहेला पोहोरमांज लय थइ जशे, एम शास्त्रोक्त रीते समजवुं. माटे अरे ग्रंथावलंबित बाळमित्रो ! नाहक गर्व छोडो अने स्वकल्याणनो रस्तो पकडो.

नमोथुणंमां भेद कहे छे ते प्रश्नोत्तर.

केटलाएक अनाणाश्रवी हिंसारुढीने सिद्ध करी आपवा माटे एम कहे छे के जीणपडिमानी पूजा करतां द्रौपदीए नमोथुणं कह्युं छे, माटे समकिती हती, ने निर्जराहेतुए पूजा करी छे. कारण के परणवाना अवसरमां संसारीक हेतुना कारणथी प्रतिमा पूजीने नमोथुणं भणी होतती आ रीते पाठ भणत. " लछीदयाणंराजदयाणंजस्सदयाणंसुखभोगदयाणं " अर्थात. लक्ष्मि, राज, सुजश, तेमज व्यवहारी सुखने मनगमता विषय सुखना दातार छो. एवो पाठ द्रौपदी भणत, पण एवुं न भणी ने समकिती छे माटे सुबुद्धिए पाठ भण्यो छे.

हवे दयाधर्मीओ कहे छे के अरे विकळमति बंधुओ ! तमारा बोलवा प्रमाणे एम ठरे छे के, समकिती तथा मिथ्यात्वी, भवी तथा अभवि, ए सर्व नमोथुणंना पाठ जुदा जुदा भणता हशे, पण एम नहीं समजतां सघळी दशामां समजो के ते बाबत अमो " कयबळीकम्मा " ना उत्तरमां

लखी गया छइए के, जुनी प्रतमां द्रौपदीने नमोथुणं विगेरे "जावसुरि आभे" एटली भलामण लखी छे ते बीलकुल नथी, अने नवी प्रतोमां ते भलामण घोची घाली संभवे छे. एम तमोए केटलाएक मुळ सुत्रोने कल्पित पाठनी एव बेसाडेली जणाय छे. केमजे द्रौपदीए नमोथुणं विगेरे सुरिआभदेवनी रीत प्रमाणे कांइपण कर्युं होय एम संभव थतो नथी, तो तमो सुरिआभनी भलामण देतां या नवीन पाठ प्रक्षेपतां विचार करेलो जणातो नथी. वळी दैवकाळे सुरिआभदेवने विजय पोळिआना नमोथुणं विगेरे पाठ भणता ठरावीने समकितीमां अने मिथ्यात्विमां भेद पाडो छो तो केम वारु ? समकिती तथा मिथ्यात्वीए नमोथुणं भणतां तमारी रीत प्रमाणे पाठ फेरवेलो छे के जेथी विरुद्ध रीते भेद पाडो छो ? पण शास्त्र रीते एम जाणजो जे सुरिआभ वैमानमां वार बोलना सुरिआभ उपजे छे, ते भवि अभवि इत्यादिक बार बोलवाळा सरखुंज नमोथुणं भणे छे ने त्यां कांइपण समकिती मिथ्यात्वी माटे भेदाभेद नथी पण मजकुर लखाणनी रीते जोतांतो तमारो मत तथा तमारुं नमोथुणं पण जुदु मजकुर शब्द प्रमाणे जणाय छे. माटे अरे भ्रमित बंधुओ ! जे कृत्यने बीजा विशेष कृत्यनी साथे भलामण करवी होय तो ते भलामण करवानी वस्तु सामी वस्तुने जोग होय तोज भलामण करी गणाय. केमजे गणधरने उपमा गणधरनीज देवाय, सामान्य साधुने उपमा सामान्य साधुनीज देवाय, तिर्थंकरने तिर्थंकरनीज देवाय, सिद्धने सिद्धनीज उपमा देवाय, तेमज चक्रवर्तिने चक्रवर्त्तिनीज, वासुदेवने वासुदेवनीज. बळदेवने बळदेवनीज देवाय. ए सर्व उपमाना धणीओमां सरखी आकृति या कृतव्यता होय तो तेमज उपमा देवाय, पण द्रौपदीए जे कृत्य न कर्युं, ते सुरिआभे कर्युं छे ऐटले तेणे बत्रिसवानांनुं पूजन कर्युं छे अने द्रौपदीए ते कर्युं नथी अने तमे कहो छो जे कर्युं ए संबंध केम मळे ? माटे भोळा लोकोने नवा पाठ प्रक्षेपवानी खबर न होय तो अवश्य भ्रांतिरुप पासमां पडी जाय ने समकितसहित कर्णी करतां हिंसारुप आवरण आवी जाय. माटे तेम भ्रांति न आणतां नमोथुणं एक रीतेज सिद्ध थाय छे ने समकिती मिथ्यात्वीना नियमने माटे कांइ जुदा नमोथुणं शास्त्रमां छेज नहीं.

हवे आ प्रश्नोत्तरे मतिविभ्रमिजनो अशंका करे छे जे, नमोथुणंनो पाठ शुं न जोइए ? अने नमोथुणं कहे ते समकिती विना बीजो कोण कहे ? माटे छतो पाठ छे अने केम ऊथापो छो ?

अरे विवादी जनो ! तेना जवाबमां एटलुंज कहेवानुं के यथार्थ सद्दहिणा-

विना नमोथुणं माटे समकिती न कहीए. केम जे समकित सद्हीणा विना नमोथुणं जाणनार तो घणा देखाय छे. माटे तेवा नमोथुणं भणनारने तमारी श्रद्धा प्रमाणे समकित दृष्टि मानोछो के ? पण एम न होवुं जोइए. मतलब के एकला नमोथुणं भणवाथी शास्त्र रीते कदी समकित ठरी शकतुं नथी. अनुयोगद्वार सूत्रमां एम कहेलुं छे के.

जेईमेसमणगुणमुक्कजोगीछकायानिरणुकंपा,
हयाईवउद्दामागयाईवनिरंकुसाघठामठातु;
पोठापंडुरपडपाउरणाजिणाणंअणाणाएसछंद,
विहारिणोउभउक्कालमावसगाउवठवंति.

भावार्थ—जे कोइ साधुपणाना मुळने उत्तरगुण महाव्रत सुमति गुप्तिआदिक सर्व नियमो आदरीने पछी पुर्वो पार्जीत कर्मना उदयथी पडवाइ थइने मुकी देछे, तेनुं कारण ए के परिसहथी हायमान परिणाम करीने संजमथी उलटी रीते वरते, ते वेषधारीना अंतःकरणमांथी छकायनी दया गइ. तेमज घोडानी रीते पग पछाडतो इरिया समति छोडीने चाले. तेमज वक्रहाथीनी रीते वितरागनी आज्ञारुप अंकुशनो डर न राखतां पोतानी स्वइच्छाए वस्त्रादिक शरीरनी ससुका शोभा विगेरे माथाना केश समारीने केसुडाना फूलनी रीते पीळे रंगे सुशोभित रहेछे, तेओने जीनआज्ञा वहार समजवा.

एवा पडवाइ बे वखत नमो कारादिक छ आवश्यक करे छे. तोपण ए निर्दय पुरुष आज्ञाविरुद्ध छे. तो कहेवानुं के द्रव्य आवश्यक करनारनुं नमोथुणं विगेरे सर्व कृतव्य साधुधर्मनी रीते करतां छतां पण समदृष्टि न कह्या तो एकला नमोथुणंना शब्दने पकडीने हिंसानुं स्थापन करवा धारोछो, ते केटली मुर्खाइ छे ?

वळी श्री नंदिसुत्रमां कह्युं छे जे दसपुर्वआदि चौदपुर्व भणनारनी मति सवळी होय अने नव पुर्व भणनारने सवळी यां अवळी वेउ होय. एम कहेवाथी एम समजवुं के घणुं सूत्रज्ञान विगेरे भणे तोपण मिथ्यात्व बुद्धि होय तेमां शुं आश्चर्य छे !

वळी देवताओ जीन पडिमानी पासे नमोथुणं विगेरे व्यवहार क्रिया करे छे; तेमज द्रौपदीए पण परणवाना उत्साहमां व्यवहार क्रिया करी. तेनुं कृत्य देखी देखीने मुग्ध दशाना डोळमां दिग्धमुंढ केम थाओ छो ?

वळी कहेवानुं के शमकिती देवताओ जीन पडिमाना पुजन वखते नमोथुणं

कहे छे ? अने मिथ्यात्वी देवो वेद, पुराण, कुरान तथा चंदी पाठ भणे एम भेद परस्पर जुदो पडेलो छे के शुं ? एमतो कोइ पण जैनशास्त्रोमां नथी तोपण तमारो मत हिंसा दृढ करवानो थाय छे. माटे अहो कर्म ! तारा कृतने धीकार छे.

वळी तमो अबुधजनोने कहेवानुं के जीन पडिमादिक नमोथुणं विगेरे शब्दोने देखीने जो भडकी जताहो तो जैनशास्त्रमां शब्द तो अनेक जातना छे माटे भान भुल थइने प्राणीओना प्राण लेवा तैयार थइ जवुं ए कांइ जैन धर्मीओनुं लक्षण नथी. केम जे व्यवहारीक क्रियामां सिद्धांतना पाठ घणा लागु पडे छे पण निर्जराहेतुतो समकित अवस्थामां कर्म निर्जरवा धारे त्यारेज लागु पडे छे. अने प्राचिनकाळमां कोइ गृहस्थोए संसारीक व्यवहार साधवा माटे शास्त्रना पाठ भणेला छे, तेने मोक्ष हेते गणी काढवा ते कांइ योग्य नथी. केमजे भगवतीजीना बारमा सतकने पेहेले उद्देशे शंख श्रावकजीए निर्जराहेतुए पोषह कर्यो छे, तेनो पाठ.

जेणेवपोसहसाळातेणेवउवागछईपोसहसाळंअणुपविसंतिपोसहसाळापम्मज्जइपम्मजित्ता उच्चारपासवण भूमीओपडिलेहईरत्ता-दभसंथ्थारग्गंसंथ्थरईरत्ता दभसंथ्थारग्गंदुरुहईरत्तापोसहसाळाए-पोसहि ए बंभयारीउमुक्कमणीसुवणेववगयमालावणगविलेवणेनि-खित्तसथ्थमुसलेएगे अबिएदभ संथ्थारो उवगएपखियंपोसहंपाडि जागरमाणेविहरई.

भावार्थ—ज्यां पोषहशाळा छे त्यां आवी पोषदशाळामां प्रवेश करीने पोषदशाळा विगेरे लगनीत, वृध नीतनी भुमी सर्व पुजीने दाभनो संथारो पडी लही पाथरीने बेठा. ते शाळामां ब्रह्मचर्यसहित पोपह करती वखते मणी सुवर्णादिक पुष्प सचेत ने अचेत अणकळपता सर्व सावद्य शस्त्रादिक तजीने एकला निर्भयपणे दाभने संथारे बेसी पक्ष संबंधी पोषह पचखीने धर्म जाग्रिका जागता विचरे ए सर्व कर्मनो निर्जराहेतु जाणवो. पण ए शंख श्रावकने व्यवहार संबंधी कांइपण कल्पना नथी.

हवे तेज पोषह विधीना पाठने अनुसरीने कहेवानुं जे जंबुद्वीप पनंती सूत्रमां भरत महाराजना आळावामां जोइ लेवुं के ज्यारे माग्धादिक तिर्थोना देवने साधवानी खातर अठम पोषह करी बेसवानी वखते मजकुर विधीसहीत पाठ छे. माटे ते पाठनी विधीनो संकल्प संसार खातामां समजवो.

तेमज कृष्ण वासुदेवे हरिणे गमेषी देवने आराधतां तथा गजसुकमाळ कुमारना जन्म अगाउ तथा द्रौपदीनी वारे जतां समुद्रकिनारे लवणाधीपतिने साधतां अट्ठम, पोषहविधी करी छे. ते ज्ञाता सूत्रमां तथा अंतगड सुत्रमां जोइ लेवुं. तेमज ज्ञाताजीना पहेला अध्ययनमां अभय कुमारे धारणी चुळ माताने मेघनो डोळो पुरवानीखातर पूर्व संबंधी मित्र देवने आराधतां अट्ठम पोषहविधी करी, तेपण सर्वेविधी संख श्रमणो या सजनीक रीते क्रियासहित पोषह कर्यो, ते शुं तमारे मते शंख श्रावकनी क्रिया जेवा पाठ जोइने नीर्जराहेतु ठरावशो के लौकिक व्यवहार खाते ठरावशो ? ते कहो ? एम चक्रवृति आदे पोषह कर्या, ते देवोने आराधवा खातर विशेष अभिग्रह समजवा, परंतु विधीनी रीत एक जोइने निर्जराहेतु केहेवाय नहीं. केमजे ते मजकुर चक्रवृति आवे केटलाएक गृहस्थो समकिती छतां संसारीक कारणोने माटे देवताओनी आराधनामां घणी कष्टक्रिया करे छे. तेमज शंख श्रावके निर्जराहेतुए उत्तम कर्णी करी छे. परंतु तेओनी विधीना पाठ एकज रीते भणेला छे. माटे एवा पाठ जोइने विचार करतां मालम पडी आवशे. तेमज द्रौपदी तथा सुरिआत्मादिकनो पुजा वखते नमोथुणं पाठ निर्जराहेतुए ठरावीने मुग्ध जनोना मंडळने भ्रमाषेला छे. माटे मतिभ्रमित जनोनी जडता पडे छे. तोपण कहेवानुं जे नमोथुणं कहेवा माटे एकला समदृष्टी समजवा नहीं. कारणके भगवती सतक बारमे अनंत खुताने आळावे सर्वजीव भवनपतीथकी नवग्रहो वेगसुधी अनंतवार उपज्या. तेमां बारमा देवलोकसुधी राजनिती साधतां अनेकवार नमोथुणंना पाठ वार बोलना देवपणे भण्या छे, तो नमोथुणं माटे एकांत समकिती न ठरे. वळी मनुष्य भवमां अभवि तथा मिथ्यात्वी बहोंतेर कळा भणीने तथा स्त्रीओ चोसठ कळा भणीने जैन शास्त्रनी तथा मिथ्यात्वशास्त्रनी केटलीएक रीत जाणे, तेमां नमोथुणं आवे ते भणे माटे समकिती केम गणी शकाय ? तथा आधुनीक जमानाना केटलाएक इंग्रेजो जैन शास्त्रनुं सोधन करी एटलुं जाणपणुं मेळवेलुं छे के जैनी जनोथी इंग्रेजोना करेला पश्नना जवाव देवा मुश्केल थइ पडे. माटे एवी बारीक बुद्धिथी मेळवेली विद्वतावाळा तेने तस स्वभाविओ साधर्मी तरीके गणता हशे के शुं ? पण दरेक जातथी मेळवेला सुत्रज्ञाननेमाटे समकिती ठरे नहीं. तेमज द्रौपदी तथा सुरिआत्मादिक देवो पण नमोथुणं भणवा माटे एकांत समकिती कही शकाय नहीं.

वळी आठेकाणे कहेवानुं जे ज्ञाताजीनी नवी प्रतोमां वांचनांतरे द्रौपदीना

अधिकारे नमोथुणंनो पाठ जोवामां आवे छे. परंतु श्री भरुच शहेरना भंडारमां ताडपत्र उपर लखेली ज्ञाताजी सवा आठसें वरसनी छे. ते मध्ये पण " कयवळी-कम्मा " ना प्रश्नोत्तरमां लख्या प्रमाणे पाठ छे माटे जुना पुस्तकोना आधारथी मालम पडे छे के, विशेषण पाठ छे ते कल्पना करी नाख्यो जणाय छे. तेमज नमोथुणंनो पाठ भणतां समकितनो पण निश्चयार्थ थइ जाय तेम छे नहीं. केमजे दिल्लीवाळा उदेचंदजी गोरजीनी प्रत, छसें वरसनी, तेमज कनैयालाल श्रावकपासे पण तेवीज जुनी प्रत. पण ते बे करतां वधारे वरसोनी ताडपत्र उपर लखाएली ज्ञाता भरुचना भंडारनी छे. ए त्रण प्रतो पुरातननी छे, तेमां तो द्रौपदीविषे मज-कुर पाठ छे. माटे सुरिआभनी भलामण केम संभवे ? वळी देवताओना नमोथुणं जीत व्यवहारमां गणवा, तेमज द्रौपदीनी पुजा कुळ धर्ममां गणवी. माटे शब्दने जोइने छळाइ जाय तेथी अजाण बीजो कोण कहेवाय ? कारण के संवर कर्णीनी रीतना पोषा तथा व्यवहारना पोषा, तेमज संवरना नमोथुणं तथा व्यवहारना नमोथुणंना पाठ सरखीज रीते भणाय छे. परंतु निरजरानो मार्ग तो जुदोज छे. ए तमारा मतने मळतो नथी. केमजे तमारे आश्रवथी कर्मबंधन बांधीने नाटकशा-ळामां नाटक करवुं. तेमज निरजरावाळाने व्यवहारीक कारणो सर्व वोसीरावीने एक आसनथी धर्म ध्यान करवुं, ए बे विचारोमां परस्पर भेद छे. माटे धर्मात्मानी कर्णी अने तप्त स्वभावीओनी कर्णीनो कदी मेळाप थायज नहीं. सबब दरेक वा-वतमां द्रौपदी सुरिआभादिकना आधार लइने आरंभ समारंभनुं निरुपण करे छे पण विचार तो करो ? जे द्रौपदीने परण्या अगाउ समकिती शी रीते ठरावो छो ? केम जे द्रौपदीने परणवा अगाउ पुजानी वखते समकित नहोतुं ने आश्रवमतीओ कहे छे के हतुं. ए अघटित छे, कारणके ज्ञातासूत्रमां तेने श्राविकातो कहीज नथी. केमजे कुमारीकापणे नाम देती वखते " दोवईदारीया " एवो पाठ छे. तेमज प्रतिमा पुजत्राना वखतमां तथा स्वयंवर मंडपमां आवी त्यां " दोवईराय-वरकन्ना " एवो पाठ छे. तेमज पांच पांडवोने वरी त्यां " दोवईदेवी एवो पाठ छे. त्यार वाद संसार व्यवहारना भोगने अंते दिक्षा लइ संसार त्याग कर्यो ते वखते " दोवईअज्जा " एवो पाठ छे. परंतु " दोवईसमणीवा-सीया " एवो पाठ नथी. ते कारणथी प्रतिमानी पुजाना वखतमां द्रौपदी सम-किती होय तो " सावीया " एम पाठ जोइए. केमजे पुर्व काळमां जे जे स्त्रीओए गुरु तथा गुरुणी पासे समकितसहित व्रत आदर्या ते ते वखते " सावीया " एवा

पाठ सिद्धांतोमां छे. तेमज पुरुषने पण " समणोवासय " एवो पाठ छे. तो कहेवानुं जे द्रोपदीनी पुजा विगेरे सर्व व्यवहारो लौकिकखाते गणवा योग्य छे. परंतु लोकोत्तर व्यवहारखाते गणाय नहीं अने परण्या पछी तो समकितनो संभव छेज. विशेष द्रौपदीनी पुजा माटे तमो जे जे दाखला आपो छो, तेमां सुरिआभ देवनी कल्पित भलामण आपो छो, पण चोवीस तीर्थंकरना संख्याता श्रावक श्राविका थयां तेओनी भलामण जोग कोइ पण दाखलो तमने मळ्यो जणातो नथी केमजे सुरिआभ अवर्ती अपचखाणीनो दाखलो मळ्यो. माटे कहेवानुं जे आ चोवीसमां प्रतिमा पुजनारी द्रौपदीज तमारी नजरे आवी चडी छे के शुं ? ते आडां अवळां फांफां मारीने सावद्य कर्मनी पुष्टि करवा धारो छो. पण शास्त्रमां कहे छे के हिंसा करनारनां कृत्यनुं फळ उदे आववाना वखतमां महा सोचना करशे, एम कह्युं छे. एवुं जाणवां छतां हिंसाधुष्टि करवामां काळांत्तरे शुं फायदो मळशे ? तेनो विवेकीओए शास्त्र रीते विचार करवो जोइए.

पहाड पर्वते जात्राजवी कहेछे ते प्रश्नोत्तर.

केटलाएक भान भुलेला तप्त स्वभावी सज्जनो कहे छे के शेत्रुंजा, गिरनार, आबु, तारंगा, गोडीचा, समतशिखर, केसरीआजी, विगेरे तिर्थोए संघ कहाडीने सर्व भुमीए जात्रानी खातर अटन करवुं. ए महा निर्जरानुं कारण छे तेमज मनुष्य जन्म जीवीत्वनुं सार्थक ए जात्राथकी सफळ थाय छे. पण एम कहे छे ते वृथा छे.

एवी भ्रमना करनाराओने कहेवानुं जे, एवी मुसाफरी फरी तिर्थ यात्रानुं फळ लेवानुं कहेछे, ते तो अन्य दर्शनमां छे. वळी अन्यदर्शनमां वेद धर्मना श्रुतीवाळा पंडितो ते बाबतने नास्ति पण कहेछे. केमजे केटलाएक अन्यदर्शनना मुळ शास्त्रोनी रुक्ति जोतां सिद्ध थाय छे. द्रष्टांत. पांच पांडवोए श्रीकृष्ण पासे आदेश माग्यो जे राजमान साहेब शिरछत्र आपनो हुकम होय तो अडसठ तिर्थो करवा जइए. एम पुछवाना जवाबमां श्री कृष्णे ज्ञानदशाथी विचारीने कह्युं जे एक मारी तुंबडीने यात्रा करावजो. एम कहीने एक कडवी काची तुंबडी आपी. ते तुंबडी लइने पांडवो सर्व तिर्थोए रटण करीने पाछा श्री कृष्ण पासे हाजर थइने तुंबडी आपी ते वखते सज्जन मंडळनीसाथे सभा पुरीने बेठेला श्रीकृष्णजीए पांच पांडवोने बोध आपवानी खातर शस्त्रथी मजकुर तुंबडीनुं खमण करीने पांडवो विगेरे सर्व सभाने प्रसादी दाखल वहेंची आप्युं अने पोते थोडुंक हथेळीमां लइने न खातां गुप्त कर्युं. पछी पांडवो विगेरे सभाना सज्जनोए तुंबडीनो प्रसाद मुखमां

नांखतां कडवाशना हेतुथी थुंकी नांख्युं त्यारे पांडवोने कृष्णजीए कह्युं के अरे अविवेकीओ ! जात्राळु पवित्र तुंवडीने थुंको ना ? त्यारे पांडवो कहे जे महाराज घणी कडवाश माटे थुंकी नांखी छे. ते वखते श्रीकृष्ण कहे जे तमोए तेने जात्रा ना करावी ? के हजु सुधी कडवाश मटी नहीं. त्यारे पांडवो कहे जे साहेब ! अमारा करतां तुंवडीने अनेक तिर्थोनी यात्रा, जळमंजनादिक कराव्या छतां तेनो अभ्यंतदगुण कटु माटे कडवाश न गइ, तेमां अमारो शो वांक ? त्यारे श्रीकृष्णजी कहे जे तुंबडी जड छे, तेमांथी कडवाश न गई तो शुं तमो विवेकीओना अंतरमांथी कडवाश न गइ तो शुं तमो विवेकीओना अंतरमांथी कडवाश गइ के रही ? पण विचारतां मालम पडे छे के तमारा अंतरनी कडवाश गइ जणाती नथी. माटे अरे सुज्ञ पांडवो ! कासदी करी अनेक घाटमां अटण करतां यात्रानुं फळ प्रगट थतुं नथी अने मुसाफरीमां नदी, द्रह तथा सरोवरमां पडीने अनेक प्राणीओना नाश करीने पंथे चालवाना श्रमथी लागेलो थाक या मेल या परसेवा विगेरे जे जे बहारथी लागेली गंदकी तेनो सुधारो थाय, पण अभ्यंतरना भरेला मळ, मुत्र, सूक्र, रुधीर रसी विगेरे अनेक जातनी गंदकी, तेतो तिर्थ जळमां सोवार या लाखवार मंजन करे तोपण टळे नहीं. माटे शरीर सदा अशुद्ध छे. कारण के तिर्थोना जळथी गंदु शरीर शुद्ध न थयुं तो अज्ञान आत्मा सदा क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेषादिक अनेक विकारोना वंधनमां सपडाइ गएला छे तो जात्राओ तथा तिर्थोना जळथी शुद्ध थायज क्यांथी ?

हवे पांडव कहे जे अहो कृपानाथ ! यात्रास्नाननुं फळ सफळ केम थाय, ते कहो ?

आत्मानदीसंयमतोयपूर्णासत्यावहाशीळतटादयोर्मिः
तत्राभिषेकंकुरुपांडुपुत्रनवारिणाशुद्धतिचांतरात्मा. १

भावार्थ—" श्री. महाभारते तिर्थाधीकारे अस्मिन श्लोके "

आत्मारुप नदीने संजम एटले पाप टाळवाना नियमोरुप जळथी भरपुर तेमां सत्यरुप प्रवाह चालेछे ने तेने शियळरुप त्रट एटले बे कांठा छे तेमां अहो पांडुपुत्र युधिष्ठिर ! स्नान करो ! पण पाणीना मंजनथी अंतरआत्मा शुद्ध न थाय.

चित्तमंतर्गतंदुष्टंतिर्थस्नानैर्नशुध्यति
शतंसोपिजळेधौतंसुराभांडमिवाशुचि. २

भावार्थ—अहो युधिष्ठिर ! अंतरमां चित्त दुष्ट छे, ते तिर्थोदक एटले तिर्थोना पाणीथी सोवार स्नान करतां पापरुप मेलथी कदी शुद्ध न थाय. दृष्टांत. जेम मदिरा एटले दारुना वासणने सोवार जळमां धोतांपण शुद्ध न थाय, तेमज ते सदा अशुद्धज रहे छे.

मृदोभारसहश्रेणद्दलकुंभशतेनच;
नशुद्धातिदुराचारःस्नातातिर्थशतैरपि.

भावार्थ—हजारभार माटीनो लेप करीने पछी सो घडा पाणी भरी सींचे तोपण ते माटी पुरी धोवाय नहीं ने पवित्र शरीर न थाय, तेमज माठा आचारना धणी नीर्दय स्वभावे सोवार तिर्थे स्नान करे पण कदी शुद्ध न थाय.

आरंभेवर्तमानस्यमैथुनाभिरतस्यच;
कुतःशोचंभवेतस्यब्राह्मणस्ययुधिष्टिर.

भावार्थ—प्राणवधना आरंभमां सदा प्रवर्ते. तेमज सदा मैथुनना भोगमां तत्पर होय, एवा ब्राह्मणोने अहो युधिष्टिर ! क्यांथी शुद्धता थाय.

कामरागमदोन्मत्तोयेचस्त्रीवशवर्त्तिनः
नतेजलेनशूध्यंतेस्नातातिर्थसतैरपि.

भावार्थ—अहो युधीष्टिर ! कानराग मदे करीने मतगयंद एटले हाथीनी रीते मदोन्मत थइ गएला, तेमज सदा स्त्रीनेवशे वर्तीने विषयसुखनी लोलुपतानी वृद्धि करे छे, तेवा दुष्टो कदापि सोवार तिर्थयात्रा या स्नान करे तोपण शुद्ध न थाय. द्रष्टांत. जेम सोवार गर्धवी एटले गधेडी गंगाना जळमां स्नान करतां घोडी न थाय, तेमज अज्ञानीओ दुष्ट स्वभाव न छोडतां तिर्थ विगेरे स्थळे रटण करे छे, ते फोगट खेप जेवुं गणाय.

एम अन्यदर्शनीओ पण यथायोग्य ज्ञानअभ्यासना लाभथी तिर्थोनी करेली कासदीने अमान्य करे छे. तेमज मजकुर वोध प्रमाणे तेओनी यथामतिए आत्मसुधारो करवा बतावे छे.

वळी तेज अन्यदर्शनीओमां तप्त स्वभावीओना मित्र बंधुओ पण छे केमजे ते अन्यदर्शनीओ तप्त स्वभावीओनी पेठे कासीदुकरीने दुष्ट स्वभाव न छोडतां तिर्थ विगेरे सर्वस्थळे नदी नाळांओमां आत्मकल्याणनी खातर दोडी दोडीने डुबकी

मारी आवे छे, तेमज घणा पैसानो खरचपण करे छे. परंतु तेओना मुळ ज्ञानधर्ममां तो दे ाटन करीने तिर्थ यात्राओ करवानी सख्त मना छे.

हवे जैन धर्मीओने माटे सिद्धांत शास्त्रोमां वितराग देवे निरापक्ष आत्मकल्याणनो रस्तो बताव्यो छे. तेना उपर आ अबोधी पुरुशो ध्यान न आपतां अवळे मार्गे जाय छे, ते केवी भुल छे ? केमजे ज्ञातासूत्रने पांचमे अध्ययने सुखदेव सन्यासीए थावरचा मुनीने प्रश्न करेलुं के, स्वामी ! तमारे यात्रा छे ! एम पुछवाना जवाबमां थावरचा अणगारे कहुं जे, अहो सुखदेवजी !

" जणंममनाणदंसणचरित्ततवसंज्जममाई हिंज्जोएहिंजवणासेत्तंज्जत्ता "

भावार्थ—जे श्रमण एटले सर्व प्राणीओ उपर सरखुं दयारुप मन वर्ते छे, ते सर्व संजतिओने ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप ए चारमां संजमपणुं आदरीने सदा खर्वदा यतना एटले दयाभावे उपयोग सहित निश्चळतापणे आत्मधर्मनुं आराधन करे, तेज शुद्ध यात्रा छे. एम थावरचा अणगारे नेमेश्वर गुरुना बोध प्रमाणे सुखदेवजीने कहुं पण पहाड पर्वतोना पाषाणोसाथे शिर अफाळतां यात्रा सफळ थाय, एम मुळ सूत्रोमांतो कोइ स्थळे विवेचन आपेलुं नथी.

तेमज आवशक सूत्रे त्रीजा गुरु वांदणाना आवशकमां कहुं छे के, " जता, भे, जणी, जंचमे. " भावार्थ—अहो गुरु ! तमो जात्रासहित छो. हे पुज्य ! जवणी एटले जीत्या छो पांच इंद्रिओना विकारने. एम शिष्ये गुरुज्ञानीने बहुमान भक्तिसाथे करेला गुना खमाव्या, तेमां जात्रा एटले हे गुरु ! तमो ज्ञानेकरीने सुशोभीत छो. के तमारी कृपाथी मने ज्ञानदशा प्रगट थइ; तेमज तमे दरशनना निश्चळ छो, ए शुद्ध सदहीणा आस्था तणा जीनआज्ञामां स्थिर आत्मवंत छो; तेमज मने स्थिर कर्यो. वळी अहो गुरु ! आपे चारित्र गुणे करीने सावद्य आश्रवनो रुंध कर्यो, तेमज मुजने आश्रव रुंधवा उपदेश दइ न्याल कर्यो छे; तेमज अहो गुरु ! तमो तपगुणे करीने पुर्वोपारजीत कर्मोने प्रजळीत करो छो, तेमज मने मारा पुर्वोपारजीत कर्मोने प्रजळीत करावत्रा उद्यमवत थया छो. तेमज अहो गुरु ! तमे पोते पांच इंद्रिओना विकारनो निग्रह कर्यो छे, तेमज मने निग्रह करवा शुद्धबोध कर्यो, एवा आप मने उपगारी छो, तेम छतां तमारी आसातना अभक्ति थइ होय तो मारी यथाशक्ति प्रमाणे क्षमा मागुं छुं. हवे एवा निरापक्षी पाटमां गुरुगुणनो

समावेस छे, तेमां जात्रा विगेरेनी रुक्ति, छतां भाव प्रमाणे संभवीत छे. तेम छतां अहो पहाडावलंबीत यात्राळु कासीदो ! जात्राना गुण जाण्या विना देशाटण करी स्वइच्छाए छकायनो आरंभ करो छो, ए कया सत्य सिद्धांतना आधार प्रमाणे दोडी जाओ छो ? एमज भगवतीजीना अढारमा सतकमां सोमल ब्राह्मणने महावीरे तेवीज रीते निर्वद्य यात्रा वतावी छे.

तेमज श्री निरयावळीका सूत्रमां त्रीजा वर्गमां सोमल ब्राह्मणने श्री पार्श्वनाथजीए तेवीज रीते निर्वद्य यात्रा वतावी छे. पण देशाटण करवामां यात्रानुं फळ बताव्युं नथी. तेम छतां अरे वजरकर्मी बंधुओ ! पामर अजाण पीळा तिल्लकना टोळाओने कार्मीक तिर्थोना पराक्रम फळ वतावीने पहाडोमां रखडावो छो तो ते परभवे अवगुण कर्त्ता थशे के नहीं ? तेनो विचारतो करो ?

वळी एवी कार्मीक यात्राने द्रढ करवा माटे शेत्रुंजा पर्वतनो महिमा वधारी शेत्रुंजा महात्म नामनो ग्रंथ रचीने भोळा शेवकोने भरमाव्या छे ने ते ग्रंथमां रुषभदेव तथा महावीरनां नाम घालीने कहेछे जे पुंडरिक गणधरे शेत्रुंजानो महिमा पुछयो ने रुषभदेवे उत्तर आप्यो. तेमज जाव चोवीशमा महावीरे गौत्तमनी आगळ शेत्रुंजा महात्म कही देखाडयुं. ते तथा रुषभदेवे शेत्रुंजानी नवाणुं यात्रा करी, ते तथा शेत्रुंजो पर्वत सासवतो छे. ते तथा आखो पर्वत अनंत गुणनो भंडार तथा तिर्थोनो राजा छे. ते तथा प्रथम पचाश जोजन हतो अने शिखरे दश जोजन हतो अने छठे आरे मुंढाहाथ प्रमाणे रहेशे, ए विगेरे केटलीक रीते फावती कल्पना करीने ग्रंथ बांधीने शेत्रुंजानी यात्रानो महिमा वधार्यो छे. ते कांइ मुळ सूत्रोमां छे नहीं. मुळ सूत्रोमां तो हस्तिकल्प नगरथी " अदुरसामंते " एटले अति ढुंकडो नहीं अति वेगळो नहीं, एवी रीते शेत्रुंजो पर्वत वर्णवेलो छे. त्यां तिर्थयात्रा करवी एमतो कांइ कह्युं नथी. पण त्यां साधु महा पुरुषो संथारा करीने मोक्ष देवलोके पहोंच्या, ते वात कबुल छे. परंतु ते पर्वते पांचपांडवो वीसक्रोड साधुसाथे सीध्या, एम घणा रकमबंधी सिधेला, ते तथा सर्व साधु श्रावको त्यां यात्रा करवा गया, एवी शाक्षीओ मुळ शास्त्रना पाठ साथे कोइ तरफथी मळी आवती नथी, तेम छतां ते सबंधी कोइ दाखलो पुछवा धारीए तेना बदलामां तप्त स्वभावीओ कळेशरुपी दाखलो करवा तैयार थाय छे, ते वधुं अज्ञानतानो वधारो छे. वळी इंग्रेज लोकोपण जैन धर्मना घणा पुस्तकोनो संग्रह करीने संसोधन करतां शेत्रुंजानी बाबतमां एम लखे छे जे ते शेत्रुंजो जैन धर्मीओना प्राचिन काळना महा-

त्माओनुं मर्ण स्थानक छे, एम कहेलुं छे. अने जैन शास्त्रमां ज्ञाताजी अंतगड विगेरे केटलाएक मुळ सूत्रोमां अंतक्रियाना वखतमां " जावसितुंज्जेसिद्धा " एटले जे चर्म शरीरे महात्माए संसार छोडयो तेथी उत्कृष्ट ज्ञानदर्शन, चारित्र, तप, नियम, विगेरे सर्व आत्मिक धर्मनुं आराधन करीने छेवट शरीरथी हालता चालता पाराह पहोंचतां श्वासनी धमग चडे एवा अशक्तवान शरीर थवाने वखते साधुओ रात्रे धर्म जाग्रिका करतां संथारो करवा मुकरर करीने सवारमां गुरुआज्ञा लइ शेत्रुंजा पर्वते संथारो करीने अंतसमे केवळ ज्ञानदर्शन पामी सिध्या, जाव शब्द एटले थावरचावत सुखदेवजी सिध्या एम कहेवाय. माटे अंतक्रियाना वखतमां शेत्रुंजे संथारा करवा जवानुं बताव्युं छे, ते योग्य छे. मतलब के एकांत भुमीविना शुद्ध ध्यान बनीशकतुं नथी. माटे वस्तीथी अलग जवुं; एमतो शास्त्रोमां छे. परंतु पीळा रंगीत वस्त्रवाळा वेषधारीओ खटकायना वाधो पोते पहाडे पर्वते भटके ने मंद बुद्धि वाळाओने भटकावे. तेवी पुर्व काळना महान पुरुषोए पोतानेमाटे तथा परनेमाटे अज्ञानता वापरी सावद्य वोध करेलो नथी. केम जे ते पुर्व काळना महात्माओ आत्मसाधनामां ज्ञान दर्शनना उपयोगथी सदा जात्रावंतज हता; तेमज तेओना उपयोगथी क्षणमात्र शुद्ध जात्रानो विजोग पडतो नहीं. एम पुरेपुरी शास्त्रोनी साक्षीछे. तेनुं कारण एके पुर्वे जे जे वितरागदेव आदे सर्व धर्मधुरिंधर पुरुषोए आत्मकल्याणने माटे उपयोग करीने पोतानी अनादि काळनी अज्ञानता विगेरे राग द्रेषादिक सर्व मिथ्यात्व जडता हती, ते सर्वथी मुक्त थवाने माटे एकाग्र ध्याने ज्ञान, दर्शन विगेरे आत्मिक गुण आराधनानी यात्रा करी अने ते निर्वद्य यात्रा करतां कोइ पण मर्णांत उपसर्ग आवे तो महा सुरवीर अने साहसिकपणुं केवळीने हायमान प्रणाम न करतां मेरुनी पेरे अडोल रहेता, एम शास्त्रोमां कह्युं छे अने तमारी मान्य करेली यात्रा सावद्यछे अने तमांरा वज्र पाषाणरुप राग द्रेषी निर्दय स्वभाव अने सदा तपा एटले तपी गएला गण ठरेला नहीं, एवा अनेक अवगुणोवाळा पित संवेगीओनी या तेमना शेवकोनी यात्रा असत्य छे. कारण के यात्राना स्थानको उपर जतां कोइ वखते परिसह आवी उपजेतो ते स्थळनी जात्राए जतां नथी. जेम हाल थोडीक मुदत उपर पालीताणा राजा तरफथी केटलीक जातनी हरकतो हती, ते वखते केटलाएक जणाएतो पालीताणाना परगणामां अमुक कामे जतां भय पामता तो जात्राए जवानुं तो वयांथीज बने, ते वखते न जवाय तेवुंज कारण हतुं. ते विवेचन आपवानी कांइ जरुर नथी. पण एटलुंतो खरुं

जे " खातां पीतांहर मळेतो अमारेकु कैयो, सीरसाटे मळेतो चुप कर रहीयो " अर्थात जात्रानो खरो लाभ जाणता होतो परिसहना वखतमां हायमान परिणाम थवुं न जोइए. माटे जात्रा करवानुं स्थानक बतावे छे ते तथा जात्रा जनारा विगेरे सर्व शास्त्रथी विरुद्धज गणाय छे. केमजे सत्य कृत्यनी जात्रासाथे सरखावतां परस्पर भेद पडीजायछे. ते विषे दृष्टांत. अंतगड सूत्रमां कहुं छे. राजग्रही नगरीना रहिस सुदर्शन शेठे महावीरनुं आगमन जाणी मात पीतादिकनी आज्ञा लेइ महावीरने वांदवा जतां जक्षाधिष्ठित अर्जुनमाळी सामो आवतो देख्यो ने मर्णांत उपसर्ग जाणी सागारी संथारो करी निर्भय विचार साथे काउसग कर्यो, पछी शेठनी पासे अर्जुनमाळी आवी परिसह आपवानो विचार कर्यो पण शेठना पुन्योदयथी तेनी कारी न चालतां मोग्र प्राणी जक्ष स्वस्थानके गयो. छेवट शेठे अणसण पाळीने अर्जुनमाळीसाथे महावीरना चरणमां जइ पहोंच्यो. ए दृष्टांतनो मुळ हेतु ए के शाक्षातवीर भगवाननी यात्राए जतां मर्णांत उपसर्गथी हायमान परिणाम न कर्युं, ते शास्त्रोक्तरीते सत्य छे. हवे हठवादीओनी यात्राने मजकुर शेठनी जात्रा साथे सरखावतां तदन विरुद्ध छे. केमजे शेत्रुंजा विगेरे पर्वतोनी कल्पित जात्रा करवाने माटे शेत्रुंजा महात्म विगेरे नवा ग्रंथो मुळ शास्त्रोथी विरुद्धने आरंभना वाक्योथी भरपुर रचीने भोळा लोकोने फसाव्या छे. ते मांहेलों थोडोभाग अहिंआ लखवानी जरुर छे, ते वांची जोतां विवेकीओने मालम पडीआवशे.

सेतुंज्जेपुंडरीओसिद्धोमुणिंकोडिपंचसंज्जूतो;
चितस्सपुणीमाएसोभन्नईतेणपुंडरीओ.

भावार्थ—शेत्रुंजा पर्वत उपर रुषभदेवना परेलां पुंडरीक नामे गणधर पांचक्रोड मुनीसाथे सिद्धि पाम्या छे चैतरशुद पुनमने दीवसे, ते माटे शेत्रुंजानुं नाम पुंडरीकगिरि कहीए.

नमिविनमिरायाणोसिद्धाकोडीहिदोहिंसाहुणं;
तहदविडवाल्लीखिल्लानिव्वुआदसयकौडीओ.

भावार्थ—नमि विनमि बे भाइ विद्याधरना राजा ते सिद्ध थया. बे क्रोड मुनीसहित. तेमज द्रावीड ने वाळी खिल्ल बे भाइ मुनी सिद्ध थया. दशक्रोड साधु साथे.

पज्जुन्नसंबपमुहाअधुठाओकुमारकोडीओ;
तहपंडवाविपंचयसिद्धिगयानारयरिसिय.

भावार्थ—प्रदुमनकुमार सांबकुमार प्रमुख साडासाठ करोड कृष्ण पुत्र कुमरसहित सिध्या, तेमज पांच पांडव पण वीसकरोडसाथे सीध्या, तेमज सिद्धि पाम्या नारदरुषि एकाणुं लाख साथे.

थावच्चासुयसेलंगायमुणिणोवितहराममुणि;
भरहोदशरहपुत्तोसिद्धावंदामिसेतुंजे.

भावार्थ—थावरचा मुनी एक हजारथी. शुकमुनी एकहजारथी, पांचसेंथी सेलंमुनी प्रमुख, मुनीओ सिध्या. तेमज रामचंद्रमुनीने भरतजी ए बे दसरथ राजाना पुत्र त्रणकरोड साधुसहित सिद्धि वर्या तेमने वांदुं शेत्रुंजा उपर.

अन्नेविखवियमोहाउसभाइविसालवंससंभुआ;
जेसिद्धासेत्तुंजेतंनमहमुणिअसंखिज्जा.

भावार्थ—ए आदी बीजा घणा मुनीराज मोहनो क्षयकरी रुषभादिकना मोटा वंशमांहे उत्पन्न थया ते सिद्धपद पाम्या शेत्रुंजा उपर ते मुनी असंख्याता प्रत्ये हुं वांदुं छुं.

पनासजोयणाइंआसिसेतुंजवित्थडोमूले;
दसजोयणसिहरतलेउच्चत्तंजोयणाअठ.

भावार्थ—पचास जोजन प्रमाणे मुळमां शेत्रुंजो पहोळपणे हतो ने दस जोजन शिखरे पहोळो हतो अने आठ जोजन उंचपणे हतो.

जंलहइअन्नतित्थेउग्गेणतवेणबंभचेरेण;
तंलहइपयत्तेणसेत्तुंजगिरिम्मीनीवसंतो.

भावार्थ—जे फळ अन्यतिर्थे आकरातपे तथा उत्कृष्ट शियळव्रते करीने पामीए, तेज फळ उद्यमे करीने तत्काळ विमळगिरीमां वश्याथी पण प्राप्त थाय छे.

जंकोडीएपुन्नंकामियआहारभोइआजेउ;
जंलहइतत्थपुन्नंएगोवासेणसेत्तुंजे.

भावार्थ—जे कोइ करोड जणनें वंच्छित भोजने जमाडी पुन्य उपराजे ते सर्व पुन्य शेत्रुंजे एक उपवास करतां मळे छे.

जंकिचीनामीतथ्थंसग्गेपायालेमाणुसेलोए;
तंसव्वमेवदिठंपुंडरिएवंदिएसंत्ते.

भावार्थ—जे कोइपण नाम मात्र तिर्थ, स्वर्ग, पाताळ ने मनुष्यलोके ते सर्व तिर्थोने दीठा फळ पामे, ते एक पुंडरिक तिर्थ वांदतांज फळ मळे.

पडिलाभंतेसंघंदिठनदिठेयसाहूसेत्तुंजे;
कोडीगुणंचअदिठेदिठेयअणंतएहोइ.

भावार्थ—शेत्रुंजानी सामे चालतां शेत्रुंजो दीठे अणदीठे करोड गुण फळ थाय, तेमज शेत्रुंजाने देखतां तो अनंत गुण फळ थाय.

केवळनाणुप्पत्तीनिव्वाणंअसिजथ्थसाहूणं;
पुंडरिएवंदित्तासव्वेतेवंदियातथ्थ.

भावार्थ—ज्यां केवळज्ञाननी उत्पती थइ तथा ज्यां मुनीओने निवारण मोक्षनी प्राप्ति थइ छे, ते सर्वने वांदवानुं फळ एक पुंडरीक तिर्थ वांदेथके पुर्वोक्त सर्व मुनीने वांदवानुं फळ मळे.

अठावयंसमेएपावाचंपाइंउज्जंतनगेय;
वंदितापुन्नफलंसयगुणंतंपिपुडरीए.

भावार्थ—अष्टापद पर्वतउपर रुषभदेव मोक्षे पधार्या समेतशिखर तिर्थ वीस जीननुं सिद्धक्षेत्र छे. पावापुरीए वीरनुं मोक्ष ठाम, चंपानगरी ए वासुपुज्यनुं सिद्धक्षेत्र ने गिरनार तिर्थ नेमनाथनुं मोक्ष ठाम ए तिर्थोने वांदे जेटलुं पुन्य थाय ते करतां सोगणुं फळ पुंडरीक तिर्थे भेटतां थाय.

पुयाकरणेपुन्नंएगगुणंसयगुणंचपडिमाएः
जिणभवणेणसहस्संणंतगुणंपालणेहोइ.

भावार्थ—पुजा कीधे जे एकगणुं पुन्य थाय तेथी सोगणुं पुन्य प्रतिमा भरावे तथा पुजे थाय. ते करतां पण जीनभुवन करावे हजारगणुं पुन्य. पण अनंतगणुं पुन्य शेत्रुंजानुं रक्षण करवाथी थाय.

पडिमंचेइहरंवासितुंजगिरीस्समथ्थएकुणइ;
मुत्तुणभरहवासंवसईसग्गेणनिरुवसग्गे.

भावार्थ—शेत्रुंजा पर्वतउपर प्रतिमा या देरासर करे अथवा करावे ते पुरुष भरतक्षेत्रनुं राज भोगवीने चक्रवर्तिपणुं मुकी स्वर्गलोके तथा मोक्षे जाय,

नोकारसि, पोरसि, पुरीमढम, एकासणुं अने आंबेल एटला पचखाण करतां पुंडरीक तिर्थ संभारे तो जे फळ पामे ते कहे छे. नोकारसी ए छठनुं फळ. पोरसिए अठमनुं फळ, पुरीमढमे चार उपवासनुं फळ, एकासणे पांच उपवासनुं फळ, आंबेले पंदर उपवासनुं फळ अने उपवासे मास खमणनुं फळ. एम मन, वचन ने कायाना शुद्धजोगे आराधे. ते फळ पामे. ते फळ एक शेत्रुंजानुं ध्यान, स्मरण करतांज पामे. चउवी आहारना पचखाण करीने सात यात्रा शेत्रुंजानी करे ते त्रीजे भवे मोक्षे जाय.

अज्जविदीसइलोएभत्तंचईउणपुंडरीयनगे;
सग्गेसुहेणवच्चइसीलविहूणोविहोऊणं.

भावार्थ—आजपण देखाय छे के, लोकमां अहार पाणी तजी पुंडरीक पर्वते संथारो करे ने सीलव्रत विगेरे शुद्ध आचार रहित होय तोपण सुखे करीने स्वर्गे जाय.

चरणरहीयाइंसंजइविमलगीरीगोयमस्सगणीओ;
पडिलाभेयमेगसाहुणोअढ्ढीदीवसाहुपडीलभइ.

भावार्थ—जेने साधुपणानो वेश छे परंतु सर्व चारित्र रहित छे, ते शेत्रुंजा पर्वतउपर चडे तो तेने गौतम सरीखा जाणवा अने तेज वखते तेने आहार पाणी आपे तो अढी द्वीपना साधुओने दान दीए तेटलुं फळ थाय. धनेश्वर सुरीजीए पण एज रीते कह्युं छे.

मेगसावयपुंडरीयोपाणभोयणाईभुज्जसी;
आणंदकामदेवायअढ्ढीदीवंसव्वसावगाणंभुजंसी.

भावार्थ—एक श्रावकने विमळगिरी उपर जमाडे तो आणंद कामदेव आदि अढी द्वीपना श्रावकोने जमाड्यानुं फळ थाय.

छत्तंझ्झयपडागंचामरभिंगारथालदाणेण;

विज्जाहरोअहवइतहचक्कीहोईरहदाणा.

भावार्थ—छत्रदाने, धजादाने ने पताका वालझरी चढावे ते विद्याधरनी पदवी पामे, तेमज रथदानथी चक्रवृतिनी पदवी पामे.

दसवीसतीसचत्तालख्खपन्नासापुप्फदामदोणण;
लहईचउथछटठमदसदुवालसपलाइं.

भावार्थ—दसलाख, वीसलाख, त्रीशलाख, चाळीसलाख, ने पचासलाख, एटला फुलनी माळा चडाववाथी फळ थाय ते कहे छे. दशलाखे एक उपवासनुं फळ, वीस लाखे छठ्ठनुं फळ, त्रीशलाखे अठमनुं; चाळीशलाखे चार उपवासनुं; ने पचाशलाखे पांच उपवासनुं फळ थाय.

ते तिर्थे कृष्णागरआदि उत्तम धुप दे तेने पंदर उपवासनुं फळ थाय. कपुर अने ब्रासनो धुप दे तेने मासखमणनुं फळ थाय.

बीजा तिर्थोए सोनानुं तथा आभुषणनुं तथा रोकडनाणानुं तथा भुमीनुं दान देवे करी जेटलुं फळ पामे, ते करतां पण शेत्रुंजा उपर पुजा, नावण करवाथी विशेष फळ मळे, तेमज ते पर्वतने भेटतां आठ भयथी मुकाय. ए सर्व संबंध लघु शेत्रुंजा कल्पमां छे. परंतु ते करतां पण घणाज विस्तारनी साथे जात्रा जवाविषे तथा देरां, प्रतिमा करावविषे तथा संवेगीओ तथा तेमना शेवकोने जमाडवाविशे तथा नाणा विगेरेनुं अर्पण करवा विषे तथा असंजतिओनुं मान वधारवाविषेना फळना ग्रंथो एटला मोटा बांधेला छे के वांचनार या सांभळनार महा मोटा आरंभमां भराइ जइने विचारा लाभ लेवानी आशाए छकायनो कुटो करतांज धराय नहीं. एवा आरंभी पुस्तकोना आधारथी जात्राओना फळ लेवा धारे छे, तेमज सर्व प्राणीना प्राण हणीने मोक्षफळ इच्छेछे. तेने समजाववानुं एटलुंज के जुलमी ग्रंथना आधार प्रमाणे चालनारा अज्ञान प्राणीनी भवलत्तानो निच्छेद केवी रीते थशे ए आश्चर्यकारक छे ! कारण के जगत व्यवहारना सुख, विषय विगेरे आडंबरमां लुब्ध थइ गएला अबोध प्राणिओ; तेने ज्ञान, बोध, त्याग; वैराग पमाडवो ने तेनुं भलु इच्छवुं तेतो एक तरफ रह्युं, परंतु विचारा पशु समान जडबुद्धिवाळा पुरुषोने शास्त्रथी तदन उलटी रीते ग्रंथोना निबंध रची लाभ बतावी महा मोटा जंजाळमां धकेली मुकया, ते पीळा वस्त्र धरनार "देवानां प्रियनो" छुटको थवो मुश्केल छे. हवे आ प्रसंगे सर्व जैन दयाधर्मी बंधुओने कहेवानुं जे मजकुर ग्रंथकर्त्ता

जात्राळु कासिदोना कृत्य कर्मना रिवाज प्रमाणे न चालतां एक वितराग देवे जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, नियम, इंद्रिओनो निग्रह* करवाथी आत्मसाधन करवानी शुद्ध यात्रा बतावी छे. तो ते उपर शुद्ध ध्यान आपी ज्ञानदर्शनना उपयोगसाथे जगत झाळना ममत्व उपरथी यथाशक्ति मनसा खेंची लइने सर्व आश्रव छांडी तिकर्णशुध्धे अशुद्ध व्यवहारमांथी शुद्ध व्यवहारमां स्थिर थइने निर्वद्य स्वभावे निर्वधक यात्रा करो. एवी यात्राथी सर्व कार्य सिद्ध थशे. अनंत भवभ्रमणमां अशुद्ध व्यवहारना योगथी अनंत कर्मनी वर्गणाओ खीर नीरनी पेरे लोलीभुत थएली छे, ते सर्व परोक्षभावे जाणी स्वपरनी वहेंचण करीने स्वस्वरुपनी रमणतानो लाभ मेळववो, ते शुद्ध निर्वद्य यात्राथी थशे.

प्रतिमापुजनथी मोक्षफळ कहेछे, ते प्रश्नोत्तर.

केटलाएक मतिविकळ पुरुषो एम कहे छे जे, पाषादिकनी प्रतिमा श्रावको तिर्थंकर गोत्र बांधे तथा त्रीजे भवे मोक्ष जाय, एम प्रतिमानी पुजानो लाभ बतावे छे तथा कहे छे जे, तिर्थंकरोनेवारे श्रावकोए प्रतिमा पुजीने मनुष्यजन्म सफळ करेलो छे. एम बोलनारनुं वचन वृथा छे.

श्री उपासग दशांग सूत्रमां वाणीज गामना रहिस आणंद श्रावक " महीढीएअपरीभुया " एवो गृहस्थ, ते श्री महावीरनु पधारवुं जाणी वांदवा गयो. त्यार बाद धर्मोपदेश सांभळीने मिथ्यात्व वोसीरावी समकित सहित बारवृत आदर्या. ते अगाउ मिथ्यात्वदशामां जे गृहस्थाइ हती तेटली मोकळ राखीने नवी समृधी मेळववानी बंधी करी त्यां " खेतवथुनुंपरीमाणंविहिंकरेई " एटले खेतर ते उघाडी जमीन तथा वथु एटले ढांकी जमीन ते घरादिक वखारो प्रमुख घर खाते वावरवाने मोकळा राखीने वकातना रहेला आरंभना पचखाण कर्या. ए पांचमुं वृत विधीसहित आदरीने एमज छठा वृतमां छ दिशाए वेपारादिके जवानुं प्रमाण कर्युं. एमज सातमा वृतमां छवीस बोल विगेरे नित्य नियमनी साथे पंदर कर्मादाननो वेपार पचखे एमज " जाव " संथारा सुधी विधीग्रहण करी तेमां जेटला संसारीक व्यवहार खाता मोकळा राख्या, तेटलाज खपे एम पोते बोलता गया. ते सिवायना वीर परमात्मानी पासे पचखाण कर्या हवे आश्रव रुंधीने संवरकर्णी करवा माटे नवमुं दशमुं ने अगियारमुं वृत आदरवानी विधी धारीने ए त्रण वृतोमां

---

* वशकरवुं.

सर्व आरंभनो निसेद करवा मनसा वलावी छे. त्यारबाद बारमा वृतनी विधीमां श्रमण निग्रंथने " फासुएसणीजेणंअसणंपाणंखाईम्मंसाईम्मंवथ्थपडीगहकंवलपायपुछणेणं "

भावार्थ—फासु सुजतो आहार साधुओने लेता जोग, तेमज मारे प्रतिलाभवा जोग ते अन्ननी जात, पाणीनी जात, सुखडीनी जात, मुखवासनी जात, वस्त्रनी जात, पात्रप्रमुख काम्बळ तथा पथरणुं तथा रजत्राण विगेरे दइने पाछी लेवाय नहीं एवी वस्तुओ तथा " पीढफलगसे ज्जासंथारयेणंउसहभेसहजेणंपडीलाभेमाणेवीहरामी "

भावार्थ—पाटप्रमुख ओठींगण देवानुं पाटीयुं तथा बाजोठ तथा स्थानक तेमज पांच जातना पराळना संथारामांथी अमुक संथारो तथा एक चीजथी नीपज्युं ते ओषड तथा घणां द्रव्य मळीने नीपज्युं ते भेषद एटले चुरण ते साधुओने प्रति लाभीने काळांतरे पाछी लेवाय एम प्रति लाभतो थको रहुं, एम सर्व जातना दानादिकनी मापणी विधीपूर्वक ग्रही छे. एवी रीते श्रावक धर्मनी आराधना करवा विषे सूत्रोमां विवेचन आपेलुं छे. परंतु जैन प्रतिमाना पुजननीविधी श्रावकोए कोइ मुळसुत्रोमां पुछी नथी तो विधी पुछयाविना पुजन शेनु करे ? वळी ते श्रावको वृत लीधा सिवाय तिर्थंकरनी समक्ष एम बोलेला छे जे, अन्यदर्शनी तथा अन्यदर्शनीना देवने तथा अन्यदर्शनीए ग्रहण करेला जैनना द्रव्यलींग ए सर्वने वांदवा तथा नमस्कार करवाना नीम करुं छुं, तेमज ते बोल्या अगाउ मारे बोलाववा या विशेषे बोलाववा या तेओने गुरु तथा धर्म बुद्धिथी आहारादिक देवो या देवराववो, ए सर्वे आज पछी हुं आणंद श्रावकने न कळपे. विशेष अन्य तिर्थीओना वेष ते साक्यादिक तथा अन्य तिर्थीओना देव ते हरीहरादिक प्रत्यक्ष वरतेछे. तेने तथा जैनना पडवाइ वेषधारीओ स्वधर्मथी नीकळी जइने अन्य दर्शनीमां मळी गएला ले. ते त्रण अस्नादिकना भोगी छे, माटे तेओने गुरुदेवने, धर्मनी, बुद्धिए अस्नादिक आपु नही, अने निग्रंथ गुरुने धर्मनी इच्छाए चौद प्रकारनुं दान आपु. ए निग्रंथ साधुओ आस्नादिक वस्तुना छ कारणथी भुक्ता छे. तो आणंद श्रावके आपवा कबुल राखेलुं छे. अने मिथ्यात्वीना ग्रहेला वेपधारी विगेरे पडवाइ " चइत " एटले द्रव्य ज्ञान संयुक्ता जैनसाधु ए त्रणे जण पण कहेली यस्तुना भोगी छे. माटे तेओने निरजराहेतुए न आपुं एम कह्युं छे. एम पाठनी रुक्ति जाणतां छतां तमो चैत एटले प्रतिमा करो छो तो पुछवानुं केमजकुर

कहेली वस्तुओ खावा पीवाविगेरे तेने भोगववा जोग नथी. केमजे ए एक इंद्री-दळ मजकुर वस्तु जोग नथी. एम छतां अनेक जातना कुतर्को करो छो, ते कांइ सुज्ञताने योग्य नथी. वळी चैत शब्दने माटे आणंद श्रावकनी उत्तम कर्णीने सावद्य कराववा धारो छो. पण ते उत्तम श्रावको वोसीरावेला आश्रवोने आचरण करे नहीं.

वळी जेसलमीरना भंडारमां ताडपत्र उपर लखेली उपासगनी प्रत छे. ते संवत ११८६ नी सालमां लखाएलो छे. ते प्रतमां " अणउथ्थियपरिग्रहीयाइं चेइयाइं " एटलोज पाठ छे. पण " अणउथ्थियपरिग्गही याइंअरिहंतचेइयाइं " एवो पाठ तो मुद्दल नथी. अने त्यार पछीनी उपासगनी प्रतोना उतारा थया छे, तेमां अरिहंत शब्द नवो प्रक्षेप्यो एम संभवे छे. माटे कल्पित कळाने दैव पण न पोहोंचे. केमजे शास्त्रअनुसारे शास्त्रनो मुळ जवाव मागे तो मळे पण कपोळ कल्पित शब्दनो मेळ शास्त्रआधार प्रमाणे क्यांथी मळे ? ने पोतानो मत दृढ करवा माटे नवा शब्दो घालेला, ते प्राचिनकाळना ताडपत्र उपर लखेला सूत्रउपरथी सावित थइ आवे छे. तो कहेवानुं के अरे अज्ञान साहेवो ! खातरीथी समजो के, आणंद श्रावके जेटलो आश्रव छोडीने जे जे व्रत धर्यां छे ते निर्वद्य कर्णीने माटे समजवां. पण ते वखते तेणे प्रतिमापुजन विशेनो कांइपण अर्थ पुछयो नथी. तेमज तमारी रीते आणंद श्रावके शेत्रुंजा महात्मनो आधार न राखतां एक वीर परमात्माना वचन उपर आधार राखीने कल्याणिक जीव दया धर्म आराधन कर्युं छे. एमज सर्व सावको एक विधीए धर्म आराधी देव लोके पहोंच्या पण प्रतिमा पुजनना आधारथी मोक्ष इच्छा करी नथी.

श्री प्रश्न व्याकरणना छट्ठा अध्ययनमां दयाना साठ नाम चाल्या छे. तेमां दयाने पुजा कही छे ते सत्य छे. ने तेज अध्ययनमां दयाने यज्ञ कहेल छे. ते पण बराबर छे. ए दयानी पुजा तथा दयारुपी यज्ञ ए बे अमारे आदरवा योग्य छे. मतलब के धर्मदेव तथा देवाधीदेवनुं पुजन निर्वद्य एटले हिंसा कर्या विनाज थाय छे. ने एकांइ तमारी मान्य करेली प्रतिमानी रीते एक इंद्री नथी के छकायनो भोग मागे ! केमजे एतो स्वशरीरे पंचेंद्री छे, तेमज निर्वद्य कर्णीथी निरारंभे वरते छे. तेथी ते निरारंभी देवनी आज्ञाए चालनारा सर्व साधुओ करुणारसथी भरपुर छे. तेथी ते देवना यथायोग्य गुण समृतिमां लावी वचनविलासे स्तवना करीने तेमज निराभिमानथी काया तथा आत्माने नमाडी भावपुजा करीने जन्म सफळ करवो, एवी रीते तिर्थंकर विगेरे चारे तिर्थोंए करेलुं छे, ने सत्य छे कारण के जे

काष्ट तथा तुंबडुं तरे ते तारे. ए दृष्टांते जे तिर्थंकर जे कृत्यथी तर्या, तेज कृत्य तेना सासनमां चालनारने पण बतावे छे. वळी जे वस्तुनो आरंभ पोते त्याग कर्यो छे, तेमज चारे तिर्थने दया स्थापन करी आरंभ त्याग करवानी भलामण आपीछे. ए उत्तमपक्ष अखिल जगत कबुल करे छे.

वळी कहेवानुं के पथ्थरनुं नाव बुडे छे. तो तेमां बेसनार पण बुडे छे. तेमज जे देवने तथा गुरुने व्यवहारीक भोग वल्लभ छे तो तेओनो आशरो लइ चालनारा शेवकोने पण भोगनोज बोध करशे. जेम आरंभ करनारनी सोबते आरंभ वधे, तेमज दुराचारीनी सोबते दुराचार वधे एमां कांइ नवाइ नथी. तो अरे अज्ञान नरो ! वितराग देवे दयास्वरुप जाण्या बाद छकायनो बचाव थवा माटे एम कह्युं जे " महणोमहणोमहणो " ए शब्द सर्व श्रोताजनोना हितवंच्छक थइने करेलो छे, ते तो सत्य छे. पण एज तिर्थंकरदेव कोइ वखते एम न कहे जे अहो भव्य प्राणीओ ! तमारा कल्याणार्थे तिर्थंकर गोत्र बांधवा माटे मुर्ती स्थापी छकाय जीवने हणीने मारी सेवा पुजा करजो एटले तमोने अनंतो लाभ मळशे. ने त्रीजे भवे मोक्ष जशो, एम कोइपण दीवसे वितरागनुं सावद्य वाक्य होय नहीं ने एवी हिंसाथी पोतानी पुजा मनावता नथी. तेमज मुळ सूत्रोमां आरंभथी पुजन करी मोक्ष लाभ लेवाने समकितीने कह्युं नथी. एवी रीते जाणतां छतां तम स्वभावीओ कल्पित पुजा अन्य दर्शनीओनी देखादेखी लइबेठा छे तेमां एम खातरी थाय छे के, स्वामीनारायणना मतनी रीतेज ते धर्म चलावे छे. जेम स्वामीनारायणना भगतो तेमनां देवळमां बेठेला पाषाणोना नामथी एक इंद्रीआदि पंचेंद्रिसुधी जीवोना प्राण लइ पछी सांजे तथा सवारे ते लागेलुं पाप स्वामीने चरणे अर्पण करे छे ने एम कल्पे छे के ए सर्व कार्य महाराजने अर्थे करीए छीए तेमां अमने रति पाप न लागे वळी जे वधारे नाणा खरची महाराजना धामनी तथा शेवापुजानी स्मृधी वधारे तेने महाराजना वैमान तेडवा आवे, तेमज महाराजना धाममां सोनाना महेल मळे एम लाभ बतावे एटले भोळा प्राणीओ जुलम महेनत करी मरे छे. तेज दृष्टांते पीळा वस्त्रवाळा वेषधारीओए नवा ग्रंथो जोडीने आरस पहाणनी मुर्तीओनो महिमा वधारवा माटे पुजा, दरशन, तथा देरां चणाववानां, फळ तथा फुल चुंटी चडाववाना तथा जमाडवाना तथा संवेगीओने बहु मान आपवाना फळ, एम अनेक दाखलाओ संचीने करेला ग्रंथोनी भाक्षी ते पीळा चांदलावाळा भोळा वणिकोने समजावीने तेओना पोला पेटोने फुलावी आ-

रंभरुप रेतमां दोडावी मार्या छे, ते केवी जुलमनी वात छे!! वळी एवा ग्रथोनुं मान वधारवा माटे एवा कुभंड रचे छे के जे मुळशास्त्रथी वैराग थाय तेवा मुळसूत्रोथी शेवकोने अजाण राखीने कुतर्क करे छे के श्रावकने मुळसूत्र वंचाय नहीं. माटे गुरुनी तथा देवनी भक्ति विशेना ग्रंथ वांचीने ते प्रमाणे चालता: श्रावकोने अनंतो लाभ मळशे, एम कहीने पीळा वस्त्रवाळे पोतानो लाभ सुधार्यो ने शेवकोने सावद्य पुजामां फसाव्या छे, ते शास्त्रथी विरुद्ध छे अने निर्वद्य पुजा कही ते सत्य छे. तो एवां वितरागनां निर्वद्य वचनने अनुसरीने पुजा नहीं मानो अने सांवद्य:पुजाने मान्य करशो तो ते प्रश्न व्याकरणने छठे.अध्ययने दयाना नाममां यज्ञ करवो कह्यो ते केवी रीते मान्य करशो? तमारा कृत्यनी पुजामां आरंभ करशो पण यज्ञविधीतो अन्य धर्मीओना शास्त्रोने मान्य करनारने माटे छे ने तेमां अजामेद्य, अश्वमेद्य गौमेद्य, गजमेद्य, ने नरमेद्य:यज्ञ सावद्य छे तो तेना धर्मना आचरणनी रीते तेने पण तमारे दयामां प्रमाण करवुं पडशे अने ते तमारी सावद्य पुजानी रीते करवुं पडशे अने ते यज्ञाधीकारे भाव यज्ञनो मेळ लइने निर्वद्य वाणीमां गणशो तो पुजा पण निर्वद्य करवी पडशे. माटे अरे अज्ञानव्यापक अजाण नरो! एम जाणो के जे दया एज पुजा छे, तेमज दयारुप यज्ञ सूत्रोमां तथा अन्य धर्मीओना शास्त्रोथी सिद्ध थाय छे ते विषे विवेचन निचे मुजब.

उत्तराध्ययन बारमे हरकेशी अणगारे यज्ञ पाडाना विप्रोने बोध करीने कह्युं जे अरे मुर्ख विप्रो! अग्निहोत्र तथा जळ स्नान करीने आत्मकल्याणना वंच्छक थाओछो, ते सर्व जडता छे. त्यारे ब्राह्मण कहेजे स्वामि! कये यज्ञे तथा कये स्नाने कल्याण थाय छे ने तमे कयो यज्ञ मान्य करेलो छे? त्यारे मुनी कहे छे. अरे महानुभावो! पंच आश्रवने पचखीने इंद्रि दमन करतोथको संवर गुण सहित एटले मनुष्यादिक व्यवहारी सुख असंजमथी निरवंच्छकपणे शरिरआदि ममत्वभाव छांडी मोटा कर्म शत्रुओथी जय पामवाने हुं मोटो यज्ञ करुंछुं.

तेमां मारा जीवनो शुद्ध उपयोग ते कुंड तेमां निर्वद्य तपरुप अग्नि, तेने दीप्त करवा माटे शरीर तेज गोर उश्केरणी करीने कर्मरुप काष्टोने सळगावीने पछी शुद्ध त्रीविधी जोग रुप चाटवे करी विषआ दिक विकारोने होमुंछुं, अने ते वखते सतर संजमने आराधवाविषे आत्माने जोडवो तेज स्वांती पाट भणुंछुं एम सर्व रुषीश्वरोने भलुं छे, ए निर्वद्य आत्मयज्ञ.

हवे विप्र पुछेछे के अहो देव पुजनीक ! एवा निर्वद्य यज्ञने आदे केवुं स्नान करोछो ? मुनी कहे अहो विप्रो ! शुद्ध दयारुप अपुर्व द्रह छे, तेमां निर्मळ आत्मानी सुकळ लेसारुप जळ भरेलुं छे. तेमां स्नान करीने त्यारबाद नववाड शुद्ध ब्रह्मचर्य रुप तिर्थ करीने कर्मरुप मेल हरीने अतिशितळीभुत थइ टाळुंछुं सर्व कर्मोने. एवुं उत्तम निर्वद्य स्नान, यात्रा तथा यज्ञ तिर्थंकर देवे कर्यो ते, कर्म मळ रहित थइने शीवपद पाम्या तेमज हुं करुंछुं.

एम जैन शास्त्रोमां निर्वद्य द्रहमां मंजन करी दयारुप यज्ञ करवा तिर्थंकरे उपदेश बतावेलो छे. वळी तेमज उत्तराध्ययनना पचवीसमे अध्ययने जयघोष नामे साधु भावयज्ञनो करनार थयो तेणे विजय घोषनामना ब्राह्मणने निर्वद्य यज्ञ करवानो बोध कर्यो छे. ए बे अध्ययननो पाठ अहिंआं लख्यो नथी. पण विवेकिओने उपयोगथी वांची माहेतगार थतां मालम पडशे. एम जैन मार्गमां पुजा तथा यज्ञ ए बे भाव निर्वद्य छे, तेम छतां उलटी रीते सावद्य तथा अघोर आरंभ करीने पुजा तथा यज्ञ स्थापन करे छे तेओने अज्ञानताथी बांधेला कर्मना बंधनोथी मुक्त थवुं मुश्केल छे. कारण के जाणकार थवाना वखतमां अजाणपणानो देखाव बहार पाडवो, एवा मुर्खोथी बीजो कोण जगतमां श्रेष्ट मुर्ख होय ? ते मुर्खपणानो गुण तो तप्त स्वभावीओ नेज घटे छे वळी आ टेकाणे निर्वद्य यज्ञने माटे अन्य दर्शनीओना शास्त्रनो दाखलो शाक्षिरुपे लेवा जोग छे ते नीचे मुजब.

श्रीमहाभारतेकृष्णोवाच.

ध्रुवंप्राणवधोयज्ञेनास्तियज्ञस्त्वहिंसकः
ततोऽहिंसात्मकोकार्यसदायज्ञोयुधिष्टिर.

भावार्थ—जे माणस यज्ञ करवा इच्छेछे पण तेमां प्राणवधविना यज्ञ थायज नहीं. वळी यज्ञना कारणथी प्रथमज परमाण नाश थाय छे. ते माटे अहिंसारुप आत्मयज्ञ करवो सदा अहो युधिष्टिर !

इंद्रियाणिपशुन्कृत्वावेदींकृत्वातपोमयं;
अहिंसासामाहुतिंकृत्वाआत्मयज्ञंयजाम्यहं.

भावार्थ—अहो युधीष्टिर पंचेंद्रिरुप पशु करवा अने तपरुप गुणो विगेरेनी वेदीका करवी अने दयारुप आहुती देवी ए प्रमाणे आत्मयज्ञ करवो.

ध्यानाग्नौजीवकुंडस्थेज्ञानमारूतदीपित;
असत्कर्मधनंक्षिप्तेअग्निहोत्रंकुरूत्तमं.

भावार्थ—अहो युधीष्टिर ! ध्यानरुप अग्नि करवी अने जीवरुप कुंड करवो, ते मांहे असत्य कर्मोरुप काष्टोने प्रजवळीत करवा, तेज अग्निहोत्र सर्वोपरी जाणवो.

एम अन्य दर्शनीओनां शास्त्रोमां विभंगानाणी यथास्थित दयारुप यज्ञ स्थापन करे छे तो तमस्वभावीजनोने कहेवानुं के अरे हिंसामान पुजनकारको ! तमारा अंतरनी दिव्य चक्षुतळे निरापक्ष पुजनयज्ञ केम आवतो नथी ? ए आश्चर्य छे. जेम गर्धव उपर अमुल्य वस्तु भरे तोपण तेनो गुण न जाणे, तेमज भेंस आगळ भारत ने पाडाने पाननां वीडांदेवां ए वृथा सेवा भक्तिमां गणाय छे, कारणे महिष, महिषी खोळ खावामांतो घणांज तत्पर रहे तेमज अज्ञान स्वभावीओ पण आत्मज्ञान न जाणतां अज्ञानतामांज तत्पर रहेछे अने आ निर्वद्य ज्ञाननो बोधतो वेद्यक होय ते वेद्यक ज्ञानने अमृततुल्य मान्य करीने अनुभवरस पीए छे.

वळी उत्तम धर्मीओ दयायज्ञने, मान्य करे छे, ते विषे जैनधर्मी धनपाळ पंडितना वाक्य नीचे मुजब.

एक वखते श्री भोजराजा शिकार करवा गया ते वखते, केटलाएक कविओ राजाना बळनी प्रसंसा करता हता, ते वखते धनपाळ पंडिते निरापक्षपणे राजाने बोधनी खातर दयानी उन्नति करवा कह्युं हतुं के,

रसांतलंयातुतदत्रपौरुषंकुनीतिरेषाशरणोह्यदोषवान्;
प्रहन्यतेयद्बलिनातिदुरबलोहाहामहाकष्टम

राजकंजगत्.

भावार्थ—अहो भोज ! तमारुं पुरुषार्थपणुं रसातळ जाओ, आतो मोटी नीति छे. मतलब के आ अनाथ प्राणीओने कांइ शरणज नथी तेम तेनो कांइ पण नथी अने तमारा जेवा बळवान पुरुष अति दुर्बळ प्राणीओने मारी नाखे तेथी आ जुलमी जगत अहो कष्टथी भरेलुं अने राजा विनानुं छे ! केमजे वासी प्राणीओ तमारा विकट बळना भयथी त्रास पामीने मोढांमां तरणां तोपण तमने महेर आवती नथी ए आश्चर्य छे !

हवे विप्र पुछेछे के अहो देव पुजनीक ! एवा निर्वद्य यज्ञने आदे केवुं स्नान करोछो ? मुनी कहे अहो विप्रो ! शुद्ध दयारुप अपुर्व द्रह छे, तेमां निर्मळ आत्मानी सुकळ लेसारुप जळ भरेलुं छे. तेमां स्नान करीने त्यारबाद नववाड शुद्ध ब्रह्मचर्य रुप तिर्थ करीने कर्मरुप मेल हरीने अतिशितळीभुत थइ टाळुंछुं सर्व कर्मोने. एवुं उत्तम निर्वद्य स्नान, यात्रा तथा यज्ञ तिर्थंकर देवे कर्यो ते, कर्म मळ रहित थइने शीवपद पाम्या तेमज हुं करुंछुं.

एम जैन शास्त्रोमां निर्वद्य द्रहमां मंजन करी दयारुप यज्ञ करवा तिर्थंकरे उपदेश बतावेलो छे. वळी तेमज उत्तराध्ययनना पचवीसमे अध्ययने जयघोष नामे साधु भावयज्ञनो करनार थयो तेणे विजय घोषनामना ब्राह्मणने निर्वद्य यज्ञ करवानो बोध कर्यो छे. ए बे अध्ययननो पाठ अहिंआं लख्यो नथी. पण विवेकिओने उपयोगथी वांची माहेतगार थतां मालम पडशे. एम जैन मार्गमां पुजा तथा यज्ञ ए बे भाव निर्वद्य छे, तेम छतां उलटी रीते सावद्य तथा अघोर आरंभ करीने पुजा तथा यज्ञ स्थापन करे छे तेओने अज्ञानताथी बांधेला कर्मना बंधनोथी मुक्त थवुं मुश्केल छे. कारण के जाणकार थवाना वखतमां अजाणपणानो देखाव बहार पाडवो, एवा मुर्खोथी बीजो कोण जगतमां श्रेष्ट मुर्ख होय ? ते मुर्खपणानो गुण तो तप्त स्वभावीओ नेज घटे छे वळी आ टेकाणे निर्वद्य यज्ञने माटे अन्य दर्शनीओना शास्त्रनो दाखलो शाक्षिरूपे लेवा जोग छे ते नीचे मुजब.

श्रीमहाभारतेकृष्णोवाच.

ध्रुवंप्राणवधोयज्ञेनास्तियज्ञस्त्वहिंसकः
ततोऽहिंसात्मकोकार्यसदायज्ञोयुधिष्टिर.

भावार्थ—जे माणस यज्ञ करवा इच्छेछे पण तेमां प्राणवधविना यज्ञ थायज नहीं. वळी यज्ञना कारणथी प्रथमज परप्राण नाश थाय छे. ते माटे अहिंसारुप आत्मयज्ञ करवो सदा अहो युधिष्टिर !

इंद्रियाणिपशून्कृत्वावेदींकृत्वातपोमयं;
अहिंसासामाहुतिंकृत्वाआत्मयज्ञंयजाम्यहं.

भावार्थ—अहो युधीष्टिर पंचेंद्रिरुप पशु करवा अने तपरुप गुणो विगेरेनी वेदीका करवी अने दयारुप आहुती देवी ए प्रमाणे आत्मयज्ञ करवो.

भावार्थः—अहो महाराजा ! यज्ञस्थंभने छेदीने तेमज पशुओने हणी रुधीरनो कादव करीने जो स्वर्गेज जवातुं होय तो पछी नर्कमां कोण जशे ?

एम धनपाळना मुखथी सांभळी राजा भोज कहे छे अहो पंडित ! शास्त्ररीतथी कल्याणीक यज्ञनो भेद कहो ? त्यारे धनपाळ पंडित कहेछे.

सत्यंयुपंतपोह्यग्निःप्राणाश्चसमिधोमम
अहिंसामाहुतिंदद्यातएषोयज्ञःसनातनः

भावार्थ—अहो महाराजा ! सत्य बोलवुं एज मोटो यज्ञ स्थंभ छे तप करवो एज अग्नि छे. पोताना प्राण तेज काष्ट छे अने दयारुपी आहुती आपवी तेनेज खरो यज्ञ जाणवो. एवा यज्ञोने शास्त्रो प्रमाणिक करे छे. एम ए सघळुं भोज राजाए मान्य कर्युं.

एमज हर्ष नामना कविए नैशद्य नामना महाकाव्यनां वावीसमा सर्गना छोतेरमा श्लोकमां यज्ञविषे हिंसाना दोषहेतु वताव्या छे, ते जाणी मोक्षाभिलाषी सत्यग्रही पुरुषोए हिंसारुपी यज्ञनो त्याग करवो एम कह्युं छे.

वळी वेदांत शास्त्रोमां एम वताव्युं छे के अहो मुमुक्षो ! जे तत्वज्ञ थइ स्वस्वरुपनुं अवलोकन करे, तेमज देहआदे सारी जगतने वृथा समजे तेने ज्ञानी कहीए.

श्लोक—अहंसाक्षीतियोविद्याद्विविच्यैवंपुनःपुनः
सएवमुक्तःसाविद्वानितिवेदांतडिंडिमः

भावार्थ—त्रण देह तथा त्रण अवस्था पंचकोश भोक्ता भोग्यआदि सर्वनुं वारंवार विवेचन करीने ते सर्व देहादिक दृश्य छे अने हुंतो तेनो दृष्ट शाक्षि आत्मा छुं. एम जे पुरुष निश्चयथी जाणे छे, तेज पुरुष मुक्त छे. अने तेज विद्वान छे. एम कहीए एवुं वेदांतशास्त्रनुं नगारुं छे, ते खुल्ली रीते कहे छे.

हवे आ प्रसंगे दिर्घाश्रवीओने कहेवानुं जे अन्यदर्शनीओ सर्व प्राण, भुत, जीव, सत्वने न जाणतां मजकुर रीते निरापक्ष यज्ञ वतावे छे. ते सत्य धर्मना पक्षने परस्पर मळतो जाणी निर्वद्य स्वभावी दयाधर्मीओने मान्य करवा योग्य छे. तेमज जैन शास्त्रोमां तेवा सदया कृत्यथी पुजा, यज्ञो करवाविषे विवेचन आपवा कांइ खामी राखेली नथी. परंतु तमो कल्पित ग्रंथोना आधारथी ने हिंसाबुद्धिना वधाराथी सावद्य पुजा करोछो पण सावद्य यज्ञ करता नथी. कारण जे सावद्य यज्ञने हिंसामां गणता हशो अने सावद्य पुजाने दयामां गणता हशो पण दयाधर्मीओने

पुजा तथा यज्ञ निर्वद्यवर्तीमांज छे. तेमणे तो तेमज ग्रहण करेलुं छे. परंतु तमे पुजायज्ञमां परस्पर वृथा कल्पना करी छे. ते छोडवाथीज मोक्ष मार्ग प्राप्त थवानो छे. पण हिंसापुजन करवाथी कांइ शास्त्रअनुसारे मान्य कहेवाय नहीं केमजे प्रतिमापुजन करनाराने चोथा गुणस्थाननो संभव नथी. मतलब के चोथा गुणस्थाननो अधीकारी समकीतनी प्राप्तीना वखतमां निराश्रवी थवा उपयोग करे छे पण नवो आश्रव वधारवा तत्पर न थाय, तेथी प्रतिमापुजन छे ते समकिती जीवोनुं कृतव्य नथी. तेविषे संवेगी हुकम मुनीअध्यात्म प्रकरण नामनुं पुस्तक तेमां तत्व सारोद्वार ग्रंथ छे. तेने चारसें एकताळीशमें पाने लखेलुं छे के स्थावर तिर्थनी जात्रा जइने प्रतिमापुजन करवुं ए कांइ समकित धर्ममां नथी. मतलब के ते प्रतिमा तथा तिर्थोमां उत्तम गुणस्थानोनी कोइपण अपेक्षाथी कर्णी थती नथी. एम गुरुए शिष्योए उपदेश दीधो त्यारे शिष्य कहे स्वामी ! तिर्थ, यात्रा, पुजन ए चोथा गुणस्थाननी कर्णी छे अने तमो सम्यक्त द्वारग्रंथमां तथा मंदिरस्वामीनी ढाळो प्रमुख घणा ग्रंथोमां प्रतिपादन करेलुं छे अने तमो अहींया ना केम कहो छो ?

गुरु कहे माहानुभव ! अमो ते स्थळे लाव्या ते योग्य छे, एकतो कल्प व्यवहारे. आवर्तमान काळना घणा लोकोए मान्य करेलुं छे. तेथी तथा जैन लोको निरजरा हेतुमां प्रतिमा अप्रमाण करी बेठा छे. माटे आपणा पक्षने मान, पुष्टि देखाडवानी खातर तथा त्रीजुं कारण ए छे के, आपणो शाशन सारो दीपे ने जगतमां आपणी प्रख्याति थाय. एवा हेतुथी अमोए ते ग्रंथमां दाखल करेलुं छे.

हवे अमे चोथा गुणस्थाननी कर्णीमां स्थावर तिर्थ अमान्य कर्युं तेनो हेतु ए छे जे लोकोने सुरिआभ देवनो तथा द्रौपदी प्रमुखनो अधीकार देखाडीए छीए. पण ते कर्णीमां विचार घणो छे कारण के विजय देवता विगेरे घणा देवताओए उपजती वखते पुजा करी छे. पण ते पुजाना कृत्यमां तेम भगवाने तेने समकिती कह्या नथी माटे मिथ्यात्वीज होय. मतलब के ते देवताओ नवा उपजीने पुजा करे छे. पण कल्याणअर्थ होय तो मनुष्य लोको भ्रमणाथी फरी फरी करेछे, तेम होवुं जोइए ने तेम नहीं तो सूत्र जोतां ते समकित ठरतांज नथी. परंतु कांइ समकिती मिथ्यात्वीनो नियम नथी. तो फरी पूजा करवाना हक कोइने छे नहीं माटे आज काळमां विवेक विकळनरो जुल्म आश्रव भावना केने कहीए ? एम शिष्य कहेथके.

गुरु कहे काया ते आश्रवरुप सरोवर छे. तेमां इंद्रिओने मनरुपी मच्छ कच्छ

रमे छे तेमां विषयरुपी किलोल उपडी रह्यो छे. पापरुप जळथी भरपुर छे. तेना प्राणाति पातादिक पांच गरनाळां छे. तेमां पहेलुं जीवहिंसा ते त्रस स्थावरनो नाश करे, ते धर्मार्थे या संसारार्थे ते आश्रव कहीए. अहीं कोइ वादी शंका करे जे धर्मार्थे हिंसा थाय ते पापमां गणाय नहीं? तेना जवावमां प्रश्न व्याकरण सुत्रमां धर्मार्थे हिंसा कर्त्ताने महामंद बुद्धिने दुष्ट कह्या छे. अने दशवीकाळीक विगेरे सर्व मुळ सूत्रोमां जयणा एटले दया पाळवी, तेज धर्म कह्यो छे. अने जे अज्ञानी धर्मने अधर्मनी हालतमां करी धर्मपोकारे छे ने हिंसा करे छे, ते सत्य शास्त्र जोतां तो अधोगतगामी थशे एम सिद्धांतोमां प्रत्यक्ष छे. कारण के जे धनना लाभनी आशाए पुजा. प्रतिष्ठा स्नात्रे वृत पचखाण करावे छे ते सर्व पाषाणना नाव सरखा छे. ते बुडे ने बुडाडे छे. अर्थात. ते अज्ञानी पोताना पेट गुजाराना वंदोवस्त आगळ धर्म तथा पाप आश्रव संवरादिकनी ओळखाण ज छतां हिंसावोध करे छे अने कदापि कोइ बे शास्त्र वांचेल होय तो तेओने पोताना बंधन व्यवहारना अर्थ सारवा आगळ शास्त्रने पण एक तरफ राखे छे तो बुडे या बुडाडे एमां शुं अचंबो छे ! तेथी हिंसा त्यां आश्रव छे. अर्थात वार अव्रत कह्या छे. त्यां छकायनुं अव्रत एटले हिंसा कही छे. त्यां कांइ एम नथी, जे धर्मार्थे हिंसा ते पापमां नहीं. कारण के जाणतां या अजाणतां सोमलादिक झेर खाय ते सर्व दुःख पांमे. एमज धर्मार्थे या संसारार्थे हिंसा करे ते सर्व भारे कर्मनुं कृत्य छे. परंतु नहीं धर्मार्थी. वळी कोइ प्राणी एम न कहेजे अरे धर्मार्थीओ ! तमो तमारा कल्याणनी खातर अमारा प्राण हरीने तिर्थंकर गोत्र बांधो. एम कोणे तमने आदेश करेलो छे? ते जुलम गुजारवा ओसरता नथी ! अने फोगट गाल वगाडो छो. पण एम जाणो के सर्वने सुख अने जीववुं वल्लभ छे ने मर्ण तथा दुःख अनिष्ट छे. माटे अरे चैतन ! त्रसस्थावरना प्राणनुं रक्षण करतां अनंत शीव सुख थशे. अने हिंसा करनार पंचावन दुःख विपा कियावत भ्रमण करशे ए प्रथम आश्रव थयो. तेमज ए पुस्तकमां आश्रव भावना अधीकारे बीजो मृषावाद एटले जुठा विवाद तेनुं विवेचन आपेलुं छे. तेमां केटलाएक अज्ञानी एम कहे छे जे धर्म अर्थे जुठुं बोलतां पाप नहीं. ए असत्य कल्पना छे. तेज पुस्तकने चारसें ने साठमें पाने शिष्य पुछे छे. स्वामी जमाळी विगेरे जेणे जीनवचन उथाप्या होय ते रखडे परंतु आपणे तो हाळमां कोइ जीनवचन उथापक नथी तो तेनो परिसह धर्ममां केम न गवेखयो ?

गुरु कहे अहो भद्र तरणाना चोरने शुळीनो हुकम थयो तो करोडो रुपिआनो

चोर थाय तेने शुं दंड देवाय ? विचार करो ? केमजे तेनो दंड तो हवे संभवतो नथी. मतलब तरणा साथे शुळी थइ तो शुळीथी अधीक बीजुं शुं छे ? तेमज अहो शिष्य ! जमाळी तो मात्र चोर छे. भगवाने कह्युं जे " जे करवा मांडयुं ते कर्युं कहीए " एटलुंज प्रथमथी वचन फेरव्युं तेथी घणो संसार वधार्यो अने हालनेसमे सर्व मुळसूत्रो उथाप्या छे. केमजे मोढाथी एवुं कहेवुं छे के कानो मात्र विगेरे उथापवो नहीं. एनुं वधारे विवेचन सिद्धांत सारोद्धारमांथी जाणवुं ते हालमां अहियां प्रवर्तन छे ते घणुं करीने आवशकनी टीकाथी छे. परंतु सूत्रने मळतुं कोइक वचन छे ते सुज्ञ विचारी जोशो. पण प्रत्यक्ष सर्व मुळ सूत्रनो लोप करीने आवशकनी टीका मानीए छीए ते विचारवा जेवुं छे. तेमज हालना करेला स्तवन, सजाइओनो आधार राखीने सूत्रने उथापी नाखीए छीए, तेने हवे शो दंड ठरशे ? केम जे घणो संसार तो जमाळीने ठराव्यो छे. ने अहींआं तो उत्थापननुं परिमाण रह्युं नथी. तो उत्थापकमां ज्ञानीपणुं शुं जाणवुं ? ते ज्ञान दृष्टिए विचारतां मालम पडशे.

तेज ग्रंथने पांचसें ने चोपनमें पाने कह्युं छे जे आत्मधर्मना द्वेषी छे तेने हजी समकित गुणस्थान आव्युं न कहीए एम कह्युं छे. तो हालमां तमे स्वइच्छाए गमे तेम करो ! पण एम कहेवुं छे के जेम काष्टनी पुतळीने वर बनावी जान जोडी मांडवे जाय पण तेने कन्या परणावे नहीं अने पुतळुं लइ जनारा लाज गुमावे तेमज आत्मज्ञानहिण पण अनंतो संसार रखडशे. ने तेओनो उपदेश सांभळनारा पण अनंतो संसार रखडशे. त्यारे वहाज आडंबरी बोल्या के तमारा घणा कठोर वचन छे पण अमे तो बहु पंडितना वचन कह्या छे ते आधारे चालीए छीए तो अमारे रखडवापणुं क्यांथी होय ?

उत्तर—अरे ! जो तमे पंडितना वचन प्रमाणे चालीए छीए एम कहो छो तो कहेवानुं के कोइ आत्मार्थी पंडितना वचन बंधनकारक ने आश्रवी नहोय. मतलब के जे खातामां वहाज क्रियानो उपदेस छे तथा कर्म बंधननो उपदेश करनार पंडित छे पण धर्म उपदेशक पंडित नथी ने पंडित होय त्यां आत्मस्वरुप ग्रहीने संवर भावनी परुपणा करे एवा पंडित तो मुळ शास्त्रमां अनेक ठेकाणे मालम पडे छे. ते शास्त्रना नाम अमे पुर्वे कह्यां छे.

प्रश्न.—ते शास्त्रना बांधनार पंडित सत्य अने बीजा शास्त्रना बांधनार पंडित असत्य छे ?

उत्तर—जे ते कह्या ते पंडित प्रत्यक्ष असत्य छे कारण के आचार दिनकरण ग्रंथमां एम कह्युं छे के गृहस्थनां छोकरांने साधु परणाववा जाय एवा वचन कहेनारने पंडित केम कहीए ? पण एवा वाक्योथी एम जणाय छे के प्रत्यक्ष पोता विगेरे परिवारने माटे अजीवीका बांधी छे ते प्रत्यक्ष उघाडुं छे. वळी तप उजववाना ग्रंथ बांधनारने पुछवानुं के. एकावळ, कनकावळ विगेरे तप मुळ सूत्रमां छे. तेना तो कोइ सूत्रमां उजमणां करवा कह्यां नथी. अने तमोए जे नवा तप उत्पन्न कर्या ते तप सूत्रमां न छतां उजमणानो नियम बांधी उदर पुर्णा पुष्टि करी के बीजु कर्युं. तथा एवा प्रकरण ग्रंथो बांध्या छे के श्रावकने उपध्यान वह्या सिवाय नोकार गणवा ते गुणकारक न थाय, एवा वाक्यो कया शास्त्रना आधारपरथी मेळव्यो छो ? सबब के उपासक दशांगने विशे आणंद श्रावकआदि दश श्रावकनो अधीकार छे. तेमणे अप्रमादीपणे तुरत धर्म सांभळी समकित मुळ बारव्रत उचर्या, तेमज अगियार पडिमां श्रावकनी वही ते समावेशमां उपध्यान वह्या एमतो साक्षी नथी. एमज सर्व श्रावकोने आणंद नीज भलामण छे ते अधीकार विचारी जातां मालम पडशे.

वळी तमो कहो छो के साधुओने जोग वह्या सिवाय सूत्र वंचाय नहीं तेना उत्तरमां कहेवानुं के भगवतीजीमां खंधक तापसे संजम लइ तरत अगियार अंग भण्या एम अनेक गृहस्थो दिक्षा लइ कोइ अगियार अंग या द्वादशांगी भण्या. वळी अनुतरोववाइ सूत्रमां धना अणगारे नव मासनो संजम पाळ्यो तेमां आठ मास तपना अने एक मास अंतक्रिया संथारामां रह्या ने ते अगियार अंग भणेला छे. तो तेमणे जोग कये दीवस वह्यो ? मतलब के एक भगवतीजीनो जोग वहेतां छ मास जाय एम कहो छो तो मांडलीआ तथा आचारना तथा अंगना जोग वहेतां केटलां वरस जोइए ? तेनो विचार करो ? पण खातरी थायछे के ए ग्रंथोना रचनार आ जीविका सिवाय धर्म मार्गमां समजता नहोता एम संभवे छे. तथा श्राधविधी विगेरे ग्रंथोमां केटलेएक वखत लईने आचार्योए शरीर संबंधी व्यवहारोना बांधा बांधेला छे. तेमां वडीनीत, लघुनीत तथा दातण, नावण, धोवण, खावा पीवा विगेरेना आचार बांधेला छे तेने शुं आत्म धर्म कहीए के पापोपार्जित कहीए ? हवे आ बाबतमां ज्ञानचक्षुथी विचारतां एम समजाय छे के तेवा ग्रंथकाराने पंडित कहेतां विद्वानोनी सुमतिने एब लागे छे.

वळी हुकम मुनीकृत्य तेज पुस्तकने चारसें सीतेरमे पाने नंदिसुत्रनी शाखे

एम कह्युं छे के दशपुर्व धरनारना बोधवचन तथा तेना बांधेला शास्त्र सुत्रनी रीते प्रमाणिक कहीए अने तेथी अधुरा भणनारना वचन सिद्धांतने अनुसारे होय तो सर्व माल्य छे. अने सुत्रविरुद्ध होय तो अनंतसंसारी थाय. त्यां एम कह्युंछे. माटे दशपुर्वथी ओछा भणतरवाळाना वाक्य या रचेलां ग्रंथोने सूत्र न कहेतां ग्रंथोज कहेवा. परंतु तेमां निर्वद्य रीत होय तो मनाय तेम नहीं तो ते ग्रंथनो त्याग करवो. आ प्रसंगमां केटलाएक कहेछे के पंचांगी प्रमाण करवी. ने केटलाएक कहे छे जे पांच गाथानुं स्तवन सजाय होय तेने प्रमाणगणवुं तेम बोलवुं मिथ्यात्वोदय छे, मतलब के सिद्धांतथी विरुद्ध वाक्यना प्रकरणो मानता शुद्ध संवरमार्ग लोप थाय ने ते कृत्यमां थता आश्रवना वधाराथी जीन आज्ञा रहेती नथी सवब के सर्वज्ञ भगवतीजी तथा उववाइ विगेरे मुळ सूत्रोमां एम कह्युं छे के " असहेजदेवा " धर्मार्थी श्रावक कोइ देवतानी सहाय न वंच्छे.] तेमज आवता भवना सुखनी चाहना न करे ते श्री ठाणायंगजी विगेरे सूत्रोथी जाणवुं पण हालमां तो शेवा, पुजा, जात्रा, तप विगेरे करो या करावो छो तेमां तो भवोभवनी मागणी करोछो माटे तमारा मागवा प्रमाणे घणाभव मळी शके एम संभव थायछे. वळी केटलाएक द्रव्य वेषधारीओ तथा तेमना बोध सांभळनारा शेवको प्रतिक्रमणादिक करतां मागे छे. एमज वेषधारीओ देवी देवलाओनो सहाय मागे छे. एमज वेषधारीओ देवी-देवलाओनी सामे हाथ जोडी नमन करे छे. ते केवुं अचंब छे ! मतलब के सिद्धां-तोमां श्रावकोने तो अवर्तीओने नमवानी ना पाडी छे. तो साधुओए अवर्तीओने वंदन करवुं एम होयज क्यांथी ? सवब के साधु मुनीतो पंच परमेष्ठी नोकारमां छे ने पोताना नामनुं पांचमु पद छे जेथी अवर्ती देवी देवो साधुनेज वंदन करेछे तेथी मुनी अवर्तीओने नमस्कार न करे. पण हालमां द्रव्य वेषधरनारा देवदेवीने वंदन करे छे. ते शास्त्र रीते देखीतुंज अघटित छे. तेनो हेतु एजे सूत्रकारे साधुने गुणवंत भगवंत कहीने बोलाव्या छे. तेम छतां अवर्तीओनी गुलामी करवानुं शुं कारण छे ? वळी सूत्रमां एमपण कह्युं छे के साधुओए गृहस्थनी संगत न करवी. तेम छतां हालमां गृहस्थोना अंगरक्षक थइने पोताना हक सुधारवा ग्रंथोपरुपी तथा अनेक कपोकल्पित वारताओ कही पेट गुजारो करेछे. तो शुं शास्त्रमान्य साधु गणाय ?

वळी पुछवानुं के मजकुर व्यवहारी ग्रंथो रचनारा पुरुषो केटला पुर्व भणेला हता ? तेमज हालमां केटला पुर्व भणेला छे ? तेना जवाबमां कळेशी मित्रो एम

कहे छे के पुर्वेतो भणेला नहोता पण तमो तेमनुं अपमान करोछो तो कहेवानुं के तम जेटलुं ए नहोता भण्या ? वळी कोइ शास्त्रमां मजकुर व्यवहार दीठेलो हशे त्यारे लावेला हशे एम उत्तर आपीने क्लेश करवा धारे पण रीतसर न्याये उत्तर न आपे ने उलटी रीते कहे जे तमे अल्प ज्ञानी शुं जाणो ? एवुं बोलनारने माटे कहेवानुं एके द्रव्य वेषधारी तथा तेना शेवको असंजतनी हालतमां रही महा आरंभ अने परिग्रहना लोभथी तेमज कुशियळ आदि दुरगुणोथी भरपुर शून्य उपयोगी तेओना करेला स्तवन सजाय विगेरे ग्रंथो तेने सिद्धांतनी रीते केम मनाय ? ने माने तो आज्ञा असत्य केम न थाय ?

प्रश्न—अहींआं कोइ कहे जे मजकुर ग्रंथ कर्त्ताओमां असंजतीपणुं या अवर्तीपणुं होय तो तेओना कर्म तेने सर, परंतु तेओए शास्त्रनो निरापक्ष निर्वग्र वाक्यथी रचेला छे, ना ?

उत्तर—अहो वादी ए मृषा वचन छे. सबब के जेम वेश्याओ जारी कर्म करे तो तेनी संगत करनार सखीओने शियळ पाळवानो बोध क्यांथीज करे ? वळी चोरीनो करनार पोताना संघातीने अदत्तादाननो निग्रह क्यांथी करावे ? तेज दृष्टांते ग्रंथकर्त्तानी कल्पित बुद्धिथी सत्य मार्गने मुळ सुत्रार्थनो बोध निरापक्षपणे करो तो तेओथी मिष्टान भोजन विगेरे लक्ष्मि मेळववी ए केम मेळवी शकाय ? पण एम जाणो के ज्यां घणो परिग्रह मेळवेलो होय त्यां मृपावादतो अवश्य होय छेज. तो एवा बोधीक ग्रंथकारोने उत्तम पंडित केम मनाय ? सूत्रमां निग्रंथना वचन मान्य करवा कह्या छे. परंतु धन हरनाराना वचन मान्य करवा कह्या नथी.

निग्रंथना वचन मान्य करवा माटे शाक्षि. भगवतीजी तथा ज्ञाताजी विगेरे सूत्रोमां जे जे श्रोताजनोए स्वगुरुपासे धर्म उपदेश सांभळ्यो त्यां त्यां ए गृहस्थोनुं एम बोलवुं थयुं छे. जे अहोभंते ! एटले हे पुज्य ! हवे ए भगवान ! पदनी आगळ सर्व पद जोडवा जे हवे मने श्रद्धा छे एक निग्रंथना वचन उपर, तेज निग्रंथना वचननी प्रतित छे ने तेज निग्रंथनां, वचन मने रुच्य छे. तेज वचन कायाए करीने फरशुंछुं. तेज निग्रंथना वचन प्रमाण करवाने उद्यमवंत थयोछुं वळी तेज निग्रंथ वचन निश्चय छे. ए कोइ काळे जुठा न पडे, तेज निग्रंथ वचन इष्ट एटले वल्लभ छे. तेनेज इच्छुंछुं ए निग्रंथ वचन सिवाय सर्व अनर्थ मुळ छे ते हुं जावपर्डी इच्छु एवी साधु तथा श्रावकधर्मना पाठछे. तेमांतो निग्रंथ सिवायना वचन अमान्यने तेमज

अनर्थ मुळ कह्या छे. तो दुरबुद्धिवाळाओने कहेवानुं के एवा निग्रंथ सिवायना वच-नोने तमे सत्यपरुपक ठरावीने ते प्रमाणे मान्य करी चालोछो ते शुं तमारा घणा भवनी परंपरा वृद्धि करवानी खातर छेके बीजुं कांइछे ? पण खरेखर सुज्ञजन होय तेने एम समजवुं के आत्मार्थी पुरुषोए निर्वद्य वाक्योथी रचेला सिद्धांतो तेनेज सूत्र कहीए अने तेज निर्वद्य सूत्रोना शुद्ध उपदेशथी आत्म उपयोगी पुरुषोए मिथ्यात्व वोसीराववाना वखतमां समकित सहित ज्ञानक्रिया धारण करीने दयारुप निर्वद्य पुजाने दयारुप निर्वद्य यज्ञ करेलांछे. ते सिवाय सारंभी पुजन यज्ञ ज्ञानीओना धर्म विरुद्ध छे.

प्रतिमामति प्रतिमाने शुभाशुभ कहेछे ते प्रश्नोत्तर.

मतावलंबितजनोए पोताना मान्य करेला देवोनुं स्थापन करतां ते प्रतिमाओमां शुभ तथा अशुभ करता एम कल्पना करेछे ते विषे विवेचन नीचे मुजब.

मुळ शास्त्रोथी विरुद्ध एक प्रतिमानी स्थापना खातर जीतकल्प नामनो ग्रंथ तेमां केटलीएक जातना शुभाशुभ दाखलाओ मेळवी विवेकगत शेवकोने अंध कुपमां उतारी मुकेला छे. सबब के ते विचारा लखपति थवाने तथा पुत्र पुत्रादिकथी वंश वधारवानी खातर व्यवहारिक सुखथी निरविघ्न पामवानी आकांक्षाए आरसपहा-णना कन्डारेला पुतळाओने शुभाशुभ संकल्पिने देवळोमां तथा घरोमां बेसाडेलांछे ने तेमांज पोतानुं आत्मकल्याण इच्छेलुं छे ते केवुं आश्चर्य छे ! ते ग्रंथमां एम कह्युं छे जे मलीनाथ, नेमनाथ, तथा महावीरजी, ए त्रण तिर्थंकरोनी प्रतिमा ग्रहस्थो पोताना घरमां बेसाडेतो कुळनी तथा धननी हाणी पामे अर्थात. भीखारी थइ जाय तथा सर्वदाकाळ कंगाळ अवस्थामां आवी जाय माटे ते प्रतिमाने शेवकोए घरमां मंडन करी पुजवी नहीं. हवे बकातना एकवीस तिर्थंकरोनी प्रतिमा कुळ तथा धननी वृद्धि करताछे. तेथी शेवकोए घरमां मंडन करी पुजवी एम एक वेषधारी जोतसी भाखी गयो छे.

वळी ते ग्रंथमां प्रतिमानी अवगाहनानुं परिमाण करेलुं छे के, एक, त्रण, पांच, सात, नव, अगियार, एटला आंगळनी आरसपहाणनी प्रतिमा शुभकारक छे. ने बे, चार, छ, आठ, दश आंगळनी प्रतिमा अशुभ अने नाशकारक छे. ए विगेरे ते ग्रंथमां घणुंज विवेचन छे.

हवे एवी कल्पना करनारा दक्षोने कहेवानुं के अरे जो तमे परमेश्वरना नामने शुभाशुभ मानोछो तो शुं तमारा मतमां आत्म धर्मसाधन करवानी कोइ प्रतिमा गुप्त

राखो छे के शुं सबब के तमारी सभासदनी कल्पना उपरथी एक तर्क थाय छे के एकी आंगळनां प्रतिमा पुजवाना लाभमां तो सर्व जातना द्रव्यनी वृद्धि थाय तो महा आरंभ कर्याविना धन प्राप्त न थाय तेथी ते आरंभ फळनेज आपनारी छे तेमज ते प्रतिमाओनी पुजा कुळवृद्धि करनारी छे. अर्थात कुळवृद्धिनुं कारण तो शियळवृतना त्यागथी नीपजे छे. माटे कुशिळरुप गुणनी आपनारी थइ. केम जे तमारी धनविषेनी तथा कुळविषेनी कल्पना उपर एवोज अर्थ लागु थायछे. तेथी कहेवानुं के सिद्धांतविरुद्ध चालवाथी संसार तो वधेलोज हतो अने तेमां मजकुर जातना वे फळनी पुर्णी मळी तो कांइ खामीज न रही ! ! !

वळी तमारा ग्रंथमां एम कह्युंछे के मजकुर त्रण प्रतिमा घरमां पुजवाथी तथा मजकुर रहेली बेको आंगळनी प्रतिमां स्थापि पुजन करवाथी धन तथा कुळनो नाश थाय छे. हवे आ प्रसंगे कहेवानुं के एवी प्रतिमा पुजनथी निर्धन थइ जवाय तो ठीक छे एटले निर्ग्रंथपणुं उदे आवे ने शुद्ध कर्णीथी कर्म खपे. वळी ते प्रतिमापुजनथी कुळक्षय थाय ते पण फायदाकारक वात छे. मतलब के कुळक्षय थवामां तो नवा कुळ उपारजवा न पडे ने तेज भवे सिद्धपद पामी जवाय. माटे ए निर्धनपणुं तथा कुळक्षयपणुं ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना आधारथीज थाय छे. पण तेवी रीतना शास्त्रबोध उपदेश त्याग, वैराग्य, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप विगेरे आराधना विधी तो तमारा हिंसा मृषाना आचरणथी उदय थवो मुश्केल छे. परंतु नाशकारक प्रतिमा पुजनथी निर्धनपणुं तथा कुळक्षयपणुं थइ जवाथी पराधीनपणामां अकांम निर्जरा थशे ने ते अकांम निर्जराना हांसलमां अनेरी जातना वाणवंतर देवना भय प्रगट थशे. माटे अशुभ प्रतिमापुजननुं ए फळ मळनारुं छे अने शुभ प्रतिमापुजनथी संसार वृद्धि थशे. वळी कहेवानुं जे केवळज्ञानीए मुळ शास्त्रोमां संसार घटवानो हेतु तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपथी ज बतावेलो छे पण बीजी वहाज क्रियाथी शुद्ध निर्जरारुप कांइ गुण प्रगटे या कर्म खपे तेम कह्युं नथी माटे अरे अविवेकी मित्रो ! खोटी कल्पनाथी भुल खाइने पापे पिंड न भरतां ज्ञान आराधना करवा उत्साह करो के, जेथी तमारा करेला आश्रवना बंधननो नाश थाय. पण जीतकल्प, महाकल्प तथा विवेकविलास विगेरे ग्रंथोनी रुढीरुप खरपुंछ ग्रहण करीने प्रतिमाना मंडनविषे ग्रहस्थोने शुभाशुभ बतावीने आशारुप पासलामां नांखोछो ते कांइ पंचेंद्रिपणानो गुण संभवतो नथी.

वळी केटलेएक ठेकाणे एमपण कहोछो के, चोवीस तिर्थंकर मोक्षहेतु छे. पण

मुर्तीमंडननी खातर कोइ अपेक्षानो गोटो घालीने जवाब आपोछो ते गेरवाजवी जणाय छे. केमके त्रण प्रतिमानी तथा बेकी आंगळनी प्रतिमानी पुजा करवाथी धन तथा कुळनो क्षय थइ जवानो डर छे. ते मुळ विचार प्रसिद्ध न बोलतां उलटी रीतना जवाब आपवा ते कांइ सत्यधर्मनी रीतमां नथी पण खरेखर एम धारो के मोक्षना कारण सिद्धातमां ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपने भळाव्यां छे. पण शुभाशुभ प्रतिमापुजन भळाव्युं नथी. तोपण तमारी मति भ्रमनानेलीधे हिंसापुष्टी करवानी खातर मजकुर त्रण प्रतिमा अमंगळीक ठरावो छो ने वकातनी एकवीशने मंगळीक ठरावो छो, ए परस्पर कल्पना भेद करी जे तिर्थंकर निर्वाण पहोंच्या तेना नामने दरेक रीतना कुविचारोथी एब लगाडो छो. कारणे नेमेश्वर बाळ ब्रह्मचारी कुमार अवस्थामां जोग साधन करी मोक्ष पधार्या. ते सर्व नर, देव तथा मुनीजनोना वंदनीक छे, ते सत्य छे. अने तमारी कल्पनामां तो एम छे जे व्यवहारीक भोगना असंभवथी पुत्र नथी माटे अमंगळीक गणोछो. तो तमारा विचार प्रमाणे हवे सपुत्रपणे क्यांथी थाय ? हवे तेम नहीं छतां ते वंदनीक सिद्धनी कुयुक्तिथी आसातना करोछो, तेथी एम जणाय छे के निर्लज अने बेशरमा जेवा जणाइ आवोछो. वळी तेमज मलीनाथ तथा महावीरने अमंगळिक ठराववानो मुळ हेतु पोताना मनमां अवळीज रीते संभवे छे. अने ते विषेना सामा उत्तर मागनारने जवाब आपो ते जुदीज रीतना छे. माटे कुडी कल्पनाथी कर्त्तरीम प्रतिमाना आधार लइने सत्यपुरुषो शिवगतनी हांसी करवा धारोछो. तेथी तमारो कुल व्यवहार कल्पित छे. वळी छळभेदथी एम कहो छो जे एतो विद्वजनोने समजवा योग्य छे. एम कहेवुं ते पण कल्पनाथीज कहो छो.

दिगंबर; वीसपंथी, तेरापंथी तथा सेतांबरने परस्पर विरुद्ध ते प्रश्नोत्तर.

प्रतिमाग्राही दिगंबरना बे पक्ष खुल्ला जणाय छे. ते वीसपंथी अने तेरापंथी ए बे छे. तेमां वीसपंथीवाळाए प्रतिमा पुजनमां पान, फळ, फुल, बीज, हरीकाय विगेरे तथा केशर, चंदन, धुप, दीप, आर्ती विगेरे घणा छकायना आरंभ करी पुजा कबुल राखेली छे. अने तेरा पंथी दिगंबर कहे छे के [illegible] जकुर रीते आरंभ करीने पुजा मान्य करनार वीसपंथीओ मिथ्यात्व दृष्टिओ [illegible] माटे ते प्रतिमा पण कुलिंगमां गणवी ने ते कुलिंगनी प्रतिमा [illegible]

छे. मतलब के तिर्थंकर महाराज आप स्वशरीरे संजम सहित विचरता ते वखते फळ, फुल, धुप, दीप विगेरे व्यवहारीक भक्तिना भोगी नहोता. तेमज आरंभना योग्यथी पुजा एमने योग्य नहोती तेम छतां तेओना नामनी प्रतिमाने वीसपंथीओ अनेक आरंभ करी पुजा करे छे, ते शास्त्र विरुद्ध छे.

वळी अमो तेरापंथी सत शास्त्रोना आधारथी प्रतिमा पुजन करीए छीए के जेम भगवंत निर्वद्य पुजा सन्मान सहित हता अने दया मार्गनो बोध करता हता ते आधार राखी अमोए ते तिर्थंकरना नामथी प्रतिमा करी पुजीए छीए अने ते तिर्थंकरो निर्वद्य पुजाथी पुज्यमान हतां, तेमज तेनी प्रतिमाने निर्वद्यथी पुजा करीए छीए. सबब के संजम आराधनाना वखतमां ते तिर्थंकरे सर्व सावद्य कृत्य वोसीरावेलो हतो ते निरारंभी थइ विचरता हता तेवीज रीते प्रतिमा पुजननी स्थितीमां पण निरारंभीपणुं कळपवुं जोइए ने ते प्रमाणे निर्वद्य पुजा करतां भव भ्रमणा मटे छे. एम तेरापंथी प्रतिमामतिओ मान्य करे छे अने प्रथमनी रीते वीसपंथी मान्य करे छे तो केहेवानुं के ए बेउनो मत प्रतिमा मानवानो छे. तेम छतां परस्पर भेदमां रमे छे. ने सावद्य निर्वद्य पुजापरुपे छे. हवे मजकुर विवादीओने सुचना आपवानी के वितराग भाषित जैन शास्त्रोमां देशव्रति श्रावकोने एक इंद्रीदळनी प्रतिमाना पुजनविषे कांइपण विवेचन आपेलुं नथी. तेम छतां विरुद्ध रीते प्रतिमा स्थापी सावद्य निर्वद्य पुजानी कल्पना करो छो. ते तदन हांसी भरेलुं छे.

हवे वितरागनी आज्ञा प्रमाणे चालनारा जैन दयाधर्मीओ सत्य शास्त्रना आधारथी प्रतिमानो तथा आरंभ समारंभनो त्याग करी निरापक्षपणे आर्यधर्मनुं आराधन करी संवर निर्जरारुप करणी करे छे. तो ए पुरुपो मजकुर विवादीओना सारंभी कृत्यनो निच्छेद करे छे. ते सत्य शास्त्रना आधारथीज समजवुं.

वळी विशेष के वीसपंथी, तेरापंथी अने सेतांवर मुर्तीमान ए त्रण मतवाळाओना शास्त्रमां एम लखे छे के प्रतिमा देरामां या घरमां बेसाडवाने माटे पडते भावे खरीद एटले वेचाती लीधी. पण ते ज्यां सुधी पडतर रहे ने प्रतिष्टा तथा होम स्नान विगेरे सर्व पुजाविधी महुर्त न जोया ने ते प्रतिमाना कानमां मंत्र न संभळाव्या होय त्यां सुधी तेनामां तिर्थंकरपणानो गुण नथी. तेमज अवंदनीक छे. अने मजकुर विधी करीने पछी कानमां मंत्र संभळावे त्यार पछी तिर्थंकर गुणसंयुक्त पूजन वंदनमान्य करवा योग्य छे. एम कहे छे ते विकळोने जैन दयाधर्मी पूछे छे के अरे प्यारा अज्ञान साहेबो ! तमारी मान्य करेली प्रतिमाना कानमां तमोए गुरु

मंत्र संभळाव्यो माटे ते तमारा शिष्य तरीके गणाय छे. ने त्यां तमोए तिर्थंकरना गुण योग्य करी छे तेथी तमारी शक्तिए ते तिर्थंकर पद पामी छे माटे ते करतां तमारी शक्ति वधारे जणाय छे !!! के एक इंद्रीओना कानमां मंत्र संभळावी तिर्थंकर आपवानी ज्यारे तमारामां शक्ति वधी त्यारे विचारा तमोपंचेंद्रीओ पण तमारा पितांवरी गुरुओ तथा तमो सर्व अन्योअन्य कानमां मंत्र भणी भणीने संभळावो अने सांभळो के जेथी तमोपण ए मिथ्यात्व गुणठाणाना एकइंद्री पासाण प्रतिमानी रीते तिर्थंकर थइ जावो ! एटले कोइनी पुजानी दरकारज रहे नहीं. अरे विकळनरो ! मुर्तीना माननाराओमां पण अनेक विरुद्धता प्रत्यक्ष देखाइ आवे छे. माटे सत्य सिद्धांत सिवाय कल्पित ग्रंथकारोनो एक मत क्यांथी होय ? वळी मंत्र भणवाथी ते प्रतिमामां शुं गुण प्रगट थया ते कहो ?

भादरवा शुद पांचमविरुधी चोथ माने छे, ते प्रश्नोत्तर.

पाषाणमतिओ पंचमकाळमां सावद्याचार्योना करेल ग्रंथोना आधारथी एम कहे छे जे भादरवाशुद चोथ पडीकमे ते सत्य धर्मना आधार प्रमाणे चालनारा समजवा आ बोलवुं ते केवळ असत्य छे.

तेना जवाबमां एटलुंज कहेवानुं के अनादी काळथी मुळ सूत्रोना आधार प्रमाणे खातरी थाय छे के भादरवाशुद पांचमे साधु तथा श्रावक संवत्सरी पडीकमे छे. एम सिद्धांतोमां प्रत्यक्ष छे तेम छतां पाषाणपंथी पांचम विरुधी चोथ मान्यं करे छे, ते मुळ शास्त्रोथी तो विरुद्ध छे पण अखिल जगतथी पण विरुद्ध छे. सबब के अगियार महिनानी सर्व पांचमोने लोक लज्जाथी मानेछे अने ते एकज पांचम तेओने द्वेषकारक थइ पडेली छे. एवा कारणथी एम खातरी थाय छे के अनंतज्ञानी तिर्थंकरना वाक्यथी मुळसूत्रो रचाया छे ते करतां पण विशेष काळकाचार्य विगेरेना रचित ग्रंथो प्रमाण करे छे ! कदापि जो सूत्रोनो आधार राखता होय तो पांचमनी चोथ केम थाय ? वळी पांचमनी चोथ थइ तो थइ पण एकज पांचम जे के सर्वथी मोटी पांचम जेने तमाम हिंदुवर्ण पण रुपीपंचमी कहे छे ते पांचम विरुधी चोथ मानीने त्रेवीस पांचमो प्रमाणिक रही. वळी एक चोथ पडीकमे छे तेमज कुल चोथ पडिकमी होत तो एम कहेवानुं थात के पीळा वस्त्रधारी चोथीआ मतवाळाज छे एम एक जुदो वर्ग गणो शकात पण तेम न थतां एक रुपि पंचमीनो विरुद्ध करीने पोते चोथपाळे तेमज अन्यदर्शनीओने पळाववा महेनत ले छे. ते मिथ्या कु-

कर्म छे. अने वितराग भाषित मुळ सूत्रोमां तो पांचमनो प्रगट महिमा छे. माटे जैन दयाधर्मीओने अवश्य पांचम पडीकमवी मान्य छे.

हवे मिथ्या, स्वाभिमानी चोथ धर्मवाळाओने कहेवानुं के वितरागना अमुल्य वचनने उलंघन करी काळकाचार्यना ग्रंथोने मान आपी सूत्र विरुद्ध चालो छो तो एम खातरी थाय छे के तमारो मत सूत्राधारे तो नथीज ने एम जणाय छे के कोइ सिद्धांतद्वेषी वाळ तप करतो करतो तपागच्छनुं स्थापन करी उत्तसूत्र परुपेला छे. केमके पांचम पडीकमवाने माटे श्री समवायंग सूत्रमां भगवंते कह्युं छे के अषाडशुद पुनमनी संध्याना पडीकमणाथी मांडीने पचाशमे दीवसे संवत्सरी एटले भादरवाशुद पंचमी पडीकमवी वळी जो तीथी घटी होय तो ओगणपचाशमे दीवसे पडीकमवी पण एकावनमे दीवसे तो नहींज. वळी कल्पसूत्रकर्त्ताए पण समवायंग सूत्रनी अपेक्षा लइ संवत्सरी पडीकमणुं करवुं मान्य करेलुं छे ते पाठ " यतःआषाढचतुमासक प्रतिपद्दिनारभ्य सविसंतिरात्रेमासेव्यति क्रांतेभगवान पर्युषणामकार्षित् तथैवगणद्धराप्पऽकार्षुरित्यादि. "

भावार्थ—वीसदीन सहित एकमासे पडिकमणुं करवुं इतिभाव.

वळी मुळ सूत्रोमां पुनमने पाखी कहे छे. ते माटे पडवाइ आपखा कह्या छे. तेथी ओगणपचाश तथा पचाशमे दीने पंचमी पडिकमवि सत्य छे. तेमज कोइ वखते पडिकमणा वेळाए तथा संपुर्ण पंचमी होय तो पडिकमवी एम कहे छे तेनो उत्तर. सवायंग सूत्रमां घडीनो मेळतो भगवंते सूचव्यो नथी पण ओगणपचाश तथा पचाशमे दीन पडिकमवा माटे कहेलुं छे.

हवे आ प्रश्नमां कोइ तप्त स्वभावी कोइक युक्ति करी. कहे के बे श्रावण आवे त्यारे बीजा श्रावण मासमां पर्युषण करवां; सबब के, भादरवा मासनो मेळ करी संवत्सरी पडिकमवी एम कहे तेने कहेवानुं के, श्री जैन सास्त्रने हिसाबे बे श्रावणमास कदी आवता नथी.

तत्रयुगमध्येपौषःयुगांतेचाषाढएववर्द्धतेनान्येमासास्तच्चिंदानितत्सम्यग्ज्ञायतेअतोदिनपंचाशतैवपर्यूषणासंगतेतिवृद्धाः

एटले सिद्धांतने न्याये पोषने अषाढ ए बे मास अधिक आवे छे. पण तेनी गणतरीने माटे जैन टीपणुं वर्तमानमां छे नहीं. तो पण सिद्धांतने आधारे ओगणपचाश तथा पचाशमेदीने पांचम पडिकमवी ए सूत्रनो न्याय सत्य छे.

वळी संवत्सरी पछी दीन सीतेरमे कार्तीक चोमासानी पाखी पडिकमणुं करवुं ए सत्य छे. कारण के जैन शास्त्रोमां बे अधीकमास कह्या छे अने सितेर दीनतो प्राइक वचन कह्यां छे तेमां एक तिथी तो अवश्य घटे; तथा प्रस्तावे बे पण घटे; तेथी सीतेर दिन छे ते व्यवहार बचन सत्य छे परंतु तथी घटवाना योग्ये उगणोतेर अथवा अडसठ दिवस पण थाय छे. माटे सुत्रन्याये वर्तवुं ए योग्य छे. वळी सीतेर दीवस संवत्सरीना छे ते वर्षाती सामाचारीने माटे कह्या छे तेमज प्रथमना ऊगणपचाश तथा पचाश दीवस कह्या छे ते चतुरमास स्थापवाने अवग्रह याचीने कह्या छे ते संवत्सरीनी अगाउ पचासमे दिने एटले अषाढ शुद पुर्णीमासीने दिने अवश्य अवग्रह याचवो. पण उलंघन करवुं न कळपे. वळी चोमासामां बे श्रावण मास आवे ते जगत व्यवहारीक टीपणामां छे माटे बीजा श्रावण शुद पांचमे संवत्सरी पडिकमवी ए सिद्धांतने हिसाबे भादरवोज गणाय छे. अने वचला अधीक मासना कारणथी संवत्सरी पछी सोदीवसे कार्तीक शुद पुनम आवे छे. ए लौकीक टीपणाने हिसाबे छे. पण आसोशुद पुनम तेज जैन टीपणाने अनुसारे कार्तीक शुद पुनम गणीने पडिकमणुं करवुं.

प्रथमना बे अषाढ आवे त्यां प्रथम अषाढ व्यतिक्रांते बीजा अषाढ शुद पुनमे चातुरमास निरुपण करवुं त्यां द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव जोइ सिद्धांतानुसारे वर्तवुं. कदाच जेष्ठमास तथा प्रथम अषाढ मासमां वृषा रुतुना कारणथी रस्तामां अयत्ना होय तो शास्त्रानुसारे स्थिर वास करवो योग्य छे. ए सिद्धांत प्रवचननो आस्तिक समज वो केमके अयत्ना पंथने टाळवामाटे तो दरमासनो नियम नथी तेथी उपयोगे चारित्रना निर्वाहनी खातर विचरवा वितरागनी आज्ञा छे. तोपण पितवस्त्रधारी कुह्लिगो पोताना मस्तानी मदना पराधीनपणामां प्राचीन काळना सावद्याचार्योने युग प्रधानो तरीके गणी तेना करेला प्रकरणोनी भ्रमजाळ कुयुक्तिओथी भरपुर बनावटोनुं महात्म वधारवामाटे मोटी पांचम विरुद्ध करे छे. ए कांइ थोडो जुलम नथी.

वळी ए काळकाचार्ये पांचमने बदले चोथ पडिकमी ते जैनशास्त्रथी तो विरुद्ध छे. सवब एकदा समयने विषे साध्वीनी सहाय करवानी खातर काळकाचार्ये राज विग्रहनो परिसह उत्पन्न थयो जाणी पोताना विचारमां थयुं जे आ पांचमने बदले चोथनुं पडिकमणुं करवुं ते कांइ वितरागनी आज्ञा तो छे नहीं परंतु कार्याकारणने योगे चोथ पडिकमु छुं पण आवती सालमां पांचम पडिकमशुं एवा इरा-

दानी साथे चोथ पडिकमीने अन्यदेशे विहार करी गया एम तपामतीना ग्रंथो जोतां मालम पडे छे. वळी ते चोथ पडिकमवानी अगाउ पांचम पडिकमता हता तेमज आवते वरसे पण पांचम पडिकमवी हती पण आवती सालमां मरण पामवाथी धारेलो विचार मनमां रह्यो ने तेना पछात रहेला शिष्योए गुरुनुं माहात्म वधारवा माटे चोथनुं पुंछडु या नाडु पकडी राख्युं छे ने तेमज तेओने कोइ पुछे त्यारे क्रोधाकुळ थइ कहेजे अमारा वडिलोए शास्त्रानुसारे वाजवी चोथ पडिकमी छे. माटे तेमज अमो वरतीए छीए. एम कहीने चोथ धर्मी पीळा वस्त्रधारीओ कुयुक्तिओ मेळवी ग्रंथोनी शाक्षीओ आपे छे. तेथी ओछी संज्ञावाळा अजाणा माणसो ते वेषधारीओनुं मान वधारवानी खातर अंध थइने तेना कहेवा प्रमाणे चाले छे. परंतु वितरागनी आज्ञा प्रमाणे चालनार जैन दयाधर्मीओ शास्त्रानुसारे पांचम पडिकमे छे. ने द्रव्यलींगीआओनी कुयुक्तिनो श्रम वृथा गणे छे.

चैत्यशब्दे प्रतिमा कहे छे ते असत्य छे पण चैत्यशब्दे ज्ञान छे.

केटलाएक जडमतिओ तम स्वभावथी एम कहे छे जे सिद्धांतोमां चैत्यशब्द छे. माटे चैत्य एटले तिर्थंकरोनी प्रतिमा छे. एम कहेनारानुं वचन व्यर्थ छे. सबब के चैत्यशब्दे ज्ञानधर साधुओनुं नाम दरशावेलुं छे. अर्थात चैत्य एटले आत्मज्ञान छे. ते विषे वधारे विवेचन समकितसार भाग प्रथममां आपेलुं छे. तो पण विशेपार्थ कहेवानुं के सिद्धांतअनुसारे चैत्य एटले ज्ञानने पुष्टि करवानी खातर सारस्वतना सुत्रोथी तथा कविकल्पद्रुमना धातु पाठनी शाक्षि सहित तेमज हैम व्याकरणना पंचमा अध्यायना प्रथम पदनी रीते चैत्य शब्दे ज्ञान एम सिद्ध करेलुं छे. ते नीचे मुजब.

ज्ञानार्थस्यचैत्यशब्दस्यव्युत्पत्तिर्विभण्यते
चितीज्ञानेअयंधातुःकविकल्पद्रुमधातुपाठे
तकारांतचकाराद्यधिकारेऽस्तितथ्थाहि
चतेज्ञूयाचोचितीज्ञानेचितङक्चितीकिं
स्मृतौइत्यादिःईकारानुबंधःस्वाक्ययोरिण्निषेधार्थः
पश्चात्चित्इतिस्थितेततोनाम्युपधात्कःइति

सारस्वतोक्तसूत्रेणकःप्रत्ययः
तथाहेमव्याकरणपंचमाऽध्यायस्यप्रथमपादोक्त
नाम्युपांत्यप्राकृगृद्दज्ञःकःअनेनापिसूत्रेणकः
प्रत्ययःस्यातककारोगुणप्रतिषेधार्थःपश्चातचेतती
जानातिइतिचितःज्ञानवानित्यर्थःतस्यभाव
चैत्यंज्ञानमित्यर्थःभावतद्धितोक्तयणप्रत्ययः

एम तेमना मान्य करेला हेमाचार्य कृत व्यांकरणमां शास्त्रोक्त रीते चैत्य शब्दने ज्ञान कहीए एम सिद्ध करी आपेलुं छे.

वळी मुळ सिद्धांतोमां तो चैत्यशब्दे ज्ञानधर, संजति एम खुली रीते मालम पडेछे तेथी ज्ञान सहित साधुओने वंदन नमन विगेरे “ जाव पुजवा स्वामि ” कहेवाय ते निर्वादक वचन छे एम छतां पण पाषाणमति प्रतिमाने चैत्य कहे छे. ते केवी जडता छे ! केमजे ते एकेंद्रि पाषाणमां पहेला मिथ्यात्व गुणठाणानी प्रवळताने लीधे ज्ञाननो तो अवश्य असंभव छे पण एनी सत्तामां बे अज्ञान रहेला छे. ते अपेक्षाए तो एनो सर्वमुळ गुण मिथ्यात्व स्थानकमां प्रवर्त्ते छे. हवे तेवा एकेंद्रिपाषाणने सलाटे टांकणे कंडारीने पांच इंद्रीओना आकारमां मनुष्य जेवुं रुप बनाव्युं छे. अने तेनो जन्मदातार सलाट छे तेणे पोतानी बुद्धि वापरीने एकेंद्रिपणामांथी पांच इंद्रीओ सहित मनुष्यना जेवुं स्थुळ करी आप्युं तो ते (सलाट)ने मोटी शक्तिनो धणी गणवो जोइए ? हवे एवी मुर्तीओने वेचाण लइने मोक्ष गएला ज्ञानधर तिर्थंकरोना नामथी मंडन करे छे. माटे ते मुर्तीओ ज्ञानी पुरुष नहीं पण तेमना नामना आधारे सब (कळेवर) तो खरुं. सबव के ज्ञानी तिर्थंकरोनी साकार अवस्थामां चैत्य एटले ज्ञान हतुं, तेतो तेमना आत्मगुणनी साथे लइने सिद्धपद पाम्या. हवे पछात रहेलुं शरीर तो ज्ञानरहित पडेलुं हतुं ते ज्ञानरहितनो अर्थ तो अज्ञानसहित होय एम संभवे छे. पण अजीवमां अज्ञानपणुं नथी. परंतु पाषाणनी मुर्तीमां अज्ञान तो छे. तेथी करीने ज्ञानचैत्य न कहेवाय पण अज्ञान चैत्य कहेवाय. सबब के जेनामां जेवो मुळ गुण होय तेमां तेवीज रीते सरधे तेने समकित द्रष्टी कहीए. द्रष्टांत जेम सलाटे ते एकेंद्रिने पंचेंद्रिना रुपमां घडीने तैयार करी पण तेमां पंचेंद्रिनो गुण नहीं तोपण स्थुळ गणाय. तेथी कांइ आत्मानो कल्याण अर्थ सरे नहीं.

ने पहेला मिथ्यात्व गुणाठाणानी अपेक्षाए अज्ञान चैत्य एम सिद्ध थाय छे. तेथी वितरागनी आज्ञा प्रमाणे चालनारा समकित पुरुषो तेने " गेय " एटले जाणीने, " हेय " एटले छांडीने " उपादान " एटले आदरवायोग्य पंचपरमेष्ठि चैत्य एटले ज्ञानचैत्य तेने गुणकारक जाणीने वंदन पुजन निर्वघ्न रीते करतां महा निर्जरा उपारजे एम जैन शास्त्रमां कहे छे.

हवे एवा अमुल्य वाक्योथी भरपुर मुळसूत्रोना उपर आधार न राखतां उलटी रीते चालनारा मंद बुद्धिवाळाने कहेवानुं के निर्गुणी गुरु तथा देवनो त्याग करी सद्गुणी गुरु तथा देव तथा धर्म तेने उपादन एटले ग्रहण करीने भवभ्रमणाना फेराथी छुटी जवाने सकाम निर्जरामां वळ, विर्य, पुरुषार्थ वापरो ? के जेथी सर्व सुकृत्योनी मुराद हांसल थाय.

विशेषार्थ. पन्नवणाजी सूत्रना त्रेवीसमा पदमां कह्युं छे के, तिर्थंकरनाम कर्म उपार्जवानी सत्ता एकेंद्रि तिर्यंचने न होय. सबब के तिर्थंकर नाम कर्म उपार्जवानां वीस स्थानक आर्यमनुष्यगति सिवाय वीजी गतिमां नथी ने प्रतिमा तो आरसपाहाण एकेंद्रितिर्यंच छे तो तेने आठ वोल उपार्जणा करवानी शक्ति क्यांथी होय ते विषे भगवंते कह्युं छे ते पाठ नीचे मुजव.

नेरइआउएदेवाउएनेरइगईनामेदेवगइनामे
वेउव्वियसरीरनामेआहारगसरीरनामे
नेरइआणुपुव्विनामेतित्थयरनामंएयाणि
पयाणिनबंधइ.

भावार्थ—एकेंद्रि जीव नार्कीनुं आयुष्य न वांधे तेमज देवतानुं आयुष्य न वांधे. वळी नर्कगतिनाम तथा देवगतिनाम न वांधे. तेमज वैक्रय शरीरनाम आहारक शरीरनाम न वांधे तेमज नर्कमां जवाने माटे नर्कानुं पुर्वीनाम तथा तिर्थंकरनाम कर्म एटला पद एकेंद्रि जातीना जीव न वांधे.

ए पाठमां तथा तेनी वृत्तिमांपण एकेंद्रि तिर्यंचने तिर्थंकरनाम कर्म उपारजवानी नास्ति वतावी छे. सबव के ते एकेंद्रि पोताना कर्मनी वहुळता कापी तिर्थंकरपद उपारजन करवातो शक्तिवान न थया तोपण तमे तेना कानमां गुरुमंत्र भणी फुंक मारीने तमारी शक्तिए तेमां तिर्थंकर गुण प्रगट करवा धारोछो ए केवी

सारस्वतोक्तसूत्रेणकःप्रत्ययः
तथाहेमव्याकरणपंचमाऽध्यायस्यप्रथमपादोक्त
नाम्युपांत्यप्राकृगृह्नःकःअनेनापिसूत्रेणकः
प्रत्ययःस्यातककारोगुणप्रतिषेधार्थःपश्चातचेतती
जानातिइतिचितःज्ञानवानित्यर्थःतस्यभाव
चैत्यंज्ञानमित्यर्थःभावतद्धितोक्तयणप्रत्ययः

एम तेमना मान्य करेला हेमाचार्य कृत व्यांकरणमां शास्त्रोक्त रीते चैत्य शब्दने ज्ञान कहीए एम सिद्ध करी आपेलुं छे.

वळी मुळ सिद्धांतोमां तो चैत्यशब्दे ज्ञानधर, संजति एम खुल्ली रीते मालम पडेछे तेथी ज्ञान सहित साधुओने वंदन नमन विगेरे " जाव पुजवा स्वामि " कहेवाय ते निर्वादक वचन छे एम छतां पण पाषाणमति प्रतिमाने चैत्य कहे छे. ते केवी जडता छे ! केमजे ते एकेंद्रि पाषाणमां पहेला मिथ्यात्व गुणठाणानी प्रवळताने लीधे ज्ञाननो तो अवश्य असंभव छे पण एनी सत्तामां बे अज्ञान रहेला छे. ते अपेक्षाए तो एनो सर्वमुळ गुण मिथ्यात्व स्थानकमां प्रवर्त्तें छे. हवे तेवा एकेंद्रिपाषाणने सलाटे टांकणे कंडारीने पांच इंद्रीओना आकारमां मनुष्य जेवुं रुप वनाव्युं छे. अने तेनो जन्मदातार सलाट छे तेणे पोतानी बुद्धि वापरीने एकेंद्रिपणामांथी पांच इंद्रीओ सहित मनुष्यना जेवुं स्थुळ करी आप्युं तो ते (सलाट)ने मोटी शक्तिनो धणी गणवो जोइए ? हवे एवी मुर्तीओने वेचाण लइने मोक्ष गएला ज्ञानधर तिर्थंकरोना नामथी मंडन करे छे. माटे ते मुर्तीओ ज्ञानी पुरुष नहीं पण तेमना नामना आधारे सव (कळेवर) तो खरुं. सवव के ज्ञानी तिर्थंकरोनी साकार अवस्थामां चैत्य एटले ज्ञान हतुं, तेतो तेमना आत्मगुणनी साथे लइने सिद्धपद पाम्या. हवे पछात रहेलुं शरीर तो ज्ञानरहित पडेलुं हतुं ते ज्ञानरहितनो अर्थ तो अज्ञानसहित होय एम संभवे छे. पण अजीवमां अज्ञानपणुं नथी. परंतु पाषाणनी मुर्तीमां अज्ञान तो छे. तेथी करीने ज्ञानचैत्य न कहेवाय पण अज्ञान चैत्य कहेवाय. सवव के जेनामां जेवो मुळ गुण होय तेमां तेवीज रीते सरधे तेने समकित द्रष्टी कहीए. द्रष्टांत जेम सलाटे ते एकेंद्रिने पंचेंद्रिना रुपमां घडीने तैयार करी पण तेमां पंचेंद्रिनो गुण नहीं तोपण स्थुळ गणाय. तेथी कांइ आत्मानो कल्याण अर्थ सरे नहीं.

पहेला मिथ्यात्व गुणाठाणानी अपेक्षाए अज्ञान चैत्य एम सिद्ध थाय छे. तेथी तरागनी आज्ञा प्रमाणे चालनारा समकित पुरुषो तेने " गेय " एटले जाणीने, हेय " एटले छांडीने " उपादान " एटले आदरवायोग्य पंचपरमेष्ठि चैत्य ले ज्ञानचैत्य तेने गुणकारक जाणीने वंदन पुजन निर्वद्य रीते करतां महा निर्जरा रजे एम जैन शास्त्रमां कहे छे.

हवे एवा अमुल्य वाक्योथी भरपुर मुळसूत्रोना उपर आधार न राखतां उलटी ते चालनारा मंद बुद्धिवाळाने कहेवानुं के निर्गुणी गुरु तथा देवनो त्याग करी दगुणी गुरु तथा देव तथा धर्म तेने उपादन एटले ग्रहण करीने भवभ्रमणाना राथी छुटी जवाने सकाम निर्जरामां बळ, विर्य, पुरुषार्थ वापरो ? के जेथी सर्व कृत्योनी मुराद हांसल थाय.

विशेषार्थ. पन्नवणाजी सूत्रना त्रेवीसमा पदमां कह्युं छे के, तिर्थंकरनाम कर्म पार्जवानी सत्ता एकेंद्रि तिर्यंचने न होय. सबब के तिर्थंकर नाम कर्म उपार्जवानां स स्थानक आर्यमनुष्यगति सिवाय बीजी गतिमां नथी ने प्रतिमा तो आरसपा- ण एकेंद्रितिर्यंच छे तो तेने आठ बोल उपार्जणा करवानी शक्ति क्यांथी होय विषे भगवंते कह्युं छे ते पाठ नीचे मुजब.

नेरइआउएदेवाउएनेरइगईनामेदेवगइनामे वेउव्वियसरीरनामेआहारगसरीरनामे नेरइआणुपुव्विनामेतिथ्थयरनामंएयाणि पयाणिनबंधई.

भावार्थ—एकेंद्रि जीव नार्कीनुं आयुष्य न वांधे तेमज देवतानुं आयुष्य वांधे. वळी नर्कगतिनाम तथा देवगतिनाम न वांधे. तेमज वैक्रय शरीरनाम आहारक शरीरनाम न बांधे तेमज नर्कमां जवाने माटे नर्कानुं पुर्वीनाम तथा तिर्थं- करनाम कर्म एटला पद एकेंद्रि जातीना जीव न वांधे.

ए पाठमां तथा तेनी वृतिमांपण एकेंद्रि तिर्यंचने तिर्थंकरनाम कर्म उपार- जवानी नास्ति बतावी छे. सबब के ते एकेंद्रि पोताना कर्मनी बहुळता कापी तिर्थं- करपद उपारजन करवातो शक्तिवान न थया तोपण तमे तेना कानमां गुरुमंत्र भणी फूंक मारीने तमारी शक्तिए तेमां तिर्थंकर गुण प्रगट करवा धारोछो ए केवी

मुर्खाइ छे ! ! वळी कोइ कोइना कृत्योथी कोइ जगत वंदनीक थइ जाय तेम कांइ शास्त्रमां छे नहीं.

वळी चैत्यशब्द देखीने अहो भोळा मित्रो ! मोटी भ्रमना साथे एकेंद्रिमां तिर्थंकरपद संकल्पि बेसोमां. चैत्य एटले ज्ञानाश्रीत निग्रंथोने कह्या छे, ते पाठ. " चेईअ ठेनिज्जरठिवियावच्चंअणिसियंदसविहंवहुविहंकरइ "

भावार्थ—चैत्यसब्दे ज्ञानधर साधुनी वयावच निरजरा हेतुए करवी कही छे तेनी विगत कुळ, गण ने संघ. कुळ एटले एक गुरुना दिक्षित साधुओ, गण एटले एक मंडळमां जुदा जुदा गुरुना शिष्यो मळीने एक समुदयमां रही वीचरे ते अने संघ एटले सर्व साधुओ वितराग आज्ञाए वर्तनारा सरखी समाचारीए वरते छे ते. ए सर्वने चैत्य कहीए. वळी रायप्रशेणी सुत्रनी वृति करनारे पण चैत्य शब्दनो भेद एमज खोलवेलो छे. " चैत्यंतुप्रशस्तमनोहेतुत्वात " भावार्थ. जेम भगवंत महावीरने दीठे मन प्रशस्त थाय तेमज कुळ, गणने संघने देखतांज मन प्रशस्त थाय.

प्रश्न व्याकरणनी वृति मध्ये चैत्यशब्दे प्रतिमा लखी छे. ते वृति करनारे पोतानी स्वइच्छाए प्रतिमा ठरावी एम सिद्ध थायछे. मतलब के प्रश्नव्याकरण मां त्रीजा संवरद्वारना मुळ पाठमां कह्युं छे जे निरजरानो अर्थी कर्मक्षय थवानी अभिलाप धरतो छतो ज्ञान धरनार मुनीनी वयावच दस प्रकारे करे. परंतु ते ठेकाणे चैत्य शब्दे प्रतीमानो कांइपण देखाव दर्शावेलो नथी. तो प्रतिमा ठराववा माटे वृथा श्रम न करतां ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा तप धरनार चैत्यनुं आराधन करो एम ज्ञानीओनी भलामण छे. कारण के ज्ञानी साधुओनी संगत करवाथी महा निरजरा ते कर्मक्षय थाय छे एम भगवतीजीने सतक बीजे उद्देशे पांचमे अधीकार छे. ते विचार करीने उपयोग करतां समजण पडशे ते पाठ नीचे मुजब.

तहारुवाणंभंतेसमणंवामाहणंवापज्जुव्वा
समाणस्सकिंफलापज्जुवासणागोसवण
फलासेणंभंतेसवणेकिंफलेनाणफलेनाणे
विन्नाणफलेविन्नाणेपच्चखाणफलेपच्चखाणे
संजमफलेसंजमेअणण्हयफले अ० तवफले
त० वोदाणफलेवो० अकिरियाअ० सिद्धि

फलपज्जवसाणपन्नत्ता

भावार्थ—यथारुप अहो भगवान ! श्रमण माहाण एटले समभावी ब्रह्मचारी साधुनी प्रयुपासना शेवा यथास्थित करे तो शुं फळ उपराजे, अहो गौतम ! ज्ञानबोध सांभळवा पामे अने सांभळतां ज्ञान वृद्धिनुं फळ अने ज्ञान वृद्धिथी विज्ञान एटले जाणवा जोग, आदरवा जोग अने छांडवा जोग ए गुण प्रगटे अने तेनुं फळ तप गुण प्रगटे अने तेनुं फळ वोदाण एटले पुर्वना कर्मोने खपावे अने तेनुं फळ जीवनमुक्त अकिरिए एटले चौदमुं गुणस्थान प्रगटे अने तेनुं फळसिद्ध एटले विदेहमुक्त ते पांच शरीरक्षय थाय अने अक्षय स्थित पद प्रगटे. एम अनेक गुण प्रगट थवानो हेतु चैत्य एटले ज्ञानी, सद्गुणी ने संजमी साधुओनी शेवामां महा निरजरा अने महा कर्मक्षय थवानो अवश्य संभव छे. माटे चैत्य शब्दे ज्ञान सिद्ध थाय छे. आ मजकुर दस फळनी गाथा दया धर्मना बोधमां कही छे ते वेषधारीनी सोबत तजवा माटे कही छे. तेज दसगुणनो पाठ अहींआं चैत्य एटले ज्ञानधर साधुनी उपासना करवा माटे तथा पाषाण पडिमानी संगतथी दुर थवा माटे कह्युं छे, परंतु चैत्य शब्दे प्रतिमा करो छो तो तेनी संगते प्रथम कांइ ज्ञान बोध सांभळवापणुं तो प्रगटे नहीं तो ते ज्ञान गुण प्रगटया सिवाय पछात रहेला गुणोनुं फळ कयांथी प्रगट थाय ? ने ते नहीं तो महा निरजराहेतु शा आधारथी गणाय ? माटे विवेकीजनो हशे ते विचार करीने तेनो सारांश समजशे. वळी चैत्यज्ञानी साधुओनी सोवतथी सर्व आरंभ घटवानो संभव थयो परंतु चैत्य शब्दने प्रतिमा मानो छो तो तेनी संगत करतां अज्ञानना वधाराथी महा आरंभ, महा परिग्रह ने दिर्घाश्रवनुं फळ मळ्युं छे. एम सिद्ध थाय छे.

वळी मजकुर कहेला सदगुण चैत्य ज्ञानधर साधु सदा वंदनीक छे. कारण के जे जे आत्मिक वस्तुमां जे जे मुळ गुण छे ते ते सर्व निरजरा फळनी वृद्धि करता छे. जेम तपनो गुण निरजरा हेतु छे तो तेनो जेम जेम वधारो वधे तेम तेम वधारे निरजरा गुण करे छे. सवव ते तपनो मुळ गुण कर्म वाळ्वानोज छे ते भगवतीजी सोळमा शतकना चोथा उदेशामां कह्युं छे के एक उपवासथी बीजे उपवासे सोगणुं निरजरा फळ छे तेमज त्रण चार पांच विगेरे चडतां चडतां निरजरा वृद्धि थती जाय छे. एमज आश्रव हिंसा घटती जाय छे. तेज न्याये चैत्यज्ञानथी ज्ञानादिक गुण वृद्धि पामता जाय छे. एम सिद्धांत वचन छे. परंतु कोइ स्थळे सिद्धांतोमां मुळ पाठमां एम नथी जे प्रतिमाने वंदन करतां अनंत भवनी फांसी

कषाय अने महा निरजरा उपराजे. एवी रीते न छतां पाषाणमतीओ प्रतिमा वंद-नमां निरजरा कळपे छे ने ते कल्पनाने दृढ करवानी खातर ग्रंथोनी मेळवणी करी मोटा लाभ वतावी वज्र शल्य प्रक्षेप करेला छे ने तेना आधारथी तन, मन ने धनने अर्पण करी निर्थक श्रम ले छे तो कहेवानुं के तेवीज रीते निरारंभमां मन, वचन अने कायाना अशुभ जोगने रुंधी स्थिरताभाव पाम्या होत तो तेओना वांछीतार्थ फळ थवाने वांधो कदी न रहेत. पण अज्ञानी मुर्खनरो सिद्धांतोना आधारथी विरुद्ध रीते कुतर्कोनो आधार लइ चैत्य, चैत्य एटले प्रतीमाने अर्थे जे जे सारंभथी कृत्य करीए ते सर्व निरजरा हेतु छे एम कहे छे तेमां पुछवानुं के ते सावद्यनुं कर्म तमने न लागे तो शुं ते वांधेला कर्मनो वदलो प्रतिमा भोगवशे के केम ? पण सिद्धांतनी रीते तो एम छे के जे करता तेज भुक्ता एम जाणीने सुज्ञ जनोए चैत्य एटले ज्ञान आधारथी निर्वद्य कृत्यमां उपयोगे चालवुं.

सावद्याचार्योना कृत्य ग्रंथोने सिद्धांत रीते मानी प्रतिमा पुजे ते प्रश्नोत्तर.

सावद्याश्रवी कुवोधजनो एम कहे छे के प्राचीनकाळमां मोटा आचार्यो थया तेमणे कळीकाळना स्वभावे मतीवीसरजन थइ जवाना भयथी सर्व शास्त्रो कागळ तथा ताडपत्रोमां लख्या ते वखते प्रतीमा पुजन वीधीना शास्त्रो वीतरागना वोध करेला ते पण मुळ सूत्रोने अनुसरीने लखेला छे. ते शास्त्रोना आधारथी अमो प्रतिमा पुजनविधी करीए छीए एम कहे छे ते तदन वृथा छे.

पण तेना जवावमां कहेवानुं के जे जे वितरागभाषित मुळ सूत्रो छे तेमांतो देवताओना जीत व्यवहारनी पुजा विधी करेली छे. वळी साधु तथा श्रावकोनी वैरागदशाथी करेली ज्ञान समकित सहित निरारंभो क्रियानी विधीओ कहेली छे. पण मनुष्यश्रावकोने प्रतिमापुजन वीषे कांइ विवेचन आपेलुं नथी ते अवश्य छे.

पण पंचम काळना सावद्याचार्योए पोताना पेट गुजारानी खातर प्रतिमा पुजननी विधीना ग्रंथो रच्या छे. तेमां एवो ठाठ मेळव्यो छे के जे वखते तिर्थंकर महाराज निरागतापणे समोसरणमां हयात विराजमान हता तेनी समक्षमां यथायोग्यरीते भव जीवोए विनयमार्ग साचव्यो हतो. तेवीज रीते हालना पाषाणमतिओ प्रतिमानी आगळ कल्पित विधी करे छे ते वृथा छे. सबब के ते प्रतिमा एकेंद्रिमां तिर्थंकरनी रीते गुण न छतां तेनी पुजा करनाराओज संकल्पे छे तो ते गुणकर्त्ता

केम थाय ? केमके जो तिर्थंकरना समोसरणमां बनेली हकीकत रीते करता होय-तो कहेवानुं के जे दीवस जे तिर्थंकर महाराजा आप बिराजता ते तिर्थंकरना सर्व गुणे करीने शुशोभित हता ने तेमज तेओने वंदन करनार भव्यजीवोनी श्रद्धामां पण तिर्थंकरना छतां गुण स्तक्वानी विशुद्धता हती तेथी स्तुति करनारना तथा तिर्थंकरना छता गुण प्रत्यक्ष मळी आवे छे. ते तो घटित छे. परंतु तेज आधार प्रमाणे प्रतिमाआगळ विधी करवा धारे छे तेमां निर्गुणछतां सद्गुणथी केवी रीते स्तवी शकाय ? माटे ए सर्व कल्पित छे.

हवे आ ठेकाणे ग्रंथकर्त्ताए प्रतिमा पुजननी विधीना फळनी विगत बतावी छे, ते सुज्ञजनो वांचीने मुळ शास्त्रोनी साथे सरखावशो तो परस्पर भेद मालम पडशे ते नीचेनी हकीकतथी जाणवुं.

प्रवचन सारोद्धार विगेरे ग्रंथोमां सावद्याचार्यों कही गया छे के जे माणस प्रथम देरे जवानुं मन करे त्यां एक उपवासनुं फळ थाय, दर्शने जवाने ऊठे तो छठनुं फळ थाय, तेमज चालवा माटे पग उपाडे त्यां अठ्ठमनुं फळ थाय ने डगलुं भरे त्यां चार उपवासनुं फळ थाय अने मार्गे चाले त्यां पांच उपवासनुं फळ थाय अने अर्धेपंथे पहोंचे त्यां पंदर उपवासनुं फळ थाय अने देराने देखे त्यां मास खमणनुं फळ थाय, ने देरानी नजदीक पहोंचे त्यां छ मासी उपवासनुं फळ थाय तेमज देराना पहेला द्वारमां पेसे त्यां वर्षितपनुं फळ थाय अने प्रदक्षिणा देतां सो वर्षिउपवासनुं फळ थाय, तेमज प्रतिमाने देखतां हजार वर्षिना उपवासनुं फळ थाय अने प्रतिमा उपर भाव राखी वंदन करे तो अपार फळ थाय, अने प्रतिमा-नुं पुजन करतां करतां तो तेथी चोगणुं फळ थाय. ते करतां प्रतिमाने फुलनी माळा पहेरावतां घणुंज फळ थाय एम विधी करतां छेवटमां बाजां, वाजींत्र, नाटक, गीत, गायन, दीपमाळ विगेरे करतां अनंत फळ थाय छे. एम एक जसोविजय नामनो कुकवि कहे छे के मारी एक जीभे ते फळना लाभनुं वर्णन करी सकातुं नथी. एम प्रतिमाना आरण कारणमां अनंता तपनो लाभ बताव्यो छे. हवे एवी श्रद्धावाळा मुर्ख मित्रोने पुछवानुं के अरे कल्पित ग्रंथ फळना लेनाराओ ! तमारी कल्पित कल्पनाना विचार प्रमाणे एम ठरे छे के पीळा वस्त्रवाळा वेषधारीओनो तो एक उपवासथी मांडीने पाषाणने दंडवत करतां फळ कह्युं तेटलुंज. एम संभव थाय छे पण ते करतां पीळा तील्लकवाळा गृहस्थोने अनंतो लाभ थयो जणाय छे. सबब के ते शेवको वंदन करतां पुजा विगेरे नायकानी पेठे नाच करी सर्व आश्रव करे

छे. माटे ते पीळा चांदलावाळा पीळा वेषधारी करतां मोटा भोगना धणी समजाय छे. अने संवेगी पुजा विगेरे नथी करता तो नीच पक्षने जुज लाभ पामशे एम संभव थाय छे. तो वेषधारी करतां वध्या तो खरा ! ! आ ठेकाणे कहेवानुं के पीळा वस्त्रवाळा ते मुर्ख शेवकोने आरंभनो अनंतो लाभ न वतावे तो पोतानी आ जीवीकामां दरेक बावतनी हरकतो आवे माटे शेवकोनां मन प्रसन्न करवानी महा आरंभनुं फळ तेमने भळाव्युं परंतु जन्मअंधाओनी आंख उघडेज क्यांथी ?

वळी देरामां पेसतांज त्रण वखत निस्सही कहे छे.

तेमां पहेली निस्सही तो देराने पहेले द्वारे ग्रह संबंधी कार्य त्याग करवा नीमित्ते कहे छे.

बीजी निस्सही देराने मध्यद्वारे रंगमंडपमां प्रवेस करतां प्रतिमाना दर्शन माटे कहे छे.

त्रीजी निस्सही प्रतिमापुजनने माटे सर्व अन्यकार्य त्याग करवानी कहेछे.

तेमां पहेली निस्सही कही देरामां पेसी मुळ पडिमाना दर्शन करवानी विधीमां त्रण प्रदक्षिणा करी जीवरक्षाने माटे नीची द्रष्टी राखीने प्रणाम करवा कहेछे. हवे ते प्रणामना भेद छे. बे हाथ संपूट करी नमस्कार करवो ते अंजळीबंध प्रणाम, अर्धशरीर नमावी करे ते अर्धावृतन प्रणाम. बे हस्त, बे ढीचण ने मुस्तक ए पंचांगभुमीए लगावी वंदन करे ते पंचांगप्रणाम कहेवाय. ए त्रण प्रदक्षिणा ज्ञान, दर्शन ने चारित्रनी सूचवना करावनारी छे. अने प्रतिमानी प्रदक्षिणा लेतां रत्नत्रयनो लाभ वधे छे. अने प्रतिमाने त्रण प्रदक्षिणारुप भ्रमण करतां संसार भ्रमण नाश पामे छे. अने ते प्रमाणे प्रदक्षिणा देवाथी चारे बाजुनी स्थापित प्रतिमानुं दर्शन थाय छे ते सर्व सफळ छे एम कहे छे.

वळी मुळ प्रतिमाना सन्मुख द्वारथी निस्सही कहीने प्रतिमा सामी द्रष्टी मेळवी एक साडी उत्तरासन करी, बे हाथ माथे लगाडीने अंजळीबंध प्रणाम करी हृदयमां पडिमाना गुणनुं स्मरण करतां एकाग्रचित्ते रंगमंडपमां प्रवेश करवो तेमां पुरुषवर्ग प्रतिमानी दक्षिण दिशा तरफ रहीने अने स्त्री वर्ग उत्तर दिशा एटले डावी बाजुए उभा रहीने दर्शन करवा ए प्रमाणे प्रवचन सारोद्धार तथा श्राद्धविधी विगेरे ग्रंथोमां सावद्याचार्यो कथन करी गया छे.

वळी त्यां दर्शन करवानी क्षेत्रमर्यादा बांधी छे तेमां जघन, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्रण अवग्रह ठराव्या छे जघन अवग्रह नव हाथ, उत्कृष्ट साठ हाथ ने

दसथी ओगणसाठ सुधीनो मध्यम अवग्र ठरावेलो छे. हवे आ त्रण अवग्रह ठराववानी मतलब एम संभवे छे के प्रतिमा वंदन करवा आवनार स्त्रीपुरुषोए प्रतिमाथी ओछामां ओछा नव हाथ दुरथी ते छेवट साठ सुधी, दुरथी वंदन करवुं एम कहेलुं छे.

हवे देराना आद्यद्वारमां प्रवेश करतांज पांच अभिगमन साचववा कहे छे. तेमां पहेला बीजा अभिगमनमां सचित द्रव्य बहार मुकवुं तेमां पोताने वापरवानी वस्तु, पान, फळ, फुल विगेरे तेमज असनादिक, चार अहार अंदर लइ जवा नहीं परंतु प्रतिमानी पुजा निमितना पान, फळ, फुल तथा नैवेद्यादिक सर्व सचित लइ जवामां जरा पण वाद नथी एम कहेछे. वळी अचित द्रव्य बहार न मुकवुं कहे छे.

हवे सचित अचित ए बे अभिगमन सिवाय पछातना त्रण अभिगमन तेमां एक साडी, उत्तरासन तथा एकाग्र चित्त तथा अंजळी बद्धप्रणाम ए त्रण रंगमंडपमां प्रवेश करती वेळा कहेला छे. ए पांच अभिगमन सामान्य गृहस्थ पुरुषोने साचववा ठराव्या छे. अने जो कोइ राजा पडिमाना दर्शन करवा आवे त्यारे ते पोताना खडग, छत्र, उपांन, मुगट, चम्मर, ए पांच राजचिन्ह बहार मुकीने देरे दर्शन करवा प्रवेश करे छे. वळी मुख्य दर्शन करता प्रतिमा सामे नजर राखी एकाग्रचिते दर्शन करवा. पछी जरा पाछा हठीने चैत्यवंदन करवाने स्थानके बेसी अक्षतनो स्वस्तिक या नंदाव्रत करीने उपर फळ तथा नैवेद मुकी अग्रपुजा करवी कहेछे. त्यार पछी पोताने पग मुकवानी जमीनने त्रण वखत पुजीने त्रण खमासमणा दइ त्रीजी निस्सही कहीने आलंबन त्रिक साचवता चैत्यवंदन करवुं. ते त्रण आलंवन साचववानी विगत.

वर्णनुं आलंवन, अर्थनुं आलंवन ने प्रतिमानुं आलंवन ए त्रण आलंवन कह्या छे. तेमां वर्णनुं आलंवन एटले चैत्यवंदनना नमोथुणं विगेरे शुद्ध बोलवा. अर्थालंबन एटले कथित सूत्रोनो अर्थ हृदयमां चित्तवन करता जवुं. प्रतिमा आलंवन ते प्रतिमा सामेज जोइने स्तवनो विगेरे कहेवा एम प्रतिमापुजन विधीवार करतां मोक्षनो लाभ उपार्जे छे एम ते ग्रंथोमां प्रतिमानी शेवा भक्ति माटे गलंदर चलवेला छे. वळी ते भक्तिने माटे नावण धोवण पुजनविधीमां तथा पान, फळ, फुल, धुप, दीप नैवेदादिक करवुं तथा सवालखी, नवलखी पुष्पोनी विधीसहित आंगी रचवी विगेरे सचितादिकनो आरंभ थाय छे, तेने प्रतिमानी पुजामां महा

निर्जराहेतु गणवुं कहे छे. एम सर्व विधाननुं प्रवचन सारोद्वार विगेरे ग्रंथोमां कथन करेलुं छे. वळी ते ग्रंथोमां प्रतिमापुजन विगेरे आरंभो करवानी एटली कुयुक्ति मेळवेली छे के ते आ स्थळे दाखल न करतां थोडामांज सूचना आपवामां आवे छे. जे पाषाणोपाशक पीळा वस्त्रवाळा वेषधारीओए संसारमां लांबो वखत रहेवानी खातर देवळमां बेसारेल एकेंद्रिचार प्राणधारकनी बहुमानविधीपुर्वक नमन, वंदन ने पुजनना मोटा ग्रंथो बांधेला छे. अने तेमां थता आरंभनुं अधीकारीपणुं पोते माथे न धरावतां मोटा लाभनी भ्रमणा बतावीने अमारा पुर्व संबंधी अज्ञान मित्रोने फसावी मार्या छे. अर्थात सुद्रष्टिथी चुकवी हिंसा देखाय पण अनुंबंधे दया थाय छे. एम अवळ चक्रमां चडाव्या छे. परंतु ते अविवेकीओने प्राणघातना फळ तो बीलकुल बताव्याज नथी. अफसोस! अफसोस! ते विचारा पामरनी शी गती थशे!

हवे मजकुर ग्रंथकर्त्ताओनी प्रतिमापुजननी विधीने मुळशास्त्रनी साथे सरखावतां परस्पर भेद पडे छे ते नीचे मुजब.

सत्य विनयनी विगत.

कोइपण गृहस्थ हयात तिर्थंकर महाराजना समोसणमां वंदन करवानी खातर गयो त्यां कोइ पण ठेकाणे एक उपवासथी मांडी हजार वर्षनी तपशानुं फळ बताव्युं नथी. तेथी एम समजाय छे के ग्रंथकर्त्ताए भोळा प्राणीओने प्रतिमा वांदवाना लाभमां दोडावी मार्या छे.

वळी तिर्थंकर तथा आचार्य तथा उपाध्याय तथा गुरुना चरणमांथी विनित शिष्यो अमुक कार्यने माटे गमन करे छे, त्यारे एम कहे जे अहो गुरु! "आवसही" एटले अवश्य कार्यने माटे जाउंछुं. एम कही अगत्यना कार्यो गुरुनी आज्ञाए करी पाछो हजुरमां आवे त्यारे करेलां कार्यनी सूचना आपवा माटे कहे जे अहो गुरु! "निस्सही" एटले कार्य करी तमारा चरणमां आव्यो छुं एमतो सिद्धांतोमां छे. परंतु पाषाण प्रतिमा आगळ निस्सही कहे छे जे ग्रह संबंधी कार्य मुकी आव्योछुं एम संभवे छे. तेमां पुछवानुं के देरामांथी घेर गया त्यारे आवसही कही प्रतिमानी आज्ञा मार्गीने संसार व्यवहार करवा गया हता के शुं? के आ स्थळे निस्सही कहीने प्रतिमाने चेतवणी आपो छो.

वळी बीजी निस्सही प्रतिमा दर्शनने माटे कहे छे. तेमां एम थयुं के हे देव! तमारा माटे सर्व बीजा वेपार तजुछुं एम प्रतिमाने संभळावे छे तो पुछवानुं के बी-

जी निस्सहीनो स्वीकार कोण करे छे? वळी त्रीजी निस्सहीमां पुजा निमिते घरना कार्य तजुंछुं एम कहे छे. तो शुं ते प्रतिमाए एम जाण्युं जे आ विचारो शेवक हुं एकेंद्रि पाषाणने माटे सर्व घर तजी बेठो छे. एमतो ए असंज्ञी छे माटे कदी स्वीकारती नथी तो ए त्रण निस्सही पोते बोलीने पोते स्वीकार करोछो तो कहेवानुं के पोते एकांत स्थळे बेसीने पोतानीमेळे निस्सही कां न कहे? ने पोते बोलतो अबोलनो आदेश मागे छे तो ए कल्पना केवी असंभवीत छे?

तिर्थंकरना समोसरणमां भवजीवो तिर्थंकरनी सन्मुख विनयपुर्वक प्रदक्षिणा दइने वंदन करति वखते जीवरक्षाने माटे जमीन उपर द्रष्टी राखता ने ते समोसणमां दयाधर्मनोज बोध थतो एम तो मुळसूत्रोमां छे ते सत्य छे. पण प्रतिमावंदन माटे पहेली निस्सहीनी वखते त्रण प्रदक्षिणा दइने जीवरक्षणनी खातर जमीन उपर द्रष्टि राखवी कबुल करे छे. अने कोइ पुछे तेने एम कहे छे जे पुजा तथा दर्शननिमिते प्राणी हणाय ते हिंसामां न गणाय एवी अवळी श्रद्धा छे तो दयानी खातर नीची द्रष्टी राखवी तेपण देरांनीज अंदर राखवी. ते तमारो मान्य करेलो निराश्रव तेमां आश्रव कयांथी थइ पडयो? माटे तदन असत्य कल्पना जणाय छे.

वळी त्रण जातना प्रणाम छे. ते विधी तो तिर्थंकरादिक सर्व संजतिओने माटे छे. मतलब के तेओमां छतां गुण छे अने तेओने वंदन करवा आवनार भवजीवो नम्रतापुर्वक तेओना नेत्रो आगळ करी बतावे छे. ते वखते ते ज्ञानी पुरुषो समभावमां रहे छे. पण विनय करनारने एम संकल्पे छे जे ए भवीआत्मा वनित अने श्रधावान छे एम तो संभवे छे. पण अरे मुर्ख जनो! प्रतिमामां तेटला गुण न छतां तिर्थंकरादिकनी रीते त्रिविध वंदन करवा धारोछो ने स्वीकारनार पण तमोछो वळी ते प्रतिमाने तमे नमस्कार करतां तमारा उपर पुर्वोक्त कल्पना करवा अशक्त छे. तेथी तमारी कल्पना नाहक छे.

तिर्थंकरना समोसरणमां भवजीवो तिर्थंकरादिक सर्व संजतिओने त्रण प्रदक्षिणा करतां रत्नत्रय प्रगट थाय छे. ते भगवती सूत्रमां पण कह्युं छे ए वात तो सत्य छे. सबब के तेओनी संगतथी ज्ञानादिक दश बोलनी सिद्धि थाय छे. परंतु प्रतिमानी प्रदक्षिणा करतां रत्नत्रय केवी रीते प्रगटे? ते संभवीत वात छे. वळी रंगमंडपमां पुरुषवर्गे प्रतिमानी जमणी बाजु रहीने तेमज स्त्रीवर्गे डावी बाजु रहीने दरशन करवां तेमां नव हाथथी साठ हाथ सुधी दुर रहेवुं बताव्युं छे. तो कहेवानुं जे भगवंतने समोसरणमां वंदन करवा जनारा भगवंतथी " अदुसामंते "

एटले अति वेगळा नहीं तेम अति ढुकडा नहीं एम रहीने वंदन करे छे. माटे नव तथा साठ हाथनी कल्पित गणतरी छे. केमजे साक्षात तिर्थंकरादिक श्रमणोने वंदनविधी मजकुर पाठनी रीते छे. वळी साध्वीथी साडात्रण हस्त दुर रही पुरुषवर्गे वंदन करवुं अने स्त्रीओऐ साध्वीने स्पर्श रहित यथायोग्य स्थळे रही दरशन करवुं मतलब के तिर्थंकरादिक साध साध्वीओने गृहस्थोए संकटो न करवो, एम तो मुळसुत्रमां प्रत्यक्ष छे. परंतु तमो प्रतिमामतिए प्रतिमाथी नव तथा आठ हाथसुधी दुर रही स्त्री पुरुषोए वंदन कबुल राख्युं छे. सबब के प्रतिमाने संकटो न थवा माटे एम ठर्युं. तेमां पुछवानुं के तमो ते प्रतिमाने नवरावचा विगेरे पुजाविधी करतां आंगळीथी प्रतिमाना कपाळमां चांदलो करवाने मसे धोंको मारीलोछो ते तमारा कहेवा प्रमाणे तमने मोटी असातना ने घणा भावनो लाभ मळे तेवुं थयुं! तेमज स्त्रीओए हयात तिर्थंकरादिकने स्पर्शवंदन करेला नथी. तेमज प्रतिमानो स्पर्श न थवाना हेतुए नव हस्तादिक क्षेत्र कल्प्युं छे, एम सिद्ध थयु. तेमां पुछवानुं के द्रौपदीनी पुजानी विधीमां सर्वंगे स्पर्ष करी पुजा भळावो छो तो तमारा क्षेत्र कळपवा प्रमाणे तो एम न थवुं जोइए एम सिद्ध थाय छे. वळी तमे प्रतिमाने तिर्थंकरनी रीतेज मान्य करता हो, तो ते प्रतिमाथी स्त्री पुरुषे दुर रहीने वंदन करवुं जोइए. पण पुजा विगेरे न करवुं जोइए. वळी जो संकटो करवा धारो छो तो ते प्रतिमा कोइ व्यवहारी भोगी देवोनी छे. एम शास्त्रोक्तरीते खरेखर समजाय छे तेथी तमारे स्पर्श करवापणुं रहे छे.

वळी देरामां प्रतिमा आगळ जती वखते पांच अभिगमन साचवे छे ते सर्व वृथा छे. मतलब के हयाती तिर्थंकरादिक सर्व संजतीओ सचित द्रव्यना त्यागी हता तेथी गृहस्थो वंदन करवा जतां कोइ पण सचित द्रव्य समोसरणमां लइ जता नहीं, वळी समोसरणमां त्यागी पुरुषो गृहस्थो पासेथी अचित द्रव्य याचीने लेता एम पण नहोतुं.

वळी तिर्थंकरादिक सर्व संजतीओने अर्थे भोगोपभोगादिकनी वस्तु कोइ पण गृहस्थ तेना कल्पस्थळे लइ जता नहीं ए सत्य छे. वळी समोसरणादिक गृहस्थो वांदवा जतां सचितादिक पोताना भोगोपभोगनी वस्तुओ लइ जता हता तेतो समोसरणनी बहार यथायोग्य रीते मुकीने पछी समोसरणमां जता. पण तिर्थंकरादिकनी भक्ति माटे कोइ पुजाआदिक नैवेद कांइपण लइ जता नहीं सबब के ते महान पुरुषो गृहस्थनी आणेली वस्तुना त्यागी हता. अचित वस्तुओ सामी लावेली

न कळपे तो सचित वस्तु खपेज शानी ? तेवा हेतुथी त्यां पांच अभिगमन गृहस्थो योग्य रीते साचवीने वंदन करी बोधनो लाभ लेता. एवी रीते प्रत्यक्ष छतां पाषाण मतिओ देरामां जतां प्रथम पोताना उपभोगना सचितद्रव्य, पान, फळ, विगेरे सर्व देवळ बहार मुके छे तेने सचित जाणीने मुकता हशे के शुं ? तेमज प्रतिमानी खातर करवाने अनेक जातीना पान, फळ, नैवेद विगेरे सचित ने अचित वस्तुओ प्रतिमाने चडाववा या मुख आगळ धरवा लइ जाय छे, ते अचित जाणीने लइ जता हशे के शुं ? पण कहेवानुं के सचित चिजनुं कारण जणातुं नथी पण देरामां बेठेला भोगी देवनी प्रतिमाने कोइ वस्तुनो त्याग नथी एतो जेम " बावो बेठो जपे ने जे आवे ते खपे " सबब के पुर्वोक्त रीते तिर्थंकरना समोसरणमां करेलां कृत्यो तथा देरामां करेला कृत्योने परस्पर सरखावतां त्यागी भोगीनो पटांतरो प्रत्यक्ष जणाय छे.

वळी देरापंथीओ प्रथम दरशन करतां प्रतिमा सामे एकाग्रभावे दरशन करीने पछी चैत्यवंदनने ठामे जई साथीओ करी ते उपर फळ तथा नैवेद धरे छे, ते सर्व कल्पना असत्य छे. मतलब के समोसरणमां तिर्थंकरादिक श्रमणने वंदनविधीए एकाग्रभाव राखवो तेतो ठीक छे परंतु साथीआ, फळ विगेरे नैवेद कोइए धर्या नथी ने ते भगवान नैवेदादिकना भोगी नथी तो आ तमारा कल्पित देवोनी आगळ नैवेद धरो छो तेवा भोगना अर्थीतो अन्यधर्मीओना देव छे या कुळ देवादिकनो विवरो शास्त्रोमां छे. माटे ए भोगी देवोना भोगने जुल्म आरंभ संसार व्यवहारनो हतो. ते तमोए प्रतिमाने वितराग ठरावीने वितरागनी रीते भक्ति न करतां उलटी रीते तमारा ठाकोरजीना भोग मेळव्या माटे ए भोगीदेवोने अने तमो भक्तोने घटे तेवोज पीळा वस्त्रधारी वेरागीओए सर्वे मळी मान्य पुज्य करेलुं छे. पण ते वितरागना नामथी प्रतिमा करीने भोगादिक धरो छो ते कदी न मळे ए सर्व अयोग्य छे परंतु ए प्रतिमा आगळ नैवेदादिक धरी पछी आरंभनी पुजा करो छो ते पण विरुद्ध छे. अने त्यार पछी पग मुकवानी भुमी त्रण वखत जीव उगारवा माटे पुंजो छो तेतो बहु सारुं छे. केमके एम करुणा राखशो तो तमने कोइ वखते समकितनो लाभ मळशे पण तमो प्रतिमा कारणे कोई प्राणी हणो त्यां निरजरा बतावो छो अने अहींआ पुंजवा तैयार थया माटे तमारा पेटमांतो दयाज जणाय छे. परंतु मोढे पोक जुदी मुको छो ए आश्चर्य भरेलु छे ! हवे त्रण खमासमण दइने त्रीजी निस्सही कहे छे ते अणमळतु छे सबब के मुर्त्तीमां तेवा गुणनो

संभव नथी. अने खमासमणा एटले अहो क्षमावंत ! श्रमण एटले संभावी रुडा मनना धरनार साधु !! हुं इच्छुं छुं तमने वंदन करवा. एम खमासमणनो अर्थ छे. पण अहींआंतो तेओ प्रतिमाने वंदन करे छे. अने साधुना नामनो पाठ भणीने अपराध माफ मागे ए केवी भुल छे? कारण के साधु आगळ माफ मागवी एतो पापोनिवारण करवानो रस्तो बतावी विनयमार्ग शीखवे पण पडिमा आगळ माफी कबुल करावे छे. ते शुं माफी शब्द बोलशे ?

वळी खमासमणने अंते त्रण आलंबन साचववा चैत्यवंदन करे छे. ते वृथा छे कारण के प्रतिमाने चैत्य ठरावीने अछतागुण स्थापवा नमोथुणं भणे छे. तेमां निर्वद्यकर्णीवाळाने संभारे छे, ने मान कल्पे छे एकेंद्रिने ए केनो न्याय छे? ए प्रतिमानी मांहे नमोथुणंनी स्तुतिगुण मांहेलो एके गुण लागु पडतो नथी. माटे आ स्थळे सूचववानुं के द्रौपदी, सुरिआभ, गोशाळमति, जमाळमति, अभवी अने द्रव्यवेषधारी पाषाणमतिओ ए सर्व लौकिक नमोथुणं भणनारनो मत बराबर आवी मळ्यो ए अवश्य छे. वळी तेओ कहे छे जे पडिमांनी मांहे ते गुण नथी. पण अमारा भावमां सद्गुणनाज गुण स्तवीए छीए एम कबुल छे. तो अरे अविवेकीओ ! आ निर्गुणनी सामे नाहक नमोथुणं विगेरे द्रव्य कल्पना करोछो ते अयोग्य छे. अने त्रीजुं प्रतिमानुं आलंबन लेवा कहे छे ते वृथा छे. मतलब के एने आलंबने आत्म सिद्धता कही नथी. पण आत्माना आलंबनथी सिद्ध स्वरुप प्रगट थवानुं छे. ते प्रतिमातारक तथा तरवानी पण नथी. वळी पाषाणमतिओ कहे छे जे ए सविधीए प्रतिमानुं पुजन करतां आत्माने मोक्ष फळ मळे छे. एम कहे ते वृथा छे. मतलबके वितराग साक्षातने तो पान, फळ, फुल, नैवेद्यादिक पूजन कांइ खपे नहीं तेथी तेवा कृत्यारंभ करनारने मंदबुद्धिवाळा ठराव्या छे. माटे एवी पुजार्थी तेमणे तो मोक्ष फळ निषेध करेलुं छेज अने आ विचारा जुलमी कळीकाळमां उत्पन्न थएल सावद्याचार्यो उदरपुर्णानी खातर अविवेकीओने बंधनमां फसाववा माटे विवेक विलास योग्यशास्त्र प्रवचन सारोद्वार, जीतकल्प, महाकल्प, वास्तुकशास्त्र, शेत्रुंजा कल्प, इत्यादिक अनेक ग्रंथो बांधीने तेमां गुरु भक्ति ने देव भक्तिना अनंता लाभ बतावी छकायना प्राणनो नाश करावे छे तेथी दक्षिण दिशाना पाताळ सिवाय बीजुं स्थानक मळवुं मुश्केल छे. हवे कहेवानुं के प्रतिमा मंडननी खातर मूळ शास्त्रोथी विरुद्ध रीते अनेक नवीन ग्रंथोना प्रबंध बांधीने सावद्य धर्म चलाव्यो छे. ने ते ग्रंथोने मूळ करी माने छे तेमज सावद्याचार्योने गणधर तुल्य माने छे. ए मि-

थ्यात्व रुढी समक्तिजनोने छांडवाजोग छे अने वितरागना निर्वद्य वचनने अनुसारे गणधर महाराजे रचेला मुळ सूत्रो आदरवा योग्य छे. सबब के ते मुळ सिद्धांतोमां छकायनी रक्षा करवाने सुबोधधर्म. निर्वद्यपुजन, निर्वद्ययज्ञ, निर्वद्ययात्रा, निर्वद्य तिर्थो तथा निर्वद्यचैत्य तेमज निर्वद्य ने सदगुणी सर्वज्ञ तिर्थंकरादिक श्रमण एटले संमणामी वितरागनी आज्ञाए दयाधर्मनी उन्नती करनार साधुओ तेमनी क्रिया तथा तेमना उत्कृष्ट व्रतनो अधीकार ए सर्व निराश्रवी एटले आश्रवरहित करवाने मुळशास्त्रोमां भगवंते सूचव्युं छे. तेज प्रमाणे भव्यजीवो ज्ञान, दर्शन, चारित्र धर्मनी आराधना करी सिद्धिपद पाम्या हालमां महाविदेह आश्री पामे छे. तेमज अनागतकाळे पामशे एम मुळसुत्रोमां कहेलुं छे. हवे ते सिवाय पुर्वाचार्योए रचेला ग्रंथोमां जेटला निर्वद्य वाक्य छे तेनुं ग्रहण करी सावद्य वाक्यनो त्याज करवो ए समकिती जनोनो विवेक छे. द्रष्टांत. जेम डांगर खांडीने चोखा काढी लइ फोतरांनो त्याग करीए छीए तेमज सदगुण ग्रहण करीने दुरगुणी कृत्यनो त्याग करवो. सबबके चोखानुं भोजन करनार मनुष्य छे ते फोतरांनुं भक्ष करनार प्राणीओ मनुष्यना उत्तम वर्गथी जुदा तिर्यंच छे. तेवीज रीते चोखारुप निर्वद्य सिद्धांत तथा दरेक ग्रंथना नीर्वद्य वाक्य ते सर्व उत्तम भवजीवोने आदरवा योग्य छे. ने सावद्य वाक्यथी भरपुर प्रकरण ग्रंथो फोतरारुप छे. तेने मान्य करनारा अवीवेकीओने तीर्यंच गतीना प्राणीओना साधर्मी गणवामां आवे छे. वळी केटलाएक सावद्यांचार्यो भोळा मृगस्वभावी शेवकोने भ्रमणामां फसाववामाटे एम बोध करे छे के अरे श्रोताजनो! संवेगी साधुए तो वैरागदशाथी संजम लइने नवकोटी छकायना आरंभनो त्याग कर्यो छे. तेथी छकायना आरंभसहीत पुजन करतां संजममार्गनो लोप थाय तेवा हेतुथी अमारे संमभेगीनाम धरावनारने आरंभथी पुजा न करवी मतलब के सीद्धांतोमां ना कही छे. पण साधुओनेआत्मानुं साधन करवामाटे भावपुजा तो कही छे ते अमे करीए छीए.

वळी श्रावकोए द्रव्यपुजा करवी अने द्रव्यपुजा करतां अनेक रीतथी छकायनो आरंभ थाय छे. ते देखीती जुज हिंसा समजवी पण अनुबंध महादयानुं फळ छे. माटे रती संशय न करवो. ते सारंभीपुजार्थी तमो गृहस्थोने महा निरजरा ने महा लाभ थशे. तेमज उत्कृष्टरसे तिर्थंकरगोत्र पण बांधशो. एम शास्त्रोमां कहेलुं छे. एवी रीते छकायनो कुटो करवानी गृहस्थोने उश्केरणी करी छे. एवा सावद्य वाक्यथी कुयुक्ति करी सिद्धांतोने कलंक चडावे छे. ने मोटी विचारवाजेवी वात छे.

पण एवा असत्य वादीओने पुछवानुं एटलुंज के ते सावद्यपुजा करतां संवेगीओने संसारमां बुडी जवानो भय छे तो तेवीज हींसारुप पुजाथी तेना शेवकोने संसार तरवानुं बताव्युं छे. ए केवुं हांसी भरेलुं छे ! ! तेनो वीचार करतांज मालम पडी आवशे.

वळी कहेवानुं के पीळा वेषधारीओ नवकोटीए पांच आश्रव करवाना पचखाण कर्या होय तो तेमणे शेवकोने हींसापुजननो बोध करवो कदी कल्पे नहीं. मतलब के नवकोटीमां तो एवा नीयम आव्या छे के पांच आश्रव शेवुं नहीं, तेमज परपासे शेवरावुं नहीं, तेमज कोइ अजाण शेवतो होय तेने भलुंपण न जाणुं. हवे एवा नव कोटीना नियमनो दरज्जो लइने पांच आश्रव पोते शेवे, शेवरावे ने शेवताने भलु जाणे छे, एम खुल्लुं मालम पडे छे. माटे ते पाषाणपंथी ग्रंथधारी गर्थलोभीना बोधनो त्याग करी वितरागना निर्वद्य बोधना आधारथी आत्मकल्याण करवा विवेकीओए जरुर राखवी.

कवित.

नितिको पढके अनितिका उपदेश करे
नितिछांड अनिति ग्रहीहे
अति अक्कल आपकी टानत
अक्कल छांड वे अक्कल वात लहीहे
सतसंगती छांड कुसंगत टानत
संगत साचकी वात नहीहे
कवीचंद कहे उनको मुख देखत
दोष लगे तजीए जु अहीहे.

मुळसुत्रोथी ग्रंथोमां केटलीएक विरुद्धता छे ते प्रश्नोत्तर.

केटलाक भ्रमित मित्रो एम कहे छे जे तमोए थोडांज सुत्र मान्य करेलां छे. तेथी टीका. चुरण, भाष, निर्युक्ति, वृतिना भेदनी समजणविना मोक्ष मार्गनी तथा सत्य आचारनी खबर क्यांथी पडे ? वळी पंचांगी जाण्याविना वितरागना वचननी शैली तमो जाणता नथी अने अमेतो पंचांगी विगेरे सर्व ग्रंथो मान्य करीए छीए. तेथी अमे खरेखरो दयाधर्म समजीने मार्ग जगतमां प्रसिद्ध थएला छीए.

हवे एवा मिथ्याभिमान करनारा जनोने कहेवानुं एटलुंज के मुळसुत्रो तथा पंचांगी तथा ग्रंथ कोष विगेरे सर्व मान्य करवानो खुलासो प्रथम दयाधर्मनुं विवेचन आपेलुं छे तेमांज करी गएला छीए तेथी वधारे लखवा जरुर नथी. पण अमोए सर्वेने न्याय रीते सादृश्य करेलुं छे के मुळसूत्रोनो लोप न थाय. तेमज आत्मकल्याणनो रस्तो निर्बंधनपणे प्रगट थाय तेवुं होय, ते पुस्तक सर्वेने मानवुं.

परंतु पंचम काळना आचार्योए पोताना मतनी पुष्टि करवा माटे मुळसूत्रोथी उलटी रीते उतरी पडीने टीका, चुरण, भाष, निर्युक्तिमां सावद्य वाक्यनी रचना करी हिंसा स्थापन करेलुं, ते मिश्र ग्रंथोने अमे सावद्यकर्णीरुपज जाणीए छीए. वळी ते ग्रंथोमां केटलीक जाणवा जोग बाबतो जाणीने छांडीए छीए अने आदरवा योग्य निर्वद्य जाणीने आदरीए छीए. माटे तेमां जेटली सत्यता होय छे तेनुं अपमान करता नथी. परंतु असत्यतानुंज अपमान करीए छीए ए खातरीपुर्वक समजवुं.

वळी अमो बत्रिश सूत्रनो खरो आधार राखी आज्ञाए दयाधर्मनो निश्चय कर्योछे. सबब के तेमां अन्य आचार्यनुं मतझंग नथी ते सत्य रीते निरापक्षीने निर्मळ छे. परंतु ते मुळसूत्रना पाठमां कोइ एक ठेकाणे मत पक्षवाळाए पोताना मतने पुष्टि करवानी खातर सासवती प्रतिमा तथा जक्षोनी प्रतिमाना अधीकारमां सावद्य लखाणनो पाठ प्रक्षेप्यो होय तथा अर्थमां लखाण करी गया होयतो तेनो निश्चय करवा माटे मुळशास्त्रनी पुरातनीक प्रतोनो पाठ सरखावीए छीए, ते वखते लखनारनी कुयुक्ति द्रष्टिए मालम पडी आवे छे. ते पण यथायोग्यरीते निराकरण करवा योग्य छे. सबब के वितराग भाषित मुळसुत्रोमां जे जे निर्वद्य वाक्य छे, ते वचनने अनुसरीने करेला ग्रंथोमां पण एकजरुपे देखावमां आवे छे. ते सत्यशास्त्रनी रीते सत्य छे.

वळी मतभेदथी सावद्यरीते कल्पित वचन प्रक्षेप्या होय तेनो आद्य मध्य ने अंते जुदो जुदो अर्थ देखाइ आवे छे. तेने बत्रिश सूत्रनी साथे सरखावतां केटला एक ग्रंथोमां भेंसाडोळ करेला मालम पडे छे. तेनुं द्रष्टांत नीचे मुजब.

कोइ सरोवरमां जळ थोडुं अने कादव घणोछे. ते वखते मोटा रानमांथी एक बकरानुं टोळुं घणा तापथी परिश्रम पामीने जळ पीयाशाथी विटंबना पामतुं ते अल्प जळना सरोवरे जइ पहोंच्युं अने ते बकरां ते सरोवरने किनारे ढींचण ढाळीने चातुरीथी जळपान करवा लाग्यां तेवाज वखतमां एक तृष्णा पराभवथी विटंबना पा-

मेलो पाडो तेज सरोवरने किनारे आवीने जळ पीनारा बकराना जुथनी वचोवच थइ गोथां मारी मळमुत्र करतो करतो सरोवरना आसरेला पाणीमां प्रवेश करीने कादवथी आसरेला जळने डोळी नांख्युं वळी पोते जळ न पीतां बकरांना जुथने पण जळथी निराश कर्युं तेमज पोते ते जळकादवमां आळोटवा लाग्यो. आ द्रष्टांतनी रीते आ जुलमी कळीकाळमां शुद्ध जैन धर्मरुप सरोवरमां मुळशास्त्ररुप अल्पजळ तेनो अनुभव लेनारा भवीमंडळ सदा उत्साह साथे ज्ञान जळनुं पान करता हता ते समे भस्म ग्रहरुप जंगलमां बार तथा सात दुकाळीरुप तापथी विटंबना पामनारा सावद्याचार्यरुप पाडापटेल जैनदयाधर्मरुप सरोवरने किनारे आवी पहोच्या. ते वखतमां शुद्ध आहार पाणीनो जोग न मळतां परिसहना भयथी मुळसूत्ररुप जळने गुप्त करीने कादवरुप ग्रंथोनो प्रबंध रचतां रचतां मुळसुत्ररुप सावद्य वाक्य वापरीने ग्रंथोना प्रबंध बांध्या. पछी पेट गुजाराने माटे प्रतिमा स्थापी हिंसा मृषारुप कादवमां आळोटी पडया. वळी पोते जैनधर्मी एवुं नाम राखीने भोळा प्राणीना मंडळना सरदार थइ अहंपदमां सदा मग्न थया. हवे बाळ बुद्धीजनोने कहेवानुं के तेवा वेषधारीओए भेंसाडोळ करी सावद्य वाक्यथी रचीत ग्रंथो अनेक कर्या छे, तेने मुळ शास्त्रनी रीते केम मनाय ?

शुद्ध सिद्धांतनो बोध.

निर्वद्य तथा सावद्य बोधनी सुचना नीचे मुजब छे. ते मुळसुत्रो तथा ग्रंथोनी साक्षि साथे छे. आवशक सुत्रमां एम कह्युंछे के साधु आहारादिक निमित्ते गृहस्थने घेर जाय त्यां अस्नादिक चार जातनो अहार जाचना करवाना वखतमां निर्दोष भोजन जाचे अने सदोष भोजन न वंछे ते न्यायधर्मनी रीत छे.

संकीए सहसागारे अणेसणाए पाणेसणाए
पाणभोयणाए बियभोयणाए हरियभोयणाए
पच्छाकम्मियाए पुराकम्मियाए अदिठ्ठहडाए
दगसंसठ्ठहडाए रयसंसठ्ठहडाए पारिसाड-
णियाए पारिठावणियाए उहासणभिखाए-
जंउगमेणं उपासणाए अपडिसुद्धंपडिगाहीयं
परिभूत्तंवा जंनपरिठ्ठवियं तस्समिछामिदुक्कडं

भावार्थ—मं.ग्रहस्थने तथा मंजति पोताने अकल्पनीक आहारादीकनी शंका

पडतां छतां लोलपी थको बळात्कारे लीधुं होय. अ. एखणाकरी न होय. पा. विशेषे एखणा करी न होय. पा. जीवहिंसा सहित भोजन लीधुं होय. बी. सचित बीज सहित भोजन लीधुं होय. ह. लीलोतरी सहीत भोजन लीधुं होय. प. अहार वोहोर्या पछी कोइ दोष लगाडयो होय पु. अहार वोहोर्या पहेला कांइ दोष लगाडयो होय. अ. नजरे नथी देखातुं त्यांथी आणी आपे ते लीधुं होय. द. काचा पाणीनो स्पर्श करीने आपे ते लीधुं होय. २. सचित रजनो स्पर्श थएल लीधुं होय. पा. वेचातुं आपे ते लीधुं होय. पा. झाजो आहार लावीने नांखी दीधो होय. उ. खावुं थोडुं ने नाखी देवुं घणुं एवो अहार लीधो होय. ज. जे उदगमनना दोष ते जे जे गृहस्थोथी लागे छे ते. उ. उत्पादनना दोष सहित भोजन लीधुं होय तथा वारे वारे गृहस्थ पासेथी वस्तु मागी लीधी होय. अ. ते जे जे पोताथकी दोष लागेला होय ते एवा अकल्पित अहार पाणी. ५. लीधा होय. ५. तेज भोगव्या होय. ज. जे नाखी देवा जोग होय ते नाखी न दीधा होय. त. ते पाप मारे निष्फळ थजो.

एम सिद्धांतोमां भगवंते आराधीक साधुओने संजम जीवतव्य राखवानी खातर अकल्पनिक आहारादिकनी सख्त मनाइ करेली छे सबब के सचित आहार पाणी, पान, फळ, फुल विगेरे अने अकल्पनीक वस्तु सर्व त्यागवी कही छे. तेमज सचित वस्तुनो संगटो करीने कोइ गृहस्थ वोहोरावे ते वस्तु न लेवी तो सचितादिक वस्तु तो क्यांथीज भोगवे ? एम आवसग सूत्रमां कह्युंछे.

हवे साधु धर्मना रक्षणने माटे सदोष भोजन मुनीजनोने त्यागवुं कह्युंछे. तेमज बार व्रतधारी श्रावकने पण अहारादिक पडी लाभवानी विधी विवेकसहित धारवा बतावी छे. ज्यारे श्रावक बारमुं व्रत आदरे त्यारे शचितादिक अकल्पनीक अहार पाणी अफासुक, गुणवंत मुनीओने वहोराववाना पचखाण कर्या छे.

बारमाव्रतनी विधी धार्यापछी तेना पांच अतिचार जाणे पण आदरे नहीं ते निचे मुजब.

सचितनीखेवणिया सचितपेहाणिया, कालाइक्कम्मे परोवएसे मच्छरियाए तस्समिच्छामिदुक्कडं

भावार्थ—सचित वस्तु उपर साधुने कल्पे एवी वस्तु मुकी होय अथवा सचित वस्तुए करीने अचित वस्तु ढांकी होय तथा साधुने प्रति लाभवानी वस्तुनो

काळ वही गयो होय तेवी वस्तु तथा कोहाइ गएली वस्तु तथा वर्ण, गंध, रस, स्पर्श फरी जवाथी खोरी थइ गएली वस्तु वहोरवी होय, पोते आहारादिक वहोरववा योग्य सुझतो होय तेम छतां परमादे करीने बीजाने हुकम करे जे तमे वहोरावो एम कह्युं होय तथा साधुजीने प्रतिलाभीने अहंकार कर्यो होय ते सर्व मारुं निष्फळ थजो.

एवी रीते आवश्यकसूत्रमां बारव्रतधारी श्रावको निर्दय आहारादिक प्रतिलाभवा उन्माद थईने सावद्य अहारादिक रुडा व्रत धरनार मुनीने वहोराववाना नियम करेला छे.

वळी भगवती सूत्रमां गौतम स्वामीए करेला प्रश्नना जवाबमां वीर भगवाने कह्युं छे जे अहो गौतम ! संजम मार्गनी आराधना करनार उत्तम संजतीने विवेकी गृहस्थे फासुक एषणीक सुझता आहारादिक वस्तु प्रतिलाभतो थको संजम जीवतव्यनो दातार समजवो.

वळी दशवीकालीक सूत्रना पांचमा अध्ययनना बीजा उद्देशानी चौदमी गाथा थकी चोवीशमी गाथा सूधीमां भगवंते एम कह्युं छे के जे साधु आत्मार्थी होय ते छ कारणे भिक्षानेअर्थे गृहस्थने घेर गयो ते वखते कोइ अविवेकी गृहस्थ मुनीना आचारनो अजाण छे तेम छतां मुनीने आवता देखी भिक्षा आपवा उठवा धारे छे ते वखते तेना हाथमां नीला, राता कमळ या कमुद जातीना कमळ, मगदंती कमळ ए विगेरे अनेक जातीना फुलो ने तोडतो थको उठीने साधुने आहारादिक आपवा इच्छे तो ते वखते तेने साधु एम कहेजे अहो गृहस्थ ! नकळपे मुजने एवा अकल्पनीक हाथे अहार लेवो.

तेमज मजकुर कहेला फुलोने कोइ अविवेकी गृहस्थ एरी त्वचरीने गुणवान साधुने आहारादिक देवा धारे तेने पण साधु एम कहे जे अहो गृहस्थ ! नकळपे मजने अकल्पनीकना हाथनो आहार.

कांइक तातु अने कांइक ठंडु पण बराबर अचित न थयुं होय तो मिश्रपाणी तथा तलवट तथा रसचळीत कोहाइ गएली वस्तु एटलावानां काचां लेवानो साधु त्याग करे छे तथा कोठ, बिजोरा, दिकना फळ तथा पांदडासहित मुळा या तेनी काची दांडली तेमां अन्य शस्त्र प्रगम्युं नथी तेवी वस्तु मुनीने त्रीकर्ण वांच्छता करवी नकल्पे तेमज फळनुं चुरण तथा बेडांनां फळ तथा रायणनां फळ ए विगेरे अनेक जातनी सचित वस्तु अफासूक अणेसणीक गृहस्थ आपे तो पण जेनामां मुनीना गुण होय तेने न कळपे. वळी पोते साधु महा क्षुधा वेदनाना पराभवथी पण कोइ वखत अकल्पनीक वस्तु आयुष्यपर्यंतसुधी त्रीविधे त्रीविधे न वांच्छे. एम सिद्धांतोमां भगवंते कह्युं छे ए विगेरे साधु धर्मना प्रयत्नने माटे वितरागभाषित मुळसूत्रोमां अनेक भेद, युक्ति, न्याय, हेतु द्रष्टांत बतावेला छे. पण कोइ ठेकाणे मुळसूत्रोना पाठोमां मजकुर कहेली अकल्पनीक वस्तुओनो भोगी आत्मार्थी भावी अप्पाने ठरावेलो नथी.

हवे पाषाणमतिओने कहेवानुं के तमारा कळीकाळना सावद्याचार्योए परिसहथी हायमान प्रणाम करीने जे जे ग्रंथोनुं प्रबंध बांध्युं छे तेमां तो देह रखती धर्म बताव्यो छे एम सिद्ध थाय छे. सबबके ते ग्रंथोमां कार्याकारणोना गोटा घालीने अनेक जातना सावद्य वाक्योथी साधुओना व्रतोमां आहारादिकनी छुट मेली जणाय छे ते दाखला नीचे मुजब.

नीसीथसूत्रनी चुरणीमां लख्युं छे के साधुओने रस्ते चालतां क्षुधानो पराभव थयो होय अथवा गृहस्थने घेरथी आहारादिकनो योग न मळ्यो तेथी क्षुधानो महद परिसह थयो जाणी केळ उपरथी केळां उतारी अवसर जोइने जतना सहित भोग ले तेनुं कारण ए के साधपणुं राखवानी खातर कार्याकारणे कल्पे छे. एम कहे छे ते केवुं असंभ छे ?

वळी साधुने कोइ वखते गृहस्थने घेरथी फासुक पाणी जाचतां न मळे ते वखते तथा दुजे गाम विहार करतां तृषानो परिसह उपज्यो होय तो संजममां थती अबाधा एटले संजममां पहोंचती हरकतोनुं निवारण करवाने माटे रस्तामां आवेलुं सचित पाणीनुं स्थळ ते मांहेथी पोतानुं पात्र भरीने रक्षा विगेरे वस्तुथी मिश्रित करीने जतना सहित ते पाणी पीए तो संजम जाय नहीं.

एवी रीते क्षुधाना पराभवथी सचित फळ, फुल, पात्रादिक बीज हरिकायनुं भोजन करवानी छुट मुकी तेमज तृषाना पराभवथी स्व तथा पर हस्ते फासुक

करीने जळ पीवानी छुट मुकी. ए विगेरे सावद्याचार्यना रचेला ग्रंथोमां अनेक वृतोनी विधीमां छुट मुकेली छे. तेथी वितरागभाषित मुळसुत्रोनी साथे ते ग्रंथोना वाक्यने सरखावतां कोइ वाते संबंध मळतो नथी. हवे ते विषे वधारे विवेचन तो प्रथम भागमां आपेलुं छे. तेमांथी जोइ लेवुं. पण जे ग्रंथोमां साधुना आचार संबंधी छुटो राखी कार्याकारण बतावे छे ते तदन शास्त्रोक्त रीते विरुद्ध छे. सबब के सुयगडांग सुत्रना सातमा अध्ययननी बीजी काव्यमां कह्युं छे ते नीचे मुजब.

एयाइंकायाइपवेदिताइंएएसुजाणेपडिलेहसायं
एएणकाएणयआयदंडेएएसुयाविप्परियासुविंति २

भावार्थ—ए ए पुर्वोक्त प्रथिव्यादिक छजीवनी काय श्री तिर्थंकर देवे कही छे. ए ए छ जीवनी काय छे. ते शाता सुखने वांच्छे छे. एटले सर्व जीव सुखाभिलाषी छे. ए ए छकाय प्राणीओने जे अज्ञान प्राणीओ दंडे छे तथा घात करे छे. तथा दिर्घकाळ पीडा आपे तेने जे फळ थाय ते कहे छे. ए हिंसा करनारो, जीव एज छकायने विषे फरी उपजीने विनास पामी परीभ्रमण करे एम कह्युं छे.

वळी तेज अध्ययननी नवमी काव्यमां कह्यु छे ते नीचे मुजब.

जाइंचवुड्ढिंचविणासयंतेबीयाइअसंजयआयदंडे
अहाहुसेलोएअणजधम्मेबीयाइजेहिंसइआयसाए ९

भावार्थ—जा. उत्पति एटले मुळादिक कोमळ तथा वु. वृद्धि एटले शाखा प्रतिशाखादिक जे वनस्पति तेनो वि. विनाश करतो होय तथा. बी. बीजादिक एटले तेना फळनो विनाश करतो होय तेने अ. असंजत एटले गृहस्थ अथवा परिव्राजक अन्यलिंगी अथवा द्रव्यसलिंगी आत्माना दंडनार कहीए सबबके पोतानुं शरीर राखवा माटे परप्राणीने हणे छे तेथी पोताना आत्माने पण उपघात करेछे. अ. वळी जे आत्मसुखने हेते हरीकायने छेदे तेने लोकमांहे अनार्य, अधर्मी श्री तिर्थंकर गणधर कहे छे. बी. वळी प्राणीओ पोताना आत्मधर्मने अर्थे बीज आदे दइ, वनस्पति कायनेछेदे, छेदावे ने अनुमोदे एवा बोध करे तेने अनर्थ पाखंडी जाणवो.

वळी जेवी अवस्थाए वर्तती वनस्पतिने छेदे तेवीज अवस्थामां छेदनारो पोते मर्ण पामे. ते दशमी काव्यथी जाणवुं.

गभाइमिज्झंतिबुयाबुयाणानरापरेपंचसिहाकुमारा
जुवाणगामज्झिमथेरगाय, चयंतितेआउखएपलीणा १०

चोथा पदमां पाठांतरे " पौरसाय " एम पण कहेवाय छे. भावार्थ. ग. वनस्पतिकायना विनाश करनारा प्राणीओ घणा जन्मसुधी गर्भादिक अवस्थाने विषे वर्ततांज मर्ण पामशे एटले केटलाएक गर्भमां उपज्या पछी थोडाक दीवसे मर्ण पामशे, केटलाएक जन्म्या पछी मर्ण पामशे. बु केटलाएक बोलता, बु. ने केटलाएक अणबोलता मर्ण पामशे. न. अन्य मनुष्य सि. एटले नानी चोटलीना धणी कुमारावस्थाए स्थितथका मरे. तथा जु. जुवानवय तथा म. मध्यमवय थ. एटले वृधावस्थाए च. मर्ण पामे. आ. आयुष्यना क्षयनेविषे. ५. एटले स्वकर्म भोगवता दीन, दुखी, भुख, तृषादिक सहन करतां ते हिंसा करनार जीवो शरीर त्याग करे ने जेवुं पाप करे तेवुं भोगवे.

हवे क्षुधा तृषादिकना परिसहथी डरी चालनारा पाषाणमतिओने कहेवानुं जे तमारा ग्रंथोमां कार्या कारणे क्षुधा तृषादिक परिसह टाळवाने अकल्पनीक वस्तुनुं वापरण करवा कहोछो. पण मुळसुत्रमां विरुद्ध कार्य करनारने अनार्य ठराव्या छे. वळी तेने घणा जन्म मर्णनो लाभ बताव्यो छे. तेथी तमारा हीतनी खातर सूचववानुं के वितरागना मुळशास्त्रने अनुसारे चालीने आत्मासार्थकने माटे अकल्पनीक कार्योथी दुर थवुं ए श्रेष्ट छे. वळी भगवंते कहुंछे जे पांच आश्रव छांडे त्यारे मुळ चारित्रना पांच संवर प्रगट थाय छे. ते पांच संवरथी नवा कर्म रुधन करीने पुरातन कर्मोने तप कर्णीथी खपाववानो निरजरा गुण प्रगट थाय छे. केमजे नव कोटीए पांच महाव्रत आदरवाना वखतमां " सव्वाउप्पाणाई वाइया-ओवेरमणंजावपरीग्गहाओवेरमणं " अर्थात. सर्वथा प्राणाती पातादीक छठा रात्री भोजनना वेरमणां एटले छांडवासुधी आदरे छे. त्यारे चारित्रियानो मुळगुण प्रगट थाय छे. एम वितराग धर्मनी आज्ञा पाळनार जैन मुनीओ तो एज प्रमाणे प्राणांतसुधी पाळता विचरे छे.

परंतु तमो पीळावस्त्रवाळा वेषधारीओ छ मुळ व्रतमां कार्याकारण कल्पीने प्राणवध विगेरे रात्रि भोजन सुधीनी छुट राखी छे. तो शुं देशव्रत आदरवापणुं थयुं छे के केम ? वळी साधुओना सर्व मुळव्रतमां कोइ कार्याकारणथी छुट ठरावशो तो " सव्वाउपाणाइवाइयाउवेरमणं " विगेरेना पाठमां " थुलाउपा० " एम संभव थशे तेथी साधु श्रावकपणाना व्रतोमां निरविशेष गणाशे माटे तमारा वास्ते तेम सिद्ध थायज छे. तेवा कार्याकारणो बताववाथी साधु कोण कहेछे ने कोण कहेशे तेनो जरा विचार तो करो ? वळी कहेवानुं के कविजनोना करेला

ग्रंथोना आधारपरथी स्पष्ट खातरी थाय छे के पीळा वस्त्रना वेपधरनाराओए जेजे मुळव्रतो लीधा छे, तेमां दरेक रीते कार्याकारणथी छुट बतावे छे. माटे तेमना मतथी एमज जणाय छे. वळी देशव्रती श्रावकना व्रतोमां जेम अणछुटके छ छींडीनो आगार राखेलो छे, ते तो गृहस्थाश्रममां रही बनतो लाभ मेळवी शकाय तेम करवा धारेलुं छे. परंतु साधुपणानुं नाम पाडी व्रत लीधा कहे छे तेमज अणछुटके आगार बतावे छे तेथी एम संभवे छे के साधु क्रियाना अनुसारे तेने साधु न कहेवा जोइए, तेमज श्रावकपणामांतो ते छे नहीं. माटे तेने पहेला गुणस्थानना धणी उत्कृष्ट रीते पुरेपुरा कही शकाय.

वळी कवी कल्पनाना ग्रंथाधारथी केटलाएक भ्रमित जनो कहे छे के वृद्ध, तपसी तथा रोगीने माटे तेमज नव दिक्षित शिष्यने माटे तथा आचार्य उपाध्याय तथा गच्छने माटे कोइ कार्याकारणे अल्पनीक एटले साधुओने न खपे एवी वस्तु अवसर जोइने लेवायतो वितरागनी आज्ञा उलंघी न कहेवाय. एम तमारा ग्रंथो शाक्षी पुरे छे पण ए तदन मुळसूत्रोथी विरुद्ध समजवुं. कारण के जे अकल्पनीक वस्तुथी संजम सहित पोतानो आत्मधर्म नाश पामी जाय. माटे मुळ व्रत आदरवामां कोइ कारणनी भगवंते छुट बतावी नथी. परंतु शरीर धर्मना रागीओने छुट वगर छुट कांइ कही शकाय नहीं.

वितरागदेवे आत्मिक धर्मसाधन करनारा मुनीजनोने अढार बोल अखंड पाळवानी आज्ञा बतावी छे. ते दशविकालीक सुत्रना छट्ठा अध्ययननी पहेली गाथाथी सातमी गाथासुधीमां एम कह्युंछे जे कोइ राजा इश्वर सेनाधीपतिआदि प्रधान तथा ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य विगेरे केटलाएक पुरुषो गाम, नगर, पुर, पाटण विगेरेना रहेनारा छे. तेओना नगरना परिश्रममां कोइवखते वितराग आज्ञाना पाळनार महाव्रतधारी आचार्यो पधार्या ते वखते मजकुर जणाए पुछा करेली के अहो भिखु ! तमारा साधपणाना आचारनो केवो समोह छे ? वळी तमो सर्व साधुओने माटे तमारा धर्मोमां व्रतो पाळवानी एक रीत छे के कांइ परस्पर भेद छे ?

हवे मजकुर रीते पुछनार राजादिक गृहस्थोना जवाबमां. निश्चळ चित्तना धणी साधु दमन इंद्रि सर्व प्राणीने सुखना करनार आशेवण ग्रहण शिक्षाए करीने न्यायधर्मनी रीते उत्तर आपे छे.

अहो राजादिक गृहस्थो ! अमारा सर्व साधुओनो आचार विचार तो पुर्वना लागेला कर्म वेरीनो नाश करनार छे तेमज सर्व प्राणीओनी रक्षा करनार छे तेवो

आचार अन्यधर्ममां नथी. वळी ए आचार कायर ने रांक पुरुषोने आचरतां दुष्कर छे. एवो आचार अमारा धर्मनी शुद्ध समाचारीना सर्व साधुओने सरखो ग्रहण करवा योग्य छे. ते नव वर्षनी उम्मरे दिक्षित आदे क्रोड पुर्वना दिक्षित सुधीने, तेमज वृद्ध अवस्थाना धणीने तथा गिलान एटले रोगी साधुने तेमज तपसी साधुने ते सर्वने देशथी तथा सर्वथी अतिचार रहित पाळवुं. एम छठ्ठा अध्ययननी सातमी गाथासुधी सुचना आपी छे ते आचार पाळवानी विधीना अढार बोलनी आठमी गाथा नीचे मुजब.

वयछक्कंकायछक्कंअकप्पोगिहिभायणं
पलियंकनिसिझाएसिणाणंसोभवज्जणं ८

भावार्थ—व. जीवहिंसा १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, रात्रीभोजन ६. ए छ बोल जाव जीवसुधी त्रिविधे त्रिविधे त्याग करे तेमज का. पृथ्वी १, पाणी २, तेउ ३, वाउ ४, वनस्पति ५, तृष ६, ए छकायना प्राणने पोताना प्राणसमान जाणी जाव जीव सुधी न हणे, न हणावे ने हणताने रुडुं न जाणे ए बार गुण थया. अ. तेरमा बोलमां सर्वथा अकल्पनीक एटले साधुओने न खपे एवी आहारादिक कोइ पण चीज मर्णातसुधी न ले १३. गी. गृहस्थोना वासणमां भोजन करवुं न कळपे १४, ५. गृहस्थने सुवा बेसवाना पलंग, ढोलीआ विगेरे ते सर्व साधुओने वावरवा न कळपे. १५. नि. गृहस्थने आगणे यथा शक्तिए कदी साधु बेसे नहीं १६ सि. सर्व साधुओए शरीरनी ससुका माटे स्नान मंजन न करवुं १७. सो. सर्व साधुओए शरीरउपर कोइ जाते ममत्व धरीने शोभा शणगार न करवो १८.

ए अढार अवगुण छांडे त्यारे अढार गुण प्रगट थाय छे. ते सर्व साधुओने सरखीज रीते पाळवा कह्या छे. परंतु तेमां लघु या वृद्धने माटे कार्याकारण बतावेलुं नथी. माटे एवा निरापक्ष शास्त्रो आत्म कल्याण हित कारकना वाक्योने एक तरफ राखीने ग्रंथाधारथी बधी वावतोमां छुट राखी बतावो छो तो तेने मुळ शास्त्रोनी रीते केम मनाय ? वळी जैन धर्ममां पुरवापरथी अयोग्य रीते विरुद्धता चालेली नथी. तेमज चालशे पण नहीं. ते सबबथी तमारा कृत्यथी एम संभवे छे के तमे खरेखर जैन मुनीना प्रतिपक्षी छो ने वितराग भाषित मुळ शास्त्रोथी विरुद्ध ग्रंथाधारी ग्रथल प्राणी उत्पन्न थया छो. सबब के ज्यां त्याग वैराग विगेरे आ-

करी क्रियानो बोध आवे त्यां मौन थइ रह्योछो. अने भवाइ संग्रह ग्रंथना आधारथी दांडीआरस विगेरे नाटक करवानो बोध देवामां साहसिकपणुं धरावो छो, ते कांइ थोडी हांसीनी वात नथी. मतलब के धर्मथी उलटा तेमज अधर्मना साग्रीतोने माटे सुयगडांग सूत्रे प्रथम अध्ययनना बीजा उद्देशानी अगियारमी काव्यमां कह्युंछे के.

धम्मपनवणाजासातंतुसंकिंतिमुढगा
आरंभाइंनसंकिंतिअविअत्ताअकोविआ ११

भावार्थ—ध. जे क्षातादिक दशविध धर्मनी परुपणा छे. तं. तेथी ते अज्ञानी शंका पामी जाय छे ने कहे छे के ए अधर्मनी परुपणा छे, वळी आ. आरंभादिक पापना कारणोथी, न. न शंकाय ने तेनेज धर्म करी देखाडे छे माटे ते केवा छे ? अ. अव्यक्त, मुग्ध विवेकविकळ तथा अ. अपंडित छे.

हवे सत्य धर्मनी रीते न चालनारने अधर्म कृत्यना पंडित कीधा पण सत्य कृत्यना पंडित न गण्या. माटे मुळ सुत्रना आधारथी निरापक्ष रीते न्याय मार्गनुं आचरण करीने घणा ग्रंथोना सावद्य वाक्योने निराकरण कर्या छे. ते न्याय धर्मनी वृद्धिनीज खातर छे.

मुग्ध जनो कहे छे के तमे स्थापना नक्षेपो नथी मानता ते प्रश्नोत्तर.

अमारा पुर्व भवांतरना केटलाएक वाळ मित्रोनुं बोलवुं एम थाय छे जे तमो स्थापना नक्षेपो मानता नथी माटे तमो शास्त्रोथी विरुद्ध चालो छो एम कहेनारा ने नीचे मुजब उत्तर.

अरे मारा अविवेकी वहाला मित्रो ! धीक्कार छे तमारी अजाणतारुप बुद्धिने के अमो चार नक्षेपा मान्य करनारने शिर अभ्याख्यान चडाववा धारो छो ! अने तमारा पाषाणरुपी हृदयमां जेटली मुरखाइ छे तेटली वहार न पडतां नीचेनी हकीकत ध्यानमां लेशो.

श्री जीनराजदेवे मोक्ष साधन करवाने माटे नव पदार्थ जाणवानुं विवेचन समकितीजनोने आपेलुं छे तेमां " हेयगेय, उपादान " ए त्रण भेदनो विवरो विस्तार करीथी जाणवो. ते विषेनी वधारे हकीकत उत्तराध्ययनने अट्टावीसमे अध्ययने छे. तेमज भागवतीजी तथा अनुयोग्यद्वारसूत्र विगेरे घणा सूत्रमां कह्युंछे. पण आ स्थळे

तेनुं घणुं विवेचन आपतां ग्रंथनुं वधारापणुं थइ जवाना संभवथी अहींआं नामनीज मात्र सूचना आपीए छीए.

श्री वितरागदेवे विवेकी समकितधारी उत्तम जनोने मोक्षनुं आराधन करवा माटे जीवादिक नव पदार्थनो बोध कर्यो तेमां जाणवा जोग, आदरवा जोग, छांडवा जोग, भेद बताव्या, ते नव पदार्थोमां जाणवा, आदरवा, या छांडवा, जोग ते सर्वेने पचवीस बोलीनी साथे चितव्याथी विस्तार रुचीनी रुक्ति प्रमाणे सदहिणा थइ गणाय. तेमज निःश्चे ने व्यवहार ए बेनुं परिमाण थाय अने तेवीज रीते समकित गणी शकाय. ते समकित विषे विवेचन नीचे मुजब.

दोहरा.

देवधर्म अरु आसता, तजे कुदेव कुधर्म;
ए व्यवहार सम्यक्त कही, ब्राह्यधर्मनोमर्म. १
निःश्चेसम्यक्तनोसही, कारणछेव्यवहार;
ए सम्यक्त आराधतां, निःश्चेपणअवधार. २
निःश्चे सम्यक्त जीवने, परपरिणति रस त्याग;
निज स्वभावमे रमणता, शिवसुखनो ए भाग. ३
ए बेहु सम्यक्तत दूलेह, समजे नवतत्व ज्ञान;
नयनिक्षेप परमाणसुं, श्यादवाद परमाण. ४
द्रव्यक्षेत्र इणहि तणा, काळभाव विज्ञान;
सामान्य विशेष समजतें, होय न आत्मज्ञान. ५

हवे एवी रीते आत्मज्ञाननी विशुद्धता करवा माटे समकित जनो जीव १, अजीव २, पुन्य ३, पाप ४, आश्रव ५, संवर ६, निर्जरा ७, बंध ८, मोक्ष ए नव पदार्थनुं जाणपणुं करे. वळी श्री ठाणायंग सूत्रना बीजा ठाणामां नवतत्वनी अविशेषपणे एक जीवराशी अने बीजी अजीवराशी ए बे राशी कही एटले मुळ जीव अजीवना बे भेद कह्या. ते नव पदार्थनुं वधारे विवेचन न आपतां ते नव पदार्थ उपर पचीश बोल लगाडवा कहे छे ते नीचे मुजब.

निःश्चेथी १, व्यवहारथी २, द्रव्यथी ३, भावथी ४, सामान्यथी ५, विशेषथी

६, नाम नीक्षेपाथी ७, स्थापना नीक्षेपाथी ८, द्रव्य नीक्षेपाथी ९, भाव नीक्षेपाथी १०, द्रव्यथी ११, क्षेत्रथी १२, काळथी १३, भावथी १४, तथा चार प्रमाणथी, प्रत्यक्ष प्रमाणथी १५, अनुमान प्रमाणथी १६, आगम प्रमाणथी १७, उपमा प्रमाणी १८, हवे सात नयथी. नयगम नयथी १९, संग्रह नयथी २०, व्यवहार नयथी २१, रुजुसुत्र नयथी २२, शब्द नयथी २३, समभीरुढ नयथी २४, एवंभुत नयथी २५, ए पचीश बोल अकेका तत्वउपर संजोगवाने खट द्रव्यना गुण परयाय आदि सर्व जाणी स्वस्वरुपनो तथा पर परीणीतीनी वहेचण करीने स्वस्वरुपनो निश्चार्थ साधी शकाय छे. एम सिद्धांतोना निर्वंद्य वाक्यथी प्रत्यक्ष जणाय छे. तेमाँ आ, जगतनां जीव अजीवनी सर्व वस्तु उपर चारे नीक्षेपा लागु छे. ए वितरागनुं वचन सत्य छे.

हवे सुमतगत मित्रोने कहेवानुं के मुळसूत्रोनी रुक्ति प्रमाणे अमो चारे नीक्षेपाने मानतांछतां आपणी सर्व अज्ञानता वहार पाडीने कहोछो जे स्थापना नीक्षेपो नथी मानता ए सर्व तमारुं बोलवुं व्यर्थछे. केमजे दरेक स्वरुप अरुप वस्तुमां मजकुर कहेला पचीश बोल अवश्य संभवेछे. तेमांथी एकपण बोल ओछो अधीकोने विपरीत श्रधे तेने मिथ्यादृष्टि कहेवो ए सुत्रनो न्यायछे. माटे सर्व जैन दयाधर्मीओने पचीश बोलनी रुक्ति प्रमाणे श्रधा सहित चारे नीक्षेपा मान्यछे. वळी ए चार निक्षेपा तमारी कल्पित मतिने अनुसरीने बनावेली पाषाण मुर्त्तीनेज माटे कहेला समजवा नहीं. सबब के आ लोक जीव द्रव्य अजीवद्रव्यें परिपुरण भरेलोछे. ते सर्वने माटे चारे निक्षेपा कह्या छे. तेमां जे जे वस्तुमां नाम, स्थापना अने द्रव्य ए त्रण निरुपण कर्या पछी छेवटनो चोथो भाव नीक्षेपो ते ते वस्तुओनो मुळगुण समजवो तेनी खुल्ली हकीकत नीचे मुजब.

जेम सोमलना चार नीक्षेपा तेना नाम, नाम सोमल स्थापना सोमल, द्रव्य सोमल ने भाव सोमल हवे सोमलनो भाव नीक्षेपो तेज मुळ गुण छे. ते महा आतस के जेने खाधाथी सर्व प्राणनो अंत लावी आपे एवो एनो भावगुणछे. ने जे माणस तेने नजरे देखे त्यांथी खातरी थाय छे जे सोमलथी प्राण त्याग थाय छे.

वळी साकरना चार नीक्षेपा तेमां मुळ भाव गुण. मधुरता एटले मीठाश, ते जेने अनुकुळ पडे तेना शरीरने ते पुष्टि कर्त्ता छे. एवो तेनो मुळगुण छे. एम सर्व वस्तु उच नीच मध्यममां चारे निक्षेपा छे. अने तेओना जे जे मुळ गुण होय ते ते भाव नीक्षेपा समजवा. तेमज एकेंद्रि आदिपंचेंद्रि पर्यंत सर्वमां चारे नीक्षेपा गणवा.

तेमां असत्य कृत्यनी वस्तुमां असत्य कृत्यरुप भाव नीक्षेपा अवगुण करता सोमल-नी रीते समजवो. अने सत्य कृत्यनी वस्तुमां सत्य कृत्यरुप भाव नीक्षेपो गुण करता समजवो. ते जेम अरीहंत तथा साधुमां चारे नीक्षेपा लाभे छे तेमां तेमनो जे मुळज्ञान दर्शननो गुण स्वभाव छे या शुळ आत्मिक दशा छे तेज भाव नीक्षेपो छे. वळी ते गुणथीज तेओ पोताना जन्मांतरोना बांधेला कर्मोना बंधनथी छुटेला छे माटे तेज तेमना भाव नीक्षेपारुप भाव गुणने बहु माने स्वीकारी त्रिविधे त्रि-विधे वंदन करवुं. वळी तेमना भाव नीक्षेपानुं कृत्य आपणा कर्मो निरजरवा माटे यथास्थित आदरी ने तेमनुं पद पामवा एटले सिद्धपद पामवा उद्यमी थइ जवुं ए भाव नीक्षेपानो गुण छे. वळी बकातना रहेला त्रण नीक्षेपा ते जाणवा रुप छे पण वंदनरुप नथी एम समजवुं. सबब के प्रथमना त्रण नीक्षेपा ते पुदगळीक वस्तु छे. तेतो मुळज्ञान दर्शनना स्वभावथी विरुद्ध छे ने समेसमे क्षिणवृद्धि दशाने पामे छे. माटे अवंदनीकने एक भाव नीक्षेपो द्रुपद स्वभावी छे. तेज वंदनीक छे. माटे ए भेद ज्ञान तो सुपात्र लक्षग्रही होय तेनेज आदरवा योग्य छे.

वळी प्रतिमानी मांहे चार नीक्षेपा लाभे तेपण मुळ धर्मनी रीते सत्य छे.केमजे तेना प्रथमना त्रण नीक्षेपा तो तेमज छे. परंतु चोथो तेनो मुळगुणरुपी भाव नी-क्षेपो अज्ञान ने मिथ्यात्व छे. सबब के ते एकेंद्रि पाषाणमां मिथ्यात्वगुण ठाणुं छे. तेथी तेनो मुळ गुण छे तेज आपणा उपयोग्यमां आवी रहे छे. केम जे पाषाणनो प्रत्यक्ष एवो गुण छे के जेना उपर तेनो प्रहार थाय तेना शरीरने नुकशान थाय या प्राण त्याग थाय तेनुं द्रष्टांत निचे मुजब.

खंबात शहेरमां एक जीलार पाडा नामना महेलामां तप्त स्वभावीओनुं एक देवळ छे. तेमां पुजारा विगेरे माणसो हता ते देवळ समारवानी खटपटमां रह्या हता ते वखते बे चार छोकराओ रमता रमता ते देरामां आवी पहोंच्या अने ते देवळमां बेठेली प्रतिमाओने पुष्पादिकना हार गजरा विगेरेथी सुशोभित दीठी ते वखते एक छोकराए फुलना हार काढी लेवानी खातर पुजाराने गफलतमां जाणी एकदम मुर्ती उपर हाथ नांखी हार खेंच्या, ते फुलना हार खेंचतांज आरसपहा-णेश्वर महाकोप करीने एकदम लोढाना खीला उपरथी लागलाज अपराधी छोकरा उपर कुदी पडया अने ते छोकरानी छातीमां महा जुस्साथी बेठानी रीते एवी धाक मारी के छोकरानी छातीनां पाटीआंज तोडी नांख्यां ने ते छोकराने शुक्र रुधीरनो आहार करावबा माटे बीजी जणेताने पेट पहोंचतो कीधो. तेमज बीजा उभेला

६, नाम नीक्षेपाथी ७. स्थापना नीक्षेपाथी ८. द्रव्य नीक्षेपाथी ९. भाव नीक्षेपाथी १०, द्रव्यथी ११, क्षेत्रथी १२. काळथी १३. भावथी १४. चारप्रकार प्रमाणथी, प्रत्यक्ष प्रमाणथी १५, अनुमान प्रमाणथी १६. आगम प्रमाणथी १७. उपमा प्रमाणथी १८, हवे सात नयथी. नैगम नयथी १९. संग्रह नयथी २०, व्यवहार नयथी २१, ऋजुसुत्र नयथी २२, शब्द नयथी २३, समभिरूढ नयथी २४, एवं-भुत नयथी २५, ए पचीश बोल अकेका तत्वउपर संजोगवाने स्वद्रव्यना गुण परयाय आदि सर्व जाणी स्वस्वरूपनो तथा पर परीणतीनो वेहेचण करीने स्वस्व-रूपनो निश्चार्थ साधी शकाय छे. एम सिद्धांतोना निर्वद्य वाक्यथी प्रत्यक्ष जणाय छे. तेमां आ, जगतनां जीव अजीवनी सर्व वस्तु उपर चार नीक्षेपा लागु छे. ए वितरागनुं वचन सत्य छे.

हवे सुमतगत मित्रोने कहेवानुं के मुळसूत्रोनी रुक्ति प्रमाणे असा चार नीक्षेपाने माननांछतां आपणी सर्व अज्ञानता बहार पाडीने कहोछो जे स्थापना नीक्षेपो नथी मानता ए सर्व तमारुं बोलवुं व्यर्थछे. केमजे दरेक स्वरुप अरुप वस्तुमां मजकुर कहेला पचीश बोल अवश्य संभवेछे. तेमांथी एकपण बोल ओछो अर्थाकोने विप-रीत श्रधे तेने मिथ्याद्रष्टि कहेवो ए सुत्रनो न्यायछे. माटे सर्व जैन दयाधर्मीओने पचीश बोलनी रुक्ति प्रमाणे श्रधा सहित चार नीक्षेपा मान्यछे. वळी ए चार नि-क्षेपा तमारी कल्पित मतिने अनुसरीने बनावेली पाषाण मुर्त्तीनेज माटे कहेला सम-जवा नहीं. सबब के आ लोक जीव द्रव्य अजीवद्रव्यें परिपुरण भरेलोछे. ते सर्वने माटे चार निक्षेपा कह्या छे. तेमां जे जे वस्तुमां नाम, स्थापना अने द्रव्य ए त्रण निरुपण कर्या पछी छेवटनो चोथो भाव नीक्षेपो ते ते वस्तुओनो मुळगुण समजवो तेनी खुल्ली हकीकत नीचे मुजब.

जेम सोमलना चार नीक्षेपा तेना नाम, नाम सोमल स्थापना सोमल, द्रव्य सोमल ने भाव सोमल हवे सोमलनो भाव नीक्षेपो तेज मुळ गुण छे. ते महा आ-तस के जेने खाधाथी सर्व प्राणनो अंत लावी आपे एवो एनो भावगुणछे. ने जे माणस तेने नजरे देखे त्यांथी खातरी थाय छे जे सोमलथी प्राण त्याग थाय छे.

वळी साकरना चार नीक्षेपा तेमां मुळ भाव गुण. मधुरता एटले मीठाश, ते जेने अनुकुळ पडे तेना शरीरने ते पुष्टि कर्त्ता छे. एवो तेनो मुळगुण छे. एम सर्व वस्तु उच नीच मध्यममां चार निक्षेपा छे. अने तेओना जे जे मुळ गुण होय ते ते भाव नीक्षेपा समजवा. तेमज एकेंद्रि आदिपंचेंद्रि पर्यंत सर्वमां चार नीक्षेपा गणवा.

३ सिद्धांतोमां यज्ञ, हवन करवानुं विवेचन छे तेमां तपरुप अग्नि जीवरुप कुंड अने भला मन, वचन, ने कायाना जोगरुप घृत सिंचवाना चाटवा, शरीररुप संधुकण कर्मरुप इधणां एवा कृत्यनुं नाम भावयज्ञ कहीए. वळी केटलाएक अजाण पुरुषो अश्वमेघ, गजमेघ, अजामेघ, विगेरे अनेक जातना द्रव्ययज्ञ करेछे तेमां साधुने तथा गृहस्थोने कयो यज्ञ करतां कर्मोथी मुक्त थवापणुं छे ?

४ सिद्धांतोमां ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपने भावनिधान कह्या छे अने संसार व्यवहारीओने सोनुं, रुपु, धन, धान्य, रत्न, हीरा, माणेक, झवेर, पाना, परवाळां विगेरे अनेक धनना निधान छे, ते द्रव्य निधान छे ए बेउमां साधु तथा गृहस्थोने कया निधाननुं रक्षण करतां संसारथी मुक्त थवापणुं छे ?

५. सिद्धांतोमां कह्युंछे जे क्रोधादिक राग, द्वेषरुप अग्निनो दावानळ सळगतो बुझावे तेने भाव अग्नि बुझावी समजवी. अने छाणा इंधणादिकने बाळनार अग्नि ते द्रव्य दावानळ छे. ए बे मांहे साधु तथा ग्रहस्थो कयो दावानळ सळगतो बुझावे तो कर्मोथी मुक्त थाय ?

६ सिद्धांतोमां वितरागना दयाधर्मनुं आराधन करवा माटे आज्ञा सहित दया पाळे ते भावदेवनी पुजा करी कहेवाय छे. अने संसार व्यवहारीओथी पाषाणादिकनी मुर्त्तीने नावण धोवण, पान, फळ, फुल, नैवेदादिक आरंभ करीने तथा धुप, दीप, केशर चडावी तथा वाजां गाडी एम अनेक जातनी सावद्य क्रियाथी पुजे छे, ते द्रव्य पुजा कहेवाय छे ए बे पुजामांथी साधु तथा गृहस्थो कइ पुजा करवाथी मुक्त थाय छे ?

७ सिद्धांतोमां कह्युं छे जे आ संसारमां अनेक नास्तिक वस्तुनी ममता वधारवी, तेनुं नाम तृष्णारुप भाववेलडी कहीछे अने वृषारुतुमां प्रगट थएली वनस्पति जातीमां चीवडां, कारेलां विगेरेनी द्रव्य वेलडीओ कहेवाय छे. ते बे जातीनी वेलडीनुं निर्मळ करतां साधु तथा गृहस्थ कर्मथी मुक्त थाय छे.

८ सिद्धांतोमां ज्ञान, दरशन, चारित्र ने तपना कृत्यने भाव वेपार कहे छे अने संसारीओ आ जीवीकानी खातर अनेक सावद्य कृत्य करे छे तेने द्रव्य वेपार कहे छे. ए बे जातना वेपारमां साधु तथा गृहस्थ कया वेपारथी मुक्त थाय छे.

९ सिद्धांतोमां कह्युंछे जे शुद्ध श्रधारुप नगर तेने क्षमारुप गढ ने तप. संजमरुप दरवाजाना कमाड छे. ते भावगढ कहेवाय छे. अने कोइ संसारी राजा पोताना शहेरनी रक्षाने माटे पाषाणादिकनो गढ करावे छे. ते द्रव्यगढ कहेवाय छे. ए

बे गढमांथी साधु तथा गृहस्थो कयो गढ जणावे तो कर्मोथी निरमळ थाय ?

१० सिद्धांतोमां मोक्षाभिलाषीने युद्ध करवुं कह्युं छे. तेमां पराक्रमरूप धनुष लइ तेने इरिआ सुमतिरूप पणच चडावीने तपरूप बाणथी कर्मरूप वैरीनुं छेदन करवुं ते भावयुद्ध कहेवाय छे, अने राजा विगेरे मांहो मांहे क्लेश करी युद्ध करे छे ते द्रव्ययुद्ध कहेवाय छे. ते बे युद्धमांथी साधु तथा गृहस्थ कयु युद्ध करे तो कर्मथी मुक्त थाय ?

११ सिद्धांतोमां निर्वद्य मनरूप भाव अश्व एटले घोडे चडवुं कह्युं छे अने संसारी लोकोने तिर्यंच जाती द्रव्य घोडे चडनारा कह्या छे. ए बेमां कये अश्वे चडतां साधु तथा गृहस्थो मोक्ष पहोंचे ?

१२ सिद्धांतोमां कह्युं छे जे वर्तमान काळे संसार बंधन छोडीने सर्व व्रतपणे चोत्रीश अतिशय अने पांत्रीश सतवचन वाणी सहीत बोध करतां हयात विचरे ते भाव तिर्थंकर छे. अने तिर्थंकर आयुष्य स्थिति पुरण थएथी पछात रहेलुं शरीर ते द्रव्य तिर्थंकर कहेवाय छे. वळी कोइक आवते काळे तिर्थंकर थवाना छे तेने भविये द्रव्य तिर्थंकर कहीए. परंतु तिर्थंकर संबंधी भावगुण प्रगट थया नथी ए बेमां साधु तथा गृहस्थो कया तिर्थंकरने वंदन नमन करतां कर्म निरजरे ?

१३ सिद्धांतोमां कह्युं छे जे, कोइ पुरुष संसार छोडी पंच महाव्रतादिक सतावीश गुण सहित निर्वद्य करणी करे छे. ते (भावी अपा) एटले भावीत आत्मा भावसाधु कहेवाय छे. अने द्रव्य साधु ते आवते काळे संजम लेवानो छे. एटले आवते भवे या तेज भवे पण हजु लीधो नथी ने सर्व आश्रव सेवे छे. ते तथा कोइ साधु मरण पाम्यावाद बकात रहेलुं शरीर ते मडुं निर्गुण छे. ते द्रव्य साधु कहेवाय छे. ए बेमां कया तिर्थंकरने तथा साधुने गृहस्थो तथा साधुओ सेवा भक्ति, विनय, वयावच, आहारादिकथी संतोष आपे तो महा निरजरा करीने कर्मोथी मुक्त थाय ?

१४ सिद्धांतोमां दया, सत्य तथा ज्ञानादिक चार ए सर्वनी आराधना करे तेने सर्वोपरी भाव मंडळीक कह्या छे या भाव कल्याणीक कह्या छे अने दिवाळी शंक्रांत, शिवरात, अखात्रीज, गणेशचोथ वळी बळेव, दसरा विगेरे परबो तथा पुत्रजन्म तथा सगाइ परणेतर विगेरे अनेक जातीमां संसारी लोकोनां प्रमोद महोत्सव ते सर्व सावद्य द्रव्यमंगळीक छे तेमां साधु तथा गृहस्थोने कयुं मंगळीक करतां सर्व कर्मो क्षय थाय छे ?

१५ सिद्धांतोमां कह्युं छे जे सर्व कर्मों क्षय करीने सिद्ध स्थानके पहोचवुं एने भावधर कह्युं छे. अने द्रव्य घरने संसार व्यवहारीओने रहेवाना ते प्रत्यक्ष छे. ते बेमां साधु तथा गृहस्थो कया घरनी इच्छा करतां कर्म बंधनथी मुक्त थाय ?

१६ अपार संसार समुद्रने तरे ते पुरुष भाव समुद्र तर्यो कहेवाय. अने लवण समुद्रतरे ते द्रव्यसमुद्र तर्या कहेवाय ए बेमां साधु तथा गृहस्थोए कयो समुद्र तरवानो उद्यम करवो ? वळी केवे प्रकारे तथा शाने तरतां मुक्त थाय ?

१७ तिर्थंकर तथा साधुओ उपर चार निक्षेपानुं विवेचन नाम भगवंत १, स्थापना भगवंत २, द्रव्य भगवंत ३, भाव भगवंत ४,तेमज नाम साधु १,स्थापना साधु २, द्रव्यसाधु ३, ने भावसाधु ४, ए बे चोकमळीने आठ थया तेमां साधु केटला गृहस्थ केटला ? शुद्ध केटला ने अशुद्ध केटला ? त्यागी केटला ने भोगी केटला ? तथा शुद्ध जोगवाळा केटला अने अशुद्ध जोगवाळा केटला ? तथा तेमां जीव क्यारे कहेवाय अने अजीव क्यारे कहेवाय ? तथा तमोथुणं संबंधी गुणवाळा केटला अने निर्गुणी केटला ? तथा ए आठना शरीर, वर्ण, गंध, रस, ने आकार वंदनिक छे के तेना गुण वंदनीक छे ? तथा तेमां कोना आकार वंदनीक छे अने कोना गुण वंदनीक छे ? तथा एमां नवकार गणतां नमस्कार कोने थयो अने केने न थयो ? तथा एमां साधु तथा श्रावकने वंदनिक केटला अने अवंदनिक केटला ? तथा ए आठमा स्नान, आभ्रण, धुप, दीप, लाडवा, लापसी विगेरे नैवेद तथा चोखानो साथीओ, फळ, फुल, पत्र विगेरे चडाववुं तथा वार्जींत्र वजावी नाचवुं ए विगेरे द्रव्यपुजा सावद्य कृत्यथी करवी ते तथा तेओने अर्थे महा आरंभथी धाम बांधवा तथा सोनुं रुपुं विगेरे नाणुं अर्पण करवुं ए सर्व मजकुर कहेली वस्तुओना भोगी केटला अने त्यागी केटला ? तथा एमां संजति केटला अने असंजति केटला तथा संसारी भोगवाळा कयारे कहेवाय कने ब्रह्मचारी क्यारे कहेवाय ? आ प्रश्नोना जवाबमां तमारां पुतळां ऊपर नजर न राखतां जे वितरागे सत्यमार्ग निरुपण करेलो छे तेज प्रमाणे यथास्थित जाणता होतो बतावबुं जोइए.

१८ तमे चारे निक्षेपा वंदनिक कहोछो तेमां पुछनानुं के तिर्थंकर, साधु तथा गणधर द्रव्यगुण अने भावगुण सहित होय तेनो वांदवा पुजवा योग्य छे. परंतु तेज तिर्थंकरादिक संसार व्यवहारमां द्रव्य नीक्षेपे खटकाय ने आरंभे वर्तता होय ते वखते साधुओ तथा व्रतधारी श्रावको तेने वंदन पुजन केम करे ? मतलब के हजु तेओमां त्याग अवस्थाना छतां गुण सर्वथा प्रगट थएला नथी. माटे अवं-

दर्नीक छे. तो जे द्रव्य एकेंद्रिमांहे ज्ञान, दर्शनादिक कोइपण गुण नहीं छतां तेमां चार नीक्षेपाथी केवी रीते वंदन कराय ?

१९ हयाति तिर्थंकर, गणधर तथा साधुओ नव कोटीए आरंभ समारंभथी निवर्ती पामेला छे. तेमज सरणांगत श्रोताओने आरंभथी निवर्तवानो बोध करे छे. वळी आरंभना भयानक कर्मोना बंधन जाणी पोते आरंभथी थएली भक्तिने अमान्य करेली छे. तो एकेंद्रिमां तेओना नामनी संकल्पना करी सर्व आश्रवनुं शेवन करवुं ते मुळशास्त्रोना न्यायनी साथे मुचवुं जोइए.

२० गुण वंदनीक छे के आकार वंदनीक छे ? जो गुण वंदनीक होय तो एकेंद्रिनी मुळजातमां तिर्थंकर विगेनो कयो गुण छे ? अने आकार वंदनीक होयतो ते जगत शिरोमणी सद्गुणी पुरुषो वंदनिक नहीं के शुं ?

२१ पाषाणादिकना कल्पित देव मोटा के गुण मोटा ? जो देव मोटाइपणुं तथा वितरागीने त्यागीपणुं जाणीने फुल चडावोछो तो तमारा सावद्यचार्यने पण त्यागी अने वैरागी कहोछो तो तेने पुष्पादि केम चडावता नथी ? वळी जो गुरुने पांच महा व्रतधारी जाणीने सचेतनो स्पर्श न करावतां हो तो शुं तमारा देवने अव्रति गणोछो के केम ?

२२ तमो प्रतिमा मांहे केवी अवस्था निरुपण करो छो ? जो गृहस्थ अवस्था निरुपण करता हो तो पीळा वस्त्रवाळाओए तेने वंदन नमन करवुं अयोग्य छे. सबब के पीळा वस्त्रवाळा संवेगपणानो डोळ बतावे छे, माटे न घटे अने प्रतिमा मांहे संजम अवस्था निरुपण करता होतो तेमां चारित्रादिकनो डोळ नथी. अने चारित्र अवस्थामां सर्व सचित अचित भोगादिक अर्पण करो छो तो तेमज हयात तिर्थंकरनी समाचारीमां सावद्य कृत्यना भोगी हता के शुं ?

२३ साधुना दर्शननी खातर श्रावक आवे त्यारे सचितादिक भोगोपभोगनी वस्तु बहार मुकीने पछी पदवंदन करे छे. सबब के साधुओ सचित वस्तुना त्यागी छे तो शुं हयात तिर्थंकरादिके सचितादिक वस्तुओनो त्याग करेलो नहोतो के भक्तिने माटे सचेत वस्तुनो आरंभ करो छो ?

२४ तमो तमारा शेवको पासे प्रतिमानुं महा आरंभथी पुजन करावो छो तेमज पुजनाराओ महा निर्जरा अने मोक्षनुं खातु तथा तिर्थंकर गोत्रनी लालचथी पुजन करे छे. एवी रीते महद्‌फळ बतावी अंध कुपमां धकेली मारो छो तो पीळावस्त्रवाळाओने पुछवानुं के तमारे प्रतिमा पुजनमां निरजरा, मोक्ष अने तिर्थंकर गोत्रनी

आशा भंग छे के शुं ? वळी पुजन करतां तिर्थंकर गोत्र तथा सर्व कर्म शेवकना खपे एम कहो छो तो शु तेओनी रीते करतां तमारे भारे कर्मी थइ जवानो संभव छे के शुं ? वळी तमारामां व्रत, नियम न छतां तमो व्रतधारीनुं नाम राखवानी कल्पनाए पुष्पादिक अनेक जातीने सचित समजो छो तो शुं तमारा शेवकोने सचित वस्तुमां जीवनुं जाणपणुं न करावतां अजीव ठरावी आप्या छे के शुं ? के ते आरंभथी पाछा हठता नथी.

२५ तमो प्रतिमावंदनमां अवसरमां केने वंदन करो छो ? जो प्रतिमाने वंदन करता होतो ते वखते वितरागवंदन न थया अने जो वितरागने वंदन करीए छीए एम कहेतो प्रतिमा वंदन न थइ. वळी कहो जे वितराग तेज प्रतिमा अने प्रतिमा तेज वितराग तो पंचेंद्रि विना एकेंद्रि अज्ञानमां वितराग दशा क्यांथी आवी ? अने एक समे बे क्रिया केम वेदे ?

२६ तमारा प्रमिमामतना धर्ममां केटला एक दिगंबरो प्रतिमा तथा गुरुनी भक्तिमाटे सावद्यपुजा विगेरे करता नथी ते शुं जाणी नही करता होय ? अने तमो देवगुरुनी भक्ति माटे शुं जाणीने महा आरंभ करो छो ? वळी तेओए तथा तमोए कया ग्रंथने आधारे प्रतिमा मंडन करेलुं छे ? वळी तेओनी प्रतिमाने आंखो करतां भुली गया छे अने तमोए प्रतिमाने आंखो करी छे तो पुछवानुं के तेओए चार इंद्रि मान्य करी अने तमोए पांच इंद्रि मान्य करी अने प्रतिमानो आरसपहाण सरखोज छे तेमां आटलो बधो विधीफेर केम करो छो ?

२७ समक्ति एटले शुं ?

२८ मोक्षकार्य छे के कारण छे के स्वतःसिद्ध ? ते कारण सहित कहो ?

२९ मोक्षमार्ग केने कहीए ?

३० मोक्ष मार्गनी आराधनामां शुं हय छे ने शुं उपादेय छे ?

३१ जैन धर्मनुं मुळ सिद्धांत शुं छे ?

३२ चैत्य शब्दनो अर्थ प्रतिमा करो छो तो ते शब्दनो अर्थ सर्व ठेकाणे तेमज करो छो के केम ?

३३ चैत्य शब्दना मुळधातु कया कयाछे ? अने ते धातुना अर्थ शुं शुं थायछे ?

३४ जैन धर्मना बोध करनारे जेवो बोध करेलो छे तेवोज गने हाल निर्विघ्न बोध थाय छे के केम ?

३५ मोक्ष मार्गनी करणी करतां सावद्यनो त्याग करवो कह्यो छे ते सावद्य कोने कहो छो ?

३६ जैन धर्म दयामय कह्यो छे तो कया कया जीवनी दया पाळवी अने कया कयानी न पाळवी ? वळी स्थावर जंगम प्राणीओने अभयदान देवुं, ते केवी रीते देवुं ? अने केटला गुण धरनार अभयदान दे छे ?

३७ तिर्थंकरना नामथी मुर्ती मंडन करी पुजो छो ते मुर्तीने लक्षण अतिशय सत्यवचन वाणी तथा इंद्र आदिक सेवीत तथा छ गुण ए विगेरे तिर्थंकर संबंधी सर्व मुर्तीमां छे के नहीं ?

३८ सिद्ध निरंजन निराकार छे. तेनी साकार मुर्ती करो छो तेमां निरंजनना आठ गुण माहेला केठला गुण छे ? वळी तिर्थंकरना नामनी प्रतिमा तथा सिद्धना नामनी प्रतिमा ए बंनेना नामनो पटांतरो केवी रीते करो छो ? वळी ते बेनी पुजाविधी सरखी रीते करोछो के जुदी रीते ? वळी ते पुजाओमां छकायना जीव हणाय छे के नथी हणाता ? ने हणाय छे तो केटला हणाय ने न हणाय तो तेनु थतुं रक्षण बतावो ?

३९ तमोए मान्य करेली प्रतिमाओने छकायमांथी कइ कायमां गणो छो ?

४० ए प्रतिमाओमां गुण ठाणा केठला छे तथा व्रत केटला छे तथा द्रष्टि केटली छे तथा जोग, उपयोग, लेशा, संज्ञा, कसाय, हेतु, विषय, ज्ञान, अज्ञान, शरीर, संघण, संठाण, इंद्रि, समुदघात, प्रजा, प्राण, जोणी, कुळकोडी, वेद, अहार विगेरे केटला बोल लाभेछे ?

४१ चार जातीना देवना भुवन तथा वैमान विगेरे त्रिछा लोकमां सासवती जीन पडिमाओ छे, ते सर्वना चारज नाम छे ते सर्वने समकिती तथा मिथ्यात्वी बंने पुजे छे के एकला समकितीज पुजे छे ? वळी अहींआ कोइ मिथ्यात्वी मृत्यु पामी देव लोके उपज्यो त्यां तेनो मिथ्यात्व धर्म छे तो तेना वैमानमां हरी, हर, ब्रह्मा, विश्नु, विगेरे देवोनी प्रतिमा हशे ? वळी असुर देवना वैमानमां कब्बर विगेरे एम जुदाजुदा धर्मना देवस्थाननी ते देवो पुजा करे छे के सासवता चारनामनी पुजा करे छे ? वळी मिथ्यात्वीओना वैमानमां तेमनी श्रधाना देवस्थान होय तो बतावो ? वळी तमारा कहेवा प्रमाणे मिथ्यात्वी देवो सासवती चार प्रतिमाने पुजे नहीं सबब के मृत्युलोकना अन्य दर्शनीओ तमारी प्रतिमानुं आखा भवमां एकवार पण पुजन करता नथी. तेवीज रीते मिथ्यात्वी देवो पण स्वमिथ्यात्व

धर्ममां गाढा थएला ते चार प्रतिमाने केम पुजशे ? वळी कहो जे समकिती देव पुजे पण मिथ्यात्वी देव न पुजे. तो मिथ्यात्वी देव शुं पुजे छे ? वळी कहो जे बेउ पुजे तोए एमना जीत व्यवहारमां ठरे के बीजु ?

४२ तमे कहो छो जे असंख्याता काळनी प्रतिमाओ आजसुधी छे. अने भगवंते मुळ सूत्रोमां एम कह्युं छे जे कत्तरीम वस्तु संख्यातो काळ रहे, तो तमे असंख्यातो काळ क्यांथी ठराव्यो छे ? वळी कहो छो जे देवताओनी सहायथी रहे छे तो पुछवानुं के पालीताणाना डुंगर उपर जेने तमे मुळ नायक ठराव्या छे ते प्रतिमा उपर वीजळी पडी तेनुं ठाम्रुकुं नाकज वाळी नांख्युं ते वखते पालीताणा उपर कोइ देव हतो के नहीं ? वळी अजेपाळे तथा अलाउद्दीन बादशाहे तमाम देराओ खोदी नखाव्या तथा प्रतिमाओ खंडन करी नाखी ते प्रतिमानी शेवामां कोइ देव हशे के नहीं ? आ उपरथी खातरी थाय छे के तमो गपोडाथी धराताज नथी.

४३ तमारा देवळमां प्रतिमा बेसाडती वखते केटलाएक कारणो जन्म महोत्सवना तथा परणेतरनी विधीना करो छो ते वखते केटलाएक गृहस्थ प्रतिमाओना मातपीता बने छे तो पुछवानुं के तेमने पेट पंचेंद्री जीव पुत्र पुत्रीनुं उपजवुं नथी थयुं के पाषाणनी प्रतिमाथी इच्छा पुरी करे छे ? वळी ते प्रतीमाओने क्या काळनी स्थापन करीने जन्म आपो छो ? वळी तेना चार नाम न राखतां चोवीश नामो आपो छो ? ते शा आधारथी ?

४४ तमो प्रतिमाने साक्षात देव कहो छो तेमां पुछवानुं के ज्यारे ते प्रतिमाओने एना कर्मना उदये कोइए गएला वखतमां कोइ कारणथी जमीनमां डाटी दीधी होय, तेना निकळवाना वखतमां तमे कहो छो के अमारा स्वप्नामां आवीने प्रतिमाओ कहे छे के " मने काढोरे काढो " जो एम तमारा स्वप्ना सुधी कहेवा आववानी हिम्मत चाली तो पोतानी मेळे बहार नीकळीने तमारी प्रत्यक्ष थवानी शक्ति न थइ के तमारे महा महेनतथी खाडो खोदी काढवी पडे छे. वळी कहो जे प्रतिमानी रक्षा करनार देव कहीं जाय छे तेना जवाबमां कहेवानुं जे ते देवताने बहार काढवानी सत्ता नथी के शुं ? वळी ते प्रतिमानो भक्तिनो लाभ ते देवने लेवो नथी के तमने भळावी दे छे. ?

४५ पीळा वस्त्रवाळाओ ! तमे प्रतिमापुजनना आरंभथी डरोछो ! अने तमारा घोरथी पीळा चांदलावाळा तमारा यजमानो पुजनना आरंभमां महामिकथं वगरे

छे. वळी ते पुजनमां तमने महा पाप लागे अने शेनकोने ते पुजनथी मोक्ष थाय तेमां पुछवानुं के ते पुजा करतां तमने केटला कर्म संभाग अने केटलो काळ भवां-तरनो लाभ लइ शको ?

४६ केटलाएक पीळा तीलकवाळा मृत्यु पामी अवगतिआ थाय छे ते पछात रहेला घरना अमुक माणसने धुणावीने कहेजे मारी प्रतिमा प्रतिष्ठिने देरामां बेसाडो ? त्यारे तेना संबंधीओ तेना कहेवा प्रमाणे देरामां बेसाती जगो लइ बेसाडे छे तेमां पुछवानुं के ते प्रतीमानी प्रतिष्ठा पुजा तमारा देवनी रीते करोछो के बीजी रीते ? वळी ते प्रतिमानुं नाम अवगतीओ पाडोछो के तिर्थंकर ? वळी प्रतिमा बेसा-डनारने नामे प्रतिमानुं नाम राखो छो तो तेने तमे तिर्थंकरदेव शीरीते मानोछो ? केमजे त्रिखंडा, नवखंडा, नाकोडा, अमीजरा, गोडीजी, हठीजी, गुलाब वागडी-आजी जावडजी, भावडजी, ए विगेरे अनेकनामनी प्रतिमा बेसाडो छो तो आ ठेकाणे ए शंका थाय छे के जेम अवगतिआओ सुरधन थइ घरमां बेसवानुं मागी ले छे, तेमज तमारा सूरधनोए देरामां बेसाडवानुं मागी लीधेलुं छे, ने तेमज तेम प्रतिष्टा करी देरामां बेसाडो छो, एम दरेक वखते सांभळवा तथा जोवामां आवे छे तेमां पुछवानुं के लाखो रुपिआ खरचीने देरां करावी प्रतिमा बेसाडो छो ते तमारी नामदारीने माटे करो छो के आत्मकल्याणने माटे करो छो ? वळी गृहस्थोना ना-मनो प्रतिमा बेसाडो छो तेमज पीळा पुज्योनी प्रतिमाओनी प्रतिष्टा करीने बेसाडो छो के नहीं ?

४७ वितरागभाषित मुळ सिद्धांतोमां कह्युं छे जे पहेला तथा छेला तिर्थंकरना सासनमां साध साध्वीओने धोळां वस्त्र पहेरनारा कह्याछे अने वच्चेना बावीश ति-र्थंकरना सासनमां साध साध्वीओने पंचरंगावस्त्र पहेरनारा कह्या छे. पण हालना जमानामां संवेगीओ आवळना फुल जेवा पीळा वस्त्र पहेरेछे. तेओने पुछवानुं के तमे कोना सासन प्रमाणे प्रवर्त्तोछो ? वळी आचारंगसूत्रमां तथा निसिथ सुत्रमां भगवंते कह्युं छे " नोरंगेवा, नोधोएवा, नोपासेजा " अर्थात रंगवानी तथा धोवानी तथा अमुक द्रव्यनो पास देवानी सर्वथा ना कही छे. वळी अचेत अने फासुक जळमां एकवार तथा बे वार पण न बोळवुं एम कह्युं छे तो आवा पीळा वस्त्र रंगवानी तो रजा कयांथीज होय ? एम छतां पण पीतांबरधारीओ कोइएक तेमना आचार्यना करेला ग्रंथना आधारथी पोताना वस्त्रने लोदर काथो अने दाडमना छोडीआ पला-ळी तेमांज बोळे छे. पण पुछवानुं के ग्रंथ उपर आधार न राखतां सुत्रमां केवी रीते

कहेलुं छे ? ते पुर्व, पश्चिम अने मध्यम ए त्रण पाठनी सांथ मेळवीने शास्त्ररीत मनाग वनाववुं जोइए.

४८ वितरागभाषित मुळ सिद्धांतोमां सर्व साधसाध्वीओने मस्तकनोलोच करवानो कह्यो छे. तेमछतां मस्तकनो लोच न करतो साधुओनी समाचारीथी दुर करवो पडे छे एम सिद्धांतोमां स्पष्ट रीते कहेलुं छे. तेम छतां पीळा वस्त्र धरनाराओनां केटलाएक लोच करे छे अने केटलाएक हजाम पासे मुडावे छे या कतरावे छे. एवो व्यवहार साधुओने माटे कया मुळ सूत्रथी कहोछो. वळी तमे कहोछो के साधुओने माटे सूत्रमां लोच करवाने अधीकारे " लोचा, मुंडेवा, कत्तेवा " एटले स्थिर संवेगवाळाने लोच करवो ते सिवायनां साधुओने सजाए मुंडाववुं तथा कतराववुं कहोछो. पण शास्त्ररीते तमारुं बोलवुं वृथा छे. सबब के मजकुर पाठनी क्रियातो श्रावकनीज छे. ज्यारे श्रावक उत्कृष्ट पडिमाओ आदरे छे त्यारे मजकुर पाठनी रीते करे छे पण साधुओने माटे तो लोच करवानीज भळामण छे. पण तेमने पुछवानुं के श्रावकनी क्रियानो पाठ तमोए लीधो तो तमारामां वारव्रत मांहेलां केटलां व्रत छे अने श्रावकनी केटली पडिमा आदरेली छे ? वळी तमे कहोछो जे वृद्ध, रोगी तपस्वी तथा वाळने माटे आगार छे. तेमां पुछवानुं के मोटा हाथी चाल्या जाय एवा आगारतो तमारा सर्व व्रतोमां प्रत्यक्ष मालम पडे छे. सबब के तमारां पुर्वाचार्यना करेला ग्रंथोमां कहेलुं छे के स्वधर्मनीस्थिति वधारवाना कारणथी जीवहिंसा १ तथा जुठुं बोलवुं २ तथा अदत्तदान देवुं ३ तथा कुशियळ शेववुं ४, तथा परिग्रह राखवो ५, तथा रात्री भोजन करवुं ६, ए विगेरे केटलीएक बाबतोना आगार करेला छे. तो पुछवानुं के साधुने माटे एवी सागारी क्रिया कया सुत्रमां कही छे ? वळी साधपणाना मुळव्रतो विगेरेमां कोइ कारणथी आगार होय तो तमारा शेवकोमां तथा तमारामां कांइ तफावत जणातो नथी अने वेठनो आगार धर्मज मालम पडे छे. तो पुछवानुं के तमारा धर्मना अणगार साधुओ कइ तरफ गएला छे ?

४९ सिद्धांतोमां साधुओने भगवंते वरसता वर्षादनां आहारादिक भोगोपभोगनी वस्तु लेवाजवानी मना करेली छे. वळी कदाचित वर्षाद वरसवानी अगाउ गौचरीए गया अने पछी वर्षाद वरसे तो साधुओ गृहस्थने घेर न रहेतां स्वस्थानके आवे. वळी लघुनीत, वडीनीत ना कारणथी वर्षादनां मंजतिओ जाय छे तेमां पछली अजतनानुं प्रायछित लेवाना कामी छे. एवो न्याय मार्ग छे. परंतु तमो

क्षुधा, तृषा विगेरे परिसहोथी हायमान प्रणाम करीने नगरना वगीचामां आहारादिक लेवा जाओछो ते वखते गृहस्थो पासे छत्र धरी रहे छे. जेम एकतालीशना भादरवा मासमां त्रण दीवसनी वर्शादनी एली मंडाणी ते वखते भावनगरमां वृधीचंद्रना शिष्यो जाता दीठा तेमज तेओमां सर्व ठेकाणे हशे. वळी ते वखतमां सिद्धांतधारी जैन मुनीओने त्रण त्रण उपवास थएला सबबके सिद्धांतोमां कह्युं छे जे मासखमण पा-रणे जरापण दृष्टिगते वर्षादना छांटा मालम पडे त्यांसुधी आहारादिकने माटे साधु होय ते न जाय. तेतो सत्य छे. पण तेथी विरुद्ध रीते थइने जाओछो ते कया सूत्रना आधारथी ?

५० सिद्धांतोमां कह्युं छे जे दररोज एक घेरथी आहारपाणी न वोरवुं तेमज साधुनी नेसरा कल्पिने कोइ गृहस्थ आहार पाणी नीपजावे ते सर्वे वस्तु साधुओने लेवी न कळपे तेतो न्याय मार्ग छे. पण हालना पीळा वस्त्र धरनार जनोने माटे केटलाक डहापणदार भगतो तेमना गुरुनी खातर अहारादिक विगेरे रंधावे छे ने दररोज सीरा बनावीने वोहोरावे छे ने कोइ वखते काचो सीरो अपायो होय तो पाछो लेवा जवुं पडे छे. तेमज दुध उकाळीने वोहोरावतां वधारे पडी गयुं होय तो बीजो भावीक शेवक पीइ जाय छे तेवी रीते भावनगरमां महर्धिक शेवकने घरे रीवाज छे. तथा बे हांडा पाणी उकाळी वहोरावे छे. ते छेवट अण कळपता मुखवास सहित आपे छे ने ते लेछे तो पुछवानुं के मजकुर दातार तथा मजकुर लेनारने सिद्धांतोनी रुक्ति जोतां केटलो लाभ मळ्यो हशे ?

५१ उत्तराध्ययन सूत्रना सोळमा अध्ययनमां नव वाड सहित ब्रह्मचर्य पाळवुं कह्युं छे. तेमां नवमी वाडमां शरीरनी शश्रुका, शोभा, शणगार, अतर, तेल, फुलेल विगेरे सुगंध द्रव्यथी वस्त्र तथा शरीरवासीत ब्रह्मचारी पुरुषोने न करवुं कह्युं छे ते तो सत्य छे. तेथी उलटी रीते ग्रंथ मान्य करनार आत्मारामजी विगेरे एकताळी-शनी सालमां लींबडीए गया त्यारे तेमना शेवकोए घणी धामधुमथी सामैयुं करीने शहेरमां लइ जतां मध्य वजारमां अतरनी सीसीओ तेमना मस्तक उपर ढोळी हती. ते सुगंधनी वहारथी तेमनो आत्मा घणो संतोष पाम्यो हशे. पण ए कृत्य जैन मुनीओनी रीतमां छे के उलटी रीते छे ?

५२ सिद्धांतोमां वितरागे जैन मुनीओने कह्युं छे के पांच प्रकारनी सझाय करवी तेमां पांचमी सझायनुं नाम धर्मकथा कहेवाय छे ते कथाना चार प्रकार छे. ते श्रोताजनोने संभळावतां सुलभबोधी जीव वैराग पामी गुरु पासे संजम लेवा

मनसा बतावे पण तेना वारसदारोनी आज्ञा सिवाय चारित्र आपे नहीं, एतो न्याय मार्ग छे पण तेथी उलटी रीते आधुनीक जमानामां ग्रंथ परुपक आत्मारामजी विगेरे केटलाएक वेषधारी गृहस्थोना बेटाबेटीओने तेओना वारसदारोनी रजा सिवाय बीजे देशावर मोकली दइ भेख पहेरावी देछे. पछी ते भेख पहेरनाराना वारसदारो त्यां जइने जुलम टंटाथी न्याय कोरटनी द्रष्टिए करी केटलाएकने भेख उतरावी घेर लइ जाय छे. ते जैन शास्त्रोना आधार प्रमाणे जोतांतो उलटी रीत गणाय के बीजुं कांइ ?

५३ सिद्धांतोमां जैन मुनीओने भगवंते कह्युंछे के अहो मुनीश्वर परदेशे विहार करतां या परदेशथी आवतां गृहस्थो स्वइच्छाए वाजां विगेरे आरंभनी धामधुमथी तमने सामा तेडवा आवे तथा वळावा जायतो तेओना मंडळमां आत्मार्थी मुनीओए चालवुं नहीं ने चालेतो साधु धर्मथी उलटी रीते समजवुं, एतो न्याय मार्ग छे पण तेथी उलटी रीते हाल आत्मारामजी विगेरे गुरु भक्तिने माटे सामैयाना मोटा लाभ बतावी अनेक आरंभ सहित गृहस्थोना मंडळमां माथे साल या चंदनी धरावी चालो छो तथा चालवाने रस्ते जळ छांटणां तथा धजागराओ विगेरेनी शोभा लेतां स्त्री मंडळना संगटाथी निःशंकपणे चालता तेमज मोढा आगळ दांडीआरसनी रमत जोतां संतोष मानेछे. तेमां पुछवानुं के असल जैनधर्ममां हालनी रीते अंधारुं चालतुं?

५४ सिद्धांतोमां जैन मुनीओने भगवंते कह्युं छे के अहो मुनीश्वर ! तमारा धर्मोपगरण विगेरे आहारादिक गृहस्थने उपाडवा न देवुं तेमज कोइ वाहन उपर न मुकवुं. एम कह्युं ते तो न्यायमार्ग छे. पण तेथी उलटी रीते थइ परदेश जतां आवतां वेठीआ करी भार उपडाववो अथवा तेम नहीं तो गाडी, घोडा, पोठीआ उपर भार भरवो. वळी लाग पडे तो तेओ उपर चडी पण बेसवुं ते जैन धर्मना मुनी कहेवाय के नहीं ? वळी भिक्षा लेवा जाओ छो ते वखते गृहस्थने उदकनी मटकी उपाडवाने आपो छो ते साधुधर्मनी रीत छे ?

५५ सिद्धांतोमां जैन मुनीओने भगवंते कह्युं छे के अहो मुनीश्वर ! गृहस्थने घरे गौचर्ये मौनपणे जजे ! सबब के सुझतुं कळपतुं लेवाना कामी छो माटे. कदाच बोलता जशो तो तमारुं आववुं जाणीने कोइ अविवेकीगृहस्थ सचितादिक वस्तुओनो स्पर्श करी अजतना करशे तो दोष छे. एतो न्याय मार्ग छे. पण हालमां आत्मारामजी विगेरेना शिष्यो नोतरवा आवेला सेवकोना मंडळसाथे बजारमां खेंचाताण करता पहेलां सुमतिने टाळो करी मन गमता सेवकने घेर जाय छे. ते वखते, बे

चार शेवक आगळथी जइ पहोंचीने महोगामनागने जाण करी श्राणा लीलोतरी काचुं पाणी विगेरे आघुं पाछुं करावे छे. ए विगेरे केटलीएक वावतो जोवामां आवे छे. ते कृत्य साधु धर्मथी उलटी रीते छे के नहीं ?

५६ ठाणायंग सूत्रमां शस्त्रने एकधारुं खडग कह्युं छे अने दीवाने दश धारुं खडग कह्युं छे. माटे जैन मुनीओ ते आरंभमां श्रीकर्ण शुद्ध चित्त आपता नथी ते तो न्याय मार्गछे पण हालमां वरधीचंदजी विगेरे पोताना मकानोमां रात्रे कायम फानसमां दीवा बळावे छे ने कहे छे जे प्रतिक्रमणनी वखते न जोइए पण पछी वाद नहीं. वळी ते फानसमां दीवो कराव्या पछी खानगी सभा भरी देशावरना प्रपंची पत्रो वांचवा या लखाववा या पालीताणाना डुंगर उपरनां देरांओना रक्षणनी गोठवण करवी तथा गुरुपणाना नाम साथे खानगी वकीलात करवी. ते कृत्य साधु धर्मनी रुक्तिथी उलटी रीते छे के केम ?

५७ भगवतीजीमां तुंगीआनगरीना श्रावको " महीढीएअपरिभुया " कह्या छे. वळी तेओनी गृहस्थाइ प्रमाणे घणुं अनुकंपा निमित्ते दान आपनार कह्या छे तथा अभंग द्वार एटले तेओना आंगणेथी अन्न वस्त्रादिकना अर्थीओ निराश थइने पाछा वळता नथी एवा दातार कह्या छे. एवो गृहस्थ व्यवहार साचवतां अनुकंपा दाननी बुद्धि कही छे. वळी निर्जरा ने मोक्ष कल्पना तो निग्रंथ मुनीश्वरोने प्रतिलाभतां कही छे, एवो धर्म व्यवहार ए गुरु उपदेश छे, अने गृहस्थ व्यवहार ए तेओनी स्वइच्छामां छे, तेतो निर्वादक छे. पण हालना वखतमां पिळा तिलकवाळा शेवकोने पीळां वस्त्रधारी महात्माओ पचखाण एटले वंधी करावे छे के पीळां वस्त्र पहेरनार संवेगी सिवाय बीजा कोइने भात, पाणी, वस्त्र, पात्र कांइपण देवुं नहीं ने देतो संसारमां रखडे, ए विगेरे घणीक अविवेकतानो वोध करती वखते केटलाएक अविवेकीओ नियम लइ लेछे ने केटलाएकतो लेता नथी.पण पुछवानुं के एवा नीयम कराववानी रीत कया जैनशास्त्रमां छे ? पण कहेवानुं जे श्रावकना वारव्रत तथा संथाराना पाठ सहितना नवाणुं अतिचार कह्या छे. ते तमाम जाणवा योग्य छे. तेमां पहेला व्रतना पांच अतिचार जाणे ते " वंधे१ वहे २ छवीसये ३, अइभारे ४ भतपाणवोछेए ५ "

अर्थ—कोइ त्रस जीवने वंधने बांध्यो होय १, कोइ त्रस जीवनो वध कर्यो होय २, कोइ त्रस जीवना अवयव छेद्या होय ३, कोइ त्रस जीवउपर अति भार भर्यो होय ४, तथा कोइ जीवोने अन्न पाणी भोगवतां अटकाव्यां होय ५, ए पांच

कृत्यमांथी कोइ कृत्य माराथी जाणपणे अजाणपणे बन्युं होयतो निष्फळ थाओ. एम गृहस्थो सर्व जीव उपर दयाभाव राखी कोइ प्राणीनी अजीवीकानो भंग करता नथी ने सुपात्र, कुपात्रनो भेद पुरेपुरो समजी दातारगुण यथायोग्य रीते साचवेछे. पण तमो महात्मा धर्माधीकारीनुं नाम धरावीने तमारुंज पंड पोषण ने पर प्राण सोसननो धंधो लइ बेठा एम खातरी थायछे. पण पुछवानुं के आठमुं कर्म बांधवाना पांच प्रकार छे ते दानांतराय १, लाभांतराय २, भोगांतराय ३, उपभोगांतराय ४, ने विरीयांतराय ५, ए पांच शब्दना अर्थ तमो जाणता होतो शास्त्रोक्त रीते बताववा जोइए.

५८ सिद्धांतोमां कह्युं छे जे पांचमी सूमतिमां उच्चार पासवण, खेळ, जळ, संधाण, विगेरे पुदगळ परिठवतां साधुओ पांचमी समतिमां उपयोग करे अने जतना स्थानक परीठवे. ते तो न्यायमार्ग छे. पण हालमां केटलाएक पीळा वस्त्र धारण करनार महात्माओ पायखाना बंधावीने लगनीत वृद्धनीतनी अवाधा टाळवा जाय छे. तेमां पुछवानुं के समुर्छीम प्राणीनी उत्पतिना ठेकाणां जाणता होतो शास्त्र रीते बताववुं जोइए. वळी कहेवानुं के केटलाएक दुरस्ती राखनार गृहस्थो पायखानानी गंदकीथी कंटाळीने बहार खुल्ला मेदानमां जाय छे अने साधुओ पायखानामां समुर्छीमनी उत्पति जाणीने दुर जंगलमां जायछे. तेतो वाजवी छे. परंतु पायखानुं बंधाववुं ते जैनधर्मना साधुओने अणघटतुं छेके नहीं ?

५९ सिद्धांतोमां एवा पाठ छेके हयात तिर्थंकर ज्यां विराज्या त्यां इंद्रादिक देवताए पोतानी इच्छाथी समोसरण रच्युं एमां भगवंतनो उपदेश तथा आदेश नथी एतो न्यायमार्ग छे. पण आधुनीक जमानामां पीळा वेष धरनार महात्माओ एकेंद्रि प्रतिमाओना समोसरण रचवाना मोटा आरंभनो बोध करीने मोटा वरघोडा चडावे छे ने ते वच्चे पोते चाले छे तथा पोताना मकान छोडीने वरघोडा जोवानी खातर वेपारी दुकांनपर किनखावना रेजा पथरावीने वरधीचंदजीनी रीते सर्व जणाओ वेसता हशे ? तेवी रीते वर्तनाराओने जैनधर्मना आराधक साधु कहेवाय ?

६० सिद्धांत बोधमां साधु धर्मनी आदिमां पांच महाव्रत परूप्या छे. तेना रक्षण माटे भगवंते घणो बोध करेलो छे तेतो सत्य छे पण पुछवानुं के ते महाव्रतनो भांगो केटलो छे ? ने ते महाव्रत केटली कोटीए आदरी सकाय छे ? तथा तमो सावद्य धर्मनो उपदेश करोछो ते पांच महाव्रतना कया भांगाना आधारथी

करोछो ? वळी सर्वथी महाव्रत आदर्या तेनी कोईमांथी एक कोई विगेरे तेने साधपणामां गणवो के गृहस्थपणामां गणवो ? ए सर्व प्रश्नना उत्तर सत्य सुत्रना आधार प्रमाणे बतावचा जोइए.

६१ समकिती गृहस्थ गुरुमुखथी धर्मउपदेश सांभळीने यथाशक्ति वैराग पामीने पोताना घरमां बार पर्वी लीलोतरी विगेरे छकायनो आरंभ तथा कुशिगळ सेववा विगेरे अनेक विधीना पचखाण करे छे. एतो योग्य रीते लाभनुंज कारण छे वळी दर महिनाना बार दीवस कळपीने आश्रव त्यागवामां चुकता नथी. वळी ज्यारे पजुसण पर्व आवे त्यारे घणीज रीतथी आरंभ समारंभनी वंधीओ करीने धर्मध्यान, संवर, सामायक, पोषा, प्रतिक्रमण विगेरे संवरकर्णी करवा चुके नहीं. वळी धर्माचार्योंने पण तेओनी अनाश्रव कर्णीने वृद्धि करावचा माटे निर्वद्य भाषाथी वैरागदशा पामे तेओ उपदेश करवो जोइए. पण ते गृहस्थीने निराश्रवी धर्म ध्याननना वखतमां वैराग वृद्धिनो उपदेश न देतां उलटी रीते देरांमां बेटेली प्रतिमानी खातर धुप, दीप, फुल, फळ, वनस्पति नैवेद विगेरे छकायना आरंभ सहित पुजा करवानो उपदेश करोछो तो पुछवानुं के ते गृहस्थो घर कार्यना आरंभथी छुटीने धर्मस्थानके आव्या, तेने प्रतिमा पुजनना आरंभनो लाभ बतावोछो, पण घरना करेला आरंभनुं निवारण धर्मस्थानकमां धर्मध्यान करतां मटे पण धर्म स्थानकमां करेलां आरंभनुं निवारण करवाने बीजुं क्युं स्थानक छे ?

६२ सिद्धांतोमां तिर्थंकरादिक सर्व साध साध्वीओए भव्य प्राणीने निर्वद्य भाषाथी सागार अणगार धर्मना व्रतनो बोध कर्यो ने यथाशक्ति प्रमाणे भव्य जीवोए सागार अणगारनां व्रत आचरण कर्या,तेज व्रतोने निरअतिचारपणे पाळवानो आदेश कर्यो तेतो न्यायमार्ग छे. परंतु ग्रंथकरनारे निर्युक्तीमां ग्रहस्थोने पुजाना आरंभनो आदेश आप्यो ते केवो जुलम छे ? माटे ते सिद्धांतनी युक्तिथी योग्य रीते बतावबुं जोइए.

६३ समवायंग सुत्रना तेत्रीशमे समवागे धर्माचार्योनी तेत्रीश आशातना टाळवी कहीछे. अने ग्रंथकर्त्ता प्रतिमानी चोराशी आशातना कहेछे. ते सिद्धांतना मुळ साथे लखवी जोइए.

६४ दशासुतखंध सूत्रमां श्रावकनी अगियार पडिमानो अधीकार छे तेमां पहेली दर्शन पडिमा आदरतां श्रावक एम चिंतवे छे हुं उत्कृष्ट रीते श्रावकना सर्व

धर्मनी आराधना करं छुं. तेवि रुचीए सर्धा आणुं छुं, प्रतित आणुं रुचवुं छुं. वळी बारवृत आदरतां छ प्रकारना आगार राख्या हता ते आगारथी पण निवर्तुछुं. एम घणी बंधीओनी साथे पहेली पडिमा जाणवी. " जाव " अगियारमी पडिमासुधी घणी जातनी बंधीओ करता जाय छे. वळी अगियारमी पडिमा आदरतां साधु तो नहीं परंतु साधुनी रीतेज तपने पारणे असनादिक ग्रहण करनारा कह्या छे. ते तो श्रावक धर्मनी रीत छे पण हालना वखतमां शरीर धर्मना मोहीत प्राणीओ निराश्रवी श्रावकनी कर्णीथी कंपायमान थइने उत्तम कर्णी न करतां पोषा वृतना नाम पाडी त्रण काळ पाषाण प्रतिमाने वंदन पुजन करेछे तो पुछवानुं के समकिती श्रावकोनी कर्णीथी भिन्न छे के केम ?

६५ प्रतिमा, देरां, दंड अने धजा प्रतिष्ठवानी विधी कया सिद्धांतना आधारथी करो छो ? वळी ते प्रतिष्ठा ग्रहस्थोने करावो छो के तमो मात्मा करो छो ? वळी तमारा धर्मी आंचळगच्छवाळा कहेछे जे गृहस्थ प्रतिष्ठा करे अने तमे कहोछो जे साधु प्रतिष्ठा करे ए बेना तकरारनी समाधानी वितरागना मुळशास्त्रोना आधारथी बतावबी जोइए.

६६ दिगंबर मतवाळा कहेछे के नग्न प्रतिमा पुजवी अने तमो कहो छो जे नग्न न पुजवी एम तमारो प्रतिमा मत छतां नाहक विवाद करी भेद पाडो छो तेनुं शुं कारण ?

६७ सिद्धांतोमां कह्युं छे के तिर्थंकरादिक चर्म शरीरा साधुओ अंतक्रियाना वखतमां केटलाएक पद्मासनथी सिज्या तथा केटलाएक उभाथका सिज्या तेमतो मुळशास्त्रमां छे परंतु तमो प्रतिमानी स्थापना बेठा, सुता अने उभानी करोछो के बेसारी राखवामां समजो छो ? ते सिद्धांतमां होय तो बताववु जोइए.

६८ प्रतिमा उपर यक्षनी प्रतिमा करोछो. ते यक्ष प्रतिमाने नवरावतां तेना मेलनुं पाणी निचेनी प्रतिमा उपर पडे छे तेमां पुछवानुं के तमोने तथा यक्षने आशातना थइ के नहीं ? ने थइ होय तो ते चोराशी मांहेली कइ आशातना छे ? ने तमारा मानवा परमाणे तेने शुं फळ मळशे ?

६९ प्रतिष्ठाविधी करतां तमो पीळा वस्त्रवाळा मात्माने तथा तमारा शेवक शेवकीने तथा ते प्रतिमाने कयो चंद्र पहोंचतां तथा केवे लगने प्रतिष्ठा करो छो ? वळी प्रतिष्ठा करतां एकसो आट कुवाना पाणी तथा घणा स्थळना पाणी तथा गोरुं चंदन तथा प्रतिमाने माथे कसुंबानुं रंगीत वस्त्र तथा गळे अगटाना कांठ्यो

तथा हाथे मिंडोळ तथा मरडाशींगी तथा श्रीनाथ गुनरनो दोरो बांधवो ते तथा प्र-
तिमानी आंखे आंजण आंजवुं ते विगेरे अनेक कारणो करी बेसाडो छो तेमां पुछ-
वानुं के ए सर्व बाळलीलानी चीजो करो छो तो अचंभ थाय छे के एजी तमारी
व्रध अवस्थानुं सुं रक्षण थवानुं छे ते एना उपरथी आपली मनावर पुर्ण करो छो.
वळी तेमां बेसारवानो अर्थतो बेसवुं थाय छे परंतु भगाववानो अर्थ शुं ? ए विगेरे
हकीकत वितरागना वचनना आधार प्रमाणे बतावची जोइए. वळी पुछवानुं के
एकसो अने आठ कुवाना पाणीमां बीजां अनेक द्रव्य भेळां करावोछो ते साधुना
सतावीस गुण मांहेलो कयो गुण छे ?

७० चोवीश प्रतिमा मांहे एक मुळ नायक करीने आभ्रणादिक अलंकार स-
हित सुखड, केशर, विगेरे अत्यंत भोगोपभोग चडावीने उचित स्थानके बेसाडो
छो अने पछातनी त्रेवीश प्रतिमाने नानी करीने थोडाक भोगोपभोगथी समजावीने
शेवक दरज्जे नीचे आसने बेसाडो छो तेमां पुछवानुं के तिर्थंकरोना नामथी तमे
बेसाडवा धारता होतो ते मोक्ष गएला तिर्थंकर पदमां तथा ज्ञान दरशनादिक
चारित्र गुणमां घटवध हता नहीं. माटे आ तमारुं कृत्य तेओनी रीते संभवतु नथी.
परंतु चाकर ठाकरना दरज्जानी रीते तो चार जातना देवताओमां सुरधननी रीते
संभवे छे तो आवो प्रपंच कया कर्मना आधारथी करवो पडेछे ?

७१ तमे प्रतिमानी नीचे नवग्रहनी प्रतिमा करोछो तथा देरामां पेसतां क्षेत्र-
पाळनी प्रतिमा करो छो तो पुछवानुं के ते देव तरीके बेठेली प्रतिमाना परणेतरमां
विघ्न थइ जवानो संभव छे के ? लोकोत्तर मिथ्यात्वथी संतोप न पामतां लौकिक
मिथ्यात्वमां प्रश्न थया तेनुं वितराग भाषीत शास्त्रमां केवी रीते छे ?

७२ तमो प्रतिमा आगळ पान, फळ, फुल, वळ वाकळा, पकवान, धान्य,
नैवेद तथा सोनुं, रुपुं, वस्त्र विगेरे अनेक वस्तुओ धरो छो तेमां तमारुं बोलवुं एम
थाय छे के देवने चडावेली वस्तु संवेगी विगेरे गृहस्थो खाय तो नर्कादिक संसा-
रमां भ्रमण करे. वळी मजकुर प्रतिमाने चडावेली चीजोमांथी एक चोखानो दाणो
पण चकला सरखुं चणे तो ते पण नर्कादिकमां जाय एम कहो छो माटे नर्कादि-
कमां जवाना लयथी तमो तो लेताज नहीं हो. अने ते वस्तुओमांथी केटलीएक
खावा पीवानी गोठीने तथा माळीने आपो छो ते सर्व वस्तु देवनीज छे. तो पुछ-
वानुं के ते माळी तथा गोठीने तमो सर्व जेठा भगतोनी तरफथी विचारा अजा-

णने स्व कुटुंब साथे नर्कादिक गतिओमां रझळाववा धारेलुं छे ? वळी देवने चडावेलुं रोकडनाणुं भंडारमां मुको छो तथा वस्त्र धान्य विगेरे वेची नाणां करीने भंडारमां मुको छो तो ते वेचातु लेनारने पण तमोए संसारमां रझळाववा धारेलुं हशे. वळी देवका नाणाथी देरां प्रतिमा समरावो छो तेमां कडिया, दाडिया, स्लाट, चुनावाळा तथा सुतार विगेरेनी रोजी देवका नाणाथी चुकावो छो तेनुं पण तमोए भलुं न इच्छुं तथा हजारो माणसना साधारणना नाणाथी भंडार भर्या ते नाणानी खावकीथी अमदावाद, मुंबाइ, भावनगर, पालीताणा विगेरेना गृहस्थो मोटा वेपारी थइ पडया छे, ते प्रख्यात छे. तेने तो कोण जाणे तमारा कहेवा प्रमाणे केटलोए काळ रखडवा धारेलुं हशे ? पण तमोए तमारा साधर्मी भाइओनुं पण भलुं इच्छेलुं नथी. मतलब के तमे नाणुं भेळुं कर्युं तो तेओने खाइ जवानो विचार थयो ने तमारा कहेवा प्रमाणे तेओ सर्व धर्म हारी जइने नर्कादिकनुं टांकु पण पाडी दीधुं हशे. माटे छेतट केहेवानुं एटलुंज के सर्व जणाने संसार भ्रमण करावववानी खातर देरामां बेठेली प्रतिमाओज कार्णीक भुत छे. माटे अमारा पुर्व संबंधी अजाण मित्रोने सुहित शिक्षा आपवा इच्छीए छीए के सिद्धांतना आधार उपर उपयोग करी प्रतिमा मंडन न करताहो तो नाणा विगेरेनी खावकी पण न थात ने दुरगतिमां पण जवानुं कारण न रहेत पण पुछवानुं के अनंत संसार वधारवानां कारण तमोए कया मुळसूत्रथी स्थापन कर्यां छे ?

७३ तमोए अठोतरी सनातरनी विधी तथा आरती मंगळ तथा पेहेरामणीनी विधी तथा लुल पाणीनी विधी तथा सचित मीठुं अग्नि मांहे होमीने देरे हवन करो छो (जेम हालमां महवामां संवेगीए कराव्युं हतुं तेम) ए विगेरे महा आरंभना कारणो जैनने एवरुप केना उपदेशथी तथा कया सत्य सिद्धांतना आधारथी करो छो ?

७४ सिझमभव सुरीए देव उपासनाथी यज्ञ कुंडमांथी थंभणा पार्श्वनाथनी मुर्ती काढी. उज्जन नगरीए शंकरना देवळमां शिवलींगमांथी सिद्धसेन दीवाकरे महकाळकाने पसाए एवंती पार्श्वनाथनी मुर्ती काढी. वळी तेनुं महात्म वधारवा माटे तेओए मोटा ग्रंथ बांधी आरंभोपदेश कर्यो ते कळीनुं प्रवर्तमान छे. परंतु ते मांहेला सिद्धांतोमां प्रतिमानो महिमा वानर्को तर्गके कांइ पण न मळे तेनुं शुं कारण ? वळी ज्यारे कोइ तमोने पुछनार मळे त्यारे घणी तकरार करवा तैयार थाओ छो. तेमज फांफां मारतां कांइ न सूझे त्यारे मासवनी तथा द्रौपदीनी प्रति-

मानी बाथ भरवा दोडी जाओ छो. पण कार्तीक प्रतिमानो महिमा सिद्धांतानुसार प्रमाणे बतावबो जोइए.

७५ साडापांच वरससुधी अजवाळी पांचमना उपवास करवानी आज्ञा क्यां आपोछो ने तेनी पुर्णाविताए उजमणा करावो तेमां पांच सोनाना तथा पांच रुपाना टका विगेरे धन धान्य पकवान सहित द्रव्य पुस्तकोनी आगळ मुकावोछो तेमां पुछवानुं के मजकुर पांचमनी विधीनो महिमा सिद्धांतोमां केवी रीते छे? ते बतावबुं जोइए. वळी एम समजवामां आव्युं छे के मजकुर पांचमनी विधी तमारा साधर्मी आंचळगच्छवाळा मान्य करता नथी तेनुं शुं कारण छे?

पुतळी देखी राग ने प्रतिमा देखी वैराग उपजे, ते प्रश्नोत्तर.

केटलाएक मति भ्रांती लोको कहे छे जे अमोए प्रतिमा स्थापन करेली छे, ते अमारे वैरागनुंज कारण छे द्रष्टांत. जेम चितारानी चीतरेली पुतळीने देखतां कामीजनोना मनमां विषयादिक राग उपजे छे तेमज प्रतिमा दीठे वैराग उपजे छे. एम कहेनारानी श्रद्धामां कलंक संभवे छे. कारण के चितारानी चीतरेली पुतळीमांतो विषय उपजवाना अवयवो प्रत्यक्ष छे. माटे विषय प्रगट थायज. द्रष्टांत. जेम कोइ पुरुष निद्राने आधीन थएलो होय ते वखते स्वप्नांतरमां कोइ स्त्रीनो विभव करे छे त्यारे ते पुरुषनो मद पातन थइ जाय छे ने तेने शियळ खंडननु कर्म लागवानो संभव छे. सबब के अनादि काळथी मिथ्यांत्वने उदये वार जातना अव्रतथी कर्मबंधननी क्रिया सदाकाळ लागुज पडेली छे. माटे चित्रनी पुतळी देखतांज विषयादिक कर्मो बंधाय तेमां शुं आश्चर्य छे! वळी ते पुतळी विगेरे केटलीएक बाबतो जोवानी प्रश्नव्याकरण सुत्रमां तथा दशवीकालीक सूत्रमां भगवंते साधु साध्वीओने मना करेली छे. तेतो न्याय मार्ग छे. पण तमो प्रतिमा जोवामां वैराग प्रगट थवानो कहोछो, ते कदी मळतुं आवतुं नथी. द्रष्टांत जेम कोइ अनार्य पुरुष उपर द्वेष करीने लाकडी प्रमुखनो प्रहार करे तो अवश्य कर्म बंधाय पण ते अनार्य पुरुषने साधु मुनीराजनी कल्पना करीने वांदे. पुजे या आहारादिक चौद प्रकारनुं दान देतो साधु गुणनी रीते शुद्ध निजरा न थाय. वळी कोइ समकिती गृहस्थ पोताना आयुष्यने अंते घर बार धन धान्य विगेरे स्थावर जंगम मिल्कत तथा बेटा बेटी स्त्री विगेरे जेमां पोतानुं धणीपतु छे, ते सर्वने वोसीरावे नहीं ने मृत्यु

पामी परलोके जाय तो पछात रहेला बेटा बेटी विगेरे जे कांइ आरंभ करे तेनी रावई ते मरनार धणीने अवश्य जाय एमतो छे. परंतु पछात रहेला बेटा बेटी विगेरे धर्म ध्यान करे, ते मांहेलो धर्मनो हिस्सो तेने न जाय. वळी जेम गाडरनी उननो बनावेलो कोइ पण पदार्थ आश्रवना काममां वापरे तो ते पापरुपी रावइ गाडरने जाय छे. पण तेज उनना ओघा, केसरीआ, कम्वळने साधु तथा श्रावको धर्मोपगरण करी जतनाना कार्यमां वापरे तो ते जतनानो लाभ गाडरने न जाय. वळी कोई मनुष्य तिर्यंचादिकना चित्र चितरीने तेने द्वेपबुद्धिथी हणे तो अवश्य पाप लागे छे. परंतु ते चित्रोने जमाडवानी बुद्धिए भोजन पान विगेरे मोढा आगळ मुकीए तो दाननो लाभ निर्जरा हेतुए कदी न मळे ए मजकुर चार दाखळाओनी रीते प्रतिमा देखतां वैराग न उपजे. ते शास्त्र रीते खचित समजवुं. परंतु कोइ भव्य जीवने तेवा कारणथी वैराग उपजे तो तेनुं नाम प्रतेक बोध कहेवाय छे. ते अमुक पदार्थ जोइने महा वैराग पामी भरतेश्वर विगेरेनी रीते सर्व आरंभ छोडीने संजमानुष्टांनथी मोक्ष पद पामे, एम सिद्धांतमां कहेलुं छे. वळी ते प्र.क बोध थवाना तो अनेक कारण छे ने ते कारण जोतांज प्रतेक बोधी पुरुषोनो सर्व आरंभ छुटी जाय छे अने तमो प्रतिमाने जोई महा आरंभमां धसी पडोछो माटे प्रतेक बोधनी उपमा तमोने वीलकुल लागुज पडती नथी. सवव के प्रतिमा देखतांज तमोने महा आरंभनी घुरी आवे छे. द्रष्टांत. जेम कोइ माणसने हडकायो श्वान आभडेलो होय ते माणस पाणीमां पोतानुं प्रतिविंव देखे त्यारे तेने हडकवा चाले छे तथा वर्षादनी गर्जना श्रवण करतांज घणां उन्नमादनी मस्तीमां आवी जाय छे. तेवीज रीते तमो अज्ञान मतिओने मिथ्यात्व द्रष्टि कुगुरुरुप श्वान आभडवाथी ग्रंथरुप शब्दोनी गर्जना सांभळीने प्रतिमा रुप जळना समुद्रमां तमारी प्रबळ जडतानो आभास जोइने हिंसा मृपानी कर्णीरुप हडकवा चालेलो जणाय छे. तेनी शांतीने माटे ज्ञान वैराग्य रुप अमृत पीओ तो गुण कर्त्ता थाय. पण खातरी छे के वितरागभाषित मुळसिद्धांतनो जे उपयोग न करे तेनो जुलम हडकवा मटवो मुश्केल छे.

हिंसा पुजनथी दया माने छे ते प्रश्नोत्तर.

केटलाएक अजाण मित्रोनुं बोलवुं एम थाय छे जे अमे प्रतिमानुं पुजन करीए छीए. तेमां हिंसा थाय छे ने सर्व स्वरुप हिंसा छे एटले सामाना देखवामां हिंसा छे परंतु अमारा अनुबंधमां तो दयानो लाभ छे. एम कहेनाराना उत्तरमां

कहेवानुं के श्री भगवती सूत्रना पंदरमां सतकमां कह्युं छे जे गोशाळाना करेला उपद्रवथी श्री महावीरने शरीरे लोहखंड वाडो थयो पछी छद्मस्थपणे छेल्ले दांमशे मेढी गाम पधार्या, त्यांनी रहिश एक रेवती गृहस्थणीए कोळापाक नीपजावतां भगवंतने प्रति लाभवानी संकलना करी हती पण ते सदोष आहार लेवानी सिंहा अणागारने मना करेली हती ने निर्दोष बीजोरापाक लेवानी भलामण करी हती. मतलबके पोते सदोष भोजन लेवाना अर्थी नथी. तेमज रेवतीना शासन विचारनी भक्तिने स्वीकारी नहीं. एम तो सिद्धांतोमां छे. परंतु तमे कहो छो जे प्रभु भक्तिमां आरंभनुं कर्म लागे नहीं. तो पुछवानुं के ए वचन वितरागना छे के तमो आपेज मुख मंगळीआ थया छो ? पण तमारुं बोलवुं प्रत्यक्ष मुळसुत्रोथी विरुद्ध जणाय छे. सबब के पान फळ, फुल, नैवेदादिक प्रतिमानी भक्तिमां अर्पण करो छो पण ते प्रतिमाओ जडताने लीधे स्वीकारती नथी अने ते वस्तुओ प्रतिमाने ठगीने धुर्तजनों लइ जाय छे. एवी कल्पित भक्तिमां तमारी स्वइच्छाए लाभ मेळववा धारो छो. पण कहेवानुं के हयात तिर्थंकर, गणधर, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधुओनी अतरंगथी भक्ति करवा माटे कोइ गृहस्थीए तमारी रीते आरंभ करीने लाभ लेवा धारेलुं नथी एतो न्याय मार्ग छे जड प्रतिमानी भक्ति करतां लाभ मळे कहो छो ते उपर एम कहेवानुं के कोइ गृहस्थ ए मजकुर तिर्थंकरादिक त्यागी पुरुषने माटे अनेक जातना अन्न, पान, सुखडी, मुखवास विगेरे छकायना आरंभथी नवा नीपजावी तेमना पात्र पोखे तथा गाडी, वेल, रथ, पालखी, मियाना, हाथी, घोडा विगेरे वाहनो उपर ते पुरुषोने बेसाडे तथा अनेक जातना जळथी स्नान मंजन विलेपन ते पुरुषोने करावे तथा अनेक जातना वस्त्र, आभ्रण, एकावळ, कनकावळ, रत्नावळ, मुक्तावळ, त्रीसरा, नवसरा, अढारसरा हार पहेरावे तथा मुकुट, कुंडळ, बाजुबंध, बेरखा विगेरे पहेरावे तथा चुवा, चंदन, चंपेल, मोगरो, जाइ, जुइ, गुलाब, केवडो, मजकुंध, डोलर, डमरा विगेरेना सुगंधी अतरथी तेओना शरीर, वस्त्र, आभुषण, विगेरे वासित करे. ए विगेरे अनेक चीजोथी सारंभी भक्तिथी तिर्थंकरादिक त्यागी पुरुषोने संतोष उपजावे तो तमारा कहेवा प्रमाणे ते भक्ति करनार पुरुष तरत मोक्ष जाय. सबब के तमो मुग्ध मंडळ मळीने मजकुर त्यागी पुरुषोना नामनुं कळेवर स्थापी महा आरंभथी पुजन करी निरजरा अने मोक्ष फळ लेवा बतावो छो तो शाक्षात तिर्थंकरादिकने माटे आरंभथी भक्ति करे तेने तो तमारा करतां अनंतो लाभ मळवो जोइए. पण एवा आरं-

भथी तिर्थंकरादिके भक्ति स्वीकारी नथी तथा पोतानी खातर आरंभनो उपदेश दइने कोइने नर्कनो मार्ग पकडावी आप्यो नथी. परंतु तेओए तो एक मोक्ष मार्ग निरुपण करेलो छे ते मार्ग तमो सारंभ प्रकृतिवाळा मित्रोने अनुकुळ न पडतां उलटी रीतथी कुदेव, कुगुरुने कुधर्म ए त्रण कारणो कर्म बांधवाना मळी गया छे तेनो मर्म भेद आप मित्रो न समजतां अवळ चक्रमां सारंभी भक्तिमां फसाया पण ते विपाक उदे आवेथी केवुं पस्तावुं पडशे ?

नव कोटीए वृत लइने खंडन करे छे, ते प्रश्नोत्तर.

केटलाएक पीतांबरधारी पुरुषो कहे छे जे अमोए नवकोटीए पांच महाव्रत आदर्या छे. अने पांच आश्रवने मन, वचन ने कायाए करी शेवीए नहीं, शेवरावीए नहीं ने शेवताने भलुं जाणीए नहीं एम कहे छे पण साधु धर्म राखनार आत्मार्थी पुरुषोने माटे शास्त्रोक्त रीते ते वचन तो सत्य छे. पण ते गुण तेओने प्रगट थएला नथी. मतलब के तेओना अंगमां नव कोटी बोधनो असर थयो होय तो कहेवानुं के आ पीळा तीलकवाळा वणिको महा आरंभ करे छे, ते कोनी निशाळना भणतरथी करे छे ? अने एवी कल्पित वार्ताओ कांइ तेमना चोपडामां मांडेलो होती नथी तो खातरी छे के ते वेषधारी मित्रो शीखवाडे छे तेमज शेवको करे छे. द्रष्टांत. जेम मदारी रींछ, वांदरां, बकरां, उंदर, नोळीआ विगेरे जानवरोने जे जे रमत शीखवाडे ते प्रमाणे ते जानवरो शीखे छे ने दुनिआने खेलथी रीझवी मदारी पोतानुं गुजरान चलावे छे. तेमज वेषधारीरुप मदारीओ पोताना भगतोरुप मर्कटोने ग्रंथवचनरुप दोरोथी बांधी प्रतिमा देवळरुप चोकमां अनेक नाच करावीने पोतानी आ जीवीका गुजारे छे ते सत्य छे. सबब के जो तेओमां नवकोटीए आरंभना नियम होय तो मुग्ध जनोने आरंभनो उपदेश कोण आपे ? माटे तेओमां नवकोटीना नियम देखाता नथी.

हवे नवकोटी छे एतो पांच आश्रवनो त्याग करनारा पंच महाव्रतधारी साधुओ शास्त्रअनुसारे दया धर्म चलावनारने आदरवा लायक छे. सबब के जैन मुनीओना सर्वोपरी तिर्थंकर महाराज पोते सर्व आरंभ त्याग करी निर्वद्य करणी करे छे तेमज ते तिर्थंकर महाराजना शासनमां चालनार सर्व साधु साध्वीओ पण निरारंभी थइने नवकोटीए आश्रवनो त्याग करी निर्वद्य करणी करीने महा निरजरा उपारजेछे तेवीज निर्वद्य करणीनो बोध श्रोता मंडळने संभळावीने आरंभ छोडवबा भारे

छे. अर्थात. जेम पोते आरंभ तज्यो छे तेमज श्रोता जनोने यथाशक्ति आरंभ तजावी निर्वद्य कर्णीने निर्जरा हेतु बतावे छे. माटे शास्त्रोक्त रीते नवकोटीए आश्रव त्यागनार मुनी बोध प्रमार्णीक छे. केमके साधुओ नव कोटीए आरंभ पचखी श्रावकोने निर्वद्य बोध करे त्यारे श्रावको यथा शक्तिए करीने वननो आरंभ छोडे, ते न्याय मार्ग छे. परंतु तमो पीळावेषधारीओ पोते पुजा विगेरे आरंभ करवामां संजम लुटाइ जवानी धास्ती राखोछो अने पोताना भगतोने प्रतिमानी पुजाना महा आरंभ करावीने कहोछो जे जेम जेम छकाय खपावी पुजा करशो तेम तेम हळुकर्मी थइ सिग्रह मुक्तिमां जशो. एवो बोध करोछो तो पुछवानुं के तमारा देवमां भोगनी कल्पना अने तमो सावद्याचार्योमां त्यागनी कल्पना अने तमारा शेवकोमां सावद्य पुजनथी मोक्षनी कल्पना ए त्रण टिखळ ने हळ, मुशळ ए त्रेखडनो मत तमारी सावद्य क्रियामां जुदो जुदो छे. माटे तमो नवकोटीना नियमनो डोळ लइ बेसवा धारोछो पण बोध तो लखोटी रमवानो करो छो तेथी एम खातरी थाय छे के ते सर्व प्रपंच उदर पुर्णीने माटेज करता हशो.

निर्गुण मुरतीमां भाव भेळवी लाभ इच्छे, ते प्रश्नोत्तर.

केटलाएक अमारा बाळमित्रो पोतानी अविवेकताथी मतांध थइने बोले छे के पथ्थर देवनी तथा गुरु चित्रनी स्थापनामां तो गुण नथी परंतु तेओमां अमारो भाव भेळवीए एटले वंदन पुजन करवा योग्य थाय छे. हवे एम कहेनारनी बुद्धिमां कलंक समजवुं. कारण के निर्गुण देव तथा निर्गुण गुरुना चित्रमां पोतानो भाव भेळवतां चितवेला कार्यमां सिद्ध थता होय तो पुछवानुं के मातपिताना मरण वियोगमां काष्टादिकनां पुतळां करीने तेओमां एम भाव भेळवता हशो जे अमारा मातपीता प्रत्यक्ष छे वळी पीतळमां सोनानो भाव भेळवे तथा काचमां रत्ननो भाव, कथिरमां रुपानो भाव, खोळमां गोळनो भाव, छाणमां शीरानो भाव, कांकरामां साकरनो भाव, गर्धवनी लग्नीतमां घृतनो भाव, पाडामां हाथीनो भाव, श्वानमां सावजनो भाव, वंझा स्त्रीमां पुत्रनो भाव एम अनेक द्रव्यमां पोतानी भाव प्रक्षेपन करो तो तमारा विचार प्रमाणे गुण कर्त्ता थवुं जोइए पण एम कदी बने नहीं. द्रष्टांत एक नगरमां एक गृहस्थनी पतिव्रता स्त्री हती ते दर वखते पतिनी भक्ति करी स्वधर्म साचवती हती एक वखते पोताना पुरुषने मुसाफरीए जवाना वखतमां अरज करी के अहो प्राणप्यारा शिरछत्र ! आप परदेश पधार्याबाद मारो पतिव्रता धर्म केवी रीते साचवुं ? एम अरज कर्याबाद ते पुरुषे चितारा पासे पोतानी छबी

चीतरावी स्त्रीने सोंपी कह्युं जे आ मारी छबीनी शेवाथी तारो प्रतिव्रता धर्म साचवजे. एम कही प्रदेश गयो. हवे ते धणीना कहेवा प्रमाणे चित्रनी भक्ति करी ते स्त्री सदा संतोषभर रहेती हती.

वेपारार्थे प्रदेश गएला पुरुषनुं कोइ मंदवाडना कारणथी मृत्यु थयुं ते पछी प्रदेशमां साथे गएला मित्रोए पत्र लखी मरनारनी स्त्रीने जाण कर्युं. ते स्त्रीए पति मृत्युना भयानक शोकथी महाकल्पना करी हाथमां पहेरेला चुडा विगेरे सोहासणरुपी शणगार ते पुरुषनी पछवाडे उतारी रंडापो भोगववा रही पण धणीना आपेला चित्रथी सोहासणपणुं रह्युं नहीं. तेमज मरनार धणीना चित्रथी घरनो कारभार चाले तेवुं पण न रह्युं. हवे मजकुर चित्रमां चाय तेटलो भाव भेळवीने संसारी सुखनी इच्छा करे पण ते स्त्रीनी कल्पना कदी समे नहीं. तेवीज रीते निर्गुण प्रतिमा तथा गुरुना चित्रोमां भाव भेळवतां लाभनो संभव नथी. एम खातरी पुर्वक समजवुं. " बीजो द्रष्टांत " वळी जेम कोइ पुरुप साक्षात धर्म गुरुओना उपदेशथी वैराग पामी संजम लीधो ने मुळ गुण उत्तर गुणरुप रत्नोथी भरपुर थयो तेमज मतिज्ञानना जोरथी सूत्र ज्ञानी थयो तेमज कर्मक्षय करवाने माटे वार भेदे तप करवा उद्यमी थयो. एवा सर्व गुणोनी वृद्धिथी ते सर्व धर्मीजनोने आत्म प्राण समान प्रिय थइ पडेलो छे. हवे तेज पुरुषना कोइ पुर्व जन्मांतरना अशुभ कर्मोदयथी मजकुर सदगुणनो त्याग करी कुंडरीक साधुनी रीते पडवाइ थइ गयो ने महा दुराचर्णो शेववा लाग्यो, त्यारे मजकुर भक्ति करनार सज्जनो ते निर्गुणी पुरुपने तजी दइने पोताना आत्मधर्मनो सुधारो करवा धारे पण ते निर्गुणने मळवानो कोइपण वखत इरादो करे नहीं तेमज पाषाणादिकनी निर्गुण मुर्त्तिमां भाव प्रक्षेपतां कदी वंदन योग्य थती नथी.

समकीती जनोने सुचना.

समकितसार मूणो भवी, आतमगुण हितकार;
पार लहे भव रासनो, टळे चित विकार. १

जीन मुख वायक छे भला, शकळ जंत मुख दाय;
करुणारस भर आज्ञा, पाळे विरला कोय. २

समकित धारी आतमा, जीवादिक नव तत्व;
जाणी श्रद्धा स्थिर करे, तजे असत्य ममत्व. ३

निरखी परखी जीवकुं, दुरखित थइने आप;
प्राण दान सनमान दे, शांति उगे जाप. ४

देव गुरु ने धर्ममां, द्रव्य भाव गुणधार;
सत्य वरी असत्य हरी, ए धर्मा परिहार. ५
पर प्राण परधन सदा, लिए नहीं जे धीर;
अदत् तज्युं तेणे सही, हरे ते भव परधार. ६
द्रव्य थकी तीरिया तजी, भाव थकी कुमत;
ब्रह्मवर्त धर ते गुणी, आतम हित सुमत. ७
द्रव्य वीत नव विध तणो, कर्म परीग्रह भाव;
द्विवीध वीत पचखे सदा, ते निग्रंथ सहाव. ८
एह धर्म जीनवरतणो, जे पाळे नर नार;
कर्म शकळने ते हरे, पामे शीवपद सार. ९

" मिथ्यात्वी जनोने सुचना. "

निरमळ समकित ज्ञानना, भेद भणे नहि जेह;
वळि निर्वद्य करणी विना, भवजळ तरे न तेह. १०
जीनाज्ञा मुखशुं लवे, हरे प्राण कुद्रष्ट;
सावद्य पुजन आश्रवे, लहे विपम ते कष्ट. ११
प्रजा प्राण इंद्री सवे, परखी लब्धी रीध;
आप तपे पर तापवा, वैरभाव परशीध. १२
विभ्रित जीन वायक थकी, ग्रंथाधार गमार;
हिंसा बोध मत भ्रममां, मस्ती भइ अपार. १३
जीन प्रतिमा जीन सारखी, सरधे समकित लार;
सांत मुर्त ज्ञानीतणी, निःश्चळ प्रतिज्ञा धार. १४
प्रतिमा प्रतिज्ञा एकता, शीव साधन ने काज;
कर्म विकट दळ भेदीने, विमलात्म सीरताज. १५
जीन प्रतिमा पथ्थर नहीं, ए समजो गुण भेद;
पथ्थर प्राणी प्राणनो, करे पलकमां छेद. १६
पुजा यात्रा भावनी, करवी कही जीनराज;
तेथी विमीत वर्तता, पतक्ष पापी आज. १७
मिथ्या मान अंतर धरी, मचिया आरंभ मांय;
पचशे कुंभी पाकमे, झुरता छुटे नांय. १८

पियरीया खट कायना, नाम धरावी आप,
शकळ बाळ पोतातणा, तेपर मारे थाप. १९
कौ एक घर डका तजे, अंम्रत्य वयण सहाय;
पण डाकी खटकायनी, मेहेर न आणे जराय. २०
धीगधीग जनुनी तुज भणी, जाया हिंसक पुत्र;
अल्पायु हिंसक तणो, केम रहे घर सूत्र. २१
दयातणो सत्य धर्म छे, ते तो छे परतक्ष;
जान हरे खटकायना, ते केम उत्तम पक्ष. २२
वायक मुख आश्रव तणा, वदतां मुनीवर मुन्य;
आप तरे पर तारवा, ते गुणीजन ने धन्य. २३
दया धर्मथी मुन्य छे, द्रव्य लिंगिया आप;
निपुण आश्रव बोधमां, लेशे अति संताप. २४

भावपुजा ज्ञानी जनोने करवी.

गौतम समुद्र कुमारोरे, ए ढाळ उपर दोडी जाओ;
श्रुत देवी समरु सदारे, सूत्र तणे अनुसार.
भावपुजा कहुं जीन तणीरे, भवी जनने हेत कारोरे
एम जीन पुजीए. १
पुज्यां सीव सुख थाएरे, मनमें धाइए;
ध्यायां सुरपद पाएरे. ए. २
समकित सुतने देहरोरे, ध्यान सुकळ जीनबिंब;
पट आवशक दिपक भलारे, जीव दया ध्वज लंबरे. ए. ३
शियळव्रत निरमळ जळेरे, जीन ने नवण कराय;
वयावच अंग लुशणोरे, समकीत घंट वजावरे; ए. ४
क्षेमा चंदन अति शुंदरुरे, कीरीआ कचोळो अनुप;
तप अगर उखेवनेरे, एम पुजा जीन रुपरे. ए. ५
पंच प्रमेष्टी पद तणारे, पंचवर्ण पुष्पनी माळ;
गुंथिने जेह चडावशेरे, ते लेशे भव पाररे. ए. ६